नम्बर	विषय			पृष्ठ



तौल–नाप

देसी तौल	अंग्रेज़ी तौल
३ जौ की १ गुंजा (रत्ती)	१ गेहूं भर का १ ग्रेन
८ रत्ती का १ माशा	१५ ग्रेन का १ माशा
४ माशे का १ टंक १ शाण या १ धरन	६० बूंद या ४ माशे का १ ड्राम
१२ माशे का १ तोला	३ ड्राम का १ तोला
२ तोले का १ कर्ष	२॥ तोला या ८ ड्राम का १ औंस
२ कर्ष का आधा पल या आधी शुक्ति	३९ तोले का १ रतल
२ शुक्ति का १ पल	४० तोले का १ पौंड
२ पल की १ प्रसृति	
२ प्रसृति की १ अंजलि या १ कुडव	
२ कुडव का १ शराव	
२ शराव का १ प्रस्थ या २ सेर	
४ प्रस्थ का १ आढ़क	
४ आढ़क का १ द्रोण	
२ द्रोण का १ सूर्प	
सूखी दवा दूनी लेना चाहिये	

ध्यान रखने योग्य बातें

१—जहां औषधियों की तौल नहीं लिखी है वहां बराबर २ समझना।

२—शहद या शरबत को औषधियों के समान मिलाना।

३—तो० तोला का और मा० माशे का चिह्न है।

४—जिन दवाइयों का तेल या घी बनाना हो उन दवाइयों को ले कूट कर १६ गुने पानी में भिगोदे फिर काढ़ा बना जब चौथाई जल रह जाय उतार मल छान ले फिर उस छने काढ़े को बतलाये हुये प्रमाण में घी या तेल डाल पकावे जब सिर्फ़ तेल या घी रह जाय उतार ले।

५—काढ़ा बनाने की रीति – जितने द्रव्य का काढा बनाना हो उतने द्रव्यों से १६ गुने जल में औटाना और चौथाई रह जाने पर उतार छान पिलाना। काढ़ा एक दिन का औटा कई दिन नहीं पीना किन्तु रोज़ नया बनाना।

६—हलुआ–सब को पीस घी में भून मुवाफ़िक का बूरा डाल घोट ले यदि आटा डाला हो तो बूरे को पानी में डाल फटका कर फिर दुबारा मिलावे।

७—क़िमाम–नरम चाशनी वाले पतले पदार्थ को कहते है।

८—खमीरा–औषधियां और मीठे को डाल गाढ़ासा बना लेने का कहते हैं।

९—माउल असल–असली शहद को ले उसके दो हिस्से पानी मिला क़लईदार बर्तन या फूल के बर्तन में पकावे। जब एक हिस्सा पानी जल जावे उतार कर काम में लावे

१०—लुआब–तालमखाने या गोंद सरीखे पदार्थ पानी डाल उसमें चिपकना २ से पदार्थ को लुआब कहते हैं।

पुस्तक में आये उर्दू शब्दों की व्याख्या

१— मग़ज़-बीज के भीतर गिरी को कहते हैं।

२—तुख़्म-बीज को कहते हैं।

३—वेख़-जड़ को कहते हैं।

४—ऊदसलीव-एक छिलका बादाम की तरह कड़वा और कसैला होता है।

५—जदवार-निर्बसी।

६—मुमज़र-एलुवा।

७—सोसन-गुलाब का फूल।

८—कशनीज़-सूखा धनिया।

९—तवासीर-बंशलोचन।

१०—बादरंजोया-बिल्लीलोटन।

११—गुल-फूल।

१२—ख़ाक-राख।

१३—गन्दुम-गेहूं।

१४—समगअरबी-बबूल का गोंद।

१५—शक़रतिग़ाल-एक जानवर का घर (गोंदसा)

१६—शीरी-मीठा।

१७—रब्बुलसूस-मुलहटी का सत।

१८—चाकसू-कडुवा काले रंग का मसूर की तरह दाना होता है

१९—लाजवरद-एक पत्थर है जंगारी सुनहरी बूंदेदार।

२०—पञ्चांग-पत्ता, लकड़ी फूल, फल और जड़ को कहते हैं

२१—नशास्ता-गेहूँओं को भिगो कूट कर उन का सत निकाल लेने को कहते हैं।

२२—मुरमुकी—गोंद की तरह होता है उसे बोल भी कहते है।

२३—हब्बुल्लास-एक दरख्त का कडुवा फल है जिसे अधूरा भी कहते हैं।

२४—ज़राबन्द-एक दरख्त की जड़ है इसी नाम से पंसारी के यहां मिलती है।

२५—ज़ोफा—एक घास है इसी नाम से पंसारी के यहां मिलती है।

२६—उस्तखुद्दूस—दोना नाम से प्रसिद्ध घास है।

२७—अंजवार—श्याम देश की वृक्ष की छाल है।

२८—सिपिस्तां—सूखेल भेड़ों को कहते हैं।

२९—ज़ीदविस्तर—ऊदविलाव के अंडकोश।

३०—खुब्बाजी खतमी—एक प्रकार की घास होती है इसी नाम से पसारियों के यहाँ मिलती है।

३१—वारतंग—भी एक घास है इसी नाम से मिलती है।

३२—सादासिकंजबीन—रस के अच्छे सिरका ऽ॥ सेर में ऽ॥ सेर बूरा मिला चाशनी नरम में उतार ले और १ से २ तोला तक सेवन करे।

३३—क़िश्त—मीठा कूट।

३४—संगयशब अक़ीक़—ज़मुर्रद यह पत्थर है।

३५—मरजान—मूँगा।

३६—सक़मूनिया—एक घास के भूरे रंग का जमा हुआ दूध है।

३७—अफ़तीमून—अमरबेल के नाम से प्रसिद्ध है।



॥ ओ३म् ॥

मस्तक रोग और उन की चिकित्सा ।



१-सिरदर्द । २-नज़ला जुखाम । ३-सरसाम । ४-मिरगी । ५-सकता । ६-नींदका अधिक आना । ७-नींदका कम आना । ८-उठतेबैठते आंखोंके नीचे अंधेरा आना। ९-आंखोंके सामने कुछ फिरतासा दिखाई देना । १०-आधाशीशी । ११-सिर्र (जनून) १२-मस्तक को बल देनेवाले प्रयोग ।

वायु के सिरदर्द में ।

१—त्रिफला-सुंडी और धनियां छः २ माशा ले ऽ।= छटांक पानी में कूट कर के रात को भिगोदे सुवह मल कर काढा वनावे और ६ मा० लाल बूरा डालकर पीवे ।

२—सत लोयवान का हुलास ले ।

३—१ माशा हालों पानी में पीस १० मिनट तक माथे पर लेप करे फिर पानी से धो डाले ।

पित्त के सिर दर्द पर

१—काले तिल और गिलोय छः २ माशा ले, बकरी के दूध में पीस मस्तक पर लेप करे।

२—आंवला और कमल के फूल (नीलोफर) को छः छः माशा ले पानी में पीस मस्तक पर लेप करे।

३—वायविडंग और काले तिल छः २ माशा ले पानी में पीस लेप करे।

४—सफेद चन्दन-सोंठ-सेंधा निमक एक २ माशा पानी में घिस मस्तक पर लगावे।

कफ के सिर दर्द पर

१—कायफल का नास (हुलास) लेना।

२—नौसादर और बिन बुझे चूना को बराबर २ ले अलग २ पीस फिर एक शीशी में मिलाकर रक्खे और हिला कर सुंघावे।

३—पीपल-सेंधानिमक एक २ माशा ले पानी में घिस, २ व ३ बूंद नाक में सुबह शाम डाले।

४—वर्गतिक्त- छोटी इलायची और बनफशा को बराबर बराबर ले कूट पीस नासले।

सब प्रकार के सिरदर्द पर

१—बांस की जड़ १५ माशा ले कूटकर ६ माशा सौंफ के साथ ऽ। भर पानी में काढा बनावे ऽ— भर रहजाने पर उतार, छान, २ तोले मिश्री मिलाकर गुनगुना पीवे।

२—पद्माख, सफेद चन्दन-पीपल-मुलहटी, साढ़े चार २ माशा ले कूट पीस १० तोले जल और २० तोले आंवले के रस में काढा करे जब १५ तोले रहजाय तब १० तोला तिली का तेल डाल पकावे जब तेल ही तेल रहजाय उतार ले और थोड़ा थोड़ा सिर में मला करे।

३—४ छुहारों की गुठली निकाल ऽ। भर दूध और ऽ। भर पानी में उबाले जब केवल दूध रहजावे तब उतार मल कर छान ले और मुवाफ़िक़ का बूरा मिला खूब गुनगुना २ पीवे।

२—नजला ज़ुख़ाम

यदि गरम चीज़ के खालेने से ज़ुखाम रुक गया हो तो लोयवान ३ माशा पानी में पीस, गुनगुना कर माथे पर लगावे। वनफशा-लहसोंड़ा-मुलहटी-सौंफ को तीन २ मा० लेकर पाव भर पानी में औटावे १ छटांक रहजाने पर उतार कर १ तो० गुलकन्द मिला कर पीवे। लहसोड़ा-मुलहटी गावज़ुवां के फूल एक २ तोला लेकर पाव भर पानी में

औटावे जब १ छटांक रहजावे उतार कर छान ले फिर ३ तो० शहद डालकर किमाम सा बनाले छः मा० सुबह छः माशा शाम को खा कर ऊपर से २ घूंट गुनगुना पानी पीवे।

३—सरसाम यह रोग मस्तक के भेजे या परदे में सूजन के होने से होता है। १-बनफशा-कमलगट्टा की गिरी गुलाब के फूल-हर्र छोटी-गेहूँ की भूसी एक २ तो० लेकर पाव भर पानी में औटाना १ छटांक रहजाने पर छान ले इस पानी में एक तोला घी १ तो० शक्कर डालकर आग पर फदकावे फिर उतार कर गुनगुना पीवे। २-बनफशा-कमल के फूल (नीलोफ़र) गुलाब के फूल-गुलाब के अर्क में पीस, सिर पर लगावे। ३-जौ का आटा ४ तो०, रसोत १॥ तोला, केसर ४ माशा, १॥ छटांक बकरी के दूध में मिलाकर सिर पर लगाना। ४-सिर के तालु के बाल मुंडवा कर उस पर उरद के आटे की रोटी बना एक तरफ सेके दूसरी तरफ जिधर सेकी नहीं उधर काहू या कद्दू का तेल चुपड़ सिर पर बांध दे।

४—मिरगी यदि थोड़े दिन की मिरगी होगी तो निम्न लिखित औषधियों से जा सकती है। १-अक्करकरहा, खनकाली (एक घास है और उर्दू में इसे विसफायज कहते हैं पन्सारियों के यहां विसफायज इस नाम से मिल जाती है) पिस्ता एक २

तोला, मुनक्का बीज निकाले हुए १० तोला, ६ माशे शुद्ध अफीम लेकर आदपाव पानी में घोले और ऊपर की सब दवाई मिलाकर आग पर गरम करे जब गोली बंधने लगे उतार कर तीन २ माशे की गोली बना गुन-गुने दो घूंट पानी से १ गोली सुबह को खावे।

२—ऊदसलीब को गले में बांधने से भी मृगी दूर हो जाती है।

३—दुधि या बच का चूरन १ माशा शहद में मिलाकर प्रतिदिन चाटे।

४—अशोक के पत्तों के रस में समुद्र फल घिसकर नास देवे

५—हरीहस्तिशुंडा (तुलसी की तरह पत्तोंवाला वृक्ष होता है जिसके ऊपर हाथी की सूंड की तरह लटकती है) और हरी नकछिकनी बूंटी का स्वरस आठ २ आना भर मूर्छा के समय नाक में भरे।

६—अकरकरहा ⟆= छोटी हर्र ⟆= लेकर, ⟆१॥ सेर सिरका में भिगोदे ७ दिन बाद निकालकर पीसले तीनपाव शहद में मिलाकर रखले, २ माशा हर रोज खावे।

७—नारियल दरयाई १ चावल पानी में घिस कर पिलावे दूसरे दिन-जदवार खताई ३ रत्ती घिस कर पिलावे १ दिन नारियल, दूसरे दिन जदवार डेढ़ महीने तक पिलावे।

५—सकता—इस बीमारी में मनुष्य बेहोश हो जाता है और उसकी हरकत बिलकुल बन्द हो जाती है। यह बीमारी मस्तक में सुर्द पड़ जाने से होती है १-लौंग, जावित्री, जायफल, अकर-करहा छः माशा सेंधानिमक २ तोला, बाजरा आद पाव सब को पीस कूटकर, २ पोटली बनावे और गरम तवे पर सेक २ मस्तक पर टकोर देवे। २-केसर और कलौंजी को बारीक पीस नांक में फूंके।

६—नींद का ज्यादह आना—१-त्रिफला (हर्र बहेड़ा आंवला छः छः माशा) आदपाव गरम पानी में रात को भिगो दे, सुबह मलकर छान कर, २ तोला शहद मिलाकर पीवें। २-जुल्लाव लेकर जब कमजोरी जातीरहे तब असली कस्तूरी ६ रत्ती अर्क गुलाब में घिसकर नास लेवें और तेज सिरका सूंघने से भी नींद ज्यादह नहीं आती।

७—नींद का कम आना—१-बकरी का दूध हाथ की हथेली और पांव के तलुवे में मलना चाहिये।

२—काहू के बीज और खसखास के बीज एक २ तोला लेकर पीसे फिर आदपाव पानी में, मिला २ तोले मिश्री मिलाकर पीवे।

३—काहू और कद्दू का तेल सिर पर लगावे।

४—ब्राह्मीपत्ती २५ अदद साफ़ करके बारीक पीसकर ।= गायके धारोष्ण दूध में मिला और मुवाफ़िक का मीठा डालकर पिलावे।

५—नाभि पर भांग की टिकिया बांधे। काहू के बीज अजवायन, खुरासानी, चीता, अफीम समान भाग ले चने बराबर गोली बना, एक २ गोली सुबह शाम खाने से (पोस्त के पानी के साथ गोलियां बनावे) नींद आकर पीड़ा दूर होगी।

६—भुनी हुई भांग का चूर्ण १ माशा शहद में मिलाकर रात्रि को सेवन करे। इससे निन्द्रा नाश अतीसार गृहिणी अग्नि की क्षीणता नष्ट होती है।

७—पीपलामूल का चूर्ण गुड़ में मिलाकर खाने से बहुत दिनों की नष्ट हुई निन्द्रा आजाती है।

८—मकोय की जड़ को सिर में बांधने से अथवा सब का क्वाथ बना पीने से निद्रा आती है।

९—कम नींद आती हो तो दूध, दही, तेल की मालिस उबटन, स्नान सिर में तेल लगाना, कानों में तेल डालना, नेत्रों में ठंडा सुर्मा लगाना और तकिये में सोये के हरे पत्ते रखलेने से नींद अच्छी आती है।

१०—शाक, दाल, घी, यूष और दूध में प्याज़ का रस शामिल कर खाने से जल्दी नींद आती है।

११—क्लोरलहाईड्रास—२ औंस, पोटासी ब्रोमाइड २ औंस २ तोला ताजा पानी से सेवन करने से भी नींद आ जाती है।

९—आंखों के सामने फिरतासा दीखे—

इसके लिये ऊपर नं० ८ में लिखी सब औषधियां सेवन कर सकते हैं। १ खसखास १० माशे धनिया ६ माशे पीसकर आद्‌पाव पानी में मिलाकर २ तोले मिश्री मिलाकर पीवे।

१०—उठते बैठते आंखोंके नीचे अंधेरा आना

इसके लिये दो तोला गेहूं की भूंसी को आधपाव ठंडे पानी में रात को भिगो देवे सुबह खूब मलकर छानले उस पानी में १ बादाम और २ बड़ी इलायचीके दाने दो तोला घी गाय का मिलाकर कढ़ाई में आग पर पकावे जब खूब फदक जावे तब उतार कर, २ तोले मिश्री मिलाकर गुनगुना २ पीवे।

२—मक्खन २ तो० मिश्री १ तो० मिलाकर खावे।

३—बादाम का तेल सिर पर मले।

११—आधा शीशी—चार रत्ती नौसादर (माथे में जिस ओर दर्द हो उस की उलटी ओर नाक के नथुने में) का नास सूर्य निकलने से पहिले लेवे।

२—जलेबी का घी सिर पर मले।

३—तरावट की चीजें खावे।

४—समुद्र फल को पानी में घिस कर नाक में टपकावे।

१२—सिर (जुनून) पहिले अन्त में लिखी हुई दवायों से पेट वा मस्तक को जुल्लाव से साफ करें फिर शुद्ध गाय के घी का नास (हुलास) देना और नं० ७ में कही नं० ८ वा ९ की दवा पिलाना।

मस्तक को ताकत देने को

१—गेहूं की भुंसी २॥ तोला लेकर ३ छटांक पानी में रात को भिगोदे सुवह मलकर छान ले उस छने पानी को कड़ाही में डाल गरम करे उसी में ४ मग़ज बादाम १० काली मिर्च पीस कर उस में डाल दे फिर मुवाफ़िक का मीठा और २ तोला घी डाल खूब फदकावें (गरम) करे फिर उतार गुनगुना २ चाय की तरह पीवे।

२—दूध में जलेवी भिगोकर खावे।

३—दूध में छः माशे से १ तोले तक बादाम का तेल डाल कर पीवे।

४—बादाम खरबूजा की मींग खशखाश एक २ तोला ले पीस ठंडाई की तरह पानी में अथवा गाढा हलुवा सा बना सेवन करे।



वादाम पाक

वादाम की गिरी भिगो कर छीली हुई ١ı खरवूजा कद्दू , खीरा की मिंगी एक २ छटांक कौच के वीज की गिरी ١— छोटी इलायची वड़ी इलायची के दाने शतावर कन्सलोक, [illegible] के वीज़ चोवचीनी गोंद मूसली सफेद एक २ तो० कूट पीस ١ı घी में भून ١ıı चीनी डाल हलवा सा वना ले खुराक एक से २ तो० तक प्रातः काल सेवन करे यदि अभ्रक चांदी वंग की उत्तम भस्म छः २ माशा और मिला ले तो वहुत ताकतवर हो जायगा ॥



नेत्र रोग और उनकी चिकित्सा ॥



१–आंख का दर्द व सूजन । २-छड़ पड़ जाने पर । ३-पलकों का चिपटना । ४-मोतियाबिंद । ५-ढलका । ६-नासूर । ७-आंख के दानों में । ८-परवाल । ९-फूली माडा । १०-रोहों पर । ११-गुहाई । १२-चेचक से गई आंख पर । १३-खुजली । १४-रतौंधी । १५-नेत्रों की ज्योति बढ़ाने को ।

१—आंख में दर्द, लालामी वा सूजन के लिये—

बड़ी हरड़ का छिलका ६ मा० लोध २ माशे अर्क गुलाब में घिस कर धुनी हुई रुई में लपेट आंख पर रक्खे ।

२—इमली के पत्ते ४ मा० लोध-२ मा० फिटकरी १ मा० अफीम २ रत्ती-पानी में पीस पोटली बना आंख पर फेरे ।

३—गुलाब जल १ तो० फिटकरी लाल १ मा० बतासा १ अदद पीसकर मिलाले और दो २ बूंद दो २ घन्टे में आंख में डाले।

४—रसोत को बकरी के दूध में घिसकर पलकों के ऊपर लगावे।

५—जिधर की आंख लाल हो उधर के पैर के अंगूठे में घीगुवार का गूदा ४ तो० आमा हल्दी २ मा० पीसकर मिला, ज़रा गुनगुना कर लपेट दे ऊपर से पान रख बांधदे।

६—इमली के पत्तों का रस ५ तो० रसोत १ तो० सुहागे का फूला ६ मा० फिटकरी का फूला ६ मा० अफीम १ मा० सब को अर्क गुलाब में खूब रगड़ कर आंखों के भीतर लगाने से कड़क दूर होती है।

७—फिटकरी ३॥ तोला हल्दी ७ माशे अफीम ५ माशा कागजी नीबू के रस में घोट कर गुनगुनी गुनगुनी बाहर पलकों पर लेप करे।

८—त्रिफला का चूरन ३ माशा घी शहद मिलाकर रात्रि को चाटने से नेत्रों के सब रोग नष्ट होते हैं।

९—शहद में केसर घिसकर लगाने से आंखों की जलन दूर होती है।

१०—सफेद फिटकरी का फूला १ तो० २ तोले कागजी नीबू के रस में घोट ऊपर पलक में लगाने से दर्द वा लाली दूर होती है।

११—अनार दाना १ छटांक अर्क गुलाव ‌ऽ= में भिगो कर कपड़े से छान ले फिर उस में कच्ची फिटकरी बारीक पीस १ तो० और अफीम ३ माशा मिला खूब घोट ज़रा गरम कर पलकों पर लेप करे।

१२—हीरा कसीस २ माशा घी में मिलाकर मस्तक पर लेप करदो तो आंखों से वहुत सा पानी तुरन्त ही टपकेगा और दर्द वा सूजन ५ मिनट में दूर होगी। पर १० मिनट वाद धो डाले।

१३—पठानीलोध-फिटकरी का फूला एक २ माशे अफीम ४ रत्ती इमली की कोंपल ४ माशे ग्वारपाठा ४ माशे सव को कूट पीस पोटली वना आंख पन फेरनी ॥

१४—कलमी शोरा ४ तोला फिटकरी का फूला १० तो० कपूर १ तो० उम्दा एक वोतल अर्क गुलाव में पीस कर डालना और मजबूत काग लगा, दो तीन दिन धूप में रख, दो २ बूंद आंख में डालना।

१५—वेल के पत्ते का रस आधा तोला सेंधानमक २ रत्ती गाय का घी ४ रत्ती तांवे के वर्तन में वड़ी कौड़ी से घिसकर आंच में गरम करे फिर स्त्री का दूध मिला कर अंजन की तरह लगाने से आंख का शोथ रक्त स्राव और दर्द वन्द हो जाता है।

१६—दारु हल्दी, मेरू, सेंधानमक, हर्रे छोटी, रसौत, कूट पीस छान घीकुवार के पट्ठे के रस में गरम कर आंख पर लेप करना।

१७—लाल फिटकरी को बारीक पीस कपड़े में छान ३२ गुने पानी वा गुलाब जल में हलाकर आंखों में दो २ बूंद डालने से गर्मीकी आंखों की लाली वा जलन दूर हो जाती है।

१८—धतूरे के पत्तों को गरम कर मलकर रस निकाले फिर यदि दाहनी ओर दर्द हो तो बायें में और बांई ओर हो तो दाहिनी ओर कान में डाले आंख का दर्द तुरंत बन्द हो जायगा॥

१९—स्त्री के दूध में रसौत को घोलकर गुनगुना लेप पलकों पर करने से आंखों का दर्द वा सूजन और लाली मिट जाती है।

देसी लोशन।

काला सुरमा, फिटकरी, कलमी शोरहा एक २ तोला ले एक शीशी में आध पाव पानी डाल उस में बारीक पीसकर डाल, काग बन्द करदो, आवश्यकता पड़ने पर बोतल को हिला दो दो, बूंद आंख में डाले।

६—नाखून या किसी चीज़ के लग जाने से आंख में छड़ पड़ जाती है।

१—ठंडे पानी के आंख खोलकर छींटे दे।

२—काहू के बीज, विलायती उन्नाव एक एक तोला लेकर आदपाव पानी में अधकुट कर काढ़ा बनावे जब आधी छटांक पानी रह जावे तब उतार छान १ तोला मिश्री मिलाकर पीवे।

३—उम्दा गुलाब का अर्क दो २ बूंद दो २ घंटे में आंख में डाले।

४—स्यालकोटी कागज़ को जलाकर उस की राख पीस कर सलाई से आंखों में लगावे।

३—पलकों का चिपटना

जुल्लाब से पेट साफ़ करे।

२—पलकों पर जोंके लगवावे।

३—बबूल की ताजा पत्ती १ छटांक २५ तोला पानी में औटावे जब ६ तोला पानी रह जावे तब उतार छान बोतल में रखले और दिन में कई बार पलकों में लगावे।

४—कोड़िया लोयबान सुरमा की तरह पीस कर शहद मिला बत्ती बनाले और गुलाब जल में घिस कर आंख पर लगावे।

५—आंक की जड़ जला कर उसकी राख पानी में घोल आंख के ऊपर लगावे।

६—सांप की कैंचुली जलाकर पीसे और सुरमा की तरह लगावे।

४—मोतियाबिन्द

इस की औषधि तब तक ही हो सकती है जब तक कि आंख से कुछ २ दीखता हो।

१—जुल्लाब से पेट साफ करे।

२—कनपटी पर जोंके लगवावे ।

३--त्रिफला १ तो० सफेद चन्दन, नागरमोथा, गिलोय, नीम की छाल, अडूसे के पत्ते, सोंठ, हल्दी खानी, इन्द्रजौ, गेरू यह सब तीन २ माशे लेकर डेढ़पाव पानी में औंटावे १ छटांक रह जाने पर १ तोला शहद मिला कर पीवे ।

४—रसौत, हल्दी दोनों, नीम के पत्ते, चमेलीके पत्ते तीन २ माशे लेकर गोबर के रस में पीस गोलियां बनाले फिर पानी में घिस आंख में लगावे ।

५—द्रोणपुष्पी (गूमा) के स्वरस में शहद मिला कर नेत्रों में लगावे ।

६--तिल के फूल ८० पीपलछोटी ६० दखिनी मिर्च ७५ भंगरे के अर्क में घोटे ३ दिन तक कांसे के पात्र में, फिर आंख में लगावे ॥

५—ढलका

आंखों में पानी गिरने को ढलका कहते हैं ।

१—समुद्रफेन, फिटकरी सफेद, हरड़ छोटी, कत्था सफ़ेद, रसोत, तीन २ माशा, अफ़ीम १ माशा सब को कूट पीस पानी में गोलियां या बत्ती बनाले और पानी में घिस कर ही आंख में लगावे ।

२-मेंहदी के हरे पत्ते बारीक पीस आंख में बांधे ।

३-बबूल का काढ़ा बहुत गाढ़ा बनाकर शहद मिला अञ्जन करने से आंख से पानी जाना बन्द होता है ।

६—नासूर — यह आंख के कोए में होता है।
१—कनपटी पर जोंके लगवावे।

२—एक तोला शहद गरम करे उस में ६ माशा समुद्रफेन पीसकर मिला बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे।

३—मुसब्बर और अनार के फूल एक एक माशा, गुलाब के अर्क में पीस नासूर में लगावे।

४—हुक्का की कीट जो हुक्के की नली के भीतर जम जाती है उस को एक माशा ले, १ माशा अफ़ीम मिलाकर लगावे।

७-आंख में दानों के लिये

१—केसर, कपूर एक २ रत्ती, रसोत ४ रत्ती गुलाब जल में घिस कर दानों पर लगावे।

२—रसोत, गेरू, छोटी हरड़, सुपारी एक २ माशा ले अर्क़ गुलाब में पीस लगावे।

३—लोंग १ रत्ती, हल्दी खानी ४ रत्ती, गुलाब जल में घिसकर लगावे।

४—सिन्दूर गुलाब जल में हल्ल कर लगावे।

८—परवाल — १—नौसादर १ तो० पीपलवड़ी ६ मा० छोटी इलायची के दाने ४ मा० समुद्र फेन ४ मा० नीला थोथा १ मा० नीला थोथा का आग पर फूला कर ले फिर सब को कूट पीस बकायन के हरे पत्तों का रस निकाल कर ७ बार सब दवाइयों को

मिला कर घोंटे फिर छोटी चीमटी से बाल उखाड़ ऊपर का अंजन लगावे ।

२—बालों को उखेड़ अंजीर का दूध लगावे ।

३—समुद्रफेन को ईसबगोल के लुआब में घिस कर लगावे ।

४—केसर १ मा० अफीम १ मा० सिरका में घिस कर लगावे ।

५—सेंधा निमक २ मा० समुद्रझाग २ मा० सुरमा सा बना लगावे ।

६—सीप को टुकड़े कर, एक कूजे में भर, ऊपर तक जामन का रस भर, संपुट लगा १५ सेर कंडे की अग्नि दे फिर निकाल सम भाग नौसादर मिला अञ्जन की तरह पीस कर बाल उखाड़ लगावे ॥

६—फूलीमाडा लाल चन्दन, संख की नाभ मेनसिल, चान्दी सोने का मैल (जो सुनारों के यहां गलाते समय रहजाता है) सेंधानमक छः२ माशा पीस कर जब सुरमा सा हो जावे तब लगावे ।

२—हरे कांच की चूड़ी, लाल फिटकरी, समुद्रफेन छः माशा ले अंजन की तरह सौंफ के अर्क में घोंट कर लगावे ।

३—मिश्री सेन्धा नमक दोनों को बराबर २ ले कपड़छान कर लगाने से फूला कट जाता है ।

४—सहजने के पत्तों के रस में बराबर का शहद मिला कर आंख में लगाने से भी फूला कट जाता है।

५—सोना मक्खी १ तो० फिटकरी १ तो० शोराकल्मी १ तो० समुद्रझाग १ तो० नीले कांच की चूड़ी १ तो० अफीम ६ मा० सब को खरल में पीसे जब बारीक हो जावे तब १ पाव नीम के पत्तों का रस खरल करते २ सुखादे जब खूब बारीक हो जाय तब आंख में लगावे॥

१०—

१—जस्त भस्म १० मा० तूतिया भस्म १ मा०, गोंद कतीरा १ मा० जल में घोट लम्बी लम्बी बत्ती बनावे पलकों को लौटकर रोहों पर रगड़े।

२—मिश्री, नमक बराबर २ महीन पीस सुरमे की तरह लगावे।

३—चाकसू के बीज लेकर नीम की पत्तियों के साथ पानी में उबाले जब ये मुलायम हो जांय तब छील भीतर की गिरी निकाल उसे बहुत बारीक पीसे फिर आंखों में लगावे।

४—जस्त का फूला २ तो० नीम की कली ६ तो० मिर्च दक्खिनी २ अदद, कपूर १ तो० फूलकी थाली में फूलकी कटोरी से रगड़ आंख में लगावे।

५—सफेद चन्दन पानी में घिस कर रोहों पर लगावे।

६—जस्त का फूल २ तो० चाकसू २ तो० बनकुलथी के बीज १ छटांक नीमकी पत्ती के साथ मिट्टी के मोलुए में

पकावे जब चाकसू फूल जावे तब छील कर जस्ते में मिला नीम के पत्तों के रस में घोट लगाने से असाध्य रोग भी जाते हैं।

७—फिटकरी की भस्म १ तो० भुना तूतिया १ रत्ती मिश्री १ मा० खूब घोट कर जाला फूली पर लगावे।

८—काला सुरमा की डली ɔ। लेकर आग में लाल कर २ के त्रिफला के काढ़े में, नीमकी पत्ती के रस में, भंगरा के रस में सात २ बार बुझा फिर रसोत को पका कर उसके थिराये पानी से घोटना फिर जब वह सूख जावे तब पुनर्नवा के काढ़े में फिर केले की जड़ के पानी फिर गुलाब जल में घोटे फिर फिटकरी की खील १ तो० छोटी हर्र ६ मा० गदह पूर्ना १ तो० गेरू ६ मा० शीतलचीनी ६ मा० कल्मीशोरा १ तो० कपूर १ तो० छोटी इलायची के दाने ६ मा० कड़ुवे तेल के दीपक का काजल १ तो० डाल खूब घोटे रोहूमछली के ४ पांच नेत्र डाले तो विशेष गुणदायक हो।

सर्प की चर्बी का अंजन

काले सर्प की चर्बी, शंखचूर्ण, निर्विसीचूर्ण, निर्मलीचूर्ण कायफल का चूर्ण, काली मिर्च, प्रथम मिर्च को ज़रा भिगो कर सिल पर रगड़ पानी से धोकर कुचल थोड़े से जल में दो घंटा भीगने पर छानले फिर इसी पानी से (उपरोक्त दवाइयों को समान भागले) खरल कर लगावे।

११—गुहाई का ईलाज।

१—इमली के वीज पानी में घिस कर लगावें ।

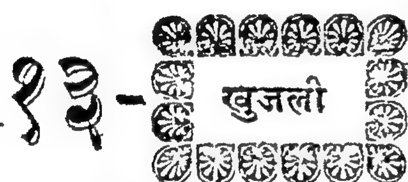
२—पुरानी दीवाल का कोयला पानी में घिसकर लगावे

३—लौंग को पानी में घिस कर लगावे ।

४—घी में सिंदूर मिला कर लगावे ।

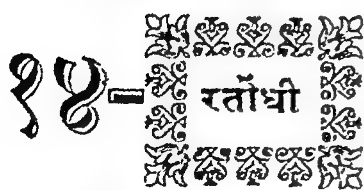
१२—चेचक से गई आंख पर।

हल्दी को नींबू के रस में खरल कर दिन में दो वार सलाई से लगाना ।



वारा सिंगा को कागजी नींबू में घिसकर लगावे ।

२—ममीरा, वालछड़, एलुवाशुद्ध, खपरिया शुद्ध, काली मिर्च छ. २ मा० हरर की वकली, गुलावके फूल कपूर, माजूफल, सेंधा निमक, समुद्रझाग, आमला भुनी फिटकरी एक २ मा० दारचीनी, पीपल, केसर एक २ मा० अर्क गुलाव में घोट आंख में लगाने से खुजली दूर होती है।

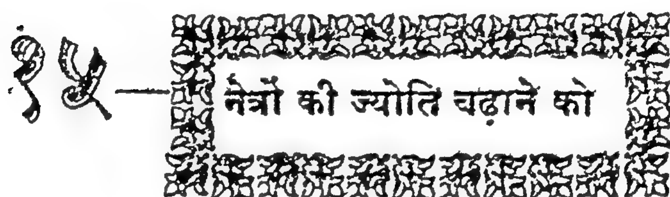


१—सफेद शीशी के भीतर रीठे भर कर पानी डाल दे जव रीठे खूव नरम हो जावें तव इन्हें मल डाले और फिर पानी को औटावे जव चौथाई पानी रह जाय तव उतार छान कर रखले फिर दो २ बूंद आंखमें डालनेसे रतौंधी अचूक जाती रहतीहै ।

२—रसौत, हल्दी, दारुहल्दी, नीम के पत्ते बराबर २ ले कूट पीस गोबर के रस में बत्ती बना आंखमें लगाना।

३—सांयकाल को पान का रस ३, ४ बूंद आंख में डालने से रतौंधी दूर होती है।

४—घी में सोंठ अथवा पीपल को मुवाफिक का घिस कर आंख में लगावे।



१—जस्त भस्म १ तो० शीतलचीनी ६ मा० फिटकरी फूला १ मा० कपूर १ मा० खूब बारीक पीस सुरमे की तरह लगावे।

२—शुद्ध बिरोजा कपूर एक २ तो० पहिले बिरोजा को ४तो० दस वर्ष के पुराने घी में मिलाकर ३ दिन रगड़े फिर कपूर मिला १ पहर तक रगड़े फिर एक २ बूंद आंख में डालने से मन्द दृष्टि दूर होती है।

३—सौंफ, रतनजोत, मिश्री बराबर २ लेकर कूटछान ६मा० फांक कर ऊपर से पाव भर दूध मिश्री मिला कर पीने से नेत्रों की कमज़ोरी दूर होती है।

४—शुद्ध सुरमा, शुद्ध फिटकरी नौ २ माशा, सच्चे मोती ३ माशा, सफेद देशी मिश्री ५मा०४तो० उम्दा गुलाब जल में घोटे जब अर्क सूख जाय तब आंख में लगावे।

५—छोटी हरड़ ६ मा० साबुन ६ माशा शोरहकलमी शुद्ध ६ मा० अफीम २ मा० ममीरा ६ मा० फिटकरी का फूला ६ मा० रसोत ६ मा० केसर २ माशा, काली मिर्च ६ माशा, नौसादर ६ माशा समुद्रफेन ६ माशा गुलाब जल १० तो० में घिस आंख में लगावे।

६—आदपाव काले सिरस के पत्तों को पीस आध सेर पानी में घोल चार गिरह सफ़ेद कपड़ा उस पानी में ७ बार भिगो २ कर साया में सुखावे फिर उस की वत्ती बनाय कडुवा तेल के चिराग़ से काजल पारे यह काजल १ तो०, कल्मीशोरा ६ मा०, हल्दी ३ मा०, मिर्च दक्षिणी ३ मा०, मिला ७ दिन तक घोटे। इस से भी नेत्र के सब रोग जाते हैं।

नयनामृत।

संख की नाभि १ तो० पीपल छोटी १ तो० शुद्ध नीलाथोथा १ तो० खपरिया १ तो० कल्मी शोरा १ तो० नौसादर १ तोला नींबू के रस में घोट इस्तेमाल करे।

ठन्डा सुरमा।

१—१ मट्टी के कूजे को अग्नि में खूब गरम करे और जब खूब लाल हो जावे तब उस में १ तो० कपूर डाल तुरन्त कांसे की कटोरी से ढकदे कपूर उड़कर उस में लग जावेगा उस जौहर को आंख में लगाने से बरफ के समान आंखों में तरावट मालूम होगी।

२—५ तोला सुरमा ले ३ दिन पानी में भिगोवे पानी से निकाल ३ मा०, कपूर ३ मा०, छोटी इलायची के दाने मिलाकर ६ तो० नीम के पत्तों के रस में घोटे उस के सूख जाने पर ६ तोले अर्क गुलाव में पीसे उस के सूख जाने पर आंख में लगावे ।

आंख की कमजोरी दूर करने को

३—ईरानी केसर को स्त्री के दूध में घिस कर आंख में लगावे माजूफल ९ मा० वालछड़ ६ मा० केसर ३ मा० छोटी पीपल २ मा० नौसादर १॥ मा० काली मिर्च २ रत्ती कपूर १ मा० सब को सुरमा की तरह पीस लगावे ।

४—शीशा को गरम कर कर के भंगरे के रस में ५० वार, फिर गौ मूत्र में २५ वार, फिर २५ वार वकरी के दूध में बुझावे फिर उस शीशे की सलाई को खाली आंख में फेरने से नजर तेज़ होती है ।

५—शुद्ध ममीरा के लगाने से भी आंख की कमजोरी दूर होती है ॥



नाक के रोग और उनकी चिकित्सा।



१—नकसीर। २-शक्तिनाश (इस बीमारी में नाक से सुगन्ध या दुर्गन्ध कुछ नहीं मालूम होती)। ३-पीनस। ४-सूजन वा दर्द। ५-नाक में से कभी २ कफ की गांठे निकलनी।

१—नकसीर— नाक से खून निकलने को नकसीर कहते हैं। नाक में दो मार्ग हैं एक मस्तक से दूसरा मुंह से। नकसीर भी दो हालतों में फूटती है मस्तक में खुश्की होने पर या पेट की गरमी के कारण भी नकसीर फूटती है। ज्वर के दौरान के दिन (४-७-११-१४-२४-२८) में यदि नकसीर फूटे तो बन्द न करे यदि खून ज्यादह निकले या दूसरे कारण से फूटे तो उसका इलाज अवश्य करे।

१—ताजा गोबर सिर और माथे पर लगावे।

२—परोड़ मट्टी पानी में भिगो कर थोपे।

३—बबूल की पत्ती, कपूर, अफीम एक २ तोला धनिया, कोड़िया लोयबान, फिटकरी सफ़ेद छः २ माशा पानी में पीस लगावे।

४-कपूर को सिरका और गुलरोगन में हल करके लगावें।

२—शक्तिनाश—१—केसर, रूमामस्तगी दो २ मा० लेकर खूब बारीक पीस कपड़े में छान नाक मे फूंके।

२—गरम पत्थर पर तेज़ छिरका डालकर आंखे मीच नाक से सूंघे।

३—पीनस—इस बीमारी में नाक से कीड़े गिरते हैं।

१—आध सेर गरम पानी में १ तो० सफेद फिटकरी पीस कर मिलावे और उसकी पिचकारी नाक में लगावे।

२—शिगरफ-बायविडंग-अजमोद-अजवायनखुरासानी छः २ माशे लेकर महीन पीस कपड़े से छान नाकमें फूंके।

३—सेंजना की छाल-पीपल के पत्ते-छोटी कटाई आद २ पाव तीन सेर पानी में औटावे जब आध सेर रह जावे तब उतार छान आदपाव कड़वा तेल मिला फिर आग पर चढ़ा दे उसमें सोंठ-मिर्च-पीपल छोटी, दो २ तोला रसौत और सेंधा नमक तीन २ तो० कूट पीस छानकर डाल दे जब केवल तेल रह जावे उतार छानकर रखले और सुबह शाम नास लियाकरे।

४—दालचीनी, जावित्री, लौंग, हल्दी पांच २ तो० लेकर कूट पीस छानले फिर २५ तो० शहद मिला छः २ माशा सुबह शाम खाया करे ।

५—गुड़ ६ मा० दो तो० दही में २ मा० गोल मिरच पीस कर सब को मिला पीनस शुरू होते ही सेवन करना चाहिये ।

६—कायफल, कूट, काकड़ासींगी, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च जवासा, काला जीरा छः २ मा० ले, कूट पीस चूरन बनाले १ मा० चूरन १ मा० शहद मिला कर सुबह, शाम सेवन करने से पीनस, स्वरभेद, नाक से पानी आना और हलीमक रोग नष्ट होता है ।

७—इन्द्रजौ, हींग, काली मिर्च, तुलसीपत्र, कुटकी, मीठा कूट, वच, सेंजने के बीज, वायविडंग छः २ माशा ले चूरन बना नास लेना ।

८—अजमोद, वायविड़ंग, सिंगरफ तीन २ माशा खुरासानी अजवायन, केसर दो २ माशा ले कूट पीस नास लेवे ।

९—दोनों कटाई और अनार के पत्तों का रस पाव २ भर ले, आदपाव तिल के तेल में पकावे, जब रस जल, केवल तेल रह जाय उतार पांच २ बूंद नाक में डाले।

४—सूजन वा दर्द

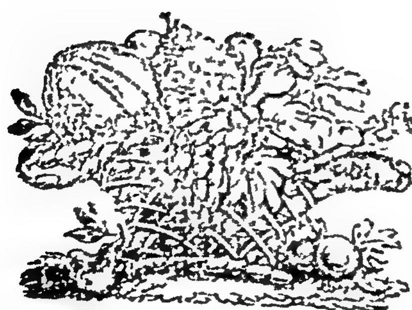
रसोत ३ माशा, केसर २ मा० कपूर १ मा०, अर्क गुलाब में घिसकर लगावे ।

२—दरयाई नारज़ील १ माशा, पान १० तोला में इल्न करके पीवे ।

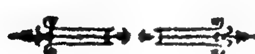
५—नाक में से गांठे निकलना

१—नागरमोथा-माजू, केसर चार २ माशे, मोम १ मा० कड़वा तेल ४ तोला, पानी २० तोला सब को कूट पीस पकावे जब तेल ही रह जावे, तब उतार छान, दो २ बूंद नाक में डाले ।

२—बीदाना का लुआब २ तोला व शरबत बनफशा १ तोला मिलाकर पीना ।



कान के रोग और उनकी चिकित्सा ।



१—कान में दर्द । २-बहना । ३-कीड़े पड़जाना । ४-गूंगूं की आवाज होना । ५-बहरापन । ६-सूजन । ७-कान का उखड़ आना, ८-पानी या कोई चीज कान में भर जाना ॥

१—दर्द — अजवायन खुरासानी २ तो०, २ छटांक पानी, ४ तो० कड़वा तेल मिला आग पर जलावे जब तेल मात्र रह जावे तब उतार छान दो २ बूंद कान में डाले।

२—सुख दर्शन का पत्ता गरम कर कान में निचोड़े ।

३—कपूर अफीम चार २ रत्ती १ माशा स्त्री के दूध या बकरी के दूध में मिलाकर कान में डाले ।

४—जावित्री-जायफल-केसर-अफीम चार २ रत्ती लेकर शराब में मिलाकर कान में दो २ बूंद डाले ।

५—चोया लोयवान कान में डालना।

६—२ तो० शराब में १ मा० अफीम मिलाकर थोड़ी २ कान में डाले।

७—वच, सोंठ-देवदारु, सेंधानमक और सौंफ इन सबको एक एक तो० ले कूट पीस ऽ। भर बकरी के पेशाब में औटावे खूब औट जाने पर उतार छान गुनगुना २ थोड़ा २ कान में डालने से कान का दर्द बन्द हो जाता है।

२—बहना या पीब आना — केसर १ मा० शहद १० मा० बकरी का दूध दो तोला आग पर रखकर पकावे जब दूध जल जावे तब उतार कर दो २ बूंद कान को साफ कर, डाले।

२—मेथी के बीज १ तो० बकरी का दूध ६ तो० में गरम करे जब ४ तोला दूध रह जावे तब उतार छान कर कान में गुनगुनी २ दो २ बूंद डाले।

३—कान को साफ कर सुहागा का फूला पीसकर कान में फूंक दे, ऊपर से दो बूंद कागज़ी नीबू का अर्क डाल दे।

४—रसोंत ४ मा०, शहद १ तोला, २ तोला बकरी के दूध में हल करके दो दो बूंद कान में डाले।

३—कीड़े पड़ जाना — पोदीने की पत्ती सिरका में मिला कान में टपकावे।

२—एलुवा को पानी या गोमूत्र में घिस कर कानों में डाले।

३—तारपीन का तेल १ तोला, शहद दो तोला मिला कर थोड़ा २ कान में डाले, या एक कपड़े की बत्ती बना उसको ऊपर की दवाइयों में लपेट कान में रक्खे।

४—कान में शब्द होना — यदि खुश्की से हो तो बादाम रोगन डालना।

२—केसर और कोड़िया लोबान एक २ मा० लेकर शराब बिरांडी में मिलाकर दो २ बूंद कान में डालना।

५—बहरापन — बुढ़ापे का बहरापन कठिनता से जाता है उस से पहिले के लिये—

१—लहसुन का रस ४ तोला कड़वा तेल ८ तोला में पकावे जब तेल रह जावे उतार, ठंडा कर दो दो बूंद कान में डाले।

२—कान को पिचकारी से धोकर हाईड्रोजन परआोक्साइड (Hydrogan paroxide) (अंग्रेज़ी दवाखाने में, ।) में आधी छटाँक मिलता है) डाल १० मिनट बाद फिर पिचकारी से धोवे और फिर बादाम का तेल ~~५~~— तारपीन ३ ड्राम मिलाकर शीशी में रक्खे और जब गाढ़ा हो जाय तब दो बार कान में डाले यदि गाढ़ा होने में कुछ कसर रहे तो एक ड्राम लाइमवाटर मिला दे।

कानो की सांय २ और कम सुनाई देने में

१—के लिये मीठा तेल आधपाव, धतूरे के पत्ते का रस आधपाव आक के पत्ते का रस १ छटांक, नमक ६ मा० डालकर अग्नि पर तेल सिद्ध कर, एक दो बूंद कान में डाले।

२—ब्राडी),।।, अफीम ४ तो० धूप वा चांदनी में रख कान में दो दो बूंद डाले।

३—नीम के पत्ते, असली हींग, समुद्रफेन, संखिया छः छः मा० ले),। भर सरसों के तेल में खूब महीन घोट कर डालदे, फिर १ सेर गाय की पेशाब डाल पकाले तेल शेष रहने पर उतार कान में डाले समस्त कान के रोग और बहरापन भी दूर हो जाता है।

कान के नीचे गांठ पड़ जाने की चिकित्सा।

एलुवा, पपरिया कत्था, गूगल तीनों को सिरका में पीस गुनगुना लेप सायं प्रातः करने से कर्णमूल समूल दो दिन में नष्ट हो जाता है।



सूजन कान के नीचे इधर उधर एक गांठ भी निकल आती है उसे कनवर बोलते हैं इस के उठते ही औषधि करना चाहिये।

१—यदि सुर्ख हो और कड़े हों तो जोंकें लगवा देवे।

२—अजवायन को सिरका में पीस गरम कर गुनगुनी लगावे।

३—सुपारी, लाल चन्दन, एलुआ एक २ तोला लेकर सिरका या गुलाब के अर्क में रांध गुनगुनी लगावे।

४—काली जीरी, कलोंजी, कायफल, कुलथी, सोंठ एक २ तो० ले पीसकर पानी में रांध कर लगावे।

७—**कान का कटना या उखड़ आना**

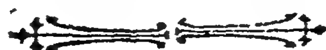
यदि कान कटने लगे तो बबूल या इमली की छाल सूखी जलाकर कान पर कड़वा तेल चुपड़ ऊपर से छाल की राख बुरक दे। यदि जड़ से उखड़ आवे तो तुरन्त ही जहां का तहां रख कर पानी की गद्दी बांध दे और पानी से उसको तर रक्खे और मैदालकड़ी, एलुआ, मेंहदी, बबूल की फली या पत्ती एक २ तो० लेकर पानी में पीस लगा देवे।

८—**यदि कानमें पानी भर जावे**

तो एक पांव से कूदे।

२—इसपंज का टुकड़ा कान में डाले।

३—एक पतली लकड़ी में सिरे पर मोम लगावे उस से कान में यदि कोई अनाज का दाना वगैरा होगा निकल आवेगा यदि कानमें कानसलाई घुस जावे तो कड़वे तेल से कान को भर दे।



मुख रोग और उनकी चिकित्सा ॥



१-होठ की सूजन, २-होठ की खुशकी, ३-दांत के दर्द में। ४-दांतों के हिलने में। ५-दांतों के कुन्द हो जाने में। ६-दांतों में कीड़ा लग जाने में। ७-दांतों के कमज़ोर और सुराखदार होजाने में, ८-दांतों को बलवान बनाने को मंजन, ९-सोते समय दांतों के कटकटाने में, १०-दान्ती मिच जाने में, ११ मसुड़ों की सूजन, १२-मसुडों से खून निकलने में। १३मसुडों में नासूर १४ मुह के छाले। १५ मुह से लार बहने में। १६ मुह से बदबू आने में। १७ जीभ के मोटे और भारी हो जाने में। १८ मुह की कीलें और झाई में। १९ मुहासा और झाई में।

होठ की सूजन ।

१—निर्बिसी २ मा०, रसोत ४ मा०, अर्क गुलाब में घिसकर गुनगुनी कर लगावे ।

२—ईसबगोल को सिरका में पकाकर लगावे ।

३—मुरदासंग को अर्क गुलाब में घिस कर दिन में कई बार लगावे ।

४—त्रिफला को सिरका या अर्क गुलाब में पका कर लगावे ।

होठ की खुशकी ।

१—तरबूज की मींग को पानी में घिस कर लगावे ।

२—ईसबगोल के लुआब में सफेद कतीरा मिला कर लगावे ।

३—मोम और रोगन बादाम को मिला कर लगावे ।

४—सेंधा निमक पीस कर घी में मिला लगावे ।

दांत के दर्द में ।

१—अकरकरा १ मा०, कपूर १ मा०, पीस कर मले ।

२—काली मिर्च १ तो० फिटकरी सफेद २ तो०, कंजा के बीज की मिंगी ३ मा०, तमाखू का फूल १ मा०, बारीक पीसकर दांतों में मले ।

३—खुरासानी, अजवायन १ तो०, कत्था सफेद १ तो० हरड़ पीली १ तो० कालीमिर्च कूट, एक २ तो० सौंठ ६ मा० कूट पीस कर मले ।

४—मस्तगी, सौंठ, काली मिर्च, सफेद कत्था, सफ़ेद जीरा, सड़ी जली हुई सुपारी, फिटकरी, बड़ी इलायची के दाने, लाहोरी निमक एक २ तोला लेकर मंजन बना लगावे।

लाक्षादि तेल मलना

बनाने की विधि।

तिल का तेल ऽ१, लाख का रस ऽ१, लोध, कायफल, मजीठ, कमलकेसर, पद्ममाख, चन्दन, नीलोफर, मुलहठी चार चार तो० चौगुने जल में काढा पकावे, फिर तेल में पकावे। उंगली से दान्तों में मला करे।

६—मंजन—जली तम्बाकू की जड़ी (जो जलते जलते चिलम के नीचे रह जाती है) ऽ= काली मिर्च १ तोला, तेज पत्र २ तोला लाख पीपल २ तोला, जला हुआ कुचला १ तोला, कूट छान, मंजन बना लगावे।

७—तेजबल को कूट पीस दांतों से मलना।

८—सेंजने की छाल, फिटकरी अथवा केवल सेंजने की छाल चाबने से दांतों के रोग नष्ट होते हैं।

९—फिटकरी का फूला मले।

१०—जीरा सफेद २ तो०, जीरा स्याह २ तो०, हीराकसीस २ तोला सीतलचीनी २ तो० मिर्च काली ४ तोला

पांचों नमक ५ तो० मजीठ ४ तोला, त्रिकुटा ३ तो० त्रिफला ३ तो० छोटी इलायची के दाने ३ तो० फिटकरी ३ तो० सेलखड़ी ४ तो०, मस्तगी ४ तो०, तेजपात्र २ तो०, कमलगट्टा १० अदद, मोथा ३ तो० कपूर कचरी २ तो० तूतिया का फूला २ तो० तवासीर २ तो० माजूफल ५ अदद नीलाथोथा २ तो०, कायफल २ तो० धनिया २ तो० कत्था २ तो०, अकरकरहा १ तो० दालचीनी २ तो० इलायची खुरद २ तो०, हरड़ छोटी २ तो० सुपारी दक्खिनी २ अदद, नागकेसर १ तो०, बुरादा सन्दल सफेद ४ तो० समुद्रफाग २ तो० सोसन के बीज १ तो० भारंगी १ तो० लोध १ तो० पोस्त १ तो० बालछड़ ३ तो० माई छोटी १ तो० बुरादा आहन २ तो० तमाखू खाने की १ तो० पतंग २ तो० पोस्तरीठा २ तो०, लौंग छिलका १ तो०, बादाम जलाया हुआ ५ तो० कुचला जला हुआ २ तो०, सुपारी जली हुई ४ तो०, कन्जा जला कर ४ तो० बर्ग बबूल ५ तो० छिलका मोलसिरी सब्ज ५ तो० छिलका आंक की जड़ का ५ तो०, गुलअनार २ तो०, जरावन्द १ तो०, सब को कूट पीस छान दांतों पर मले।

११—नीलाथोथा, कत्था सफेद चौदह २ मा०, सेंधा नमक ७ मा० जीरा सफेद ३॥ मा० धनिया भुनी हुई ७ मा०, सोंठ १॥। मा० मिर्च १॥। मा० मस्तगी, कसीस, कपूर कचरी, कबाबचीनी, मौलसिरी प्रत्येक पौने दो २ मा० नीला थोथे की आग में खील

कर लेवे फिर सब को अलग २ पीस छान कर लगावे इस से दांतों का दर्द, लोहू का निकलना, हिलना, सूजन यह सब दूर हो, दांतोंकी जड़ मज़बूत हो। मसूड़ों का खराव मांस दूर हो दांतों की सब बीमारियां दूर होवे।

१२—सेंधा नोन और तेल मलने से दांत मजबूत होजाते हैं।

१३—अञ्जील सफेद, स्याह मिर्च, रूमामस्तगी, बड़ी पीपल कपूर कचरी, कशनीज खुश्क एक १ तो० जीरा सफेद, कत्था दो २ तो०, कबाब चीनी १ तो० नीलाथोथा ६ मा०, नमक लाहौरी ३ तो०, धनिया १ तो० कूट पीस छान दांतों पर मले॥

सुगन्धित दन्त मञ्जन।

१४—सोंठ, दारचीनी, मिरच, लौंग, कपूर, सुपारी की राख कत्था एक २ तो०, खड़िया मट्टी ७ तो० मिलाकर दांतों पर मले दांत चमकीले और सुगन्धित होवें।

४-दांतों के दर्द और हिलने पर।

१५—काली मिर्च, माजू, भुनी फिटकरी, नागर मोथा, सफेद इलायची के बीज, रूमामस्तगी, गेरू, हंसराज सेलखड़ी, राल, कत्था, आंवला, जली सुपारी छः २ मा० अकरकरहा, तूतिया भुना हुआ चार २ मा० सब को पीस मञ्जन बनावे।

१६—रूमामस्तगी का टुकड़ा दर्द की जगह पर दबा रक्खें पीड़ा बन्द हो जायगी।

१७—बादाम के छिलके जले हुए १ छ० जली सुपारी खरियामट्टी एक २ छ० सेलखरी, रूमामस्तगी एक २ तो० मिला पीस कर लगावे।

१८—माजूफल, छोटी बड़ी माई, बड़ी हरड़, आंवला, अनार के फूल, गुलाब के फूल एक २ तो० तूतिया फूला कर के ३ मा० मञ्जन बना लगावे।

१९—वायबिडंग, कालीमिर्च, छोटी पीपल, सोंठ, नागरमोथा नींबू के पत्ते एक २ तो० लेकर पीस छानकर गाय के पेशाब में चने के बराबर गोलियां बनाले एक गोली रात को मुंह में दबा कर सो जावे सुबह थूक कर कुल्ला कर डाले।

५-दांतों का कुन्द हो जाना।

खटाई खाने से दांत कुन्द हो जाते हैं।

१—गरम २ मोटी रोटी दांतों में दबावे।

२—वायबिडंग, अकरकरहा एक २ तो०, अजवायन खुरासानी [illegible] तो० आध सेर पानी में औटावे पाव भर रह जाने पर गरारे अर्थात् कुल्ली करे।

६-दांतों में कीड़ा लगजाने में।

१—मस्तगी रूमी १ तो०, कपूर ४ मा०, महीन पीस कर दांतों में भरदे।

२—आक के पत्ते के रस में थोड़ी हींग मिलावे पीसकर और फिर गुनगुना कर जिधर की दाड़ में कीड़ा लगा हो उसकी उलटी तरफ के कान में डाले।

७-दांतों के सुराखदारहोजाने में।

१—कपूर ४ मा० रूमामस्तगी १ तो०, वारीक पीस दांतों के सूराखों में भरना।

२—चांदी की रेती से रितवाकर छेदों में मोम मिला कर भरदे॥

८-दांतों को बलवान बनाने को मंजन।

१—सोना मखी, फिटकरी, माजू, हल्दी, मस्तगी, गेरू, चाकसू, जला हुवा बादाम का छिकल, लाल इलायची के दाने, हरड़ का वक्कल, मजीठ बराबर २ लेकर पीस छान कर मंजन बना लगाना।

२—छोटी माई, सुपारी जली हुई, जों जले हुए, कत्था सफेद, गुलाब का जीरा, बालछड़, जला हुवा बारह सिंगा, नमक लाहौरी बराबर बराबर ले मंजन बना लगाना।

३—सफेद चन्दन, करंज के बीज की मिंगी, भुनी हल्दी भुनी फिटकरी, भुना नीला थोथा, चाकसू, गुलाब के फूल, खुरासानी अजवायन बराबर २ ले कूट छान कर मंजन बना लगावे।

४—नागरमोथा, बालछड़, दस दस माशा, चन्दन लाल, फिटकरी, गेरू एक २ तोला बबूल की छाल २ तो०,

जली सुपारी २ तोला, जला हुआ बिनौला, कंजा के बीज जले हुए, अजवायन खुरासानी दो दो तोला। सब को कूट पीस मंजन बना लगाना।

मिस्सी।

१—माजूफल ५ तो० कत्था सफेद १ तोला, नीलाथोथा का फूला १ तोला, छोटी इलायची २॥ तोला, रूमामस्तगी ६ माशा, हीरा कसीस, सोना मक्खी छः छः माशा मंजन की तरह पीस कर लगावे।

बच्चों के दांत।

आसानी से निकलने के लिये मोम का तेल, सिर और गर्दन पर लगावे, हिना अथवा गुलरोगन को सिर पर मले, और कड़वा तेल पुराना गुनगुना कानों में डाले मकोय की पत्ती के रस में गुलरोगन मिलाकर दांतों और मसूड़ों पर लगावे, सिप्पी में छेदकर गले में बांधे।

६-सोते समय दांत कट कटाना।

१—मस्तगी, वायविडंग दांतों पर मले।

२—नीलकंठ का पर गले में बाँधना।

१०-दांती मिचजाने में।

१—अकरकरहा, सोंठ, लाहौरीनमक बारीक पीस दांत पर मले।

२—कड़वे तेल में पारा को हलकरे फिर १ छोटा जायफल पीसकर उस में मिलावे फिर कन्पटी पर मले।

३—नकछिकनी, सोंठ बारीक पीस नास लेवे

४—१ छटांक कड़वा तेल लेकर उसमें ४ तो० लहसन का अर्क और २ तो० कायफल का चूरन डाल आग पर पकावे जब सिर्फ तेल रह जाय उतार छानकर दांतों पर मले।

सरसामी हालत में भी दांत मिच जाते हैं उसमें भी उपरोक्त नुसखे इस्तेमाल कर सकते हैं।

११-मसूढ़ों की सूजन।

१—धनिया २ तोला, गुलाब के फूल १ तोला, लाल चन्दन १ तोला, कपूर २ माशा, मंजन बना लगावे।

२—काली मिर्च, फिटकरी, बड़ी हैड़ एक एक तोला, सेंधा नमक ६ माशा मंजन बना मसूड़ों पर मले।

३—अकरकरहा १ तोला, काली मिर्च १ तोला मकोय के पत्ते २ तोला बबूल की छाल ३ तोला आध सेर पानी में औटाकर, पाव भर रह जाने पर उतार छान कुल्ली करे।

१२-मसूढ़ों से खून निकलना।

१—बबूल की छाल १० तोला सुपारी जलाकर ४ तोला कत्था सफेद २ तोला, फिटकरी १ तोला सेलखड़ी २ तोला, मञ्जन बना लगावे।

२—सिप्पी की राख, कौड़ी की राख, समुद्रसोख, फिटकरी सफेद का फूला, बादाम के छिलके की राख दो दो तोले लेकर मञ्जन बना लगावे।

१३-मसूड़ों में नासूर ।

१—माजूफल, हीरा कसीस, माई, फिटकरी सफेद का फूला, रूमामस्तगी, हर्र पीली का वकला, तूतिया का फूला- ववूल की छाल की राख, नागरमोथा एक एक तोला लेकर कूट पीस मञ्जन की तरह लगावे ।

२—ववूल की फली, सफेद फिटकरी, अनार के फूल एक एक तोला लेकर मञ्जन बना लगावे ।

१४-मुंह के छाले ।

१—बकायन की छाल १ तो०, कत्था सफेद १ तो०, कूट छान मुंह में छिड़के ।

२—छोटी इलायची के दाने, कत्था सफेद, फिटकरीसफेद एक २ तोला पीस छान लगावे ।

३—लोध, कालीमिर्च, फिटकरी, गेरू छः २ मा० नीला थोथा फूला किया हुआ, छालों पर छिड़के ।

४—त्रिफला चार तो० को सेर भर पानी में औटावे डेढ़पाव रह जाने पर उतार छान गुनगुने से गरारे करे ।

५—फिटकरी सफेद का फूला १ तो० माजूफल १ तो० पीस छान मुंह में छिड़के ।

१५-मुंह से राल बहने में ।

१—१॥ तो० फासनी को आधपाव गरम पानी में भिगोदे

४ घन्टे बाद मल कर छानले और तीन तो० सादह सिकंजबीन मिला कर पीवे ।

२—त्रिफला २ तो० को आदपाव गरम पानी में भिगो कर मल कर छान १ तो० शहद मिला कर पीवे ।

३—राई और मिश्री को बराबर २ ले कूट छान ३ माशे की फंकी लगा ऊपर से बहुत ठंडा पानी पीवे ।

१६-मुह में बदबू आने में ।

१—कबाबचीनी, रूमामस्तगी, नागरमोथा, जावित्री जायफल, अगर, एक २ तो० लेकर अर्क गुलाब में चने की बराबर गोलियां बना कर एक २ गोली सुबह शाम मुंह में डाले ।

२—चिकनी सुपारी, लौंग, अकरकरहा चार २ मा० सफेद चन्दन का बुरादा, गुलाब के फूल छोटी हर्र तबासीर आठ २ मा० कस्तूरी २ रत्ती, सब को कूट पीस गोली बना मुंह में रक्खे ।

३—जौ के सत्तू, मिश्री के शरबत में घोल कर पीवे ।

४—पान में पीपर मेन्ट डालकर खावे ॥

१७-जीभ के मोटे और भारी होजाने में

१—राई कालीमिर्च, छोटी पीपल, नौसादर बराबर २ ले कूट पीस जीभ पर मले ।

२—राई को पीस पानी में औटावे और खूब गरारे करे ।

१८-मुंह की कीलें और झाई की दवा।

१—नांरगी या सन्तरा के छिलके, मेंहदी, चमेली नागरमोथा, लाजवर्द, जौ. मसूर, सर्षों, लालचन्दन, समभाग ले अटगुने पानी में १० तो० तेल डाल जब सिर्फ तेल ही रह जाय उतार कर लगावे या बराबर की चिरोंजी मिला उबटन करे।

२—(वहारहुसन) सोडा वाईकारव १ तो० गिरी वादाम ६ तो० नशास्ता ४ तो० केसर ३ माशे गुलाव के खुश्क फूल १ तोला सब को मिला ३मा० रोज मुंह पर लगावे।

३—केले के जड़ की राख और हल्दी का चूरन मिला कर लेप करने से झाई आराम होती है।

४—अपामार्ग वूंटी के पत्ते के रस में मूली के वीज पीस कर लेप करने से भी आराम होता है।

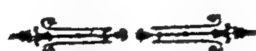
१९-मुहांसा।

लालचन्दन, मजीठ. खाने की हल्दी, माल कंगनी, लोध. वरगद की पतली जटा लाल २ सी एक २ तो० चिरोंजी ४ तो० सबको कूट पीस थोड़ी २ अर्क गुलाव में मिला कर लेप करे, दो घंटे वाद मसूर की दाल बकरी के दूध में पीसकर उबटन कर नीम के साबुन से मुंह धो डालो।

इमली के वीजों की मींग पानी में पीस लगावे।

जायफल ८ भाग भुनासुहागा १ भाग दोनों चीजें दूध में घिस कर या पीस कर मुहांसों पर लगावे।

कण्ठ रोग और उनकी चिकित्सा।



१-स्वर भेद में। २-हकलाने में। ३-हलक का बन्द होजाना। ४-आवाज बन्द होजाने में। ५-हलक के छालों में। ६-कौआ लटक आने में। ७-हलक में जोंक लिपट जाने में। ८-हलक में कांटा लग जाने में।

स्वरभेद पर

१-पाव भर गरम दूध में १ छटांक आंवले का चूर्ण डालकर थोड़ी देर रखा रहने दे फिर कपड़े से छान कर पीवे।

२-हकलाना

१—राई, अकरकरहा, नौसादर, तीन २ मा० आधसेर पानी में औटाकर गरारा करे। मीठे बादाम चबाया करे।

३-हलक का बन्द हो जाना

इसमें गले से कान तक सूजन हो जाती है यदि कफ

के कारण हो जुल्लाब दे और रक्तपित्त से हो तो गले में जोंके लगवावे।

१—जौ का आटा, बाबूना, बनफशा, तुख्मखत्मी सबको बराबर २ ले अर्क मकोय या गुलाब में पीस गरम कर सूजन पर लगावे।

२—सफेद चन्दन को अर्क गुलाब से घिस गरम कर लगावे।

३—सफेद चन्दन, मकोय के पत्तों को पीस थोड़ा बादाम का तेल मिला गरम कर सूजन पर लगावे।

४—अकरकरहा और सोंठ को पानी में औटा ग़रारे करे।

५—रूमी सौंफ, बालछड़, बहमनसुर्ख, रूमामस्तगी को पानी में औटा कर ग़रारे करे।

६—उन्नाव, सिपिस्तां, गुलबनफ़शा, चार २ तोले लेकर सेरभर पानी में औटावे तीन छटांक रह जानेपर उतार मलकर छान फिर कड़ाही में डाल डेढपाव मिश्री डाल कवामसा बनाले २ तोला सुबह २ तोला शाम को चटा कर २-३ घूंट गुनगुना पानी पिलावे।

४-आवाज बन्द हो जाने में।

१—मक्खन और मिश्री चाटे।

२—माउल अस्ल (शहद का पानी जिस का वर्णन पहिले हुआ है ४ रत्ती हींग मिलाकर गुनगुना पिलावे।

३—काली मिर्च, राई और हींग को एक २ माशा ले शहद में मिला कर चाटे।

४—काली मिर्च, बड़ी पीपल, सात २ माशा, दालचीनी, लौंग, कवावचीनी, केसर एक २ माशा मिश्री १४ माशा सब को कूट पीस पान के अर्क में एक २ रत्ती की गोली बना ले और सुबह शाम और रात को एक २ गोली खावे।

५—मुलहठी का सत, अलसी, कतीरा, गोंदबबूल, मीठा बादाम की गिरी, चिलगोजा की गिरी, बराबर २ ले पीस शहदमें गोलियां बना ले और मुंहमेंरख चूसाकरे।

६—तालीस पत्र, पीपल छोटी, हरड़ पीली का बक्कल, दुधियाबच, अडूसा के पत्ता, मिश्री सब को बारीक पीसे सब को बराबर २ ले और १ माशा दवा १ माशा मक्खन और १ माशा शहद मिलाकर प्रातःकाल चाटे।

७—कर्र के बीज, बादाम की गिरी एक २ तोला लेकर पीस तीन छटांक पानी में कड़ाही में डाले और काली मिर्च, दालचीनी और बड़ी इलायची के दाने एक २ माशा पीस कर मिला और एक तोला गाय का घी डाल आंच पर पकावे जब खूब पक जावे तब २ तो० मिश्री या बूरा डाल पीवे।

८—अलसी के लुआब में शक्कर मिला घूंट २ पीवे।

९—बादाम की गिरी, मुनक्का, दस २ छोटी पीपल १ मा० काली मिर्च १ मा० सात छोटी इलायची के दाने कूंडी में घोट आद पाव पानी में छान शहद और मिश्री मुवाफिक की मिला कर पीवे।

५-हलक में कुरह (छाले) पड़ जाने में

१—अनारदाना, माजूफल, कतीरा सबको बराबर ले कूट पीस पानी से गोलियां बनाले और मुंह में रख चूसे।

२—छोटी पीपल, दारुहल्दी, रसौंत, पलासपापड़ा सब को बराबर २ ले कूट पीस शहद से गोलियां बनाले फिर एक २ गोली मुंह में रख कर चूसे।

मुंह और गले के छालों को तेल

१—हल्दी, मुलहटी, नीम के पत्ते, कमलगट्टा की गिरी दो २ तो०, तिल का तेल ८ तो० पहिले सब दवाइयों को एक सेर पानी में एक रात भिगोदे दूसरे दिन औटा कर पाव भर रह जाने पर उतार छान (खूब मसल कर छाने) तिली का ८ तो० तेल डाल पकावे जब सिर्फ तेल ही रह जावे उतारले और इस में फोहा बना मुंह में रखे।

६—कौआ का लटक आना या फूल जाना

१—चूल्हे की लाल मिट्टी और काली मिर्च बराबर २ ले अंगूठे या उंगली से काग पर लगावे और मुंह से राल गिरावें।

२—माजूफल को अर्क गुलाब और सिरका में पीस तालू पर लगावे।

३—केसर को गुलाब में घिस कर नाक में टपकावे।

४—माजूफल, माई, गुलाब के फूल का जीरा, अनार की कली, बबूल की फली सब को बराबर २ ले कूट पीस गुलाब या सिरका में लगावे।

७-हलक में जोक लिपट जाने को

१—तमाखू को नमक मिला खिला ऊपर से गुनगुना पानी पिला देवे कै होकर जोंक निकल जावेगी।

२—नौसादर नीम के पत्ते तीन २ मा०, २० तो० सिरका में औटाकर गरारे करे।

३—राई और कलोंजी पीस कर नाक में फूंके।

४—गन्धक को हुक्के पर या नरकुल के सिरे पर रख जलाकर धुवां खेचें गन्धक का धुवां लगते ही जोंक पेट में चली जायगी फिर कै और दस्त करादे।

८—हलक में कांटा लगना

१—लौंग को मुंह में पकड़ चूसे।

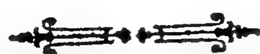
२—बकायन के पत्तों को पानी में उबाल गरारा करे।

३—स्पंज का टुकड़ा धागे में बांध कर निगले ऊपर से थोड़ा पानी पीवे फिर धागे से स्पंज को खींचले।

४—मोम को शहद में सान धागे से बांध निगले और थोड़ी देर बाद धागे को झटकादे बाहर निकाल ले कांटा उलझ कर बाहर आजावेगा।



हृदय रोग और उनकी चिकित्सा ।



१—दमा । २-खांसी । ३—छाती के दर्द में । ४ खून थूकने में । (सिल में) ५--खफक़ान में । ६-बेहोशी में । ७—पाराडु रोग में ।

दमा ।

१—सुहागा, एलुआ बराबर २ ले बराबर के पुराने गुड़ में मिला चने की बराबर गोली बनाले और १ गोली सुबह १ शाम को गुनगुने जल से खावे ।

२—४ रत्ती केशर माडल अस्ल[1] से खावे ।

३—सुहागा २ तोला, शहद असली ४ तोला में मिलावे और सुबह शाम एक २ उंगली चाट लिया करें ।

४—मैनफल के बीजों की गिरी १ माशा खाकर ऊपर से माडल असली पीवे ।

नोट–१ माडल असल बनाने की तरकीब पहिले पृष्ठों में देखिये

२५५ ५ १४

५—२ रत्ती सीप की भस्म, १ माशा अदरक के रस में खावे ।

६—पीली हरड़ को कूट हुक्के में धरके पीवे ।

७—काकड़ासींगी, पीपल, लौंग, अनार के छिक्कल, मुलहटी, जवाखार वरावर २ लेकर कूट पीस एक २ माशा शहद में मिलाकर चाटे ।

८—आक के फूल की डोडी वीच की २ तोला, लौंग, जायफल एक २ तो० सोंठ ६ माशा, केसर ४ मा० पान के रस में मटर के वरावर गोली वना एक २ गोली गुनगुने जल से खावे ।

९—मुलहटी का सत, पीपल, अकरकरहा, तवासीर छः २ माशा मिश्री २ तो० चूरन वनाले, एक २ माशा सुवह, शाम फांक ऊपर से २, ३ घूंट गुनगुना पानी पीवे ।

१०—देसी अजवायन और खारी नमक दो २ तोला मदार अर्थात् आक के पीले पत्ते २५ अदद ले अजवायन और खारी नमक को पानी में पीस पत्तों पर लपेट सुखाले और तह लगा २ कर एक मट्टी के वर्तन में रख वर्तन का मुंह लेहस और मट्टी से वन्द कर गजपुट में फूंकले जव फुंक जावे थोड़ा पानी डाल चने की वरावर गोली वनाले और मुंह में एक २ गोली रख चूसा करे ।

११—गेहूँ और खाने की हल्दी को तीन २ तोला लेकर शकोरे में बन्द कर जलावे फिर ५ तोला मिश्री मिलाकर ४ माशा रात को खाकर ऊपर से गरम गरम पानी पीवे २१ दिन तक ।

१२- **शरवत जोफा** सूखा जोफा १॥ तोला मुलहटी १॥ तोला तुख्म मेथी ९ माशा सौंफ ६ मा०, अजमोद ६ मा०, अन्जीर कन्धारी १० अदद, मुनक्का ४५ अदद, गुलकंद ६ तो० सब को १ सेर पानी में पकावे जब चौथाई रह जावे आध सेर मिश्री डाल क़िमाम करले खुराक दो से तीन तोला तक दूने गरम पानी में मिला कर पीवे । बुखार, कफ़ की खांसी को दूर करे ।

१३- **ठण्ड की खांसी वा दमा को** अकर करहा २ माशा मुलहटी ४ मा०, कलोंजी ४ मा०, मोम २ तोला, तिलका तेल ६ तोला, तेल में मोम गरम करे फिर और दवाइयां कूट पीस कर मिलादे सीने पर गुनगुना यह तेल लगावे, ऊपर से कपड़ा लपेटे ।

१४—बनफशा और नीलोफर के फूल एक २ तोला काहू के बीज ३ तो०, कशनीज ३ तो० पानी में पीस २० तोला कड़वे तेल में जलावे जब तेल रह जाय उतार छान इस्तेमाल करे यदि २ तोला मोम मिलाले तौ और अच्छा ।

१५—मूली के बीजों को खूब बारीक पीस बराबर के शहद में मिलाकर गरम करे रात को सोते वक्त १, १॥ तोला खाकर गुनगुना पानी पीवे।

१६—**भारंगी अवलेह** भारंगी २५ तोला, पीली हर्र २० तोला शहद १५ तो०, पीपल २ तो०, नाग केसर, तज, सोंठ, तेजपत्र, जवाखार, दो २ तो०, पुराना गुड़ १ सेर, भारंगी का काढ़ा बना, गुड़ की चासनी कर सब दवाओं को उस में डालदे, ६ माशे से १ तोला तक रात को खा गुनगुना पानी पीवे।

१७—सफेद फिटकरी १ तो० पीपल १ तो० फिटकरी का फूला करे उसी में पीपल के चूरन को डाल दे चार चार रत्ती शहदमें चटावे ऊपरसे गुनगुना पानी पीवे।

१८—अलसी और मेथी के बीज छः २ मा० मुनक्का १ तो० तीन पाव पानी में औटावे तीन छटांक रहजाने पर १ तो० मिश्री १ तो० शहद मिलाकर दो बार में पिलावे।

१९—छोटी कटाई की जड़, भंगरा, काकड़ासींगी, पीपल, नरकचूर, पोहकरमूल, गिलोय छः २ मा० ले काढ़ा बना १ तो० शहद मिलाकर पिलावे।

२०—भंगरा, काकड़ासींगी, पोहकरमूल, पीपल, काली मिर्च, छोटी कटाई, नमक लाहौरी, काला निमक लोटनसज्जी बादरंजोआ (बिल्ली लोटन) बराबर बराबर लेकर चूरन बना एक २ मा० सुबह दोपहर

और शाम को खाना ऊपर से २-३ घूंट गुनगुना पानी पीना ।

२१—त्रिफला का चूरन (भटकटैया छोटी का पञ्चाग) काकड़ासींगी, दखिनी काली मिर्च, छोटी पीपल, वेतलासोंठ, भारंगी, पोहकरमूल, अलसी पांचों नोन समान भाग ले चूरन वना ३ माशे से ६ माशे तक गुनगुने जल से सेवन करे ।

२२—धतूरे का पञ्चाग चिलम में धरके पीवे ।

२३—१ या २ अरलु के वीज और १ मा० मुलहटी का चूरन, २ माशा शहद में मिलाकर चाटे ।

२४—साफ अलसी कढ़ाही में भूनले फिर पीसकर बराबर की मिश्री मिला और थोड़ी काला मिर्च मिला छः२ मा० की शहद में गोली बना ले चार २ घंटे में एक एक गोली खावे १ घंटा तक पानी न पिलावे ।

२५—साफ गुलावी फिटकरी और साफ नौसादर पाव २ भर लेकर कूट पीस डमरू यंत्र से जौहर उड़ा ४ चावल पान में रख उसका रस चूसे पहिली मात्रा से ही फायदा होता है ।

२६—हीरा हींग का घी में किया हुआ फूला १॥ तो० छोटी पीपल ३ तो०, उरद की धोवा दाल ३ तो०, सव का चूरन कर अकौआ के दूध में खरल कर अठन्नी के बरावर २ टिकिया वना साया में सुखा वकरी की लेड़ी की निर्धूम अग्नि में रखकर जलावे

अधजली होने पर निकाल लेना । १ टिकिया सुबह १ शाम को शहद में मिला कर चाटना ।

२७—गूलर के पक्के फल, फूल, पत्र छाल लेकर चौगुने जलमें क्वाथ बना चौथाई रह जाने पर मुवाफिक की शकर डाल शर्वत बनाले, २ तो० सुबह, दोपहर, शाम को सेवन करना ।

२८—ईसवगोल की भूसी ३ मा० दूध या शर्वत बादाम में पीना ।

२९—कलमीशोरा, फिटकरी, सुहागा, नवसादर, बराबर बराबर लेकर पहिले कलमीशोरा, और फिटकरी को कढ़ाही में डाल पिघलावे जब खूब पिघल जावें तब सुहागा और नवसादर डाल दे जब खूब फूल आवे उतार कर रखले १ माशा पान में रखकर सेवन करने से भयंकर श्वांस अच्छा होता है ।

३०—कचूर, कमलगट्टा की गिरी, दालचीनी, नागरमोथा पुहकरमूल, आंवला, छोटी इलायची, पीपल, काला अगर, सोंठ, भीमसेनी कपूर बराबर २ ले बारीक पीस दूनी मिश्री मिलाले छः २ माशा सुबह शाम शहद के साथ सेवन करे ।

श्वांस के प्रबल वेग पर

३१—३ मा० कपूर, ०॥ तो० तारपीन का तेल मिला छाती पर मालिश करे तथा राई और निमक को बराबर २ ले पीस पोटली बांध सेके इस क्रिया से

कफ़ वहुत शीघ्र निकल जाता है स्वांस का वेग घट जाता है।

३२—मीठे अनार को आधा तरास कर आधे अनार के भीतर से दाने निकाल ले उन निकाले दानों के साथ अजवायन २ तो०, लौंग २ तो०, मुलहटी २ तो०, सेंधा नमक २ तोले लेकर पीसकर कपड़छन कर अनार के वक्कल में भरदे ऊपर से दानेदार अनार लगा कपड़ मिट्टी कर सुखा ५ ऊपलोंकी अग्निमें फूंके स्वांग शीतल होने पर निकाल एक २ रत्ती पान में रखकर खाने से कफ़ पतला होकर निकल जाता है और सांस खांसी अच्छी हो जाती है।

३३—नीम की पत्ती १ छटांक खूब वारीक पीस कर पिसे हुए १ छटांक खारी निमक मिला पतले सकोरे में रख मट्टी से लेस २-३ कंडों में फूंक ले २ रत्ती सुवह २ रत्ती शाम को बंगला पान या अदरक के रस और शहद में मिला कर खिलावे।

३४—पीपल की भीतरी छाल को कूटकर चूरन वना ६ मा० खीर में क्वार की शरद चांदनी पूर्णमाशी की रात्रि को डालकर दो घंटे रखकर खिलाना उस दिन सोना नहीं १ रात्रि में श्वांस जाता रहेगा।

३५—नशास्ता ३ मा०, रवुलखूस ३ मा०, कतीरा ३ मा०, समापगर्वी (गोंद कीकर) ३ मा०, शकरतकाल (एक जानवर का घर) ३ मा०, मगज़ वादाम शीरी १ तो० खतमी १ तो० मुरमुकी (गोंद की

तरह होता है जिसे बोल भी कहते हैं) ३ माशे, मगज कद्दू १ तो०, खुब्बाजी का आटा १ तो०, सिपिस्तां १ तो०, मुलहटी १ तो०, शहद १० तो० चटनी बना चाटना।

३६—गुलबनफशा ६ मा०, मुलहटी ३ मा०, उन्नाब ५ दाने, तुख्मखतमी ३ मा०, तुख्म खुब्बाजी ३ मा०, मुनक्का ७ दाने, हंसराज ३ मा०, खमीरा बनफशा २ तो०, पानी ऽ॥ में औटा कर जब ऽ= रह जाये उतार छानकर पीवे।

३७—काली मिर्च का चूर्ण १ रत्ती पक्के केले में चीरकर रात्रि में भरदेवे प्रातः मंदाग्नि से सेक सेवन करने से श्वांस रोग में आश्चर्य जनक लाभ होता है।

३८—१ सेर छोटी हर्र, १ सेर गोमूत्र में हांडी में बन्दकर कपड़ मिट्टी कर जमीन में गाड़दे उस के ऊपर आग जलाया करे ४० दिन के बाद ४१ वें दिन निकाले हरड़ों को कूट छान बबूल के गोंद ऽ। में गोली बनाले चाहे चूर्ण ही रक्खे बच्चों को ४ रत्ती से डेढ़ माशा तक। बड़ों को डेढ़ मा० से तीन मा० तक शहद में चटावे। तेल खट्टी चीज़ों से परहेज। घी, दूध, चीनी, गेहूँ की रोटी खावे। खांसी वा दमा को लाभ होता है।

३९—बहेड़े की बकली का चूर्ण १ मा०, १ मा० शहद के साथ अथवा मोर पंख की राख १ मा० शहद और पीपली के साथ चाटे। अथवा अडूसा, गिलोय, कटाई, कुटकी, छोटी हरड़ का काढ़ा पीना।

४०—फुंकी हुई मूंगा की जड़ २ रत्ती, बंगला पान में खावे।

४१—लहसोड़ा, मौरेठी, गुलेगावज़ुबां सम भाग, पावभर पानी में पकाओ जब खूब पकजावे तब मल कर छानले और दुगने शहत में किमाम कर छः २ मा० सुबह, शाम खाने से खाँसी, दमा वा ज़ुकाम अवश्य अच्छे होते हैं।

४२—कुचला १ माशा, जायफल ८ माशे, इन दोनों को पीस मूंग की बराबर गोली बना, १ गोली सुबह १ शाम को खावे—कफ़, दमा, खांसी दूर हो।

४३—बारहसिंगा के सींग की भस्म १ तोला, मिर्च काली १ तोला, सांभर नमक १ तोला में पीस ३ माशा पान के बीड़े में रखकर खावे १५ दिन में दमा दूर हो।

४४—३ तोला मलाई में १ तोला मिसरी मिलाकर खावे और दिन में दो बार घी में सेंधा निमक मिलाकर छाती और बगल में मालिश करे तो खांसी वा दमा दूर हो। यदि १ माशा तुलसी के पत्तों का स्वरस में ४ रत्ती शहद मिला कर चटावे तो बालकों की खांसी वा दमा दूर हो।

४५—संखिया भस्म १ तोला, अफीम शुद्ध २ माशा, एलुआ ३ माशा, एक तोला बादाम के तेल में खरल करे जब तेल सूख जावे १ सींक से लगाकर पान में खावे। घी खूब खावे।

४६—हरड़, पीपल, सोंठ, मिर्च सम भाग ले बराबर का गुड़ मिला चने की बराबर गोली बना सुबह शाम १ गोली गुनगुने पानी से खावे।

४७—१ मछली ले उस का पेट साफ कर ४-५ तोले फिटकरी भर गोसों (कंडों) में फूंकदे। २ रत्ती शहद में खिलावे।

४८—अभ्रक, सोरा बराबर २ ले बराबर के गुड़ में दो २ रत्ती की गोली बना खाना।

४९—धतूरे के पके पत्ते ५ तो० पकी भंग ५ तो० छाया में सुखाले १० तो० कल्मीशोरा को १० तो० पानी में रात भर भिगोदे जब शोरा पानी में खूब मिलजावे तब धतूरे और भांग की पत्ती उसमें डाल खूब मले और छाया में सुखाले, ९ मा० यूकलिपटिस आयल (तेल) को सब में मले फिर १ मा० तमाखु के साथ पीवे।

खांसी श्वांस पर

५०—शुद्ध मैनसिल १ तो०, त्रिकुटा ३ तो०, हींग का फूला ६ मा० वायविडंग २ तो० सैंधा नमक ३ तो०। सब को कूट पीस २ से ४ रत्ती तक फांक ऊपर से १ मा० अदरक का रस, १ माशा शहद मिला कर चाटे।



❀ खांसी ❀



१—मिर्च १ तो० पीपल ६ मा० अनार की छाल ४ तो० गुड़ ८ तो०, जवाखार ६ मा० कूट पीस चार २ माशे सुवह शाम खावे। पांच प्रकार की खांसी दूर हो।

२—लोंग, जायफल, पीपल एक २ तो० मिर्च २ तो० सोंठ ४ तो० मिश्री १० तो० महीन पीस छान तीन २ मा० सुवह शाम खावे। पांच प्रकार की खांसी दूर हो।

३—लोंग, मिर्च, वहेड़े की वकली छः २ मा० खैरसार १॥ तो० वबूल की छाल की काढ़े में चना सम गोली बनावे, १ गोली रोज खावे। ३ दिन में पांचों प्रकार की खांसी दूर हो।

४—पीपल, काकड़ासींगी, (छिली हुई मौरेठी) लौंग अनार की वकली, जवाखार छः २ मा० पीस छान शहद में झरवेरी के वेर के समान गोली बना छाया में सुखा मुख में रख चूसे तो दमा, खून थूकना, कफ थूकना इत्यादि दूर हो।

५—शूल, खांसी, व दमा, भुना सुहागा १ तो० एलुआ १ तो० गुड़ में मिला कर चना सम गोली बना

गुनगुने पानी से खावे। कब्ज, बद्धगुद, अफारा कृमि आदि दूर होते हैं।

६—मीठे नींबू का रस १ तो० मिर्च ६ मा० मिला कर देवे खांसी तुरन्त जावे।

७—बालकों को हर्रा १ मा० शहद में घिसकर देवे।

८—त्रिफला,त्रिकुटा बराबर २ ले कूट पीस चूरन बना एक २ मा० शहद में मिला कर चाटे।

९—पीपल, देवदारु, सोंठ,समभाग काढ़ा बना पीने से या चूरन खाने से उर्ध्व श्वांस जाता है।

१०—अमली के पत्ते के काढ़े में हींग और सेंधा निमक डाल कर पीवे।

११—काकड़ासींगी १ तो० पीपलामूल १ तो० सेंधा निमक १ तो० ले कूट पीस गोंद के पानी से चने की बराबर गोली बना गरम पानी से सेवन करे।

१२—बादाम, बीदाना, खशखाश, शकरतग़ाल (एक प्रकार की मक्खी का घर है) मुलहटी का चूरन नशास्ता बराबर २ ले सब की गोलियां शहद में चने के बराबर बना चूसनी।

खांसी जुखाम और उसके बुखारपर

१३—जहरमोरा १ मा० वंशलोचन ३ मा० केसर १॥ मा० सफेद इलायची १॥ मा० धनिया खुश्क ३ मा० जावित्री १॥ मा० जायफल १॥ मा० मुलहटी चूरन ३ मा० अफ़ीम १॥ मा० पान के रसमें चने

प्रमाण गोलियां बना एक २ गोली सुबह शाम गावजुवां के अर्क से सेवन करे।

१४—भटकटैया और ऊंट कटारा पचांग सहित लेकर एक घड़े में बन्द कर आग पर चढ़ादे जब कोयला हो जावे तब कपड़छन कर, २ चावल पान में खाने से खांसी दूर होती है।

१५—कटैली के काढ़े में पीपल मिला कर पिलावे। अडूसे की छाल किसमिस या मुनक्का और बड़ी हरड़ का काढ़ा ६ मा० शहद और ६ मा० चीनी मिला कर पिलावे।

बलगम को ढीला कर निकालने वाली

१६—गुलबनफशा ६ मा० मुनक्का १० दाने मुलहटी ४ माशा उन्नाब ७ दाना खतमी ६ माशा गावजुवां ६ माशा १ पाव पानी में काढ़ा कर पिलावे।

१७—ईसबगोल एक तोला, मिश्री १ तोला फांक कर गुनगुना दूध पीवे।

१८—सोंठ २ तोला बकरी का दूध एक पाव, पानी एक सेर मिलाकर औटाना केवल दूध रहने पर पीना।

१९—मूंगाभस्म, शंखभस्म, हरड़, आंवला, बहेड़ा, गेरू मिट्टी सब को बराबर २ ले कूट पीस एक २ मा० चूरन एक २ मा० घी शहद मिलाकर चाटना।

२०—बड़ी इलायची का चूरन और चीनी एक में मिला फांकना ऊपर से २-३ घूंट गरम पानी पीना।

१ तो० केले की जड़ का पानी ६ मा० चीनी मिला कर पीना।

२१—१ माशा गोल मिर्च का चूरन बराबर की चीनी और शहद मिला कर चाटना।

२२—मोर का पंख बन्द बरतन में भस्म कर पीपल का चूरन और शहद मिला कर खिलाना। इस से श्वाँस वेग और प्रबल हिक्क अच्छी होती है।

२३—हल्दी, गोल मिर्च, किसमिस, पुराना गुड़, रासना-पीपल शठी का चूरन बराबर २ ले कूट पीस एक एक माशा शहद में मिला कर चाटना।

२४—पीपल, =) भर सेंधा निमक =) भर अदरक के रस में देना।

२५—ऽ= दशमूल का काढ़ा वा अर्क में एक मा० कूठ का चूर्ण मिलाकर खाने से—कास, श्वास, पार्श्वशूल और छाती का दर्द आराम होता है।

२६—सोंठ, पीपल बराबर ले कूट पीस एक मा० की पुड़िया शहद के साथ खावे।

२७—काली मिर्च, जवाखार, अनारदाना एक २ तो० ले बराबर का पुराना गुड़ मिला कर झरबेरी के समान गोली बना प्रातः वा सायंकाल सेवन करे २-३ दिन में लाभ होगा।

द्राक्षावलेह

२८—मुनक्का १॥ पाव नींबू का रस ऽ॥ अकरकरहा २ तो० छोटी पीपल एक तो० पीपलामूल, सोंठ,

मिर्च,चव्यचित्रक एक २ तो० लौंग ६ मा० निमक सेंधा ६ तो० काला निमक १॥ तो० बूरा १ सेर।
बनाने की विधि-मुनक्का के बीज निकाल गरम पानी से धोलो फिर मुनक्कों को निम्बू के स्वरस में मंदाग्नि से सिजाकर उपरोक्त औषधियां और बूरा मिला नीचे उतार कड़ाही को कौंचे से चलाता रहे फिर कांच या मट्टीके चिकने वर्तन में भरकर रखदे। खाँसी, श्वांस, हैज़ा, हिक्का, वमन, अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि पर अकसीर है, स्वादिष्ट है।

२९—स्वाँसवटिका-शंखभस्म ६ मा० शुक्तिभस्म ५ मा० अडूसे का रस ऽ= कटय्या का रस ऽ- मौरेठी का सत २॥ तो० शहद ४ तो० ले सब को मिला, दो या तीन मा० खाना प्रातः वा सांयकाल को, ऊपर से २-३ घूंट गुनगुना पानी पीना।

३०—पपरियाकत्था ५ तो० तुख्मखतमी २ तो० वबूल का गोंद १ तो० कतीरा १ तो० वहेड़े की वकली १ तो० मुलहटी १ तो० डली का कपूर ६ मा० कूट छान विहीदाने के लुआव में चना वरावर गोली वनाना, एक २ गोली चूंसे।

सूखी खांसी पर

३१—कतीरा गोंद, वंसलोचन, मिश्री एक २ तो० ववूल का गोंद, मगज्ज खरबूजा, मग़ज़कद्दू दो २ तो० इनको कूट पीस ३ मा० दवा ६ मा० शर्वत उन्नाव में चाटना।

पांच प्रकार तथा कुकर खांसी में।

३२—लौंग, काली मिर्च, वहेड़ा का छिलका एक २ तो०, जवाखार, अनार का छिलका छः २ मा०, कत्था ४ तो०, सब को वारीक पीस कपड़छन कर वबूल की छाल के काढ़े में चने वरावर गोली वना, एक २ गोली मुंह में डाल रस चूसे।

३३—सौंफ़, मुलहटी, खतमी के वीज, खुव्वाजी के वीज चार २ माशा, पीपलामूल ७ माशा, पावभर पानी में औटाना १ छटांक रह जाने पर उतार छान २ तो० मिश्री मिला कर पीना।

३४—मुलहटी, गावजुवां, गुलवनफशा चार २ माशा वीदाना, सिपिस्तां दो २ मा०, ऊपर की रीति से काढ़ा वना कर पीवे।

३५—खशखाश १० माशे, काहू के वीज ७ मा०, नीलोफ़र ५ मा०, मुलहटी ४ मा०, वीदाना ३ मा०, ऊपर की रीति से काढ़ा पीवे।

३६—ज़ौफा, मुलहटी, गुलवनफशा चार २ मा० सिपिस्तां ११ अदद, मुनक्का ७ दाने, ऊपर की रीति से काढ़ा वना कर पीवे।

३७—खशखाश १० माशे, फ़ूलफ़ूल ५ माशे, विलायती उन्नाव १२ दाने, का काढ़ा पीवे।

३८—अडूसा की पत्ती, छोटी कटाई, गिलोय, हल्दी, छोटी हरड़, मुनक्का छः २ माशे का काढ़ा पीवे।

३९—पीपल, पीपलामूल, भारंगी, छोटी कटाई, सौंठ, छोटी हरड़, नागरमोथा, का काढ़ा पीवे।

४०—आक के कोमल पत्ता १, सौंठ, मिर्च, पीपल तीन २ माशा मिला खूब कूटे, और टिकिया बना हुक्के में रख पीवे।

४१—पीपल छोटी, नागरमोथा, बुरादा चन्दन सफेद, कुटकी, सौंठ, नीम की छाल बराबर २ ले, कूट पीस चूरन बनाले १ माशा चूरन सुबह, १ माशा शाम को फांक कर ऊपर से ३-४ घूंट गुनगुना पानी पीवे।

४२—पीपल, लौंग, जायफल, काली मिर्च, सौंठ छः २ माशा में ३ तोला मिश्री मिलाले, और एक २ माशा चूरन सुबह शाम खावे।

४३—दालचीनी १ तोला, इलायची छोटी के दाने १ तो०, पीपल छ माशे, बंसलोचन १ तो०, मिश्री ४ तो० का चूरन बनाले एक २ माशा शहद में मिलाकर चाटे।

४४—लौंग ४ मा०, पीपल ८ मा०, दालचीनी १६ माशे तबासीर ३२ मा०, मिश्री ६४ मा०, चूरन बना ऊपर की रीति से सेवन करे।

४५—अकरकरहा, पीपल छोटी, मुलहटी, तबासीर, जायफल, बराबर २ ले और सब के बराबर मिश्री मिला कूट पीस चूरन बनाले, २ माशा रात को गुनगुने पानी से खावे।

४६—खशखाश ३ तो०, कालीमिर्च १॥ तो०, लाहौरी निमक ६ मा०, चूरन बनाले और एक २ माशा सुबह शाम दोनों वक्त गरम जल से खावे।

४७—मुलहटी का सत, काली मिर्च, मिश्री बराबर २ लेकर चूरन बना रख छोड़े थोड़ा २ खावे।

४८—मदार (आक) के फूल का जीरा ४ मा०, लौंग ६ मा०, कूट पीस पानी से उड़द के बराबर गोली बनाना, एक २ गोली सुबह शाम को गुनगुने पानी से खावे।

४९—एक छुहारा को ले उसकी गुठली निकाल डाले और उसके भीतर ४ अदद लौंग और ४ अदद काली मिर्च भर कर ऊपर से अरंड का पत्ता लपेट आग में दे खाक करले, जल जाने पर उस जले छुहारे को १ रत्ती अफीम और आधी रत्ती केसर मिला कर पीस शहद में उड़द बराबर गोली बनाले १ से २ गोली तक उपरोक्त रीति से सुबह शाम खावे।

५०—तालीसपत्र, तेजपत्र, नागकेसर, छोटी इलायची, काली मिर्च, दो २ माशे, सौंठ ३ माशे, पीपल ४ माशे, तबासीर ६ माशे, मिश्री २ तो०, मिला चूरन बनाले २ से ४ माशे तक गुनगुने जल से खावे।

५१—४ माशे पीपल, गोंद बबूल, मुलहटी एक २ तो० मिश्री २॥ तोला मिला चूरन बना छः २ माशे खावे।

शीत अवलेह खांसी पर

५२—छोटी इलायची के दाने ८ माशे, पीपल छोटी १६ मा०, तवासीर ३२ माशे, कालपीकी मिश्री ६४ माशे, कूट पीस चूरन बना एक २ माशा चूरन एक माशा शहद और १ माशा मक्खन में मिला कर चाटे। ऊपर से जल न पीवे, २-३ घण्टे तक ।

खमीरा खशखाश ।

५३—पोस्त खशखाश ८ तो०, मगज बादाम ८ तो०, गुलबनफशा ८ तो०, लौंग १ तोला, दालचीनी मस्तगी, बालछड़, जायफल छः २ माशा केसर ४ माशा, मिश्री ऽ॥ विधि—पोस्त खशखाश को १ सेर पानी में पकावे। जब डेढ़ पाव रह आवे तब उतार छान उस में खशखाश और मगज बादाम को पीस शीरहा निकाले फिर अन्य औष-धियों को कूट पीस उसमें मिला मिश्री की चासनी कर उसमें डाल दे जब चासनी आने लगे केसर को गुलाब के अर्क में घिस कर मिला दे खमीरा की तरह हो जाय तब उतार कतली जमाले छः २ माशा खावे ।

लऊज़ ।

५४—मगज बादाम १० तो० खशखाश ५ तो० मगज पिश्ता ५ तो० गेहूँ की मैदा २० तो० छोटी इलायची के

दाने ६ मा० केसर ४ मा० घी १५ तो० मिश्री ३० तो० बादाम खशखाश को पीस पिट्ठी बनाले गेहूँ की मैदा को घी में भून ले फिर मिश्री की चासनी कर सब को मिलाकर रख छोड़े। एक तो० से १० तोला तक सेवन कर सकते हैं।

शरबत बांसा (अड़ूसा)

५५—तुख्मखतमी, तुख्मखुब्बाजी-गावजुवां-गुलबनफशा एक २ तोला, सिपिस्तां २० अदद-मुनक्का ४० अदद अड़ूसे के पत्ते २० तो० सवासेर पानी में एक दिन रात भिगो दे फिर पक्का कर ।= रहजाने पर उतार छान आध सेर मिश्री की चासनी करे उसी पानी में और शरबत की तरह होजाने पर उतार ले खुराक २ तोला से ३ तक।

शरबत उस्त खुद्दूस।

५६—उस्त खुद्दूस २ तो० मुलहटी २ तो० तुख्मखतमी १॥ तो० बनफशा की पत्ती १ तो० उन्नाव ३० दाना सिपिस्तां ४० अदद मुनक्का ४० अदद, १ सेर पानी में औटावे ।= छटांक रहजाने पर उतार मलकर छान ले उसमें ॥ मिश्री की चासनी कर शर्वत बनाले।

५७—जवाखार २ मा० पीपल ४ मा० कालीमिर्च ८ मा० पोस्त अनार १६ माशा पुराना गुड़ ३२ तो० कूट पीस गुड़ मिला चने की बराबर गोली बना एक २ गोली खावे।

५८—केसर-अकरकरहा-दालचीनी, लौंग, जायफल, रूमी शिगरफ, अजवायन खुरासानी एक २ माशा अफीम शुद्ध ७ माशा मिला पान के रस में घोट मूंग की वरावर गोली वना एक २ गोली खावे।

५९—अड़ूसा के पत्ते की राख-जवासा की राख छः २ माशा, मगज तुख्मकोंच-मीठे अनार का वक्कल हरड़, वहेड़ा-आंवला लाहौरी निमक छः २ माशा, पीपल ४ माशा, कालीमिर्च २ माशा कूट छान कर चूरन वनावे एक २ माशा, सुवह दोपहर वा शाम को फांक कर ऊपर से गुनगुना पानी पीवे।

६०—मगज वादाम, गेहूँ का सत, रब्बलसूस-तुरंजवीन वीदाना, मुनक्का एक २ तोला लेकर कूट पीस चना की वरावर गोली वनाकर एक २ गोली मुंह में रख कर चूसे।

६१—खशखाश ६ माशा, रब्बलसूस १२ मा०, मुनक्का १२ दाना नशास्ता गन्दुम ४ मा०, गोंद वबूल २ माशा कतीरा ४ माशा, तुख्मकद्दू ४ मा०, मिश्री १० तोला कूट पीस लुआव वीदाना में चने की वरा-वर गोली वना एक २ गोली चूसा करे।

६२—मुनक्का-अड़ूसा के पत्ते हरड़ का वक्कल छोटी पीपल वरावर २ लेकर पीसले और शहद और मक्खन में मिलाकर एक २ माशा चाटे।

६३—अड़ूसा की राख ४ माशा, गोंद वबूल ६ मा०, कतीरा ९ मा०, मुलहटी ९ मा०, कूट पीस ४ मा०

से ६ मा० तक शरवत अंजुवार के साथ चाटे।

६४—मुलहटी का चूरन ४ मा० तवासीर २ मा० जहर मोरा खताई २ मा०, केसर २ मा०, जायफल १॥ मा० जावित्री १॥ मा० छोटी इलायची के दाने १॥ मा०, कशनीज़ खुश्क १॥ मा०, अफीम ८ मा० कूट छान तुलसी के पत्ते के रस में मूंग वरावर गोली वनाना एक से ४ गोली तक सेवन करे।

६५—अक़रकरहा, काकड़ासींगी, पान की जड़, सतूआ सोंठ छः २ माशा, सुहागा का फूला ४ मा० अफीम २ मा०, केसर १ मा०, कूट पीस अदरक के रस में उड़द वरावर गोली वना एक २ गोली खावे।

६६—कतीरा, गोंद वबूल, वांकला की फली का मग़ज मुलहटी रव्वलसूस, तुख्मखशखाश मगज कद्दू वरावर २ लेकर कूट पीस लुआव ईसवगोल से गोलियां वनाले चने की वरावर एक २ गोली मुंह में रख कर चूसे।

६७—नमक शोरा को आक के दूध में खूब तर करे कि ऊपर उतराता रहे तीन दिन तक छाया में सूखने दे वाद को १ हांडी में रख कपरौटी कर सुखा कर १० सेर उपलों में फूंके २ रत्ती निहार, मुंह पान में रख कर खावे।

६८—मिश्री शहद और मक्खन मिला कर चाटने से पुरानी खांसी दूर होजाती है।

ग़रारा ।

६९—छोटी माई १० माशा, मुलहटी ६ मा० कोकिनार ६ मा० आध सेर पानी में औटाकर ग़रारा करे ।

७०—हब्बुल्लास, कोकिनार, काहू, अजवायन खुरासानी एक २ तो० ले ऽ॥ पानी में औटाकर ग़रारे करे ।

मोम की पट्टी ।

७१—गुलबनफ़शा-तुख्म मकोय, मुलहटी, बाबूना, पोस्त खशखास दो २ तो० लेकर ऽ॥ सेर पानी में औटावे ऽ। भर रहजाने पर उतार छान आधपाव कड़वा तेल डाल पकावे जब सिर्फ तेल रहजाय तब उस में ५ तोला मोम डाल दे पिघल जाने पर उतार ले और इस को थोड़ा सा छाती पर गरम कर मल कर पट्टी बांध दें ।

७२—बनफ़शा का तेल १ छटांक ले उस में २॥ तोला मोम और ६ माशा कतीरा ऊपर की रीति से मिलावे और वैसे ही छाती पर मल पट्टी बांध दे ।

खांसी पर पथ्य ।

७३—मग़ज़ बादाम का शीरा या मग़ज़ पेठा का शीरा निकाल उसमें साबूदाना रांध कर खावे । मग़ज़ बादाम या कद्दू का शीरा निकाल उसमें धनिया इलायची और १ कलम केसर की डाल और मुवाफिक का मीठा डाल गेहूँ की रोटी से खावे, गेहूँ का दलिया भी खासकते हैं, विशेष वैद्य की सम्मति से पथ्य करे ।

❀ छाती सीने के दर्द में ❀



१—नीलोफर, उन्नाव छः २ मा० सिपिस्तां १५ दाने पाव भर पानी में औटावे एक छटांक रह जाने पर उतार छान, २ तोला मिश्री मिला–वारतंग ६ मा० खाकसी मुदव्वर ४ मा० फांक कर ऊपर से पीवे।

२—शरवत वनफ़शा—गुलवनफ़शा १० तोला को ४० छटांक पानी में उबाले, २० तोला बाक़ी रह जाने पर २० तोला मिश्री मिलाकर फिर गरम करे, नरम चासनी आने पर उतार ले, खुराक २ तोला से ३ तोला तक खाने से सीने का दर्द, ज्वर वा खांसी दूर होती है।

लेप।

३—बारहसिंगा, सोंठ, अंडी की मींग बराबर २ पीस गरम कर लेप करने से छाती का दर्द बन्द हो जाता है।

तेल।

४—वनफ़शा हरा, मुलहटी, बाबूना, पोस्त खशखाश, मकोय के बीज, और बाकला के बीज एक २ छटांक ले १॥ सेर पानी में २ दिन भीगने दे, तीसरे दिन उबाले ऽ।= छटांक रह जाने पर उतार छान कर

उस में १० तोला चमेली का तेल और ७ तोला मोम डाले जब गाढ़ा हो जावे उतार कर छाती से मले।

खून थूकने में।

खखार में खून आवे तो जानना चाहिये कि सीने पर हरारत है यदि वे खखार के आवे तो दिमाग़ से, और खांसी में आवे तो जिगर और फेफड़ा से समझे।

१—हरी गिलोय ३ माशा, सफेद चन्दन का बुरादा ४ माशे, नीम के पत्ते २ माशे आध सेर पानी में औटावे जब आधपाव रहे उतार छान गुनगुना पीवे।

२—ज़हरमोरा खताई, दम्बुल अखवैन, पपरिया कत्था, गेरू तीन २ माशा, स्यालकोटी काग़ज़ जला हुआ, आबरेशम जला हुआ, बरगद की दाढ़ी चार चार माशा मग़ज़ तुख्म कद्दू, पेठा तरबूज़ और कमलगट्टा छः २ माशा, गोंद बबूल, कतीरा नशास्ता, तुख्म खुरफा, मीठा बीदाना, तबासीर, पोस्त, खशखास चार २ माशा, सब को कूट पीस छान कर चूरन बना चार माशे से छः माशा तक शरबत खशखास में मिलाकर चाटे।

३—गुलखतमी छः माशा १० तोला गरम पानी में रात को भिगोदे सुबह छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर पीवे।

४—मुनक्का दो तोला को पीसकर १ छटांक पानी में मिला ६ माशा शहद मिलाकर पीवे।

५—४ अदद अड्सा के पत्ते, ८ काली मिर्च मिलाकर पीसे और छटांक भर पानी में घोल ६ माशा शहद मिलाकर पीवे।

६—बबूल की कोंपल, अनार की कोंपल, आंवला, धनिया कमलगट्टा की गिरी चार २ माशा कूटकर आदपाव पानी में रात को भिगोदे, सुबह मल कर छानकर शरबत अनार २ तोला मिलाकर (१ माशा दम्मुल अखवैन और १ माशा गोंद बबूल सूखा पीसकर फांकले ऊपर से) पीवे जिगर की हरारत और खून थूकने को बहुत ही लाभदायक है।

सिल में।

इस रोग में फेफड़े से खून आता है और ज्वर और खांसी भी होती है रोगी दिन-बदिन कमज़ोर होता जाता है, यद्यपि यह रोग कठिन है तो भी रोग के शुरू होते ही इलाज करना योग्य है।

१—तीन २ तोला गुलकन्द सुबह शाम खिलावे ४० दिन तक।

२—उम्दा खशखास २ तोला कूटकर १० माशा ईसबगोल में मिलाकर तीन पाव पानी में भिगो जोश देना (उबालना) जब डेढ़ पाव रह जावे ४० तोला मिश्री डालकर चासनी करे उस में गोंद बबूल ६ माशा, खशखास ६ मा० केशर १ मा० बारीक पीस चटनी सी बनावे और एक २ तो० दिन रात में ३-४ बार चाटे।

अर्क दूध

३—फूलफफूल (गुलनीलोफर) गुलबनफशा, ज़ोफा, तुख्मखतमी, तुख्मखुब्बाजी, तुखम मकोय, तुखम-खुरफा, मुलहटी, मग़ज़ तुखम कर्द, तुखमख्यारैन, मग़ज़ तुखम पेठा, तुखम काहू, मग़ज़ कमलगट्टा, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख, पोस्त आँवला सुंडी. चिरायता. सफेद चन्दन, सुर्ख चन्दन एक २ तो० उन्नाव १५ अदद, गुलकन्द ५ तो० मुरब्बा विही २० तो० गाय का दूध ५ सेर । पहिले ऊपर की दवाओं को ६ सेर पानी में एक दिन रात भिगोदे. फिर गाय का दूध मिला भवके से अर्क खींचे दस २ तो० अर्क़ सुबह दोपहर और शाम को दो २ तो० शरवत खशखाश मिलाकर पीना वहुत लाभदायकहै।

४—ज़हरमोरा खताई, कुश्तासंगजराहत, कत्था पपरिया, कतीरा, गोंदबबूल, नशास्ता, खशखाश, तुखमखतमी चार २ मा० कपूर १ मा०, अफीम १ मा० केसर असली ४ रत्ती सब को कूट पीस चना की बराबर गोली शहद से बनाले ३–४ गोली सुबह शाम और रात को खावे।

मुनक्का का अर्क।

५—४ सेर मुनक्का को लेकर १ मन पानी में एक रात दिन भिगोकर औटावे जब १० सेर रह जावे तब उसमें पुराना गुड़ ऽ॥ सेर डाल दे और नाग-केसर, छोटीइलायची, तेजपात, वायविडंग, प्रियंगु के

फूल दो २ तो० कूटकर डाल १० या १२ वोतल अर्क खीचे दो २ या तीन २ तो० सुवह शाम को पीना।

६—खशखाश १८ मा० तुख्म खुरफा १० मा० रब्बुलसूस, बीदाना नौं २ माशा. गोंदववूल, कतीरा नशास्ता, तुख्मखतमी, तुखमखुब्बाजी, सात २ मा० तवासीर, ६ तो० कूट पीस चूरन वना छः २ मा० शहद मिलाकर सुवह, दोपहर और शाम को चाटना।

७-विरोजा १॥तो० शिलाजीत १॥ तो० दालचीनी, किश्तशीरी कालीमिर्च, पीपलछोटी एक २ तो० जूंदविदस्तर ६ मा० अफीम ३ मा० केसर १॥ मा०, पहिले विरोजा और शिलाजीत शहद में मिलाकर गरम करे फिर और सब दवाई कूट पीस सफूफ (चूरन) वनाकर उस में डाल माजूनसी वनाले। ४ माशा से १० माशा तक गुनगुने जल से खावे।

८—मोती की सीप, कतीरा, मगज तुख्मख्यारैन, मगज तुख्म पेठा, मगज तुखमतरबूज, गोंद वबूल वीस २ मा० तुख्म काहू, नशास्ता, वांकला सात २ माशा कपूर ३ मा० अफीम ७ रत्ती, अफीम को पानी में घोले फिर कूट पीस कर और सब दवाइयां मिलादे चार २ रत्ती की गोली वनाले दिन रात में ४-५ गोली ताजे पानी से सेवन करे।

९—१० वादाम की मींग, पेठे के बीज की गिरी और तुख्मख्यारैन दस २ मा०, खशखाश १५ मा०

नशास्ता १ तो० सत्र को पीस ऽ= पानी में गरम करे ४ तो० मिश्री डाल हरीरासा वना पीवे।

१०—तवासीर, छोटी इलायची के दाना, तज, छोटी पीपल, तेजपात मुलहटी, छुहारा दो २ तो० मुनक्का ४ तो० मिश्री ८ तो० शहद ४० तो० सब को कूट छान शहद मिला माजून सी वनाले खुराक १ तो० से २ तो० तक।

कूष्माण्ड अवलेह

११—१ पक्का बड़ा पेठा लेकर छीलले और फिर टुकडे २ कर चौगुने पानी में पकावे जब खूब गल जाय तब टुकडों को अलग करले और टुकड़ों को खूब पीस कर घी में लाल भून ले फिर तवासीर १० तो० तज ९ तो० छोटी इलायची ८ तो० पीपल ७ तो० धनिया ६ तो० तेजपात ५ तो० काली मिर्च ४ तो० सतुआ सोंठ ३ तो० मुलहटी २ तो० लोध १ तो० कूट पीस छानले। यह चूरन और ऽ॥ शहद रस में डाल माजून सी वनाले खुराक १ तो० से २ तो० तक।

खफकान

१—गाजरों को ऊपर से छील कूट कर रस निकाल मिश्री या चन्दन का शरवत मिला कर पिलावे।

२—रुई का फूल २० तो० देसी मिश्री ४० तो० अर्क गुलाव ४० तो०। रुई के फूल को गुलाव अर्क

में डाल उबाले जब २० तो० रह जाय मलकर छान ले और फिर उस में मिश्री वा ४ मा० केसर मिला क़िमाम सा करले। चार २ तो० सुबह शाम चाटे।

३—ज़हरमोरा ५ तो० तबासीर २ तो० मिश्री २० तो० अर्क गुलाब २० तो० अर्क-गुलाब में मिश्री मिला किमाम करे और उस में दोनों दवा पीस कर मिला दे। खुराक ४ मा० से ६ मा० तक।

४—चन्दन सफेद का बुरादा, बंसलोचन, गुलसुर्ख एक २ तो० कशनीज़ २ तो० केसर २ मा० कपूर ४ रत्ती। सब को कूट पीस चूरन बनाले खुराक ४ मा० दही के पानी से सेवन करे।

५—आंवला ४॥ तो० सफेद चन्दन १२॥ मा० गुल-सुर्ख १२॥ मा० मोती ४ मा० अनबिंदे कहरबा १२ मा० संगयशब सफेद और सब्ज़ एक २ तो० तबासीर १ तोला कासनी, गावजुबां एक २ तोला चांदी के वरक़ ३ माशा केसर असली १॥ माशा मुश्क ४ रत्ती सब को कूट पीस छान कर शरबत बिही वा शरबत सेब दस २ तो० मिश्री ५ तो० अर्क गुलाब १० तो० में पिघलावे फिर शरबत वा सब दवाइयां डाल कर माजून सी बनाले। खुराक ४ से ५ मा० तक।

६—तुख्म कशनीज पांच २ मा०, खशखाश २ तो० मगज तुख्म खरबूजा २ तो० शकर ६ तो० शहद १८ तो० कूट पीस ऊपर की रीति से बनाले।

७—जहरमोरा खताई २१ मा० मोती ७ मा० अनविंदे कहरवा, लाजवर्द, याकूत सुर्ख, याकूत कबूद याकूत जर्द, संगयशव, जमुर्रुद, अकीक़ सुरख वर्क चांदी, मस्तगी सात २ मा० सोने के वरक, जदवार नारंजील दरयाई चार २ मा० मुश्क २ मा० अम्बर १ मा० मोमियाई २ मा० सब को कूट पीस २० तो० मिश्री को २० तो० असली अरक गुलाब में चासनी कर सब दवाइयों को मिला माजून सी बना ले खुराक ४ रत्ती से १ मा० तक शरबत अनार में।

८—गुलसेवती, मगज तुखमपेठा, मगज तुखम कद्दू पांच २ मा० आलूबुखारा ५ दाना जहरमोरा खताई एक मा०। अरक केवड़ा २ तो० में आलु बुखारा को भिगो कर गुठली अलग करले फिर सब दवाइयों को कूट पीस तीन तो० चन्दन का शरबत मिला कर गरम करले जब गाढ़ा सा हो जाय उतार ले एक २ मा० सेवन करे।

९—आबरेशम ४ मा० ज़रिश्क बीदाना ५ मा० सफेद चन्दन का बुरादा सात मा० कशनीज ९ मा० आंवला १० मा० सब को आदपाव पानी में रात को भिगोदे सुबह मलकर छानले और २ तो० मिश्री मिला कर पीजावे।

१०—इमली ५ तो० अरक गुलाब ७ तो० मिश्री २ तो०। अरक गुलाब में इमली को भिगोदे और मल कर गुठली अलग कर मिश्री मिला कर पीजावे।

अर्क शीतलामृत

११—मीठा अनार, सेव, अमरूद, नाशपाती, पेठा, गाजर बीदाना का रस आध २ सेर गुलनीलोफर १४ तो० गांवज़ुवा १० तो० सफेद चन्दन-वादरंजोया जौ, कशनीज़, तवासीर, दस २ तो० वकरी का ताज़ा दूध १० सेर सव रस दवाई वा दूध को तीन सेर पानी और मिलाकर १ दिन रात भीगने दे दूसरे दिन अर्क खींचले, ४ तोला सुवह शाम पीवे।

१२—मोती सच्चे ४ मा०, सोने और चांदी के वरक़ चार २ माशे, ज़हरमोरा खताई असली ४ माशे, ऊद ४ माशे, अम्वर २ माशे, गुलाव और वेद-मुश्क का अर्क दस २ तोला ले, उस में सव को हल करे, जव विल्कुल वारीक हो जावे तव निकाल लें। ४ रत्ती से ८ रत्ती तक शरवत अनार में मिलाकर चाटे।

१३—मोती अनविंधे सच्चे ४ रत्ती, एलुआ ४ रत्ती सकमूनिया ९ मा०, अफतीमून ६ मा०, दालचीनी, चिरायता, लाजवरद लौंग, लालचन्दन, गोंद ववूल, कतीरा २ माशा, चांदी के वरक़ २५ अदद, सव को कूटपीस शहद में चने की वरावर गोली वना एक २ गोली सुवह दोपहर और शाम को खाकर ऊपर से ताज़ा पानी पीवे।

माजून चन्दन।

१४—खट्टे अनार का रस ४० तो०, अर्क गुलाव में घिसा

हुआ सफेद चन्दन १० तोला, तवासीर १ तोला ऊद १तो०, केशर ३ माशे, शक्कर सफेद १ सेर ले, पाव भर अर्क गुलाव में चासनी करे और उस में सव दवाइयां मिला कर माजून वनाले । खूराक ६ माशे से १ तोला तक।

१५—सच्चे मोती ३ माशे, मरजान ३ मा०, तुखम वादरंजोया, सफेद चन्दन घिसा हुआ, लाल चन्दन घिसा हुआ, गुल सुर्ख, तवासीर, कहरवा, नौ २ माशे, संगयशव, लौंग, केशर, काफूर पांच २ माशे, कवावचीनी, वहमन सुर्ख, वहमन सफेद, दालचीनी, ऊद, कसनीज, नरकचूर, गावजुवाँ, आँवला, जरिश्क सात २ माशे अर्क गुलाव और अर्क केवड़ा वीस २ तोला, मिश्री ४० तो०, अर्क में मिश्री की चासनी कर अन्य दवाओं को कूट पीस मिला कर माजून वनाले खूराक ६ मा० से १ तो० तक।

१६—कहरवा, गावजुवां, कशनीज, आवरेशम, वहमन सफेद, गुलसुर्ख, तुखमखुरफा, सफेद चन्दन वरावर २ ले कूट पीस मिश्री की चासनी कर उस में सव दवा मिला किवाम वना ले, खूराक ६ से ९ माशा तक।

१७—ज़हरमोरा खताई, मोती की सीप, तवासीर, गाव-जुवां, तुखमखुरफा, तुखम काहू एक २ तो० मगज तुखम तरवूज, मगज़तुखम पेठा, मगज़तुख्म खरबूज़ा

पन्दरह २ माशा, केशर ४ मा०, मिश्री २४ तोले, अर्क गुलाब २४ तो० ऊपर की रीति से किवाम बना माजून बना ले।

१८—जरिश्क, गुल अरमनी नौ २ मा०, गुलसुर्ख, तवासीर, गावजुवां तेजपत्र १० तो० केशर ६ मा० मिश्री १० तो० शहद दस तोला सब को कूट पीस शहद मिला माजूनसी बना सेवन करे।

कल्याण घृत

१९—हरड़, बहेड़ा, आंवला, देवदारु, दारुहल्दी, जवासा, तगर, खाने की हल्दी, सफेद सरसों, कमलगट्टा की गिरी, छोटी इलायची के दाने, दोनों कटय्या, मजीठ, तेजपात्र, निसोत, वायविडंग, नागकेशर मुलहटी, वहमनसुर्ख, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, पित्तपापड़ा, नागर मोथा एक २ तो० ४ सेर पानी में भिगोदे १ दिन रात, फिर आग पर रख काढ़ा बनावे जब एक सेर रह जावे उतार मलकर छान ले फिर गाय का एक सेर घी उस रसमें मिला गरम करे जब सिर्फ घी ही रह जाय उतार छान कर रखले। १ तो० सुबह शाम शक्कर या मिश्री में मिला कर सेवन करने से खफ़कान मिर्गी पीलिया आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

खफकान दूर करने के अंजन

२०—पीपल, कालीमिर्च, सोंठ, दुधियावच, सिरस के बीज

सफेद सरसों, सेंधा लाल निमक, सम भाग ले कूट पीस कपड़े से छान गाय के पेशाव में १ दिन खूब खरल करे फिर आंख में लगावे।

२१—सिरस के फूल, मजीठ, छोटी पीपल, सफेद सरसों, दुधियावच, हल्दी, सोंठ सबको बराबर २ ले बकरी के पेशाव में १ दिन रात खूब घोटे, चने बराबर गोली बनाले आवश्यकता पड़ने पर १ गोली पानी में घिस कर आँख में लगावे।

खफक़ान दूर करने को घृत

२२—पीपल, काली मिर्च, सोंठ, हींग, काला निमक, चार २ तो० ले २॥ सेर गोमूत्र में काढ़ा बनावे डेढ पाव रह जाने पर ऽ। भर गाय का घी डालदें जब सिर्फ घी ही रह जावे तब उतार छान रख छोड़े। १ माशा से २ माशा तक सेवन करे।

बेहोशी में

१—ठंडा पानी मुंह पर छिड़के।

२—अर्क गुलाब से मुंह धोवे।

३—परीड़ मिट्टी अर्क गुलाब में तर करके सुंघावे।

४—रोग़न काहू सीने पर मले।

५—चन्दन सफेद का बुरादा, कपूर और लोबान का धुआं देवे।

६—छींके लिवावे।

पाण्डु रोग

यह दो प्रकार का होता है १ में चेहरा पीला पड़ जाता है दूसरे में काला इसी को कमलवाय भी कहते हैं।

१—जुल्लाव से पेट साफ़ करे।

२—सादा सिकंजवीन अर्क कासनी में दे।

३—खट्टा अनार दाना ४ तो०, रेवतचीनी ४ मा०, अर्क गुलाव ५ तो०, मिश्री ३ तो०, । अनार दाना और रेवत चीनी को एक पाव गरम पानी में भिगो दे, रात को सुवह मल छान कर मिश्री मिला कर पिलावे।

४—तुख्म कासनी १० मा०, सौंफ, ४ मा०, तुख्म मकोय ४ मा०, सिकंजवीन सादह ३ तो०, आध पाव पानी में रात को भिगोदे सुवह मल छानकर सिकंजवीन मिला कर पीवे।

५—जरिश्क, वीदाना ४ मा०, मगज़ तुख्म ख्यारैन ७ मा०, कासनी १० मा०, गुलाव के फूल ५ मा०, इमली ४ तो०, रात को आधपाव पानी में भिगोदे सुवह मल छान कर ३ तो० चन्दन का शरवत डाल पिलावे।

६—पीली हरड़ ४ तो०, स्याहतरा १५ मा०, गुलाव के फूल, कासनी के वीज पन्द्रह २ मा०, मुनक्का १ तो०, आलू वुखारा ७ दाना, इमली ३ तो०, तीन पाव पानी में जव कूट करके औटावे जव तीन

छटांक रह जावे तब उतार छान तीन तो० मिश्री मिलाकर पीवे।

७—१ बड़े मैनफल को कूट कर रात को ऽ= पानी में भिगो दे सुवह औटावे जब एक छटांक पानी रह जाय उतार मल कर छान ले, २ तोला बूरा मिला कर पीना।

८—मुनक्का ३ तो०, गुलाब के फूल १॥ तो०, कवाव चीनी १० मा०, आधपाव खूब गरम पानी में भिगोदे रात को और सुवह मल छानकर २ तो० मिश्री डाल कर पीवे।

९—३ तोले विनोले को कूट आधपाव पानी में उवाल एक छटांक रह जाने पर उतार छान मुवाफिक का लाहौरी निमक पीसकर मिला कर पीना। सुबह को।

१०—गुलाब के फूल, वादरंजोया, अफतीमून, स्याहतरा, चार २ माशा, मुनक्का १५ मा०, पाव भर पानी में काढ़ा वनावे एक छटांक रह जाने पर उतार छान २ तो०, सिकंजवीन सादा मिला कर पिलावे।

११—दारु हल्दी १० मा०, सफेद चन्दन, कासनी के वीज, मुनक्का सात २ मा० का काढ़ा वना २, तो० सिकंजवीन मिला पिलावे।

१२—शुद्ध पीली गन्धक, अफतीमून, अजमोद, लोयब्रान कोड़िया चार २ माशा, मग़ज़ चिलगोज़ा ९ मा०, मुनक्का ५ मा० सव को कूट पीस छः २ माशे की

गोलियां बना ले, एक २ गोली सुबह शाम खाकर ऊपर से आधपाव सौंफ का अर्क पीना।

१३—सिरका या अर्क गुलाब से आंखों को धोवे इस से आंखों का पीलापन दूर होगा।

१४—कलौंजी के दाने स्त्री के दूध में घिस कर या पीस कर नाक में डाले।

१५—कहरबा को गले में बांधे।

१६—फिटकरी और कपूर बराबर २ लेकर खूब रगड़ कर दो २ रत्ती ताजे पानी से सुबह शाम सेवन करे।

१७—दारुहल्दी, चन्दन पीला बराबर २ ले, कूट पीस छान छः २ माशा शहद में मिलाकर चाटे।

१८—दारुहल्दी का चूरन १ माशा, २ तोले दही में मिला कर खावे।

१९—बेर के पत्ते का रस २ तो०, ९ मा० शहद मिला कर पीवे। दाख और आंवले का रस एक २ तोला शहद डाल कर पीवे।

२०—निसोत का चूरन ४ मा०, ८ माशे चीनी में मिलाकर फांके, ऊपर से ⟆≡ सौंफ का अर्क पीवे।

२१—२ तो० गिलोय के पत्ते पीस कर ऽ॥ मट्ठा में मिला कर पीवे। २ तो० गिलोय, २ तो० कासनी पीस कर ऽ॥ पानी में पीना।

२२—हल्दी, गेरू और आंवले का चूरन बराबर २ ले शहद में मिला आंख में अञ्जन लगाने से पीलापन दूर होता है।

२३—ववूल के फूल ६ मा०, खांड ६ मा०, फूलों को वारीक पीस सुखा कर और खाँड मिला फंकी लगा ऊपर से ठंडा जल पीवे २-३ घूंट।

२४—कुटकी १ छटांक पीस कर तीन छटांक खांड मिला कर दो तोले की पुड़िया बांधकर सुवह शाम एक २ पुड़िया पानी के साथ खावे। बुख़ार हो तो गावज़ुवां के अर्क़ से और खांसी न हो तो गाय के मट्ठा से ।

२५—पुनर्नवा (जिस की विसखपड़े की तरह वेल होती है) की माला वना पहरना।



ज्वर की चिकित्सा



१—रीठा का वक्कल ५ तो०, त्रिकुटा ३ तो०, अतीस १ तो० काकड़ासींगी १ तो० नागकेशर १ तोला सहदेवी की जड़ १ तो० वहेड़े का वक्कल १ तो० कूट पीस पानी में गोली दो २ रत्ती की वना चार चार घंटे में देना सव ज्वरों को लाभ करेगा।

२—ढाक के वीज ५ अदद, कंजे की मींग २, पानी में पीस मटर के वरावर गोली वनाना एक २ गोली ताज़े जल से देना।

३—चूना, आंवा हल्दी, पान वरावर २ लेकर घीगुवार के रस में मटर की वरावर गोली वना ताजें जल से खावे।

४—३ माशा चूना को पानी में घोल दे फिर १ काग़ज़ी नींवू को काट उसका अर्क निचोड़ दे, २ मिनट वाद हलाकर एक साफ कपड़े से छान कर पिलादे।

५—सफेदा काशगारी और मीठा सोडा वरावर २ लेकर ४ रत्ती वताशा में रख देवे। दो घन्टा तक जल अन्न न दे, यदि यह दवा खाने से पहिले जुल्लाव से पेट साफ़ करले तो अच्छा है।

६—वरुआ १ माशा, ५—६ काली मिर्च मिलाकर घोंट पीसकर ऽ- पानी में पिये, पुराना ज्वर भी दूर होता है।

७—त्रिफला ३ तो० चिरायता १ तो० पीपल छोटी एक तो० पीसले, तीन २ माशा चूरन ताज़ा जल से खिलावे।

८—काली मिर्च ५ तो० नागरमोथा १० तो० कञ्जा की मींग बीस अदद, निवौली १० तो० कूट पीस तुलसीपत्र के स्वरस में दो २ रत्ती की गोली बना सब प्रकार के ज्वर में देना ताजे पानी से।

९—२ तो० सुदर्शन का अर्क पीने से ज्वर दूर होता है।

१०—सूखा आंवला, धनिया, गिलोय, चने की दाल, जवासा तीन २ मा० लेकर ऽ॥ पानी में रात्रि को भिगोदे सुवह मल छानकर ६ मा० उत्तम शहद या २ तो० मिश्री डाल कर पीवे।

११—धनिया टकाभर, खस पैसा भर, गिलोय ताज़ी ४ अंगुल दाख ७ दाने साफ कुटकी ६ मा० चिरायता ६ मा० को ले कूट करके १ सेर पानी में पकावे जब पावभर रह जावे उतार मलकर छानले आधा सुवह आधा शाम को पीवे।

अम्लपित्त पर।

१—आंवले का चूरन १ तो० खाकर ऊपर से गोदुग्ध पीना ३ घंटे पश्चात् १ मा० सितोपला चूरन २

रत्ती मूंगा भस्म मिला २ मा० शहद में मिला कर चाटे। अम्लपित्त की खट्टी डकारें बन्द होंगी।

२—नारियल की गिरी १६ तो० बारीक काटकर २॥ पाव दूध में पकावे जब गाढ़ा हो जावे तब धनिया, छोटी पीपल, नागरमोथा, दाल चीनी, तेजपत्र, इलायची छोटी, नाग केशर तीन २ तो० ले कूटपीस छान कर और ६ तो० आंवले का चूरन इन सब को ऊपर के दूध में मिला ले जब खोवा हो जावे तब ऽ– गाय के घी में भून डेढपाव मिश्री मिला आधी २ छटांक के लड्डू बनाले एक २ लड्डू सुबह को खावे।

३—पित्तपापड़ा का अर्क देना।

४—चिरायता २ तो० को आधसेर पानी में कूट कर भिगोदे सुबह मल छान कर एक २ छटांक जल दो दो तो० मिश्री मिला कर पिलावे।

५—सफेद सुर्मा मुलहटी के काढे में घोट १० सेर उपलों में फूंक एक २ रत्ती शरबत नीलोफर में चाटे।

६—काला ज़ीरा १२ तो० सफेद ज़ीरा १२ तो० बबूलकी सूखी पत्ती ९ तो० कालीमिर्च ७॥ तो० काला निमक ६ तो० सेंधा निमक ६ तो० आम का अमचूर ३ छटांक लेकर सबको कूट छानकर बेरी के बेर के समान गोली बना सुखाले एक २ गोली भोजन के उपरांत खावे।

शीत पित्ती पर

१—जुल्लाब देकर, नीबू का रस, जवाखार, गेरू, सेंधा निमक, मीठाकूट बराबर २ ले पीस बराबर के सरसों के तेल में मिला सायं प्रातः मालिश करे।

२—१ छटांक नीम के तेल में ३ मा० देशी कपूर मिला कर मालिश करे।

३—खरखरी चारपाई पर नंगा सुला नीचे मोम नौ मा० की धूनी दे ऊपर से सर्वाङ्ग को ढक दें।

४—चिरोंजी १ तो० चबाकर ठंडा पानी पीवे।

५—शुष्कमुलकादि तैल की मालिश से घोर शीत पित्त के चकोटे और खुजली अच्छी होती है बनाने की विधि—काले तिल का तेल ऽ१। छोटी सूखी मूली ऽ—पुनर्नवा ऽ— देवदारु ऽ— रायसन ऽ— सोंठ ऽ— कूट कर पांच सेर पानी में पकावे सवासेर रह जाने पर तेल में पकावे।

रक्तपित्त

१—यदि नाक या मुंह से खून गिरता हो तो पुरानी काही जो कुए में होती है उस को पीस कर पानी में सिर पर थोपे। और ६ मा० काई १ तो० शहद में मिला कर चाटे।

२—यदि केवल पपड़ी जमकर खून नाकसे ही गिरता हो तो अनार के फूल का रस वा दूबघास का रस निचोड़े १ तो० और उस में १ रत्ती कपूर और ४

रत्ती घी मिला नाक में नस्य ले पपड़ी जमना और ख़ून गिरना बन्द हो जावेगा।

३—प्रवाल (मूंगा) भस्म ४ मा० शहद में मिला कर चाटे ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध मिश्री मिला पीवे। इस के सेवन से सिर का चक्कर और आँखों की जलन भी दूर होती है।

४—धान्यादिकहिम १० दिन पीने से सब प्रकार का रुधिर गिरना बन्द हो जाता है। बनाने की रीति यह है कि धनिया १ तो० ले कूट पीस १६ तो० जल में रात को भिगो ओस में रखदे सुबह मल छान कर ४ तो० मिश्री मिला कर पीना।

५—कत्था, सेलखड़ी, लाख, खड़ियामट्टी, राल, हजरतजहूर, गिलेअरमनी, दम्मुलअखवैन, छोटी इलायची, शीतलचीनी, गेरू, लाल चन्दन, माजू, चव्य, गुलाब जीरा, एक २ तो० मिश्री १० तो० ले कूट पीस छान कर चूरन बनाले। खूराक १ मा० शहद में चटाना।

रक्तपित्तज्वरे।

१—गुलबनफ़शा ५ माशे, तुख़्म ख्यारैन ५ मा०, उन्नाब ५ दाना, मकोय ख़ुश्क ५ मा०, तुख़्म ख़रबूज़ा ५ मा०, मवीज मुनक्का ७ दाने, ईसबगोल ५ मा०. कोकनार गुलअनार, कशनीज चार २ माशे, ५ तो० रातको भिगो दे सुबह मल छानकर ३ तो०

अर्क वेदमुस्क और दो तो० शरवत वनफ़शा मिला ठण्डाई पीवें।

२—गूलर का रस शहद मिला कर पिलाना।

३—अडूसे के पत्ते का रस २ तोला छः २ माशे शहद और चीनी मिला कर पिलाना।

४—सफेद कोहड़ा (कुम्हेंड़ा) का रस २ तोले, आधा तोला शरवत अनार मिला कर पिलाना।

५—अनार की छाल का रस और सफ़ेद दूव का रस दिन भर में २-३ वार नास लेने से नाक से खून आना वन्द हो जाता है।

मुंह के छालों पर गरारा।

६—दारुहल्दी, त्रिफला, मुनक्का, अमलताश, जवासा एक २ तो०, चमेली के पत्ते १ छटांक। उवाले और शहद मिला ग़रारा करे।

पीने की दवा।

तुखम कद्दू ६ मा०, इलायची ५ दाने, अर्क गावज़ुवां ऽ॥ वीहदाना ३ मा०, शरवत नीलोफर २ तो०। आध पाव अर्क में वीहदाना भिगो दे, फिर लुआव निकाल कर तुखम और इलायची पीसकर मिला शरवत डाल पीना।

छालों पर अनुभूत प्रयोग

१—कत्था ६ मा०, फिटकरी १ तोला मिला कर ग़रारे करे।

२—नासपाल (अनार का छिकला) पीस कर बुरके।

३—सुहागा का फूला कर शहद में मिलाकर मले।

४—इन्द्रजौ डाल कर पानी औटा कर दो २ तोले पीवे और ग़रारे करे।

५—केवल सँजने की छाल का ग़रारा भी अच्छा है।

६—६ माशे सौंठ, ६ माशे धनिया डालकर खिचड़ी देना।

७—महुआसव ६ माशे अर्क पथ्यादि १ छटांक देना।

८—कुमारीआसव ६ मा०, अर्क त्रिफलादि १ छटाँक देना

९—१ छटांक साठी के चावल १ सेर पानी में डाल पकावे पावभर रहने पर उसका केवल मांड १ तो० शहद मिला कर देना।

१०—आवला का शरबत पीना, यह खुश्की को दूर करता है।

११—हरा आंवला साबित डाल कर खिचड़ी खाने से पच जाती है।

१२—गावजुवां की पत्ती को जला कर राख करके छालों पर मलना।

१३—कत्था, सफेद इलायची, सीतलचीनी, तीन २ माशे, तूतिया की भस्म १ मा०, इनका चूरन कर बुरकी लगाने से चाहे २५ वर्ष के छाले हों फ़ौरन तजुर्बा दिखाती है।

१४—माजूफल चन्दन की तरह घिस कर लगावे ३ दिन में आराम होगा।

१५—नीलाथोथा की भस्म, कत्था भस्म,- समान भाग लेकर मिलावे और गरम पानी में डाल कुल्ला करे।

१६—त्रिफला चूर्ण ६ मा० शहद में मिला रात्रि को सोते समय चाटना। फिटकरी का लावा छालों पर लगावे अथवा अड़ूसे के पुराने वृक्ष की छाल का छिकला ऽ- गोल मिर्च १ तो० पीस कर जलसे दो दो चने वरावर गोली वना सुखा कर रखले हल्का जुल्लाव लेने के वाद एक २ गोली खिलावे।

पित्तज्वर।

१—सफेद कत्था ४ मा० कपूर १ मा० दोनों को पीस चना वरावर गोली वना २ गोली पानी से खावे ३ दिन में पित्तज्वर नष्ट हो।

दाह और चढ़े बुखारपर।

२—नेत्रवाला, लाल चन्दन, नागरमोथा, खस, पित्त-पापड़ा तीन २ मा० लेकर पावभर पानी में काढ़ाकर १ छटांक रहने पर १ तो० शहद डाल कर पिलाना दाह, जलन, प्यास, घुमनी, घवराहट, वमन निन्द्रानाश बुखार, अफरा दूर हो।

३—खसखस २ तो० रात को पानी में भिगो कर रखदे सवेरे पीसकर उस का दूध निकाल और औटा कर मिश्री डाल कर पीवे भीतरी गर्मी निकल जावेगी।

४—सोंठ और गिलोय का काढ़ा पीना।

५—फिटकरी का फूला आधी रत्ती सुबह शाम शहद में मिलाकर चाटने से कण्ठ का जलना अम्लपित्त तथा दाहज्वर नष्ट होता है दो २ घन्टे में खाने से शीतज्वर भी दूर हो जाता है।

कफज्वरे ।

१—मुलहटी ५ तो० सौंफ ४ मा० हरी गिलोय ७ मा० पीले अंजीर नग २। आधसेर पानी में औटावे ऽ= रहजाने पर उतार छान २ तो० बूरा मिला कर पीवे।

२—शुद्धहिंगुल और बच्छनाग, सोंठ, मिर्च, पीपल, सुहागे की खील, पीपलामूल समान भाग लेकर कपड़ छनकर तुलसी, अदरख और धतूरे के रस में क्रमशः अलग २ खरल करे और रत्ती २ की गोली बनावे। अनुपान शहद। सब प्रकार के ज्वर और संनिपात दूर होता है।

कफज्वर और खांसी पर ।

३—सतगिलोय, फिटकरी का फूला, नौसादर, गोदन्ती बराबर २ अदरख के बराबर रस में ४ रत्ती से १ मा० तक शहद में मिला ३ बार चाटे।

कफक्षय तथा नेमोनियां में ।

४—सोंठ, पित्तपापड़ा, भारंगी, देवदारु, नागरमोथा, कायफल, काकड़ासींगी बचमीठी, पीली हरड़ तीन २ मा० पावभर पानी में औटा कर पीना।

कफक्षयपर ।

५—आधसेर हल्दी को कपडछान करे और आधसेर हल्दी को अलग कूटले। इस में से १० तो० हल्दी २० तो० पानी में भिगो कर दूसरे दिन मलकर छानले ऊपर की आधसेर हल्दी को इस ही में घोटें इसी प्रकार १० तो० हल्दी के हिमकी उस आधसेर हल्दी में ४ भावनादे यही हरिद्रायोग नित्य एक तो० कफक्षय वाले रोगी को देवे। पन्द्रह दिन में आश्चर्य-जनक लाभ होगा।

६—शुद्ध कुचला १ तो० जायफल ३ तो० लौंग ४ तो० वंशलोचन ५ तो० नौसादर ६ तो० पीपल ६ तो० सोंठ ७ तो० गोंद ८ तो० काली मिर्च १ पाव सव को कूट छान घियागुवार के रस में १ पहर तक घोट दो २ रत्ती की गोली वनाना। २ गोली सुवह, २ शाम को ताजे पानी से।

क्वाथ ।

७—भटकटैय्या की जड़ ३ मा० नीम की छाल, वनफ़शा पीपल, मुलहटी, कचूर, काली मिर्च, पीपलामूल, सोंठ तीन २ मा० कूटमीठा ६ मा० १ पाव पानी में काढ़ा करे १ छटांक रह जाने पर उतार छान १ तो० शहद मिला कर पीना। लुगदी शाम को पीना।

बुख्वार ख्वांसीमें और कफके न निकलने में।

८—जायफल, अतीस, पुहकरमूल, पीपल, काकड़ा-सींगी, नागरमोथा एक २ तो० कूट पीस ३ से

५ रत्ती तक यह चूरन शहद और अदरख के रस में चटाना।

९—ज्वर के उतर जाने पर ४ से १० ग्रेन तक कुनैन अथवा सुदर्शन चूर्ण भी ठंडे पानीके साथ देसकते हैं।

१०—वनफ़शा, गावजुवां, चार २ मा० वीहदाना २ मा० लिसौड़ा १० अदद, सफेद वूरा १॥ तो० औटा कर पीवे।

शीतज्वरे

लालज्वरांकुश

१—सफेद संखिया की भस्म १ तो० शुद्ध शिगरफ १ तो० दोनों को पानी में रगड़ टिक्की वना तवे पर रखकर नीचे अग्नि दो जब फूल जावे तब उतार कर पीस लो १ चावल बताशे में रखकर दो। पथ्य दूध भात।

आचारवटी।

२—हल्दी, दारुहल्दी, मिर्च, आंवला, सोंठ, हर्र, चीता, कूट, पीपल, सेंधा निमक एक २ तो० निम्बपत्र और गिलोय दो २ तो० नागरमोथा ४ तो० सव को कूट पीस शुद्ध जल से घोट चना प्रमाण गोली वना छाया में सुखाना। दिन में ६ गोली दो २ घन्टे में पानी से देना। वालकों को २-३। नित्यज्वर अन्तरातिजारी, चौथिया, क्षुतिकाज्वर में पानी ताजा के साथ। जलमें घिस कर आंखों में लगाने से आंखों

का अंधेरा दूर होता है। स्त्री के दूध में घोल कर पलकों पर लगाने से पलक नहीं चिपकते। नवीन फोला में बकरी के दूध में तिल के तेलमें रतोंधी। केले के पानी से आंखों में लगाने से पानी बहना दूर होता है।

३—शीतांग हो जाने पर कायफल या चने का मखता मलना।

४—कत्था शुद्ध संखिया समान भाग पानी में पीस बाजरे के बराबर गोली बना ताजे पानी से सेवन करना।

५—गिलोय ५ अंगुल मिर्च काली १४ अदद गुलाब के फूल ४ मा० बड़ी हरड़ २ सबको कुचल कर पावभर पानी में काढ़ा बना १ छटांक रह जाने पर उतार छान १॥ तो० गुलकन्द मिला पीना, तिजारी चौथाई दूर होती है।

६—कंजा की मींग पानी में घिस कर बुखार आने से आध घन्टा पहिले दो चार बून्द नाक में टपकावे।

७—कंजा की मींग, सत गिलोय, काली मिर्च ६ मा० ले चूरन बनाले दो २ मा० सुबह शाम गुनगुने पानी से खिलावे।

जाड़ा बुखार पर शर्बत

८—पक्की इमली का गूदा ४ मा० आधी छटांक पानी में घोलना फिर कोनैन २ रत्ती शक्कर १ तो० मिला कर पीना ऐसी ४ खुराक।

९—खस, लाल चन्दन, सूखाधनिया, नरकचूर, सोंठ, हरी गिलोय, बराबर २, बराबर की सफेद मिश्री मिला कर पीना ।

१०—भुनी फिटकरी ६ आने भर, खांड ६ आने भर ले कर चार खूराक बनावे ज्वर आने से पहिले एक २ घंटे में देना । पानी पीने को न देवे केवल दूध ।

११—सोंठ, गिलोय, धनिया, लाल चन्दन, खस प्रत्येक को तीन २ मा० ले आधसेर जल में औटा कर आधपाव रह जाने पर छान कर पीवे ।

१२—जायफल १ मा० पीस छान बुखार आने के आध घण्टा पेश्तर पानी से खावे ।

१३—आक की बोड़ी १३ काली मिर्च ३ गुड़ में मिला कर खिलावे ।

१४—करंजुवेकी गिरी ऽ।। गोदन्ती ऽ।। लाल फिटकरी की खील ऽ। शुद्धगन्धक आधसेर सोडाबाईकार्ब १ पाव कोनेन ऽ॥ सब को पीस इन्द्रायण के क्वाथ में रगड़ चार २ रत्ती की गोली बना ठंडे पानी से देना ।

कोनेन की जगह

१५—करंजुवाकी गिरी २ तो० पीपल २ तो० ज़ीरा सफेद १ तो० बबूर की पत्ती १ तो० पानी के छींटे से गोली बनानी चने के प्रमाण । दो २ गोली सुबह दोपहर शाम को ताजे पानी से खाना ।

चौथियाज्वरे

१—पोस्त के डोडे प्रकृति के अनुसार ले उस का आठवां भाग काली मिर्च मिलाकर जव कूटकर औटाकर पीवे।

२—छोटी हरड़ का वक्कल, कासनी छः २ मा०, सौंफ पित्तपापड़ा चार २ मा०, अमरवेल तीन मा०, आलूबुखारा, उन्नाव नग दस २, गुलकन्द ३ तो० मिला औटा कर पीना।

३—सनाय, अमरवेल, वनफ़शा, खरवूज़े के वीज, सोया पांच २ मा०, छोटी वड़ी हरड़ सात २ मा०, ३ तो० सिकंजवीन मिला कर पीवे।

४—बबूल की पत्ती सूंघने से चौथिया ज्वर अच्छा होता है। शीतज्वर में कही हुई औषधि भी दे सकते हैं।

बुखार, खांसी और मलेरिया ज्वर

१—धतूरे के फल कूजे में वन्द कर मुंह पर कपड़मिट्टी कर थोड़े उपलों में फूक ले सुवह निकाल पीस एक २ रत्ती, भस्म एक २ रत्ती कपूर में मिला कर १ माशा शहद में मिलाकर चाटे।

२—गोदन्ती हरताल को ग्वारपाठा के रस में सात सकोरों में भर गजपुट में फूक ले, वच्चों को एक चावल वड़ों को अवस्थानुसार ४ रत्ती से ६ रत्ती तक पान में या वताशे में देना।

३—हड़ताल भस्म भी ऊपर की रीति से दे सकते हैं।

नेमोनिया-हृदयशूल-पार्श्वशूल-वृक्कशूल पर एक महात्मा का

४—पोस्तवेखमेदार ४ मा० कल्मी शोरा १६ माशा अफीम ४ मा० ४ रत्ती शर्वत वनफ़शा या अर्क गाँवजुवां के साथ सेवन करे, तेल—तिल तैल में (एक छटांक) १ तो० सीधिया १ मा० कपूर १ मा० अफीम मिला कर मालिश करे।

५—शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वच्छनाग (विष) त्रिकुटा, त्रिफला, दो २ तो० शुद्ध जमालगोटा ६ मा० ले पहिले पारा गन्धक की कजली करे फिर अन्य औपधियों को पीस उसमें मिला गिलोय के स्वरस की २८ भावना (यानी अठाईस वार गिलोय का रस डाल २ सुखावे) दे दो २ रत्ती की गोली वनावे और चिरायता, गिलोय, धनिया छः २ मा० ले काढ़ा वनावे और ऊपर की गोली १ खाकर यह काढ़ा पीने से सव प्रकार का ज्वर दूर होता है।

विषमज्वर में।

१—कली का विना बुझा चूना, सुहागा, फिटकरी सफेद, कौड़ी, सोरा कल्मी, सोमल एक २ छटांक,ले वारीक पीस नींबू के रस में गोली वना सुखा कर एक हांडी में रखे और उस को कपड़ मिट्टी कर सुखा कर १० सेर उपलों में गजपुट में फूंकदे स्वांग शीतल हो जाने पर निकाल सव दवा के वरावर

अतीस और चौथाई नौसादर मिलाले। तीन २ रत्ती ६ मा० शहद में मिला कर चाटे ऊपर से २-३ घूंट गुनगुना पानी पीवे।

२—काली मिर्च १ तो० कल्पनाथबूंटी २ तो० घोट पीस चने की बराबर गोली बना ज्वर आने से ४ घन्टा पहिले गुनगुने पानी से एक २ गोली खिलावे।

राजयक्ष्मारोगे।

प्रातःकाल

छोटी पीपल ४ तो० लेकर ८ तो० गाय के दूध में भिगोदे दूसरे दिन निकाले फिर उस में वंशलोचन ८ तो० तनकलमी १ तो० गिलोय का सत ३ तो० मूंगा भस्म ३ तो० धुली शुद्ध की हुई भांग १ तो० सब को कूट पीस छान शहद ४८ तो० गाय का घी १६ तो० और मिश्री १६ तो० मिलाले तीन २ मा० प्रातःकाल बकरी के गुनगुने मीनपड़े दूध के साथ सेवन करे।

दोपहर को।

ताजे आँवलों का रस १ तो० में ९ मा० शहद मिला कर चाटे।

शामको।

सोना चांदी कान्तिसार, मोती, मूंगा, शंख, पीली कौड़ी और सिंगरफ की भस्म समान भाग, गिलोय

का सत, छोटी पीपल, शुद्ध भांग समान भाग सब को मिला कर ७ दिन गिलोय के रस में सात दिन आंवला के रस में ७ दिन बकरी के दूध में खरल करे और फिर दो २ रत्ती शाम को शहद में मिला कर चाटे ऊपर से बकरी का आधपाव या पावभर गुनगुना मीठा पड़ा दूध पीवे।

पानी थोड़ा मिला वे किन्तु उसके स्थान में
नीचे का द्राक्षारिष्ट देवे।

ढाई सेर मुनक्का के बीज निकाल बीस सेर पानी में डाल धीमी २ आंच से पकावे ५ सेर रह जाने पर उतार कर मलकर छान ले फिर उस रस में ढाई सेर मिश्री और दाल चीनी, छोटी इलायची के बीज, तेजपात, नागकेशर असली, प्रियंगुपुष्प, वायविडंग चार २ तो० काली मिर्च, छोटी पीपल दो २ तो० कूट पीस कर डालदे फिर कपूर चन्दन और अगर से सुवासित बर्तन में भरकर १ महीना तक धूप में रखदे ऐसे स्थान पर रक्खे कि दिन को धूप और रात को ओस भी पड़े। १ माह बाद छान कर बोतलों में रखदे ६ मा० से २ तो० तक सेवन करा सकते हैं।

अन्य अनुभूत प्रयोग

वंशलोचन, गिलोय का सत, कालीमिर्च, शुद्ध भिलावा समान भाग ले कूट पीस कर एक २ रत्ती गो दूध के साथ सेवन करे।

यक्ष्मा रोगी के

रस, रक्त, मेद और शुक्र वृद्धि के लिये

गिलोय का फान्ट दे अथवा काढ़ा दे। गिलोय का सत अदरख के स्वरस में चटावे। दस बारह काली मिर्च चबा कर ऊपर से गाय या बकरी का दूध मिश्री डाल कर पीने से रस की वृद्धि होती है और पाव भर गाय या बकरी के दूध में ६ मा० शहद मिला और १० मा० गाय का घी १५ काली मिर्च पीस कर डाले और मुआफ़िक की मिश्री मिला कर गुनगुना पीने से रक्त की वृद्धि होती है और हल्के शीघ्र पचने वाले अन्न तथा घी, दूध, मिश्री, मक्खन और सितोपला (वंशलोचन १ तो० छोटी पीपल ६ मा० कल्मीतज ६ मा० छोटी इलायची के दाने १ तो० सफेद जीरा ६ मा० मुलहटी ९ मा० मिश्री ५ तो० मिलाकर कूट पीस कर चटनी बनाले) इस का चूर्ण शरबत अनार में चाट ऊपर से गाय या बकरी का गुनगुना मीठा पड़ा दूध पीने से मेदवृद्धि होती है और पाचनशक्ति जब बढ़जावे तब धारोष्ण दूध, खीर, मालपुआ आदि पौष्टिक चीज़ों के खाने से शुक्र की वृद्धि होती है।

यक्ष्मा में पथ्य

भूसी मिला गेहूँ का आटा, मूंग की धोवा दाल, गऊ या बकरी का दूध, घी, मक्खन और तरकारियों में परवल-केला, घियातोरई, आलू का रसा आदि हल्के शीघ्र

पचने वाले पदार्थ सेवन करना तथा मैथुन और गरिष्ठ पदार्थों के सेवन से बचना योग्य है। पीपल वृक्ष के नीचे रहे।

तपेदिक के रोगों को अत्यन्त लाभदायक अमृतप्राश रसायन

ताजी शतावर का रस या सूखी का काढ़ा ६४ तो०, गिलोय का कल्क १ सेर, सौ बड़ी हरड़ों का बकला और आध सेर कुड़ा की छाल को लेकर अलग २ अठगुने जल में काढ़ा बनावे जब चौथाई रह जावे तब सब रसों को फिर कड़ाही में डाल औटावे जब कुछ गाढ़ा होने लगे तब ३ सेर सफेद बूरा और आंवला, दारचीनी, चीता, मुनक्का, शुद्ध शिलाजीत, पाषाण भेद और हड़ताल वर्की की भस्म यह सब एक २ तो० कूट पीस कर मिला कर जब लपसी सा हो जाय तब उतार अमृतवान में रख छोड़े और बल के अनुसार ६ माशे से २ तोला तक सेवन करे।

जीर्णज्वर पर उशीरादि चूरन

१—खस, नेत्रवाला, पत्रज, मीठाकूट, आंवला, सेमर का मूसला, सफेद मूसली, स्याहमूसली, सफेद इलायची मुनक्का, केशर, नागकेशर, कमल केशर, सूखे भसीडें, कपूर, सफेद और लाल चन्दन, सोंठ, मिर्च, पीपल, मुलहटी, महुआ का फूल, धान की खील, असगन्ध, शतावरि, गोखरू, कोंच के बीज,

जायफल, कंकोल, विदारीकन्द एक २ तो० वंग, कान्तिसार, मोती, मूंगा, की भस्म छः २ मा० सोने के वरक ११ चांदी के वरक २५ सत गिलोय ६ तो० ले खरल कर सब को एक दिल करले एक २ माशा दवा एक २ माशा शहद, घी और मिश्री मिला कर चाटे।

२—शुद्ध खूबकला को २ मा० ले ५ मा० शर्वत विजूरी में मिला कर चाटे। ऊपर से आदपाव गुनगुना मीठा बकरी का दूध पीवे।

३—गुलबनफ़शा, गुलगावजुवाँ, गुलखतमी तुख्मकासनी हरी गिलोय, सौंफ, खूबकला चार २ मा०, गुलनीलोफर तुख्म खुरफा, तुख्मकाहू छः २ मा० अन्जीर ४ दाने उन्नाव ५ दाने मुनक्का ७ दाने सिपिस्तां ५ दाने। शक्कर ३ तो०, काढ़ा बना पिलावे।

४—प्रवालपिष्टि (मूंगा गुलाब जल में पिसा हुआ) १ तो० सत गिलोय २ तो० गोदन्ती हड़ताल १ तो० अतीस २ तो० १ रत्ती से ४ रत्ती शहद में मिला कर चाटना। जीर्णज्वर पर सहसमुइया बूटी को भी दे सकते हैं।

५—सत गिलोय, वन्शलोचन, सफेद इलायची, कालीमिर्च, शुद्ध भिलावा। समभाग पीसकर १ रत्ती चाट ऊपर से पावभर दूध पीवे प्रति दिन २॥ तोले दूध बढ़ावे जब दूध हज़म होता जावे और सेरभर तक पीलेवे तो मरीज़ अच्छा समझना चाहिये।

(भिलावा शोधन—टोपी उतार, कुएं की पुरानी ईंट के बुरादे में ४० दिन गाड़दे फिर गरम पानी से धोवे फिर दूध में डाल उबाले)।

६—शुद्ध गोदन्ती को नीम और गिलोय के रसके १५ पुट दे घोंटे फिर भस्मकर पुराने बुखार में देवे एक २ रत्ती शहद में।

७—शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध शिंगरफ, समुद्रझाग सब बराबर २ लेकर अदरक के रस में तीन दिन खरल करे गरम बुखारों में बकरी के दूध में। कफ के बुखार में अर्क गावजुवां वा शहद में।

८—वन्शलोचन, छोटी इलायची के दाने, जटामासी, खस, शीतलचीनी, गिलोय का सत, नागकेशर, चित्रक की जड़, गदहपूर्णा की जड़, छोटी पीपल, अजमोद, लौंग, समान भाग लेकर, मिश्री समान भाग लेकर २ मा० दवा १ रत्ती प्रवाल भस्म ६ माशे शहद में मिला कर चटावे।

९—लहसुनवटी-शुद्ध लहसुन, सफेद ज़ीरा, सेंधा निमक शुद्ध गन्धक, सोंठ, मिर्च, पीपल, भुनी हींग सब को समान भागले कूट पीस छान कर कागज़ी नीबू के रस में घोट चने की बराबर गोली बना सेवन करे।

१०—पीपल वृक्ष का पञ्चांग, १ सेर ले १६ भाग जल में चढ़ावे जब चतुर्थांश रह जाय तब उतार छान ८ माशे अभ्रकभस्म डालकर पकावे और गाढ़ा होने

पर उतार दो २ रत्ती की गोली बना एक २ गोली सेवन करे।

११—गुलबनफ़शा ४ मा०, गुल गावजुबां ४ मा०, गुल नीलोफर ६ मा०, गुल ख़तमी ४ मा०, तुख्म खुरफा ६ मा०, तुख्म काहू ६ मा०, तुख़म कासनी ४ मा०, अंजीर ४ दाने, उन्नाव ५ दाने, मुनक्का ७ दाने, सिपिस्तां ५ दाने, हरी गिलोय ४ मा०, शक्कर तीन तोला, सौंफ ४ मा०, खूबकला ४ मा० मट्टी के बर्तन में ॥ जल ऽ= रहे शक्कर डाल पिलावे।

पुराने बुखार पर घृत।

१२—नीलोफर, कमलगट्टा की गिरी, खस, गेहूँ, साठी के चावल आधी २ छटांक, मुलहटी, खरैंटी, शितावर, त्रिफला, त्रिकुटा, खीरे के बीज, ककड़ी के बीज एक २ छटांक, केले की फली दो सबको जव कूट कर चार सेर पानी में औटावे, जब एक सेर रह जाय उतार मल कर छान ३ सेर गाय का दूध डाल फिर पकावे जब २ सेर रह जाय १ सेर गाय का घी डाल कर पचावे जब केवल घी रह जाय उतार ले, इस घी की शरीर पर मालिश करनी और यदि खांसी न हो तो १ मा० घी, २ माशा बूरा में मिला कर खिलाना, ऊपर से १ घण्टा तक पानी न देना।

संनिपात ।

१—देवदारु, धनिया, नागरमोथा, दोनों कटाई काढ़ा देने से संनिपात ज्वर दूर होता है ।

२—संनिपात में पाखाना लाने के लिए अंडी का तेल खूब लगा कर गरम रोटी से सेके ।

जुबान बन्द हो तो

लोयबान का सत काग़ज़ से नाक में फूंके ।

मूर्च्छा में

भी सत लोयबान सुंघाना तथा कायफल भी सुंघा सकते हैं ।

शीतांग संनिपात में माणिक्य रस ।

पारा ३ तो०, संखिया ३ तो०, गन्धक ४ तो०, तवकिया हड़ताल ३ तो०, मनसिल ३ तो०, शीशा ३ तो० शीशे को पिघला कर उस में पारद डाल दे फिर सब औषधियां मिला कर खरल कर आतिशी शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में ५-१०-१६ पहर की आंच दे ।

इनफ्लूऐंजा ज्वर में

परमेंगनेट आफ़ पुटास या क्लोरिज़न के कुल्ले बीमारों की सेवा करने वालों को करने चाहियें । रोगी को भोजन हलका देना और एक दिन में डेढ़ सेर तक

दूध अवश्य पिलाना चाहिये। ठंडे पानी में थोड़ा नींबू या अनार का रस मिलाकर पिलाना चाहिये सोडावाटर और जौ का पानी भी दे सकते हैं। ५ से १० ग्रीन तक कुनैन रोज़ खाना चाहिये।

ज्वर की दवा—नाइट्रेट आफ पोटास १० ग्रीन, स्प्रिट आफ नाइट्रेट ईथर ३० बूंद, लाइकर आफ ऐसीटाट आफ अमोनिया ६० बूंद, पानी ? औंस। यदि ज्वर अधिक चढ़ आवे तो इस दवा में से प्रत्येक दो व तीन घण्टे वाद १ औंस की एक मात्रा देनी चाहिये।

खांसी की दवा

कारवोनेड आफ अवोनियम ५ ग्रेन, वाई कारवोनेट आफ सोडियम ३० ग्रेन, इपिकाक्यून्हावाइम १० बूंद, पानी १ औंस।

इस दवा में से एक औंस की १ खूराक, खांसी अधिक होने पर हर आधे घण्टे पिलानी चाहिये। कमज़ोरी में या सन्निपात में ब्रांडी के दो तीन चमचे थोड़े दूध या पानी में देने चाहिये।

स्टिकनिया और डेज़ीटेलिस आदि दिल को ताक़त पहुंचाने वाली दवाइयां डाक्टर की राय से देनी चाहिये। तुलसी के पत्तों की चाय पीनी चाहिये। इलायची के तेल को सूंघना भी रोग से सुरक्षित रखता है।

लाइकरएमेनिया ६ औंस एमनकार्व २४ ग्रेन, पानी ६ औंस इन सव की वारह खूराक करना, १ मरीज़ को १ खुराक चार २ घण्टे में देना।

इन्फ्लूएन्जा (युद्धज्वर) परदेसी प्रयोग

१—तुलसी के पत्तों का रस, विल्व के पत्ते का रस, पोदीने के पत्ते का रस, अदरक का रस, चार २ आने भर लेकर शहद के साथ पीवे।

२—वहेड़े का छिलका, अनार का छिलका, मुलहटी का सत एक २ तो० लेकर सवा तोला लोयवान के फूल के साथ और आधा तो० अमलतास के गूदे के साथ मिला कर देवे।

३—वुखार की गोलियां–मुलहटी, दालचीनी, पीपलामूल पानड़ी, एक २ तो०, एलुआ ३ मा०, हरड़, गिलोय का सत, छः २ मा०, कपूर ३ मा०, रेवत-चीनी ६ मा०, गरम पानी के साथ (सव दवाइयों को कूट छान) चने वरावर गोली वना लेवे। साधारण वुखार में २, उतरने पर १ गोली खानी चाहिये।

४—हींग, कपूर, नवसादर समान भाग वारीक पीस एक २ रत्ती की पुड़िया वना दिन में कई वार देना, पथ्य दूध।

५—हैज़ा में वर्णित संजीवनीवटी देना।

इन्फ्लूएन्जा से बचने का उपाय

अजवायन १ तो०, पोदीना सूखा १ तो०, वड़ी इलायची १ तो०, पीपल छोटी छः मा०, तुलसी की सूखी पत्ती ६ मा०, इन सव दवाइयों को कूट पीस कपड़े

में छान लेवे और इलायची का सत १ माशा, कपूर दो माशे में मिलाकर १ माशा सवेरे, १ माशा रात को सोते वक्त फांक कर ऊपर से १ घूंट गरम जल पी लेना चाहिये। लड़कों को आधी खूराक ताजे जल से बिल्कुल छोटों को १ रत्ती मां के दूध में घोल कर देना।

ताऊन आदि ज्वरों पर।

तुलसी की पत्ती, बेल की पत्ती, पीपल की पत्ती एक २ छटांक ले कुचलकर सेरभर पानी में काढ़ा बनावे जब छटपाव रह जाय उतार छान दो २ घन्टे में टका २ भर पिलावे।

२—नीम के हरे पत्ते १० तो० बनफ़शा २॥ तो० कलोंजी १ मा० पावभर पानी में घोट १ तो० काला निमक डाल दो २ तो० दो २ घन्टे में पिलावे। गिल्टी पर नीम की ही पुलटिस बाँधे।

शीतला मसूरिका ज्वर।

१—कटय्या की जड़ दो आने भर लेकर काढ़ा बना पिलावे।

२—हल्दी को पानी में पीस एक २ मा० की गोली बनावे एक २ गोली शीतल जल से देना।

मोतीझरा-मन्थज्वरे।

१—सिर्फ लौंग का पानी पीने को देना (लौंग के ३ फूल से ७ फूल तक डाले और चार दिया पानी का

१ दिया रहने पर पानी पिलाना) बच्चों को माता का दूध या बकरी का दूध देना।

२—सफेद चन्दन, सीक का ज़ीरा, नेत्रवाला, चिरायता कुड़ा की छाल, स्याह ज़ीरा, गिलोय, छोटी इलायची, कमलगट्टा की मींग, खस, पाषाणभेद, चन्दनमुर्ख वालछड़, वारहसिंगा, तुलसी पत्र, काली मिर्च, केशरकस्तूरी, गोरोचन सोने के वरक, मूंगाशुद्ध, अनविधे मोती, सब को बराबरले गंगाजल या गुलाबजल से मूंगा बराबर गोली बनाना। और सेर का तीन पाव शेष रहे जल देना। १ घूंट जल से दवा देना।

३—अण्डी के तेल का दीपक जलावे।

४—रोगी के सिरहाने १ लोटा जल उस में बताशे वा फूल सुगन्धित डाल कर रखे।

५—चारपाई पर अनविधे मोती फैला देना।

मन्थज्वरपर।

नागरमोथा, स्याहतरा, मुलहटी, मुनक्का छः २ माशे ले १॥ पावभर पानी में क्वाथ बनावे डेढ छटांक जल रह जाने पर उतार मलकर छान २ तोला शहद मिला कर पीवे।

ज्वरों पर

आनन्द भैरव रस

शुद्ध सींखिया, शुद्ध सिंगरफ, शुद्ध चौंकिया, सुहागा, घी में भुनी हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल, सफेद इलायची के दाने

लौंग, सब एक २ तोला ले ४ पहर अदरख के रस में खरल कर उड़द के बराबर गोली बनावे एक २ गोली शीतल जल से सेवन करे।

बसन्तमालती मोती शुद्ध २ मा० सोने के वरक ४ मा० खपरिया ६ मा० सिंगरफ ८ मा० दक्खिनी काली मिर्च १६ मा० मक्खन में ८ दिन घोटे फिर ७ दिन तक नीबू के रस में घोटें १ रत्ती से ४ रत्ती तक शहद में मिला कर चाटने से सब ज्वरों की गर्मी एवं निर्बलता दूर होती है।

सुदर्शन चूर्ण

कालाअगर, हल्दी, वच, नागरमोथा, मजीठ, जवासा, काकडासींघी, भटकटैया, सोंठ, वनफ़शा, पित्तपापड़ा, नीम की छाल, पीपलामूल, सुगन्ध वाला, कचूर, पुहकरमूल, छोटीपीपल, मुर्वा कुडा की छाल, सैंजनावीज, इन्द्रजौ, शतावर, दारुहल्दी, लाल चन्दन, पद्माख, सतबिरोजा, खस, तज, फिटकरी का फूला, शालपर्णी अजवायन, अतीस, बेलगूदा, मिर्च, तेजपत्र, आंवला, गुरच कुटकी, सब बराबर २ ले और उनसे आधा चिरायता मिलावे १ रत्ती से २ रत्ती तक। बच्चों को १ चावल से २ चावल तक।

१ रत्ती शहद में खांसी में।

१ रत्ती ठंडे जल से वादी ववासीर में।

दस्त, कब्ज़ियत, तिल्ली उदर रोग में छोटी हर्रों के साथ।

सब ज्वर पर धूप ।

जामन, हल्दी और सांप की कैंचली की धूप देने से सब ज्वर तथा रात्रिज्वर दूर होता है।

नये ज्वर से बचने का उपाय ।

१—षड्विंदु तेल, चन्दनादि तेल, कपूरादि तेल, अथवा इत्र लगा कर रोगी के पास जाना।

२—कड़ुवे तेल की मालिश करना ।

३—अत्यन्त धूप और ठन्ड से बचना ।

४—औटा हुआ पानी पीना ।

५—चन्दन, कपूर, गन्धक, धूप, वालछड़, अगर, तगर, वच लोग्रवान और गूगल की घर में धूनी देना ।

६—मकान, कपड़ों की सफ़ाई रखना ।

बीमारी के दिनों में निम्न लिखित चाय पीना ।

७—बनफ़्शा १ तो० अदरख ६ मा० तुलसीदल १० कालीमिर्च १० चाय १ तो०, ३ छटांक पानी ५ तो० दूध में चाय की तरह खूब पका छान ४ तो० बूरा मिलाकर पीना ।

दोपहर को भोजन के साथ की चटनी ।

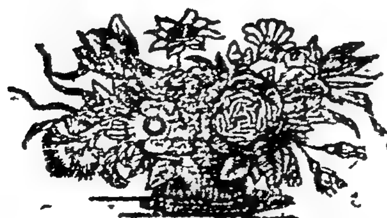
८—अदरख १ तो०, सेंधा निमक, काली मिर्च, नौसादर छः २ माशा डाल नीबू का रस डाल चटनी बनावे और भोजन के साथ खावे।

रात को खाने की गोली।

९—नीम की पत्ती डेढपाव, चिरचिरा की पत्ती १ पाव काली मिर्च आदपाव, छोटी हरड, वनफ़शा, दालचीनी, अजवायन, सोंठ, एक २ छटांक मिला कर कूट पीस छानले और एक २ माशे की गोली शहद में वना रात को सोते वक्त २-३ घूंट गुनगुने पानी से खावे।

ज्वर दूर होजाने के बाद कबजियत पर काढ़ा

अमलतास का गूदा २ तो० कुटकी २ तो० निसोत २ तो० मुनक्का बीज निकले ५ अदद, सनाय की पत्ती २ तो० वड़ी हरड़ की छाल २ तो० गुलाब के फूल सूखे २ तो० वा गीले ४ तोला। अमलतास, दाख, गुलकन्द को छोड़ बाक़ी चूरन बनाले, फिर उपरोक्त चीज़ों को भी मिला कल्क करले, इस में से २ या २॥ तोले के अन्दाज़ पावभर पानी में डाल कर पीने से १-२ दस्त खुलकर हो जाता है। भूख खूब लगती है।



तिल्ली



१—कवीला, पीपलामूल, चित्रक, छोटी पीपल, काली मिर्च, सोंठ, बराबरले कूट पीस छान कर सब की बराबर शक्कर मिलावे खुराक ५ से ७ मा० तक फांक कर ऊपर से ताजा पानी पीवे दर्द कोलंज, वायुगोला, पेट का वरम, पीलिया वा तिल्ली को फ़ायदा करता है।

२—सफेद फिटकरी का फूला ८ मा० नीलाथोथा का फूला १ मा० वारीक पीसले २ रत्ती १ माशा शरवत दीनार में देवे।

३—सिरका में पड़े हुए 'अ'जीर या मुनक्का १ या २ खाया करे। और सिरका में पड़े अन्जीरों को ही पीस कर गरम कर तिल्ली पर लेप करे।

४—सेवफल को सुखा कर जलाले और तीन माशे भस्म एक छटांक गाय के मठे से सेवन करे।

५—सुहागा का फूला ४ मा० पुराना गुड़ १ तो० में मिला कर चने की बराबर गोलियां बनाले और एक २ गोली सुबह, दोपहर और शाम को गुनगुने पानी से खावे।

६—गुलाब के फूल ३ तो० तबासीर १० मा० मगज़-तुख्म पेठा १० मा० तुख्म खुरफा ४ मा० रेवत चीनी ५ मा० केशर १ मा० कपूर ४ रत्ती कूटछान कर हरी कासनी के पत्तों के अर्क में खमीरा सा बनाले और २ मा० से ४ मा० तक चाटकर ऊपर से सादा सिकञ्जबीन पीवे।

७—रेवतचीनी ४ मा०, बालछड़, मुलहटी, मस्तगी चार २ मा०, तबासी ७ मा० ज़रिश्क बीदाना १७ मा० कूट पीस कर चूरन बनाले और ४ मा० से ६ माशे तक फांक कर ऊपर से सिकञ्जबीन सादा १ तोले ५ तो० पानी में डाल कर पीवे।

८—लाल चन्दन, पीपल, गिलोय, नीम के पत्ते एक २ तो०, मिला कूट पीस कर चूर्ण बनाले और चार २ मा०, सुबह शाम खाकर ऊपर से खूब ठंडा पानी पीवे।

९—तुख्म कासनी १४ मा०, तुख्म खुरफा, १० मा०, ज़रिश्क बीदाना १० मा०, मगज़ तुख्म ख्यारैन, मगज़ तुख्म कद्दू, मगज़ तुख्म खरबूज़ा दस २ मा० गुलाब के फूल ७ मा०, गोंद बबूल ३ मा०, सफेद चन्दन २ मा०, तबासीर २ मा०। ज़रिश्क को सिरके में पीस ले बाक़ी दवाइयों को कूट पीस इस में मिला चूर्ण सा बनाले, दो २ माशे खावे।

१०—राई और हल्दी खाने की बराबर लेकर कूट पीस बकरी के पेशाब की २ पुट देवे, पानी २ बार डाल २

कर सुखावे फिर २ माशा सुबह शाम फांक कर ऊपर से दो तीन घूंट पानी ठंडा पीवे।

११—अंजीर के पत्ते २०, सुहागा तेलिया दारुहल्दी, काला निमक, सेंधा निमक, साँभर निमक, जवाखार छः २ तो०, हींग २ तो० को ले कूट पीस १२ तो० सरसों के तेल में सान अन्जीर के पत्तों पर लेप करे और तह लगाता जाय और एक हांडी में रख कपड़ मिट्टी कर फूंक ले। १ माशा वासी पानी से खावे।

१२—तुख्म कासनी, तुख्म कसूस सात २ मा०, छोटी माई १० मा०, स्याहतरा २ तो०, हरड़ काली २ तो०, हरड़ पीली ३ तो०, इमली २ तो०, आलू-बुखारा २० अदद, तीन पाव पानी में औटावे तीन छटांक रह जाने पर उतार छान ३ तोले तुरंजबीन डाल पीवे।

१३—अफतीमून २१ मा० ३ तो० पानी में खूब बारीक पीसे और ५ तो० सिकञ्जबीन सादा मिलाकर पीवे।

१४—रेवत चीनी १ तो० एलुवा ६ मा० कुश्तामरजान ६ मा० तुख्म करफस ६ मा० गारीकून ६ माशे निमक लाल ६ मा० सब को कूट पीस चने की बराबर गोली बनाले ४ गोली से ६ तक शहद के पानी से सेवन करे।

१५—नौसादर, शोरह कलमी, गन्धक शुद्ध, सुहागा का फूला, समुद्रफेन, काली मिर्च, कुटकी, बराबर २ ले

कूट पीस घियागुवार के अर्क में गोली चने बराबर बनावे २ से ४ गोली तक सुवह शाम गरम पानी से खावे।

१६—सुहागा का फूला, सीप की भस्म बराबर २ ले कूट पीस १ मा० शहद में चाट ऊपर से शहद का पानी पीवे।

१७—नौसादर, सुहागा, लोटनसज्जी एक २ पाव लेकर कूट कर एक कोरे घड़े में डाले ऊपर तक पानी से घड़े को भरदे उस का मुंह बन्द कर नीचे एक रक़ाबी रखकर धूपमें रखदे एक सप्ताह बाद अन्दर से जौ सरीखे फूट निकलेंगे उन को जमा कर रखे वे जौ १ मा० से ४ मा० तक पानी ताज़ा के साथ खिलावे चाहे कितनी ही बड़ी तिल्ली क्यों न हो नष्ट होगी।

१८—कंज की मींग २ तो० चौकिया सुहागा भुना हुआ २ तो० मस्तगी ज़दमी २ तो० हलीतयत खालिस २ तो० सब को पीस अदरक के रस में घोटे जंगली बेर के बराबर गोली बना एक २ गोली सुवह शाम ताजे पानी से।

१९—सरफोका की जड़ का चूर्ण ३ मा० सुवह फांक ऊपर से थोड़ा गाय का मट्ठा पीना। अथवा ६ मा० सरफोका १० तो० काली मिर्च के साथ पानी में पीस ऽ= जल में मिला कर पीना।

२०—ग्वारपाठा के गूदे का पाक बना सेवन करना।

२१—कुटकी कूट कर छान के गौ के मूत्र में भिगो कर दूसरे दिन निकालकर धूप में सुखालो फिर कुटकी के बराबर दोसाल का पुराना गुड़ मिला खूब कूटना फिर चने की बराबर गोली बना १ गोली सुबह १ १ शाम को ताजे जल से निगल जाना।

२२—आड़ूवृक्ष की पत्ती १ पाव काली मिर्च १ छटांक दोनों को पीस झरबेरी के बेर के बराबर गोली बना कर सुखाले १ गोली खाकर ऊपर से ऊख के रस के सिरके की सिकञ्जबीन २ तो० आध पाव गरम पानी में घोल कर पीना सिर्फ १ बार सुबह को और बाईं करवट से २० मिनट तक लेटना।

२३—ऊटकटारे के फूल मय कांटे वा फूल के लेकर पानी में पीसे फिर कपड़े पर लेप कर तिल्ली पर चिपकादे अच्छा होकर छूटेगा।

२४—नौसादर विलायती २॥ तो० सुहागा तेलिया ५ तो० शोरह कल्मी ८॥ तो० घियाकुवार का गूदा डेढ़पाव में रगड़ कर चना-प्रमाण गोली बना शीतल जल से देना, बड़ों को २ गोली।

२५—कल्मी शोरा, नौसादर, एलुआ, सज्जीखार, जवाखार, सोंठ, मिर्च पीपल, पांचों नोन, नयाचूना, अफतीमून, तुख्मकरफ्स, सुहागा का फूला, भुनी हींग एक २ तो० सब को लेकर घियाकुवार के रस में

गोली बना तक्र से देनी तिल्ली दूर होगी उदर विकार में पानी से।

२६—मकोय का शाक खाना वा अर्क पीना।

२७—फिटकरी २ तोला, सुहागा २ तोला, दोनों को आग पर अलग २ फुला लेवे फिर दोनों को एक में ही मिलाकर २ रत्ती बंगला पान में रखकर खावे, ९ दिन में बड़ी सारी तिल्ली वा वायगोला दूर हो।

२८—आक के पीले पत्ते और सेंधा निमक बराबर ले जला कर ३ मा० शहद के साथ खाने से तिल्ली दूर होती है।

२९—भुना सुहागे की खील ३ मारो रोज़ खाने से तिल्ली अच्छी होती है।

अजवायन का सत्वार्क सुधानि०।

३०—सेर अजवायन लेकर उस में भृंगराज (घमरा) के दस पुट देवे फिर एक घड़े में मदार के पत्ते बिछा कर अजवायन डाले फिर पत्ते बिछावे इस प्रकार कई परत बना २ कर अजवायन डाले घड़े का मुंह खूब बन्द कर दे पेंदी में एक छेद कर दे और उस के नीचे एक क़लई का बर्तन रख , ४८ पहर की आंच दे सत्वार्क बर्तन में आ [illegible] गा यह बहुत तेज़ होता है १ बूंद अर्क पान [illegible] कर खाने से तिल्ली, जलोदर,

श्वांस, कास, गृहिणी, वान्ति, पित्तविकार, दांतों का दर्द, सर्दी, वायु, कफ, रक्त गिरना आदि विकार दूर हो पुरुषत्व शक्ति आती है।

३१—सेंधा निमक, काला निमक, खारी नोन, विडनोन, सज्जीखार, जवाखार, कल्मीशोरा, चौकिया सुहागा, ताड़ के फल की राख एक २ छटांक लेकर कूट ले १ मिट्टी के बर्तन में ढाई सेर जल मिला कर आग पर पकावे जब डेढ़ पाव जल शेष रहे तो उतार कर नियार कर साफ़ जल को शीशी में रख लेवे सात बूंद से १० बूंद तक १ तोले मिश्री के शरबत में पिलाना चाहिये। बच्चों को ४ बूंद। रूखा अन्न खावे, घी भुना हुआ अन्न वर्जित है।

२२—अर्क नींबू ५ तो०, अर्क अदरक ५ तो०, सिरका कोई सा हो ५ तो०, घियागुवार का गूदा ५ तो०, नौसादर ३ तो०, सुहागा १ तो०, हींग ६ माशे, किसी कांच के पात्र में भर कर धूप में ७ दिन रहने दे ६ माशा आधपाव जल में सेवन करना।

तिल्ली पर अर्क।

अर्क घियागुआर घियागुआर १२ सेर, पुराना गुड़ ४ सेर, हरड़ बहेड़ा आंवला, देसी अजवायन, सौंठ, काली मिर्च, वालछड़, नागर-मोथा, लोह चूर्ण, पाव २ भर तेलिया सुहागा

१० तोला, ३ मन पानी में डाल एक मटके में भरे फिर उसका मुंह बन्द कर २० दिन ज़मीन में गाड़ दे फिर निकाल छान ले २ तोला तक इस्तैमाल कर सकते हैं।

अंज़ीर का अर्क कन्धारी अंज़ीर आध सेर, किसमिस २० तो०, लोह चूर्ण १ तो० देसी अजवायन और खुरासानी अजवायन, अजमोद, दालचीनी, लौंग, नागरमोथा चार २ तोला, गुड़ पुराना ५ सेर, पानी ३२ सेर में भिगोकर गाड़ दे २५-३० दिन में निकाल अर्क छान बोतलों में भर ले १ से २ तोला तक सेवन करे।

अर्कशोरह शोरह १ सेर, हीराकसीस आध सेर, फिटकरी २० तो०, सेंधानिमक ४० तो०, २५ सेर पानी में अर्क खेंचे और जीभ पर घी मलकर ३ माशे अर्क में २ तोले पानी में पिये उदर, जिगर, ववासीर व तिल्ली को फ़ायदा देता है।

तिल्ली पर घृत महारोचक।

झाऊ के पेड़ की छाल, वेरी की छाल सेर २ भर १२ सेर पानी में भिगो दे २ दिन के वाद आग पर मल कर आग पर चढ़ादे जब ६ सेर पानी रहजाय तब उतार कर मल कर छानले और उस में हरड़, वहेडा, आंवला, छोटी पीपल काली मिर्च, सोंठ, हींग, अनारदाना, अज-

वायन, वायविडंग, तेजपत्र, दारुहल्दी, देवदारु, पोहकरमूल, बच, काला निमक, जवाखार को छः २ माशे कूट छान कर मिलावे और ३ सेर बकरी का दूध डाल फिर पकावे जब चारसेर पानी रह जाय तब १ सेर गायका घी डाल दे जब सिर्फ घी ही रहे तब उतार छान रख छोड़े ६ माशा से १ तोले तक पावभर गाय के दूध में डाल (जिस में मुवाफ़िक़ का मीठा भी पड़ा हो) पीवे या १ तो० घी १ तो० बूरा मिला कर खावे ।

चित्रकादिघृत

चीता १२० तो० कांजी ४०० तो० दही का मट्ठा ८०० तो० चीता को २ सेर पानी में भिगोदे दूसरे दिन कांजी और मट्ठा को मिला आग पर चढ़ादे जब २ सेर पानी रह जाय तब दारुहल्दी, हल्दी सफेद और काला ज़ीरा, काली मिर्च, पीपलामूल, दो २ तोला चीता सोंठ तालीसपत्र, चव, जवाखार सेंधानिमक एक २ तो० कूट पीस छान कर उस में डालदे और २ सेर गाय का घी डाल जब सिर्फ घी रह जाय उतार छान कर ऊपर की रीति से सेवन करे ।

तिल्ली पर लेप ।

१—सफेद चन्दन, तुख्मखुरफा, धनिया, रेवतचीनी दो २ तो० लेकर अर्क़ गुलाब या सिरका में पीस गरम कर लेप करे ।

२—सफेद चन्दन, फली बबूल, कशनीज, माई बराबर २ लेकर ऊपर की तरह लेप करे।

३—बाबूना, बालछड़, मेथी के बीज एक २ तो० अन्ज़ीर कन्धारी, ५ अदद सिरका में मिला लेप करे।

४—अंज़ीर, सब्र, सुहागा तेलिया को सिरका में मिला लेप करे। गूगल को सिरका में पका कर लगावे।

५—कलई चूना को पीस शहद में मिला लेप करे। ऊपर से अंज़ीर के पत्ते बांधे।

जिगर के बढ़ने पर भी यही औषधियां दे सकते हैं।



पेट का दर्द



१—नमक को गरम पानी में डाल कै करावे।

२—तमाखू पूरवी तीन हिस्सा फिटकरी दो हिस्सा मिला कर पीसकर गरम पानीसे खिलानेसे कै होजाती है।

३—सिकंजवीन सादा २ तो० अर्क गुलाव पांच तो० में मिला कर पिलावे।

४—अर्क देसी अजवायन ४० तो० नरकचूर २० तो० पान २० तोला तालीसपत्र २० तो० अर्कगुलाव ४ सेर पानी ४ सेर सव को कूट पीस १ रात दिन भिगोदे फिर भवके से अर्क खींचले दो से चार तोले तक पीवे।

५—छोटी इलायची २४, सौंफ १० मा० मिश्री ३ तोला अर्कगुलाव २० तोले में काढ़ा करे ५–६ तोले रह जाने पर उतार छान कर पिलावे।

६—६ माशा मस्तगी को १० तोला अर्कगुलाव में औटावे ५ तोला रहजाने पर उतार छानकर पीवे। १ तो० मिश्री मिलाकर।

७—उमदा पान ४० दालचीनी १२ तोला नागरमोथा ७ तोला वहमन सफेद वा सुर्ख, वड़ी इलायची, छोटी इलायची, जायफल, तोदरी सुर्ख पांच २ तोला

१० सेर पानी में एक दिन रात भिगोकर अर्क खींचले २ से ४ तोला तक पिलावे।

८—हरड़, बहेड़ा, आंवला, सौंफ, ज़ीरा सफेद २ तोला काली मिर्च, सोंठ, छोटी इलायची, कबावचीनी, सुहागा का फूला नौसादर एक २ तोला ले कूट छान कर चूरन बनाले खूराक २ से ४ मा० तक।

९—गुजराती अकरकरहा. पीपल छोटी, काली मिर्च, बारह २ मा० सोंठ, कबावचीनी, सुहागा का फूला, शुद्ध वच्छनाग, आठ २ मा० चीता पन्द्रह माशे कूट पीस भंगरा के रस में चना बराबर गोली बनाले। १ या २ गोली पानी में लपेट कर खावे, पेटका दर्द कब्ज़, वायगोला बवासीर, खांसी, कीड़े दूर हों।

१०—शिंगरफ शुद्ध, सुहागा का फूला, जायफल, पीपल, काली मिर्च शुद्ध धतूरे के बीज, शुद्ध वच्छनाग हमवज़न ले कूट पीस शहद से मटर के बराबर गोली बनाले एक २ गोली गरम पानी से।

११—साफ कबीला, १ तो० छोटी पीपल, काली मिर्च, सोंठ, आंवला, तबासीर, छोटी इलायची के दाने नौ २ मा०, केशर ६ मा०, अर्क गुलाब २४ तो० शहद २४ तो० मिश्री २४ तो० सब को कूट पीस सब को मिला अर्क गुलाब में कवाम सा करले यानी माजूनसी बनाले। ४ से ६ मा० तक खावे (कबीला को पानी में डाले जो ऊपर तैरता रहे उसे लेले)।

१२—आंवलासार गन्धक शुद्ध, काली मिर्च, काला निमक दो २ तो० लेकर ६ तो० नीबू के अर्क में पीस कर चने की बराबर गोली बनाले एक २ गोली सुबह शाम खावे।

१३—छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, तज एक २ तो० मिश्री कालपी ६ तो० कूट पीस चूरन बनाले ४ मा० चूरन २-३ घूंट गुनगुने पानी से खावे।

१४—हींग १ मा० काला निमक २ मा० वायविड़ंग ३ मा० पीपलामूल ४ माशे गिलोय ५ मा० अजवायन ६ मा० हरड का बक्कल ७ मा० अनार दाना ८ मा० चीता १० मा० कूट पीस ११ माशे फिटकरी का फूला मिला कर चूरन बनाले २ से ४ माशे तक सेवन करे।

१५—१२ सिरस के पत्ते १२ काली मिर्च के साथ पीसे १ छटांक पानी में मिला ज़रा गुनगुना कर पीवे।

१६—सफेद चन्दन, ज़रिश्कबीदाना, आंवला, छोटी हरड, ऊद, ज़रद आलू, छः २ मा लेकर पावभर अर्क गुलाब में औटावे १ छटांक रह जाने पर उतार छान २ तो० मिश्री मिला कर पीना।

१७—सुतवासोंठ २० तो० नमक साँभर ७ तो० सेरभर गाय के दही में साबित ही डालदे और सात दिन तक ढककर रखदे आठवें दिन सोंठ को निकाल सुखा कर चूरन बनाले और खाना खाने के बाद २ माशे दोपहर और शाम को खाया करे।

१८—त्रिफला, अमलतास की गूदी का काढ़ा, घी और चीनी डाल पिलाना इस से शूल, दाह और रक्त, पित्त आराम होता है।

१९—चीनी के साथ आंवले का रस वा, शहद के साथ आंवले का चूर्ण चाटने से पित्तजशूल आराम होता है।

२०—सिरस के पत्ते १२ अदद काली मिर्च १२ अदद घोट पीस पीवे।

तेल—१

बालछड़, चिरायता, पोदीना, तेजपात एक २ तोला बाबूना १० मा० वच रूमीमस्तगी सात २ मा० दालचीनी ५ मा० असली केशर ४ माशा अरक गुलाब ४० तो० तिल्ली का तेल ऽ। पहिले दवाइयों को कूट पीस अर्क गुलाब में एक दिन भिगोदे दूसरे दिन कड़ाही में तेल मिला जोशदे जब सिर्फ तेल ही तेल रह जाय उतारले और गरम कर कर पेट के दर्द पर मला करे।

तेल—२

सम्हालू, सहज्जना, आक के पत्ते ताजे लेकर निचोड २ कर रस एक २ छटांक सब का निकाले फिर ६ तोले कड़वा तेल डाल आग पर चढ़ावे जब सिर्फ तेल ही रह जाय उतार छान कर रखले आवश्यकता पड़ने पर गरम गरम मले।

नारी घास को कूट कर गरम कर पेट पर बांधने से दर्द बन्द हो जाता है। थोड़ी देर राई का पलास्तर

लगाना भी लाभदायक है। गेहूँ की भूसी और निमक मिला पोटली बाँध सेकने से भी लाभ होगा।

पेट की सूजन पर

१—हलका जुल्लाव दे।

२—गुलबाबूना, तुख्मखतमी, नागरमोथा, अलसी. मेथी एक २ तोला सफेदफिटकरी रूमामस्तगी छः २ मा० गुलरोगन १० मा० दवाओं को कूट पीस छिरका में पका गुलरोगन मिला गुनगुना लेप करे।

३—मकोय के पत्ते, अमलतास का गूदा दो २ तो०, सोंठ ६ मा० सिरका में ऊपर की तरह लगावे।

४—रेवतचीनी ६ मा० राई १० माशा गुलबनफ़शा १ तो०, गुलरोगन १ तो० कूट पीस ऊपर की रीति से लगावे।

५—वालछड़, नागरमोथा, वाबूना, अजखर का फूल, (यह एक वृक्ष होता है इस के ऊपर हाथी की सूंड की तरह फूल की फली से लटकती है) एक एक तो० मकोय की पत्ती का रस ४ तो० सिरका १ तो० में मिला गरम कर लगावे।

६—कासनी के बीज, सौंफ, मुलहटी, दस २ मा० पाव भर पानी में औटावे आदपाव रह जाने पर उतार छान ३ तो० गुलकन्द मिला कर पीवे।

७—मजीठ, मस्तगी, सौंफ, कासनी चार २ मा० मुनक्का २ तो० पावभर पानी में काढ़ा बना २ तो० मिश्री मिला कर पीना।

८—सौंफ १० माशे तुख्म मकोय ७ माशे पावभर पानी में औटाना जब ऽ= रह जावे तब बादाम १० मिश्री दो तोले पीस कर डाल कर पीवे ।

९—इलायची खुर्द २४ अदद सौंफ १० मा० मिश्री ६ तो० अर्क गुलाब २० तो० औटा कर आधा रहने पर दो दफा करके पिलावे ।

वरम पर लेप ।

१—५ अन्जीर सिरके में पीस (घिस कर) वरम पर लेप करे ।

२—गुलबाबूना, तुख्म खतमी, नागरमोथा, अलसी, मेथी, एक २ तो० फिटकरी रूमी मस्तगी छः २ माशे गुलरोगन दस माशे रोगनगुल मलकर ऊपर से सब दवाइयों को पानी में पीस गरमकर लेप करे ।

३—मकोय के पत्ते २ तो० अमलतास का गूदा २ तो० सोंठ ६ मा० सिरका या अर्क गुलाब में रांध पेट पर लेप करे ।

४—असगन्ध २ तो० गिलअरमनी १ तो० अर्क गुलाब में पीस गरम कर लेप करे ।

५—रेवत चीनी ६ मा० राई दस माशे गुलबनफशा १ तो० गुलरोगन १ तो० का लेप करे ।

६—असगन्ध, गुलबनफशा, मकोय के पत्ते एक २ तो० सोंठ ६ माशा रेवतचीनी २ तो० कूट पीस सिरका में गरम कर पेट पर लेप करे ।

७—हींग, काली मिर्च, छोटी पीपल, सोंठ और सेंधा निमक बराबर २ ले पीस पानी में गरम कर पेट पर लेप करे।

८—मैनसिल वा कुटकी को कांजी में पीस गरम कर नाभि पर लेप करे शूल तुरन्त जावे।

९—लालगमीला का रस निकाल, सांभर निमक मिला दर्द की जगह पेट पर लेप करे।

१०—निमक हींग की मालिश पेट पर करे।

११—लोयबान पीस पानी में गिला गुनगुना लेप करना।

१२—जौ का आटा और मठा में जवाखार डाल कर अग्नि पर गरम करे और पेट पर लेप करे तो जठर से उत्पन्न सब रोग नष्ट हों।

१३—वातज–मिट्टी पानी में घोल आग पर रखना जब गाढ़ा हो जावे तब वस्त्र की पोटली में रख सेकना।

१४—देवदारु, वच, कूट, सोवा हींग, सेंधा निमक पीस गरम कर पेट पर लेप करने से वातज शूल आराम होता है।

त्रिदोषज शूल पर।

शंख भस्म १ माशा, सेंधा निमक, सोंठ, पीपल कालीमिर्च एक २ माशा हींग ४ रत्ती चूरन बना, एक २ माशा गुनगुने पानी से खावे।

दर्द कोलञ्ज।

आंतों में सुद्दा पड़ जाने से यह रोग होता है पेट में

अधिकता से दर्द होता है बड़ी वेचैनी होजाती है। पाखाना मुशकिल से दर्द के साथ होता है कभी २ दर्द के कारण वेहोशी और पसीना भी आजाता है।

१—गुलवनफ्शा १॥ तोला अंजीर कंधारी २० अदद आलू बुखारा २० अदद, मुनक्का ३ तोला, मुलहटी २॥ तो० अमलतास का गूदा ४ तो० वादाम का तेल १० मा० अमलतास और तेल को छोड़ सब को कूट करके डेढ सेर पानी में उवाले जव डेढ पाव रह जाय तव अमलतास का गूदा उस में मल और रोगन डाल खूब हल करके गुनगुना २ पिलावे।

२—तुख्म कर्र, तुख्मखरवूजा, मुनक्का दो २ तो० आधसेर में काढ़ा वनावे जव चौथाई रह जाय तव उतार मल कर छान कास्ट्रेल ४ तो० शहद ३ तो० मिलाकर गुनगुना २ पिलावे।

सावुन, गूगल, सेंधा लाल निमक, सोंठ दो तो० ले कूट अंगूठा के वरावर मोटी वत्तीसी वना पाखाने के मुकाम पर रक्खे।

३—तेलिया सुहागा, नीला थोथा, शुद्ध जमालगोटा चार २ मा० ले पानी में पीस थूहर के दूध में पतला कर गरम कर नाभि के चारों ओर मोटा २ सा लेप करदे।

४—विनौले की मींग २॥ तो० चमेली के तेल में गरम कर पेट पर लेप करे।

५—एलुवा १ तो० को पीस २ तो० कास्ट्रेल में गरम कर के पेट पर गुनगुना लेप करे।

६—१ कंजा की मींग ४ रत्ती काला निमक तीन छटांक सौंफ के अर्क में पीस गुनगुनी कर पीवे।

७—रसौत, हरड़की वक्लो, सोंठ, पीपल, काला निमक एक २ तोला ले चूरन बनाले ४ से ६ माशा तक गुनगुने जल से फांके।

८—आध सेर गाय के गुनगुने दूध में १० तो० गरमकर गायका घी डाले और १० तो० बूरा डाल गरम २ पीवे दर्द बन्द हो।

९—अमलतास का गूदा १ छटांक पावभर सौंफ के अर्क में घोले और ३ तो० कास्ट्रेल डाल खूब गरम कर गुनगुना पीवे। अंड की जड़ जला कर १ तोला फांके ऊपर से दो तीन घूंट गुनगुना पानी पीवे।

१०—बारहसिंगा के सींग की भस्म दो रत्ती से ४ रत्ती तक माउलअस्ल (शहद के पानी) से देवे।

११—मस्तगी, लौंग, सोंठ, दालचीनी, पीपल, कालीमिर्च नागकेसर एक २ तो० शकर ६ तो० कूट पीसकर चूरन बनाले ४ से ६ माशा तक गुनगुने जल से खावे।

१२—सिरका एक हिस्सा में दो हिस्सा अर्क गुलाब मिला गुनगुना कर गरम २ पिलावे।

१३—चूहे की मेंगनी और सौंफ को बराबर २ ले पानी में पीस गरम कर पेट पर लेप करे ऊपर से वड़ २ पान गरम करके बाँध दे।

१४—दो कोमल पत्ते पीपल के लेकर पीस कर गुड़ में मिला खाले ऊपर से गुनगुना पानी दो घूंट पीवे।

१५—अन्डी की मींग २० माशे सोंठ १५ माशा हींग ४ रत्ती काला निमक १ माशा। मींग और सोंठ को पावभर पानी में औटावे जब १ छटांक रह जाय छान हींग निमक पीस कर उसमें डाल गुनगुना पीले।

१६—किशमिश, मगज़ बादाम, मिश्री बीस २ माशे सौंफ ४ माशा सेंधा लाल निमक एक माशा जायफल एक कूट पीस अन्गूठे के वरावर मोटी वत्ती पानी से वना पाखाने के मुकाम पर रखे।

१७—हल्दी, सहजना की नरम छाल, अन्डी, सैंधानिमक सफेद सरसों, तुख्म मेथी, सौंफ, असगन्ध, गूगल दो दो तोले ले कूट पीस सिरका से गंद रोटी वना एक तरफ सेक दूसरी तरफ तिली का तेल चुपड़ गुनगुनी २ पेट पर वाँधे।

१८—शूल वाले को पानी के वजाय अर्क गुलाव, सौंफ या मकोय देना चाहिये।

१९—सोंठ, सुहागा, सोचल निमक, सेंजने के रस में गोली वना गुनगुने पानी से सेवन करे।

२०—आम के सूखे पत्ते और गली हुई सुपारी कूट कर तमाखू की जगह चिलम में धरकर पीने से शूल वन्द हो जाता है।

२१-कुचिलाभस्म एक तो० शंखभस्म एक तो० शुद्धवच्छ-नाग ३ माशा त्रिफला चूर्ण ३ तो०। दो रत्ती से

एक माशा तक गरम पानी से लेने से पेट दर्द, अफरा, अग्निमान्द्य और पांडु को आराम होता है।

२२—मग़ज़ तुख्म कर्द २ तो० गुलकन्द ३ तो० को पीस पावभर सौंफ के अर्क में हरीरा सा बनाले इस के पीने से पेट का दर्द या कालेज का दर्द बन्द हो जाता है।

अजीर्ण और बायगोला में।

१—मगज़तुख्मकर्द २ तो० गुलकन्द ३ तो० अर्क सौंफ २५ तो० कर्द और गुलकन्द को पीस सौंफ में हरीरासा बना कर पीवे।

२—गुलबनफ़शा ७ मा० सौंफ १० मा० तुख़्मखतमी १२ माशा अंजीर ५ गुलकन्द ३ तो० आधसेर पानी में औटावे चौथाई रहजाने पर उतार मलछानकर पीवे।

३—साफ गुलाब के फूल १ तो० गुलबनफ़शा १ तो० मिश्री २ तो० कूट छान कर चूरन बनाले ६ मा० फांक ऊपर से गुनगुना पानी २, ३ घूंट पीवे।

४—आधसेर गाय का दूध मक्खन ६ तोला शक्कर दस तो० गुनगुना पीवे।

५—५ तोला शरबत बनफ़शा में ६ माशा बादामका तेल मिला कर पीवे।

६—६ माशा ईसबगोल को फांक ऊपर से १ तोला शरबतबनफ़शा ५ तोले जल में मिला कर पीना।

७—मस्तगी ५ माशा मिश्री दस माशा कूट पीस छः २ माशा फाँक ऊपर से थोड़ा गुनगुना जल पीवे।

८—अंजीर कँधारी ५ अदद मुनक्का १॥ तोला बादाम १० पावभर पानी में औटावे ≤″ रहजाने पर उतार मल कर छान २ तोला मिश्री और दो तोला शहद मिला पीवे।

९—सौंफ और सफेद बूरा बराबर मिला कर चार २ माशा फांक कर ऊपर से दूध गुनगुना मीठा डाल कर पीवे दोनों वक्त।

१०—सौंफ़, बड़ी हरड़, सुतबांसोंठ, सनाय दो २ तो० मिश्री ४ तो० शहद ४ तो० मुनक्का दस तो०, सब को कूट पीस मिला कर माजूनसी बनाले। ६ मा० से एक तो० तक खावे।

११—सिपिस्ताँ ६० अदद, उन्नाव २० अदद, ईसबगोल ३२ माशा गुलबनफ़शा २४ माशा गुलाब के फूल २४ माशा गावजुबां १८ माशा बीदाना सात माशा मिश्री २५ तो० ईसबगोल बीदाना और मिश्री को छोड़ अन्य दवाओं को सेर भर पानी में औटावे जब आध सेर रह जाय उतार मल कर छान ईसब-गोल और बीदाना डाल और मिश्री पीस कर मिला किवामसा बनाले जब गाढ़ी लपसीसी होजाय उतार कर रखले २ से ४ तो० तक चाटे ऊपर से पानी ज़रा गुनगुना पीवे। अथवा दूध में डाल पीवे।

१२—छोटी हरड़ ४ तो० नरकचूर २ तो० सौंफ २ तो० सुहागा का फूला १ तो० कूट छान शहद में दो २ मा० की गोलियां बनालें एक २ गोली गुनगुने पानी से खावे।

१३—उसारारेवन्द, एलुवा, नरकचूर चार २ माशा सुहागा का फूला २ माशा लेकर कूट पीस पानी से चने बराबर गोलियां बनाले एक २ गोली सुबह शाम गुनगुने पानी से।

१४—माजून कब्ज़ कुशा सनाय की पत्ती ४ तो० छोटी हरड़ ३ तो० सौंफ २ तो० रूमामस्तगी १ तो०। सनाय की पत्ती को १० तो० गुलाब के अर्क में भिगोदे एक दिन रात बाद को निकाल पीस ले और सब दवाइयों को कूट पीस १४ तो० मिश्री और १० तो० मिश्री मिला माजून बनाले। १ से १॥ तो० तक गुनगुने पानी से खाने से कब्ज़ बवासीर आदि रोग दूर होजाते हैं।

१५—एलुवा २ तो० नौसादर १ तो० काला ज़ीरा १ तो० सब को पीस पानी से चने बराबर गोलियां बना एक२ गोली सुबह शाम गुनगुने पानी से खावे।

१६—सुहागाका फूला, जवाखार, नौसादर, शोरकलमी प्रत्येक एक २ रत्ती ले १ मा० सिरका या नीबू के अर्क में मिला कर चाटे।

तेल—

१७—लहसन २ तो० सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, अमलतास का गूदा, सहजने की छाल, अजवायन, बड़ी पीपल, काला निमक लाहौरीनिमक दो २ तो० रसोत १५ तो० पानी ८ सेर में कूट कर सब दवाइयों को एक दिन रात भिगोदे दूसरे औटावे जब ४ सेर पानी रह जावे १॥ सेर कड़वा तेल डाल कर फिर पकावे जब केवल तेल ही रह ज़ाय उतार छान कर शीशी में रखले। इसकी मालिश पेट पर करने से कब्ज़ और गुरदेपर करने से गुरदे का द तथा जहां दर्द हो मालिश करने से लाभ होता है।

१८—आधसेर गेहूँ के आटे की मोटी रोटी बना एक हांडी में बंद कर रखदे जब फफूड़न आजावे तब ५ सेर छिरका और आधा पाव सांभर नोन मिला के एक महीने भर धूप में धर के छान लेवे फिर ६ तो० पोदीना ३ तो० सोंठ ५ तो० कालीमिर्च २ तो पालक के बीज मिलाकर सात दिन और धूप में धरकर पीछे कपड़े में छान कर रखलेवे।

१९—सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, सेंधानोन दोनों प्रकार के ज़ीरे बराबर ले आठवां भाग हींग मिला कर पहिले ग्रास से खावे।

२०—सेंधानिमक, सोंचरनिमक, सांभरनिमक, जवाखार अजवायन, छोटीहर्र, पीपल, सोंठ, वायविडंग एक२

छटांक हींग १ तो० चूरन कर नीबू के रस में खरल करे। भोजन के पहिले ५ ग्रास इस चूरन से खावे। अजीर्ण, वातरोग, विसूचिका, कमल, पाँडु, श्वांस, कास, आदि रोग दूर होते हैं।

२१—खाना खाने के वाद ही फ़ौरन पीपल का चूरन शहद में मिला कर चाटना।

२२—लोटन सज्जी ३ मा० ६ मा० गुड़ में मिला कर खावे।

२३—एलुवा २ तो०, नौसादर १ तो०, स्याह ज़ीरा १ तो० पीस कर पानी से मटर की बरावर गोली बना एक २ गोली गुनगुने पानी से खावे।

२४—खैर का स्वरस २ तो० हल्दी ६ मा० सेंधानिमक ४ मा० पावभर गाय के मट्ठे में मिला कर गरम कर पीवे वायगोला ३ दिन में जाय।

वादी और कफ नाशक।

१—शोधा कुचिला, इन्द्रायण की जड़, काली मिर्च तीन २ तो० लेकर पीस कर छान ले पुनः पावभर शक्कर डाल चासनी कर चना वरावर गोली वना १ गोली पानी के साथ लेने से वादी सर्दी के रोग दूर हो, दस्त साफ़ आवे भूख लगे।

२—शोधा कुचिला २ रत्ती वंगला पान में रखकर खावे तीसरे दिन एक २ रत्ती वढ़ाता जावे डेढ़ मा० से

अधिक नहीं करे ४५ दिन में बहुत पुरानी बादी का दर्द अवश्य दूर हो जावेगा।

३—शुद्ध गन्धक, आमलासार, पीपल, काली मिर्च, सेंधानिमक बराबर ले नीबू के अर्क में चने बराबर गोली बनावे १ गोली भोजन के बाद खाने से भूख बढ़े, बादी दूर होवे।

४—बड़ी हरड, सोंठ, सेंधानिमक बराबर २ ले कूट पीस चूरन बनाले तीन २ मा० फांक ऊपर से २-४ घूंट पानी पीना इस से भूख खूब लगती है।

५—प्याज का रस ६ मा०, गाय का घी ४ मा०, शहद ३ मा० इन तीनों को मिला कर चाट ले ऊपर से मीठा मिला ऽ। भर दूध गुनगुना पीवे। यह पेट के बात विकार को दूर कर बल वीर्य्य बढ़ाता है।

अर्क हाज़िम।

६—कलमी शोरा ६ मा०, पांचों निमक १॥ तो० नौसादर ६ मा०, फिटकरी का फूला ६ मा०, जवाखार ६ मा०, सुहागा का फूला ६ मा०, काली मिर्च १ तो०, अजवायन ६ मा०, हीरा हींग १॥ मा०, पीपरमेंट १ मा०, इमली का सत ३ मा० सब औष-धियों को कूट छान ६ छटांक अदरख का रस १॥ सेर पानी मिलाले। सुबह दोपहर और शाम को छः २ तोले पीवे।

उदर सम्बन्धी सब रोगों पर रामबाण।

१—चित्रक, पीपलामूल, यवक्षार, सज्जीक्षार, काला-निमक, सेंधानिमक, सांभरनिमक, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, हींग भुनी, अजमोद, चव्य, समभाग लेकर कूट छान दाडिम अर्क में झरवेरी के समान वटी वना साया में सुखा डाटदार शीशी में रख छोड़े जो सील न पहुंचे १ या २ वटी गरम जल से सेवन करे।

२—नमक लुकमानी, दाल चीनी, पत्रज, वड़ी इलायची लौंग, पीपल, हींगभुनी, मिर्च, सौंफ, सूखा पोदीना एक २ मा० सेंधा निमक, काला निमक, वड़ी हर्र, भुना सुहागा एक २ तो०, नौसादर ८ तो०। १ मा० से ३ मा० तक गरम जल से।

नमक सुलेमानी।

सांभर, सेंधा और काला निमक दो २ तो०, लौंग, दालचीनी, काली मिर्च, वड़ी इलायची छः २ मा०, छोटी हरड १ तो०, कपूर १ मा०, मिश्री २ तो० कूटपीस कर चूरन वना सेवन करने से पेट की वीमारी दूर होती है।

राजवल्लभ चूरन।

दालचीनी ५ मा०, लौंग १० मा०, स्याह ज़ीरा, सफेद ज़ीरा, काली मिर्च पांच २ मा०, सोंठ, अजमोद, छोटी हरड़, पत्रज तंतडीक दस २ मा०, काला निमक

२० मा०, सेंधानिमक ३० मा० निसोत १५ मा० सनाय ऽ= अनारदाना ऽ। सब दवाइयों को कूट पीस कर १० वार नीबू के रस में तर करे। ४ मा० खाने से अजीर्ण कोष्ठवद्ध और मन्दाग्नि दूर होती है।

स्वादिष्ट चूरन।

पीपल २ तो०, काली मिर्च १ तो०, सोंठ १॥ तो० वायविड़ंग ५ तो० नागकेशर १ तो० अनारदाना सुर्ख ७॥ तो०, सनाय २ तो० आग में भुनी छोटी हरड़ ५ तो० काला ज़ीरा २ तो० सफेद ज़ीरा आधा कच्चा आधा भुना ऽ– अजमोद १ तो० सुहागा का फूला २ तो० समुद्रफेन २ तो० गेरू १ तो० शुद्ध गन्धक २ तो० जवाखार १ तो० भुनीहींग ६ मा०, नौसादर ऽ= शोरा-कल्मी २ तो० टाटरी ४ तो० सूखा पोदीना ५ तो० पेपरमेंट ३ मा० सांभर, काला और सेंधा निमक तीन २ तो० कूट छान कर चूरन वनाले।

पाचक चूरन।

फिटकरी का फूला, सुहागा का फूला, नौसादर, काला निमक, सांभर निमक, अजवायन एक २ तो० काली मिर्च, पीपल, अकरकरा छः २ मा०, हींग भुनी हुई ३ मा०, सफेद ज़ीरा, सौंफ, छोटी हरड़, वहेड़ा, आंवला दो २ तो० कूट पीस चूरन वना नीवू के रस में झरवेरी के वेर के वरावर गोली वना एक २ गोली खाना खाने के वाद खाना।

दोहा ।

त्रिफला त्रिकुटा सुहागा, अजवायन अजमोद ।
नौसादर ज़ीरा हरड़, हींग फिटकरी सोंद ॥
अमलवेत और जायफल, पांचों नोन मिलाय ।
जवाखार और लौंग पुनि, डाला संग कुटाय ॥
हनुमान मुष्टक बना, औषधि जिहि चौबीस ।
चन्द्र सेन के कथन से, हरैं रोग चौबीस ॥

यह चूरन शूल, अफरा, अरुचि, गुल्म, बवासीर वादी सर्दी, मन्दाग्नि, तिल्ली, जिगर का बढ़ना, उदररोग, नन्हा बुखार आदि को दूर करता है ।

वडवानल चूर्ण

सेंधा निमक १ तो०, पीपलामूल २ तो० छोटी पीपल ३ तो० चव ४ तो० चीनी ५ तो० सोंठ ६ तो० हर्र ७ तो० कूट छान कर आधा भाग शुद्ध शिलाजीत मिला सेवन करे ।

धन्वन्तरि चूर्ण ।

सोंठ, सौंफ, अजवायन, पोदीना, काली मिर्च, सेंधा निमक, सुहागे की खील एक २ तो० दालचीनी, छोटी पीपल, नौसादर छः २ माशे ।

वातविध्वन्सकवटी ।

शुद्ध कुचला, २ तो० काली मिच १ तो०, लौंग, सौंर-जानमीठा, छोटी पीपल, कलौंजी एक २ तो० शुद्ध गुग्गुल २ तो० कूट पीस अदरक के रस की १ भावना देनी । एक २ गुंजा प्रमाण गोली बनाना । एक धन्वन्तरिवटी १ वातविध्वंसकवटी गरम जल या गरम दूध से खाना ।

लाई रस ।

पारागन्धक त्रिकुटा, अजमोद ज़ीरा, कालाज़ीरा, खारीनिमक, सेंधानिमक, हींग चिडनिमक, कचलोन सब के समान भाग भांग डाल चूर्ण बना १ माशा शीतल जल से खावे ।

रोचिष्णुचूरन ।

सेंधानिमक ३० तो० काला निमक ५ तो० सफेद-ज़ीरा ऽ॥ भूनकर, सफेदमिर्च ६ तो० टाटरी ३ तो० हींग ६ मा० पोदीना का सत ६ माशा ।

गणेशबाण चूरन ।

सोंठ, मिर्च, पीपल. लौंग, सोनागेरू, बड़ी इलायची के बीज एक २ छटांक संचरनिमक ऽ॥ नवसादर १ पाव टाटरी १ छटांक ।

गन्धकवटी ।

सोंठ, मिर्च, पीपल, एक २ तो० सेंधानिमक २ तो० गन्धक ३ तो० नीबू के रस में गोली बनाना रत्ती २ भरकी ।

अग्निसंदीपन ।

ज़ीरा सफेद २॥ तो० ज़ीरा स्याह २॥ तो० टाटरी ३॥ तो० पीपरमेन्ट ३ मा० हींग ३ माशे दक्खिनी मिर्च ३ तो० काला नोन २॥ तो० लाहौरी नोन २॥ तो० सब को कूट पीस एक २ माशा खावे ।

वमन कराने को



१—एक गिलास खूब ठंडे पानी का पीलो (यदि इस में बरफ़ भी डाल लो तो और अच्छा)। उसके वाद ही फौरन नीम गरम पानी का गिलास घूंट २ करके पी जावो इनके मिलाप से मेदे की दीवारे साफ़ होकर सड़ा मवाद निकल जावेगा।

२—पीपल छोटी, मैनफल, सेंधानिमक छः २ मा० ले चूरन बना फ़ांक ऊपर से गरम २ पानी पीवे।

हिचकी।

यदि खाना खाने के वाद हिचकी आवे तो थोड़ा सा पानी पिलाना या कै कराना और हाथ पाव का वांधना, गुस्सा खुशी और डर का एकाएक पैदा करना, छींक लाना, दम रोकना लाभदायक है।

१—हरे उड़द और खाने की हल्दी चार २ माशा ले चिलम में तमाखू की तरह पीवे।

२—कलौंजी ४ माशा, शहद १ तोला, गाय का मक्खन २ तो० सवको मिलाकर चटावे।

३—भांग १ मा० मगज़ वादाम ४ अदद पीस कर थोड़े पानी में चटावे।

४—मगज़ बादाम, मिश्री, मक्खन चटावे।

५—१ तोला बादाम का तेल पाव भर गुनगुने मीठः पड़ें दूध में पिलावे। हाथ पाव में रोग़न बादाम मले और एक २ बूंद नाक और कान में डालदे।

६—१० माशा गाय का घी, २ तोला मिश्री, १ तोला शहद पाव भर बकरी के गुनगुने दूध में पीवे।

७—दालचीनी ६ मा० मस्तगी १ तोला मिश्री १॥ तो० आदपाव पानी में उबाले १ छटांक रह जाने पर उतार छान पीवे।

८—ज़ीरा सफेद और मस्तगी बीस २ माशे कलौंजी ५ माशे कूट छानकर २ माशे ठंडे पानी से सेवन करे।

६—अनारदाना ३ तो०, मस्तगी ४ मा०, ताज़ा पोदीना की पत्ती २५ अदद, मिश्री १ तो० डेढ़ पाव पानी में औटावे पाव भर रह जाने पर उतार छान कर पीवे।

१०—आबरेशमख़ाम को हुक्के में तमाकू की तरह पीवे।

११—४ तो० बबूल के कांटे पाव भर पानी में औटावे आदपाव रह जाने पर थोड़ा शहद मिलाकर पिलावे।

१२—मग़ज़ कमलगट्टा १० माशे को लेकर पानी में घिस थोड़ी मिश्री और अर्क गुलाब मिलाकर चाटे।

१३—मोर के पंख की राख दो या तीन माशे शहद और मिश्री मिलाकर चाटे।

१४—नागकेसर, छोटी इलायची, पोदीना की पत्ती, दालचीनी रूमा मस्तगी, ऊदहिन्दी चार २ माशा केसर १ माशा डेढ़पाव पानी में काढ़ा करे चौथाई रह जाने पर उतार छान थोड़ी मिश्री मिला गुनगुना २ घूंट २ कर पीवे।

१५—पुराने गुड़ को अदरक के रस में हल करके नाश लेवे।

१६—दालचीनी १ मा० छोटी इलायची के दाने २ मा० नागकेसर ३ मा०, काली मिर्च ४ मा०, पीपल छोटी ५ मा०, सोंठ ६ मा०, मिश्री कालपी २१ माशा कूट पीस चूरन बनाले २ से ४ मा० तक शहद में मिलाकर खावे ऊपर से १ तोला पान को आदपाव पानी में औटाकर १ छटांक रह जाने पर उतार छान कर पीवे।

१७—अगर (औषधि) को जलाकर राख करे और शहद में खूब घोटे फिर १ तोला चाटे तो हिचकी बन्द हों।

१८—राई को पानी में औटा कर छान वह पानी पिलावे पिलाते ही हिचकी बन्द हो जावेगी।

१९—बेर के बीज का गूदा एक आना भर थोड़े शहद में मिलाकर चाटने से कै और हुचकी बन्द होती है।

२०—केले की जड़ का रस १ तोला थोडे शहद में मिलाकर पीवे अनार का रस २। ३ तोला थोड़ा सेंधानिमक मिलाकर पीवे।

२१—खीरे के बीज एक आना भर पीस कर शहद मिलाकर चाटना ।

२२—सुपारीपाक १॥ तो० १ पाव गाय का दूध के साथ सेवन कराइये । सुबह दोपहर को द्राक्षारिष्ट ६ मा० शर्वतवांसा के साथ, रात्रि को वासावलेह ९ मा० अर्कपंचमूल ऽ-- भर के साथ खाना ।

२३—काकड़ासींघी चिलम में तमाखू की जगह पर रख कर पीवे ।

२४—ऽ= मोरपंखों के छोटे २ टुकड़े कर एक हांडी में ।ऽ दस सेर कंडों में फूंकदे, २ रत्ती से ५ रत्ती तक भस्म १ माशा पीपल के साथ शहद मिलाकर खावे।

२५—सड़ा हुआ सन १ तो० लेकर चिलम में पिलावे । गावजुवां भी पिला सकते हैं ।

प्यास का इलाज ।

१—सौंफ की पोटली पानी में भिगोकर चूसे ।

२—सौंफ का अर्क पिलावे ।

३—शीतलचीनी का काढ़ा पीवे ।

४—छोटी इलायची का काढ़ा पीवे ।

५—गरम चाय के पानी में थोड़ी चीनी और शहद मिलाकर पिलावे ।

६—आम और जामुन के काढ़े में शहद मिलाकर पिलावे ।

७—सफेद चन्दन घिसा हुआ ६ मा०, मक्खन ६ मा० में मिलाकर चाटे ।

८—शतमूली का रस २ तो० रोज़ सवेरे पीने से प्यास, दाह, शूल और सब तरह के पित्तज रोग आराम होते हैं।

९—आलूबुखारा ७ अदद, तुख्म खुरफा १७ माशा, जरिश्क बीदाना ६ मा०, १ छटांक अर्क गुलाब में भिगोदे फिर मल छानकर ५ तो० केवड़ा का अर्क और शरबत नीलोफ़र ४ तो० मिलाकर पीवे, ज़हरमोरा खताई, असली अर्क गुलाब में घिसकर पिलावे।

१०–१५ माशा तुख्मखुरफा को २४ तो० गाय के मट्ठे में पीसे और फिर छानकर थोड़ी मिश्री मिला थोड़ा २ पिलावे।

११–हरड़, आंवला, जरिश्कबीदाना, गुलाब के फूल, सफ़ेद चन्दन छः २ मा०, तुख्मकासनी १० मा०, गुलकन्द ३ तो० आदपाव पानी गरम में रात को भिगोदे सुबह मल छानकर पिलावे।

१२—तुख्मखुरफा १० मा० ज़रिश्क बीदाना ६ माशा कशनीज़ ६ मा०, सफेद चन्दन ४ मा० मगज़ कमलगट्टा ४ मा० सब को कूट पीस अर्क गुलाब ५ तो० सादा सिकंजबीन ३ तो० में मिलाकर पीवे।

१३—२ तो० पीपल की भीतरी छाल लेकर कूट कर रात को आदपाव अर्क गुलाब में भिगोदे सुबह मल छानकर ३ तो० सिकंजबीन सादा मिलाकर पीवे।

१४—जंगली कन्डों की राख १० तो० लेकर १ कांसी के कटोरा में रख ऊपर तक पानी भरे और उस

कटोरा को रोगी को चित्त लिटा उस की नाभि पर रख दे इस से प्यास कम हो जायगी तथा थोड़ी सी राख को पानी में घोल दे जब पानी नितर जावे उस पानी को पिलावे।

१५—मुनक्का १५ मा० सोंठ ४ मा० शहद २ तो०। मुनक्का सोंठ को एक छटांक पानी में पीसे फिर शहद मिलाकर पीवे।

१६—थोड़े लहसन को शहद में मिलाकर खावे।

१७—अर्क सौंफ और गुनगुना पानी भी लाभदायक है।

१८—हरड़, बहेड़ा, आंवला, मुलहटी, गुलाब के फूल, तवासीर तीन २ तो० ले कूट पीस २५ तो० शहद में मिला माजून बनाले खूराक १० माशा चाटकर ऊपर से ठण्डा पानी पीवे।

वमन बन्द करने को।

१—मूली का अर्क ४ तो० में १ तो० सिकंजवीन और मुवाफ़िक़ का निमक डाल कर पिलावे।

२—गेरू को आक में तीन चार बार खूब गरम कर २ के पानी बुझावे और उसी पानी को पीवे।

३—सफेद चन्दन का बुरादा और आंवला दस २ मा० ले एक पाव पानी में भिगोवे सुबह मल छान कर २ तो० शहद मिला कर पीवे।

४—सफेद चन्दन का बुरादा, इलायची छोटी, नागकेशर लौंग, छोटी पीपल, वायविडंग, नागरमोथा, सब को

बराबर २ ले कूट पीस ले ४ से ६ मा० तक दाख-मुनक्का या बादाम को पानी में पीस १ छटांक पानी में घोले और चूरन फांक यह पानी पीले।

५—मगज़ कमलगट्टा, नागकेशर, सफेद चन्दन, नागर-मोथा, छोटी इलायची के दाने, लौंग, पीपल, धान की खील छः २ मा० मिश्री ४ तो० सब को कूट पीस चूरन बनाले और छः २ मा० चूरन छः २ मा० शहद में मिला कर चाटे।

६—चावल की खील ३ तो० आम की गुठली की गिरी ३ तो० लाहौरी निमक १ तो० सब को कूट पीस थोड़ा २ सा खावे ऊपर से ताज़ा पानी पीवे।

७—खट्टा अनारदाना, दाखमुनक्का दस २ मा० ज़ीरा-स्याह २ मा० बारीक पीसे पानी से और चाटे।

८—शुद्धशिंगरफ ४ रत्ती, दाना इलायची ४ मा० असली केशर १ मा० मिश्री १ तो० शहद २ तो० सब को मिला कर चाटे।

९—छोटी इलायची ६ मा० तबासीर ४ मा० कमलगट्टा ४ मा० ज़हरमोरा खताई ४ मा० मिश्री २ तो० सब को कूट पीस चूरन बनाले और ४ मा० फांक ऊपर से अर्क गुलाब १ छटांक पीवे।

१०—३ मा० जवाखार, काली मिर्च ६ मा०, छोटी पीपल १ तो०, खट्टा अनारदाना २ तो० पुराना गुड़ ४ तो० सब को बारीक पीस चने बराबर गोली बनाले एक २ गोली चूसे।

११—खाने की हल्दी जलाकर पानी में बुझावे और वही पानी पिलावे। अगर, आंवला तीन ३ तो०, वालछड़ १० मा०, रूमामस्तगी ७ माशा, लौंग ६ मा०, जायफल ६ मा०, केसर ३ मा०, मिश्री ऽ।। सब को कूट पीस ऽ।। अर्क गुलाब में किवाम कर जवारिश सी बनाले ६ मा० से १ तोला तक खावे।

१२—शुद्धगन्धक, कालीमिर्च दो २ तो० वायबिडंग, पीपल, कालानिमक, सांभरनिमक एक २ तोला, सब को कूट पीस कागज़ीनीबू के अर्क में मटर बराबर गोली बनाले २ से ४ गोली तक खावे।

१३—उमदा पान ५० अदद, सौंफ ९ तो०, दालचीनी, लौंग, गुलाब के फूल, छोटी इलायची, सोंठ, तेजपात, छारछबीला, तबासीर दो २ तोला, बड़ी इलायची ६ मा०, केसर १ मा०, १६ सेर पानी में एक दिन रात भिगोकर अर्क खींचे, २ से ४ तोला तक पीवे।

१४—खट्टा अनारदाना २ तो०, पीपलामूल, पीपल, अजवायन, धनिया, कालाज़ीरा, सफेदजीरा, सोंठ एक २ तोला, दालचीनी ४ मा०, तेजपात ४ मा०, छोटी इलायची, तबासीर चार २ माशा, केसर १ मा०, कालपीमिश्री २० तो०, कूटपीस चूरन बनाले खाना खाने से १ घंटा पहिले ४ से ६ मा० तक खावे।

१५—खट्टा अनार दाना १० मा०, पोदीना, मस्तगी, ऊद चार २ माशा, मिश्री ३ तोला, आधसेर पानी में औटावे चहारम रह जाने पर ठंडा घूंट २ पीवे।

१६—बबूल की फली, माजूफल, गुलाब के फूल, आंवला, नागर मोथा, सफेद चन्दन बराबर २ ले, अर्क गुलाब में पीस गुनगुना कर पेट पर लेप करने से क़ै वमन बन्द होजाते हैं।

१७—शुद्ध मैनसिल १ तो०, मक्षिकाविट २ मा०, आमले के रस में ४ सप्ताह खरल कर चूर्ण ही रखे १ रत्ती से २ रत्ती तक की मात्रा शहद में चटावे। किसी दोष की कैसी ही पुरानी क्यों न हो १ दिन में बन्द हो। बीस २ मिनट में मात्रा देनी चाहिये।

१८—(पञ्चकोल) पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य चीता, नागरमोथा का काढ़ा पिलाना यह दीपनपाचन है।

१९—एला, लौंग, नागकेसर, बेर की गुठली, धान की खील, प्रियङ्गु (मालकंगनी) नागर मोथा, चन्दन, पीपल, समभाग काढ़ा कर शहद मिला पीवे।

२०—मुलहटी, मुनक्का, पीपल, सोंठ डालकर दूध देना।

२१—सिन्दूर रस को कमरख के स्वरस में घोट २ रत्ती की गोली बना शहद में देना।

२२—बड़ी इलायची को भून कर चूर्ण करले वह १ तो० रेशम की भस्म ६ मा०, मोरपंख का चंदा की

भस्म ६ मा०, मक्खी की विष्ठा ६ मा० २ या ३ रत्ती शहद में मिला दिन में तीन चार दफ़ा चाटना।

खून की कै में।

१—सफेद चन्दन, नागरमोथा, इन्द्र जौ, मुलहटी, कासनी के बीज बराबर २ ले पीसकर दस माशा मुनक्का को पानी एक छटांक में पीस २ तो० शहद मिलाकर ऊपर की दवा के साथ पीवे।

२—सीमाक २० तोला, अर्क गुलाब ४० तो०, मिश्री ४० तोला, सीमाक को पीस मिश्री की अर्क गुलाब में चासना कर सीमाक उस में डालकर किवाम सा करले। खूराक २ से ४ तोला तक।

३—कुश्ता सुरमा सफेद १० तोला, सुरमा को लेकर दही के पानी में खरल कर गोलासा बना, दो सकोरों में रख कपड़मिट्टी कर सुखाकर आग में फूंकले। १ रत्ती से ४ रत्ती तक चन्दन के शरबत में चाटे।

४—माजूफल, बबूल के पत्ते, झरबेरी के पत्ते बराबर २ ले कर गुलाब के अर्क में पीस ठंडा ही पेट पर लेप करदे खून बन्द होजायगा।

५—सफेद चन्दन का बुरादा अर्क गुलाब में पीस पेट और सीने पर लगाने से भी खून बन्द होजाता है।

६—धान की खील के सत्तू २ तो०, मिश्री १ तो०, शहद १ तो०, मक्खन १ तो०, मिलाकर चाटे।

७—छोटी इलायची के दाने, नागरमोथा, नागकेसर, धान की खील, सफेद सरसों, सफेद चन्दन, लौंग, बेर की गुठली, पीपल छोटी, एक २ तो० मिश्री १० तोला मिलाकर चूरन बनाले ४ से ६ माशा तक शहद में मिलाकर चाटे।

८—खट्टा अनार २ तो०, मस्तगी, पोदीना चार २ मा० डेढ़पाव पानी में औटावे ऽ= रह जाने पर ऽ— गुलाब का अर्क और ३ तो० मिश्री मिला कर पीवे।

९—तुख्मखुरफा, गुलअनार, बीजबन्द, तबासीर. गेरू, गुलाब के फूल, कहरवा, नशास्ता, दम्मुल अखवैन दो २ मा०, लोयबान, अफीम एक २ मा० केशर ४ रत्ती। सब को कूट पीस ले १ मा० शरबत चन्दन से देवे।

१०—मरजान, गोंद बबूल बराबर २ ले खूब बारीक पीस ले ४ मा० शरबत खशखाश ६ मा० में मिला कर चाटा करे।

११—यदि मेदे (पेट) से खून आता हो (लक्षण उस का यह है कि गशी होती है और पसीना आता है) तो हरे पोदीना को कूटकर उस का रस निकाल ले और उस में शक्कर मिला कर पिलावे अथवा तुख्म कर्र को पानी में पीस गाढ़ा २ छान उस में मिश्री मिला कर पीना। या ४ रत्ती हींग को सिकंजबीन सादा से खावे।

हैज़ा



१—सिकन्जवीन सादा को गुलाब के अर्क वा गरम पानी में पिलाना। जहां तक हो पानी को बन्द कर अर्क गुलाब, अर्क पोदीना बर्फ से ठंडा कर देना। जंगली कंडों की राख पानी में बुझा कर वह पानी देना—नेतार कर। रोगी को आराम से लेटा रहने दे। मकान में सफाई रखे। चन्दन-कपूर और लोय-बान की धूनी देवे। केवल दवा पर ज़ोर देने और सफाई मकान व हवा की परवाह न रखने से लाभ नहीं होता अतः सब से प्रथम जलवायु की शुद्धि और फिर यथोचित औषधि द्वारा चिकित्सा करना योग्य है। यदि रोगी को जंगारी रंगी के हों तो लौंग आदि गरम चीज़ न देकर तरावट की चीज़ें दें और बेहोशी की हालत में जायफल को कड़वे तेल में बारीक पीस गरम २ मले।

१—फूलदार लौंग ५ अदद, पोदीना, सौंफ दस २ मा०, गुलक़न्द ३ तो० आध सेर पानी में औटावे जब पावभर रह जावे उतार छान थोड़ा २ पिलावे।

२—बहुत प्यास होने या लौंग को पानी में उबाल वही पानी पीने को देवे।

३—यदि कै खट्टी आती हो और पानी मुंह से जाता हो तो कफ का हैज़ा समझना चाहिये। और इस में सौंफ, रूमामस्तगी, अगर, जीरा सफेद छः २ मा० ले पावभर पानी में औटावे ३ छटांक रह जाने पर उतार छान गुनगुना २ थोड़ा २ पिलावे।

४—ववाई हैज़ा में हवन से हवा शुद्ध करे।

५—यदि बन्द हैज़ा हो यानी कै दस्त न आते हो और रोगी बेचैन हो तो औषधियों से कै करावे और मुलयन दवा से दस्त करावे।

६—हैज़ा के दिनों में सिरका, प्याज और पोदीना का इस्तैमाल करे।

अंजन।

१—बिजौरा के बीज, हल्दी, काली मिर्च, छोटी पीपल, सोंठ, सब को बराबर ले कूट पीस छान कर कांजी के पानी से खरल कर चने बराबर गोलियां बना ले आवश्यकता पड़ने पर १ गोली पानी में घिस हैज़ा के रोगी की आंख में लगावे।

२—हाथ पावों के नाखूनों पर लहसन कूटकर लगाना।

३—यदि भयानक हैज़ा हो तो पसलियों पर दाग देने से भी फायदा होता है। परन्तु जानकार आदमी से दगवावें।

हैज़ा की औषधियां

१—काली मिर्च, छोटी पीपल, सफेद ज़ीरा, सोंठ, शुद्ध

आंवलासारगंधक, लाहौरी निमक, लहसन, हींग वरावर २ लेकर अर्क नींवू में चने की वरावर गोलियां वनाले १ से ३ गोली तक अर्क गुलाव या पोदीना से देना ।

२—लाल मिर्च के वीज, काली मिर्च, हींग जदवार, पपीता एक २ तो० नारजील दरयाई ८ मा० शुद्ध अफीम ६ मा० अदरख के रस में मटर के वरावर गोलियां वनाले १ कै १ दस्त के वाद एक २ गोली अर्क पोदीना या गुलाव से देवे ।

३—खाने का वुझा हुआ चूना, लाल मिर्च के वीज, खाने की हल्दी, आक की वोंडी एक २ तो० ले पोदीना या अदरख के रस में चने की वरावर गोलियां वनाले एक २ गोली अर्क पोदीना से खावे ।

४—काली मिर्च एक मा० ज़हरमोहरा खताई २ मा० नरकचूर ३ मा० सफेद इलायची ६ मा० सौंफ पोदीना ६ मा० अर्क गुलाव १० तो० पानी ३० तो० सव को खूव औटा कर थोड़ा २ पिलावे ।

५—जौहर लोयवान और असली केसर दो २ मा० कस्तूरी १ मा० अफीम १ मा० सोने के वरक ४ रत्ती सव को घोटकर मुनक्का में चने की वरावर गोली वनाले एक २ गोली अर्क पोदीना से देवे।

६—ज़हरमोरा खताई, जदवार खताई, नारजीलदरयाई पपीता, कश्मीरी केसर दो २ रत्ती शरवत नीबू ४ तो० में मिला कर चटावे ।

७—आक के फूल की कली, छोटी पीपल, काली मिर्च एक २ तो० अर्क नीबू ४ तो० काली मिर्च ६ मा० सबको मिलाकर चाटे या चने की बराबर गोलियां बनाले एक२ गोली अर्क गुलाब, सौंफ या पोदीना के साथ खावे।

८—आक की बोडी, दालचीनी, जावित्री, सोंठ, काली मिर्च, लाल मिर्च के बीज एक २ तो० कालानिमक १० मा० अदरक के रस में चने की बराबर गोलियां बनाले एक २ गोली दो २ घन्टे में गुनगुने पानी से खावे।

९—छोटी इलायची के दाने, लौंग चार२ मा० जायफल १० मा० अफीम १ मा० सब की गोलियां चने २ की बराबर बनाले दो घन्टे में एक २ गोली गुनगुने पानी से खावे।

संजीविनी गुटिका

१०—शुद्ध बच्छनाग, शुद्ध भिलावा, वायविडंग, सोंठ, पीपल, हरड़का बक्कल, बहेड़े का बक्कल आंवला, सतगिलोय एक २ तोलाले कूट पीस एक दिन रात बछिया के पेशाब में भिगोदे फिर दिन भर घोटे दूसरे दिन भर अदरक के रस में घोटे एक २ रत्ती की गोलियां बनाले इसे संजीवनी बूटी कहते हैं। १ गोली खाने से बदहज़मी २ से हैज़ा तीन से सांप का ज़हर और ४ गोलियां गुनगुने पानी से खाने से सन्निपात दूर होता है।

११—शराब बरांडी ५ तो० कपूर तीन मा० मिला कर छः २ माशा दो २ घंटे में गुलाब जल २तो० में देवे।

१२—नरकचूर ४ रत्ती सच्चे मोती ४ रत्ती कस्तूरी ३ रत्ती नीबू कागज़ी के बीज ९ रत्ती अगर १।। मा० लोयबान कौड़िया ३ माशा असली जदवार ३ मा० ईरानी केसर ४ मा० अफीम ८ मा० काली मिर्च १ तो० चांदी के वरक ४ सोने के वरक ४ अर्क गुलाब में सब को पीस कर मटर के बराबर गोली बनाले १ गोली से ४ गोली तक अर्क पोदीना या गुलाब से देवे। भयानक हैज़ा में तथा मृत्यु के समीप वाले को भी फ़ायदा देती है।

१३—मयछुक्कल के छोटी इलायची को पन्द्रह मा० ले कुचलकर आध सेर पानी में क़लईदार वर्तन में उबाले जब तिहाई रहजाय उस में आदपाव अर्क गुलाब मिला थोड़ा २ गुनगुना एक २ घन्टे में पिलावे।

१४—दारचीनी, केसर एक २ तो० हींग छः मा० छोटी इलायची के दाने ६ मा० मिश्री १० तो० सफेदमिट्टी १ तो०। १० रत्ती से ३० रत्ती तक कई बार देना। बूढ़े को २० रत्ती चूर्ण में आधी रत्ती अफीम मिला कर देना ऊपर से अर्कगुलाब पिलाना २, ३ तोला तक।

१५—सरसों पीसकर पेटपर लेप करने से कै बन्द हो जातीहै।

१६—आक की जड़ की छाल ९ मा० लाल मिर्च के बीज ३ मा०, हल्दी ३ मा०, चूना क़लई ३ मा०,

सब को बारीक पीस हरे पोदीना के रस में खरल कर मटर बराबर गोली बना एक २ गोली दो २ घंटे में अर्क गुलाब से देना।

१७—आक के फूल ६ तो०, काली मिर्च ३ तो०, लौंग ९ मा०, नौसादर ६ मा०. अनबुझा चूना ९ मा०, शुद्ध अफीम १ मा०, सब औषधियों को २ दिन नीबू के अर्क में खरल कर चने बराबर गोली बना १२ वर्ष तक के बच्चे को १ युवा को २ अर्क गुलाब से देना।

१८—अर्क सफेद इलायची, दारचीनी, दस २ तो० जरिश्क सफेद चन्दन, अनारदाना खट्टा, एक २ पाव आलू बुखारा, सौंफ आध आध पाव पोदीना १ सेर वंशलोचन ७ तो० सब को कूट दिन रात एक बिलस्त ऊंचे पानी में भिगोदे फिर १ सेर कपूर डाल भबके से अर्क निकाल ले। खुराक ४ तो० शर्बत नीबू से देवे। घन्टा २ भर में।

१९—लहसुन, जीरा सफेद, गन्धक, सेंधा निमक, सोंठ, मिर्च, पीपल, भुनी हींग, बराबर २ नीबू के रस की ५० भावना देकर जन्गली बेर के बराबर गोली बना अर्क गुलाब के साथ खाने से हैज़ा दूर हो।

कै-हुचकी में सुरा नहीं देनी किन्तु सिरका पानी में मिला कर देना इस से हूचकी, कै, प्यास और पेट का फूलना दूर होता है।

१—चिरचिटा की जड़ पानी में पीस कर पिलाना।

२—छोटी कटेली के पत्ते के काढ़े में पीपल का चूरण मिला कर देना इस से भूंख भी वढ़ती है।

३—वेल की गूदी और सोंठ का काढ़ा पिलावे।

४—वेलकी गूदी, सोंठ, और कायफल का काढ़ा पिलाना।

५—मोथा १ तो०, पीपल, हींग, कपूर आधा २ तोला पानी में पीस ४ रत्ती वज़न की गोली वनाना एक २ गोली अर्क गुलाव से सेवन करना।

६—हिंगुल, अफीम, मोथा, इद्र जौं, जायफल, कपूर सुहागे का लावा एक २ तोला ले पीस एक २ रत्ती की गोली वना एक २ गोली ऊपर की रीति से सेवन करे।

७—जौं का आटा आध पाव, सज्जी २ तो० पीस कर मिलाओ फिर पानी डाल कर आग पर पका कर कुनकुना लेप कोख पर करने से हैज़ा दूर होता है॥

देशी अर्क कपूर

शास्त्री वनी हुई उत्तमदारु ४०० तो० भीमसेनी-कपूर ३२ तो० छोटी इलायची ४ तो० नागरमोथा ४ तो० सोंठ, अजवायन, काली मिर्च चार २ तो० चिकने वर्तन में डाल मुंह वन्द कर १ माह ज़मीन में गाड़दे फिर निकाल कर वलावल देख प्रयोगकरे।

विसूचिकान्त वटी

शुद्ध शिंगरफ मकसूदावादी १ तो० शुद्ध अफीम

१ तो० इन दोनों को कागज़ी नीबू में १२ पहर घोट फिर बाजरा के बराबर गोली बनाले। ताज़े पानी से निगले बिना दाँत लगाये।

हैज़े पर अर्क

१—प्याज २ सेर हरापोदीना २ सेर ऊदगकींतुरस डेढ़पाव लौंग ऽ॰ कपूर आदपाव सौंफ पावभर बड़ी इलायची डेढ़पाव सब को कूटकर १० सेर पानी में ३६ घन्टा भिगोदे फिर मन्दाग्नि से भवके से अर्क खींचले भवके के मुंह पर ३ मा० केसर की पोटली बांधदे मात्रा २॥ तोला से १ छटांक तक।

२—पोदीना १ सेर, सौंफ, आलू बुखारा आध २ सेर, बुरादा सफेद चन्दन, ज़रिश्क बीदाना, अनारदाना बीस २ तो० छोटी इलायची, दालचीनी दस २ तो० तबासीर ७ तो० कपूर ४ तो० पानी १५ सेर डाल अर्क खींचे खूराक २ से ४ तोला तक।

३—गुलाब के फूल २ सेर, नीम के फूल, नीम के पत्ते, आंवले के पत्ते, इमली के पत्ते नारंगी के पत्ते, नीबू कागज़ी के पत्ते, पीली हरड़ की बकली, पोदीना हरा एक २ सेर, सनाय की पत्ती, सौंफ, प्याज़ आध २ सेर, दालचीनी, छोटी इलायची पाव २ भर, ज़रिश्क १५ तो०, पोदीना जंगली १० तो०, नरकचूर ८ तो०, लौंग १ छटाँक, पानी १ मन डाल अर्क खींचे। खूराक २ से ४ तो० तक।

हैज़ा में पेशाब लाने को।

१—कुम्हड़े के बीजों की मींग २५ अदद, १ छटांक पानी में घोट पीस १ तोला मिश्री मिला कर पिलाना।

२—बहेड़े की गुठली के भीतर की गूदी दस अदद जल में पीस पेड़ू पर गाढ़ा २ लेप कर देने से पेशाब होता है।

३—गोखरू, ककड़ी के बीज, जवासा एक २ तो०, पाव भर पानी में औटाना एक छटांक रह जाने पर उतार छान ६ माशा शोरहकल्मी और २ तो० मिश्री मिला कर पिलाना।

४—रामतुरई को पानी में उबाल मल छान कर वह पानी पिलाना।

५—शोरह और पत्थर चूर के पत्तों को पानी में पीस बस्ती पर लेप करे।

६—कमल के फूल को पानी में पीस मल छान कर मिश्री मिलाकर पीवे।

७—शोरह, टेसू के फूल, बरहल के फूल, मुसलेड पानी में पीस कर पेड़ू पर रक्खे।

८—१ छटांक धान की खील, १ तो० चीनी, ऽ॥ पानी में भिगोना ३ घंटे बाद मल कर छान खस १ तो०, छोटी इलायची ६ मा०, सौंफ १ तो०, सफेद चन्दन का बुरादा १ तो० पीस कर उसमें मिलाना और एक २ तोला एक २ घंटे में पिलाना।

९—अफीम ५ रत्ती, ज़ीरा सफेद १ तो०, मिश्री १ छटांक, नीबू का रस १ छटांक, पानी ५ छटांक में सब को बारीक पीस खूब हल करले एक २ तोला जल तीन २ घंटे बाद पिलाना।

हाथ पैर की ऐंठन को।

१—तारपीन का तेल और शराब मिलाकर मलना।

२—सोंठ का चूर्ण भी मल सकते हैं।

३—कूट, सेंधा निमक, छः २ मा० तिल के तेल में मिला कर थोड़ा गरम कर मलना।

४—सरसों का तेल गुनगुना मालिश करे।

पेट के दर्द को।

१—पेट के दर्द को शान्त करने के लिये जौ का चूर्ण और जवाखार मठे के साथ पीस कर थोड़ा गरम कर पेट पर लेप करना।

२—अथवा तारपीन का तेल पेट पर मलना।

३—गरम पानी में ऊनी वस्त्र भिगो निचोड़ कर सेकना।

विसूचिका में प्यास पर।

१—अर्क कपूर पिलावे।

२—कपूर मिला पानी या बरफ देना।

३—लौंग जायफल या नागरमोथा का काढ़ा देना।

४—पीपल की छाल जला कर ताजे पानी में बुझावे और उस को कोरे घड़े में रख एक २ घंटा बाद थोड़ा २ पिलावे ।

५—धान के लावा को पानी में औटाकर वह पानी पिलावे।

हैज़ा में सिरदर्द के लिये ।

ठंढे पानी में सफेद कपड़ा तर कर कर के माथे पर रक्खे ।

बेहोशी हो—तो हाथ पैर सेकना ।

पसीना हो तो अवीर मलना ।

मूंगे का भस्म सहत के साथ चटाना ।

हडफूटन में कडुवा तेल गरमकर लगाना (मलना)

हैज़ा में पथ्यापथ्य ।

१—पीड़ा की प्रवल अवस्था में कुछ न देना ।

२—पीड़ा कम हो और भूख लगे तो सिंगाढ़े की लपसी और अरारोट तथा साबूदाना पानी में देना ।

३—कागज़ी नीबू निमक मिर्च डाल गरम कर चुसाना ।

४—जब बहुत ही भूख लगे और सब दोष पच जावे तब मूंग की खिचड़ी ज़ीरा धनिया और नीबू का रस डाल कर देना । नीबू की जगह दही या मट्ठा भी दे सकते हैं ।



पेचिश में



१—सिपस्तिा १० अदद, उन्नाब १० अदद, रेशाखतमी ४ माशा, मुनक्का १। तोला, सौंफ १० माशा, मुलहटी ७ माशा, गुलबनफसा १॥ तो०; बीदाना ४ मा० अमलतास तीन तो०, गुलकन्द २ तो०, रोग़नबादाम, ४ माशा । सब दवाइयों को कूट करके तीन पाव पानी में पकावे जब चहारम रह जाय उतार छान अमलतास के गूदे को घोल रोगन बादाम और थोड़ी शक्कर मिला गुनगुना पीवे इससे दस्त साफ़ आजाता है सुद्दे निकल जाते हैं जब तक सुद्दे न निकल जांय दस्तों के रोकने की दवा नहीं देना।

२—१५ माशा ईसबगोल की भूसी को एक क़लई के बरतन में कोयलों की आग पर भूने फिर आध सेर पानी में उबाले जब तीन छटांक पानी रह जाय तब उतार मलकर छान चार माशा रोग़नबादाम और ४ तोला शरबत बनफ़शा मिला कर पीवे।

३—बकरी का दूध २४ तो०, गाय का मक्खन १॥ तो०, मिश्री २ तोला, शहद १ तोला सब को मिला गुन-गुना पीने से खून की पेचिश बन्द होती है।

४—गोंद बबूल १५ मा०, पोस्त खशखाश ३ माशा, कूट छान के आदपाव पानी में मल छान कर पीवे। मरोड़फली १५ माशा, गेरू ४ माशा एक पाव पानी में भिगो दें सुबह छान दो तोला मिश्री मिला कर पीवे।

५—छुहारा को दही के पानी में पीस कर खावे।

६—सुपारी जला कर उसकी राख दही में मिला कर खावे। सफेद ज़ीरा कूट छान कर दही में मिला कर खावे।

७—बेलगिरी, लोध, कालीमिर्च, बराबर २ ले कूट पीस ४ माशा लेकर थोड़े शहद में मिलाकर खावे।

८—राल ६ मा० मिश्री १॥ तो० मिला चूरन बनाले चार २ माशा फांक कर ऊपर से ताज़ा पानी पीवे।

९—कत्था बड़ीमाई और अफीम को बराबर २ ले पीस कर मटर के बराबर गोली बना एक २ गोली देवे।

१०—अजवायन खुरासानी १ तो०, केशर ६ मा०, अफीम ६ मा०, सुगन्धवाला १ तो०, बालछड़ १ तो०, सौंफ, अजमोद, तज, गेरू एक एक तो०, मिश्री १० तो० शहद २४ तो० सब को कूट छान कर माजून बनाले खूराक १ मा० ताज़ा पानी से।

११—मजीठ, गुलधावा, लोध, सफेद सरसों चार २ मा० शहद १ तो० मिश्री १ तो० चार दवाइयों को पाव भर पानी में औटाना जब छटांक भर रह जावें उतार छान मिश्री और शहद मिलाकर पीना।

२०—माजूफल, दोनों माई, नौं २ माशे, अफीम ४॥ माशे गोंद बबूल ३॥ माशे कूट पीस पानी से मटर की बराबर गोली बना एक २ गोली ठण्डे पानी से।

२१—फिटकरी का फूला और अफीम बराबर २ ले उड़द की बराबर गोली बना एक २ गोली ठंडे पानी से।

२२—आंवला, गुलअनार, बबूल के पत्ते, लौंग, नीम के पत्ते सफेद ज़ीरा, काला निमक, सोंचरनिमक, तज, अजवायन, वायबिडंग, सौंफ, छोटी इलायची के दाने चार २ मा० केशर १ मा० ज़हरमोरा खताई ६ मा० कूट पीस अर्क गुलाब में मूंग की बराबर गोली बनाकर एक २ गोली ठंडे पानी से खावे।

२३—शुद्ध पारा, ६ मा० शुद्ध आँवलासारगंधक, छोटी पीपल, काली मिर्च, सोंठ, ज़ीरा सफेद, ज़ीरास्याह छः मा०, हींग भुनी हुई ५ मा०, चारोंनिमक पांच २ मा० शुद्ध भांग ३० मा०। पहिले पारा गंधक की कजली करे यानी खूब रगड़े फिर सब दवा मिलाकर चूरन बनाले १ मा० सुबह एक माशा शाम को मट्ठे से।

२४—इन्द्रजौ, मोचरस, लोध, गुलधावा के फूल, नागर-मोथा, बेलगिरी, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, एक २ तोला अफीम शुद्ध ६ माशा ऊपर की तरह चूरन बना सेवन करे।

२५—जायफल, लौंग, गुलधावा, बेलगिरी, नागरमोथा सोंठ, मोचरस, शुद्ध शिंगरफ, एक २ तोला अफीम

६ माशा ले कूट छान कर अनार के पानी से खरल कर एक या २ रत्ती की गोलियां बनाले एक २ गोली मट्ठे से खावे ।

२६—अफीम १ माशा, हींग १ माशा, लौंग ३ माशा, मोचरस ४ माशा, मिश्री ५ मा० बारीक पीस दो२ रत्ती की गोली बनाले एक २ गोली ठंडे पानी से ।

२७—जायफल, छुहारा, अफीम बराबर २ ले पान के रस में खरल कर मूंग के बराबर गोली बनाले खुराक एक २ गोली ।

२८—कपूर ४ माशा, जायफल १ तो०, सफेद चन्दन, चीता, वायविडंग, छोटी इलायची के दाने, तबासीर ज़ीरा सफेद, सोंठ, मिर्च, पीपल तगर तेजपात, लौंग एक २ तो०, शुद्ध भांग ५ तो०, मिश्री २० तो० सबको कूट पीस चूरन बनाले खुराक ४ माशा से ६ माशा तक मट्ठे से । दस्त और संग्रहणी दोनों दूर होते हैं ।

२९—बेलगिरी, नागरमोथा, खस, धनिया पाँच २ माशा सोंठ ३ मा०, आध सेर पानी में औटावे चौथाई रह जाने पर उतार छान २ तोला मिश्री मिला कर पीवे । और फोकट को शाम को पीवे यदि ज्वर होतो सोंठ की जगह लाल चन्दन डाले यदि खूनी बबासीर हो तो सोंठ की जगह गुलधावा और इन्द्रजौ डेढ़ २ माशा डाले । कभी सुपारी कभी तबासीर

कभी ख़ुब्वाजी सोंठ के बदले में डाल कर पिये तपेदिक्र और दस्तों को फ़ायदा करता है।

३०—जवारिश मस्तगी रूमा मस्तगी ३० मा०, छोटी इलायची के दाने, वड़ी इलायची के दाने, तज, दालचीनी, सोंठ दस२ माशा, कालीमिर्च, कवावचीनी, अजवायन, ज़ीरा सफेद, ज़ीरा काला, गुलाव के फूल, नीबू का छुक्ल, सौंफ, कासनी धनिया, लोयवान, अगर, वालछड़, नरकचूर, वादरंजोया, गांव जुवां के फूल, तेजपात, केशर पांच २ माशा सव को कूट पीस छान ४५ तोला शहद मिलाकर जवारिश सी वनाले खुराक ६ से १० माशा तक ठंडे जल से।

३१—जवारिश जरिश्क जरिश्क वीदाना २ तो०, तुख्म खुरफा १ तो०, तवासीर, गुलाव के फूल, सीमाक, हव्वुल्लास, कशनीज खुश्क एक २ तोला, ज़हरमोरा खताई १० मा०, केशर २ मा०, विही का अर्क २० तो०, नीबू का अर्क १० तो०, गुलाव का अर्क १० तोला, मिश्री ४० तो०। अर्कों में मिश्री का किवाम कर सव दवाओं को कूट पीस छान कर शहद १० तोला जवारिश सी वनाले। खुराक ६ से १० माशा तक।

३२—वेलगिरी, नागरमोथा, लाल चन्दन, हव्वुल्लास, गुलधावा चार २ माशा, धनिया, आंवला सात २

माशा आध सेर पानी में औटावे चौथाई रह जाने पर उतार छान २ तोला मिश्री मिलाकर पीवे।

३३—मीठे अनार का छिक्कल, माजूफल, शाहवलूत, सीमाक, हब्बुल्लास एक २ तोला ले कूट पीस ठंडे पानी से दो २ माशा खावे।

आंव, खून, मरोड़ पर

१—करेला की पत्ती का स्वरस, अनार की पत्ती का स्वरस, बकरी का दूध छः २ माशा ले रुई के फाये को उस में भिगो तोंदी पर ठंडा ही रक्खे।

२—दुधिया ६ माशा १ छटांक पानी में पीसे और मरोर-फली ६ मा० शक्कर ४ माशा में पीस कर मिलाकर फांके ऊपर से दुधिया का पानी पीवे।

३—हींग, कपूर, अफीम, बराबर २ ले पीस मूंग की बराबर गोली बनाले एक २ गोली ताजे पानी से खावे।

४—भटकटैया की जड़ २ मा०, शतमूली २ तो० दूध में पीस कर पीवे।

५—ज़ीरा सफेद ८ तो०, जवाखार ४ तो०, नागरमोथा ८ तो०, अफीम ४ तो०, मदार की जड़ का चूर्ण १६ तो० सब को कूट पीस चूर्ण बना एक २ मा० ताजे पानी से खावे। यह अजाज्यादि चूर्ण, गृहिणी-उग्र, रक्तातिसार, अतिसार, घोरज्वरातिसार और भयानक हैज़े को नाश करता है।

६—जायफल, सेंधा निमक, शुद्ध हिंगुल, कौडी भस्म, सोंठ, पीपल, समान भाग लेकर अनार के रस में खरल करे और रत्ती २ की गोली वना मिश्री के साथ खावे वात, कफ अतिसार, गृहिणी और योनि रोग दूर होते हैं।

७—जायफल, छुहारा और वढ़िया अफीम वरावर लेकर पान के रस में घोट चना वरावर गोली वनावे एक गोली गाय के मट्ठे के साथ सात दिन तक सेवन करे। दस्त वन्द हों।

८—कच्चे वेल की गिरी, मोचरस, सुगन्धवाला, नागर-मोथा, इन्द्रजौ, कुरैय्या की छाल वरावर ले कूट पीस कर वकरी के दूध के साथ खावे।

आमातिसार।

१—सौंफ, नागरमोथा, सोंठ, गुलकन्द, रेवत चीनी एक २ तो० पावभर पानी में उवालना १ छटांक रह जाने पर उतार छान ३ मा० मिश्री मिला कर पीने से पेट की आंव निकल जाती है।

२—आम, जामुन और आंवला की हरी पत्तियों का रस २ तो० शहद ४ मा० मिला कर पीने से आंवलोहू के दस्त वन्द हो जाते हैं।

३—केशर, जायफल एक २ मा०, तज १॥ मा०, लौंग ४ रत्ती, इलायची छोटी ४ रत्ती, शक्कर ९ मा०,

खड़िया ५ मा० खूराक बच्चों की एक २ रत्ती। बड़ों को एक २ मा० शरवत बेल में देना।

४—जायफल, छुहारा, अफीम बराबर २ लेकर पान के रस में घोट एक २ रत्ती की गोली बना लेवे। एक गोली सुबह १ शाम को मट्ठा के साथ खाना।

५—माजूफल ५ रत्ती अफीम चौथाई रत्ती, गोन्द का चूर्ण ५ रत्ती सब को मिला प्रत्येक दस्त के बाद ठंडे पानी से देना।

रक्तातिसार।

१—कच्चे बेल का गूदा, इन्द्रजौ, नागरमोथा, अतीस का काढ़ा पीवे।

२—बबूल के पत्ते का रस या इन्द्रजौ की छाल या पत्तों का रस २ तो० पीने से लाभ होता है।

३—पीपल वृक्ष की छाल लेकर कोयला कर पीसले एक एक मा० शीतलजल से देने से दस्त तुरंत बन्द हो जाते हैं (फक़ीरी लटका)।

४—गूलर की छाल सुखा कर कूट पीस बराबर की खांड मिला ६ मा० की फंकी मार ताज़ा पानी २-३ घूंट पीवे।

५—वंशलोचन १ तो०, सफेद इलायची के दाने ३ तो० सौंफ ३ तो०, अनार दाना ३ तो० मिश्री बराबर की मिला कूट पीस ६ मा० से १ तो० तक फांक ऊपर से ताज़ा पानी पीना।

६—मस्तगी २ रत्ती, सीमाक, सफेद इलायची सफेदज़ीरा एक २ रत्ती ईसबगोल की भूसी २ रत्ती कूट पीस शरबत बेल में चटाना।

७—मोंगरा बेला की पत्ती १०, कालीमिर्च १० एक छटांक पानी में पीस पीना इसी प्रकार गूलर के पत्ते भी पी सकते हैं।

८—सफेद मूसली का चूर्ण ३ मा० एक छटांक गूलर के पत्ते के रस में पीना।

९—सफेद चन्दन का बुरादा ६ मा० मिश्री ६ मा० मिला कर शहद मे चाटना।

१०—कुमारी आसव ६ मा० अर्क श्रीफलादि १ छटांक पीना।

११—१ छटांक चावल का मांड २३ मा० मिश्री ६ मा० शहद डाल कर पीना।

१२—शुद्ध खालिस रसौत १ तो० अफीम २ मा० दोनों को चांगेरी (खटकल) के स्वरस में १ दिन खरल कर १ रत्ती की गोली बनाना। चांगेरी के रस में गोली घिस लेहसा चटावे।

१३—अफीम ६ मा०, कपूर ६ मा०, हीरा हींग ६ मा० सब को पीस वायविडंग के समान गोली बना ले फिर सोंठ को पीस कपड़छन कर उस में गोली ढरका ले १ गोली ताज़े पानी से।

१४—गोंदबबूल, कतीरा, नशास्ता, गेरू, दम्मुलअखवैन, तबासीर, ज़हरमोरा खताई, ईसबगोल की भूसी असली कहरवा कूट छान कर चूरन बनाले खुराक ६ माशा से १० माशा तक अर्क गुलाब पांच तोला से ।

दस्त बंद करने को लेप ।

१—जायफल, बिनौले की मींग, बेलगिरी ह. २ माशा, अफीम १ माशा, अर्क गुलाब या पानी में पीस नाभि पर लेप करे ।

२—४ तोला आंवला को दही खट्टे के पानी में पीस नाभी के चारों ओर मेंढनी सी बनाले और उसके बीच में अदरक का रस भर दे ।

३—रसोत, मीठे अनार का छिकल, बबूल की फली, मोचरस, गुलअनार, मांई, माजूफल बराबर २ ले पानी में पीस गुनगुनी २ नाभि पर लगावे ।

४—जायफल अथवा आम की छाल कांजी में पीस कर लेप करना । आंवला पानी में पीस नाभि के चारों ओर गोल मेंढ़नी बनाना बीच में शुद्ध अदरक भर देना ।

५—गुदा में दाह वा घाव होने पर बकरी के गरम दूध से गुदा सेकना और पटोलपत्र बकरी के दूध में पीस कर गुदा में लेप करना ।

६—पेट में दर्द होने पर तारपीन का तेल मलकर सेकना ।

अफीमची के दस्त बन्द करने को।

राल, गुलधावा, बराबर २ ले पीस कर ६ माशा की फंकी लगा ऊपर से मट्ठा पिलावें।

संग्रहणी।

१—पारा शुद्ध ६ मा०, आमलासार गन्धक ६ मा०, पीपल ६ मा०, सोंठ ६ मा०, मिर्च ६ मा०, ज़ीरा सफेद ६ मा०, ज़ीरास्याह ६ मा०, हींग भुनी हुई ५ मा०, काला निमक ५ मा०, सेंधानिक ५ मा०, निमक सांभर ५ मा०, भांग ३० मा०। संग्रहणी, जोफमेदा और भूख बढ़ाने को एक २ माशा फांक ऊपर से मट्ठा पीना।

२—कुड़ा की छाल का चूर्ण ३ माशे मट्ठा के साथ।

३—इन्द्रजौ, बेलगिरी, कुड़ा की छाल एक २ तो० लेकर क्वाथ बना दिन में ३ बार पिलाना।

४—लोधचूर्ण १ मा० को फांक ऊपर से तक्र के साथ सेवन करे।

५—बेलगिरी, पपरिया कत्था, दक्षिणी जायफल, मोचरस, राल एक २ मो० शुद्ध अफीम और कपूर छः २ मा० कूट पीस शहद में चने बराबर गोली बना साया में सुखाले एक २ गोली सेवन करे।

६—शुद्ध अफीम १ भाग, शुद्धहींग २ भाग, लौंग ३ भाग मिश्री ३ भाग मोचरस ४ भाग सब का चूर्ण कर १ या २ रत्ती की गोली बना एक २ गोली चावल

का पानी, मट्ठा या लहसोड़े के पत्ते के स्वरस से सेवन करे।

७—शुद्ध हिंगुल, शुद्ध अफीम, भुना सुहागा समान भाग ले एक२ रत्ती की गोली बना दही की लस्सी के साथ सेवन करे।

बवासीर और संग्रहणी नाशक चूरन।

१—काली मिर्च १ तो०, चीते की जड़ १ तो०, काला निमक १ तो० कूट कपड़छन कर ३ मा० की फन्की लगा मट्ठा पीनेसे संग्रहणी, गुल्म, मन्दाग्नि, बवासीर और उदर रोग नष्ट होते हैं।

पथ्य—धनिया और बाला दोनों को पानी में औट कर वही पानी देना। दाह, प्यास अतिसार शान्त होता है।

अपक्वावस्था में—धान का लावा का सत्तू पानी से पतला कर देना, पानी का साबूदाना, एरारोट, सिंघाड़े के आटे की लप्सी, भात का माण्ड, यव का मांड, दूध का फेन।

पक्वावस्थामें—पुराने चावल का भात, मसूर की दाल परवल, बैंगन, गूलर, केला, चूने के पानी के साथ दूध देना।

बेल का मुरब्बा, अनार, कसेरू, सिंघाड़ा।

नाभि टल जाने में।

१—फिटकरी १० मा०, माजूफल ३ अदद, कूट पीस

सिरका में घोल नाभि पर लेप कर ऊपर से पट्टी बांध दे।

२—अजवायन दो तोला लेकर अण्डे की सफेदी में पीस कर टूंडी पर रखे और १ टुकड़ा शीशे का उसके ऊपर रख पट्टी से बांध दे।

३—मैनफल छटांक भर ले अर्क गुलाब में पीस हाथ पांव के तलवे में मेंहदी की तरह थोप दे।

४—नीबू कागज़ी में ४ रत्ती सुहागा का फूला रख कर गरम कर चूसे।

५—नकछिकनी बूंटी की पत्ती, अजवायन, सोंठ चार २ माशा ले १ तोला पुराने गुड़ में मिला कर खिलावे।

पेट के कीड़ों में।

१—नरकचूर ४ मा०, सौंफ ९ मा०, पानी में पीस दो छटांक पानी या सौंफ के अर्क में घोल गुनगुना २ पीवे।

२—कबीला, बायविडङ्ग, पीली हरड़ की बकली, लाहौरी निमक छः २ मा० ले कूट पीस चूर्ण बनाले ४ से ६ मा० तक फांक ऊपर से गुनगुना पानी या मट्ठा पीवे।

३—बायविडङ्ग ४ मा०, गेहूँ की भूसी १२ मा०, खट्टे अनार का छिक्कल १५ मा०, पुराना गुड़ १५ मा० आधसेर पानी में औटावे ३ छटांक रह जाने पर उतार छान कर गुनगुना पीवे।

४—खट्टे अनार का छिलकल ४ मा० कूट पीस गरम पानी से खावे सिरका पीने से भी कीड़े मर जाते हैं ।

५—मगज़ तुख्म वकायन, मगज तुख्म नीम, छोटी हरड़, रसौत, गूगल बराबर २ ले कूट पीस पानी से चने की बराबर गोली बना एक २ गोली गुनगुने जल से खावे ।

६—कबीला ६ मा० बासी पानी से खावे ।

७—अतरीफल पीली हरड़ का वक्कल, वेहेड़े का बक्कल, आंवला, कवीला दो २ तोले बायविडङ्ग, किस्तशीरी एक २ तो० सफेद सरसों, नागरमोथा, हल्दी छः २ मा० कूट छान ४० तो० शहद में मिला माजून सी बनाले एक तो० रात को गुनगुने पानी से खावे पेट के कीड़े नष्ट होते हैं ।

८—शुद्ध पारा ४ मा०, शुद्ध गन्धक ४ मा०, सुहागा ४ मा०, काली मिर्च, पीपल, सोंठ शुद्ध जमालगोटा चार २ माशे ले । पहिले पारा गन्धक को हल करे (खरल में पीसे) फिर सब दवाइयों को कूट पीस कर मिलाले फिर चार २ रत्ती या चूर्ण १ तो० मिश्री में मिला फांके ऊपर से थोड़ा पानी पीवे ।

९—१ तो० कलौंजी को पीस सिरका में रांध गुनगुना पेट पर लेप करे ।

१०—अजवायन खुरासानी, कंजा की मींग, पलासपापड़ा कमीला, वायविडंग एक २ तो० ले कूट छान सबके

बराबर लाल बूरा मिलावे ६ से १० मा० तक गुनगुने जल से सेवन करे।

११—नीम के पत्ते, वायविड़ंग, कबीला एक २ तो० ले कूट पीस चूरन बनाले ६ मा० सुबह और ६ माशे शाम को फांक ऊपर से गुनगुना पानी पीवे।

१२—खुश्क कशनीज़ कूट पीस ४ मा० फांक ऊपर से मट्ठा या सादा सिकंजबीन पीवे।

१३—रात को गुड़, अखरोट की मींग या तिल खावे और सुबह ऊपर लिखी औषधियों का सेवन करे तो कीड़े शीघ्र मर जाते हैं। सुबह को मीठा डाल दूध पीवे तीन दिन के बाद दूध न पी नाक को बन्द कर वायविड़ंग का चूरन दो तो० फांक ऊपर से आदपाव सिरका पीवे। कीड़े सब दूर हों।

१४—सवेरे उठ कर गुड़ खावे फिर थोड़ी देर बाद खुरासानी अजवायन पानी में पीस पीने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

१५—पलास के बीजों का अर्क शहद के साथ पीवे अथवा मट्ठे में।

१६—पीपल, चीता, सोंठ, अजवायन, पीपरामूल, नागरमोथा और वायविड़ंग, समान भाग चूर्ण कर मट्ठे के साथ सेवन करावे।

१७—चम्पाफूल के पत्ते का रस २ तो० शहद मिलाकर पिलाना।

१८—इन्द्रजौ पुराने गुड़ के साथ खाने से कृमि दूर होते हैं।

१९—खुरासानीवच, वायविड़ंग, राई, बावची चार २ मा० ले कूट पीस एक २ मा० फांक ऊपर से मट्ठा पिलाना।

जलोदर पर।

१—साफ़ कुटकी को २॥ तो० ले २ सेर पानी में धीमी २ आंच से पकावे जब पाव भर रह जाय उतार छान बोतल में रखले और एक २ छटांक प्रातः दोपहर, तीसरे पहर और सोते वक्त पीवे। नित्य ताज़ा बनाकर पीवे २० दिन इसके सेवन से समस्त दोष दस्त और पेशाव के द्वारा निकल जाते हैं और पुराने से पुराना जलोदर जड़ से नष्ट हो जाता है।

२—सिरस की छाल का काढ़ा पीवे।

३—शरवत दीनार १ से २ तो० तक पीवे।

४—मदार के हरे पत्ते आदपाव, हल्दी १०॥ माशा दोनों को खूब बारीक पीस कर उड़द के बराबर गोली बनाना पहिले दिन ४ गोली ताज़े पानी से खाना एक २ रोज़ बढ़ाना ७ होने पर बस सात ही खाना ज्यादह नहीं।

५—बनकरेले का रस ४ तो०, १ तो० शहद मिलाकर पीना। जलोदर नष्ट होगा।

अकसीर जलोदर ।

६—दारुहल्दी, गोखरू, सौंफ, कासनी, दारचीनी, बिसखपरा, आकाश वेल सममाग लेकर ६ गुना पानी में डाल अर्क खींचे खुराक २ से ३ तो० तक ।

मट्टी खाना ।

अकसर लोग, बच्चे वा औरतें मट्टी खाया करती हैं इस के कारण पेट में बुरा माद्दा इकट्ठा हो जाता है इससे दस्त कराकर पेट को साफ़ कर देना फिर—

१—देसीअजवायन चार ४ माशा सुबह दोपहर और शाम को खाकर ऊपर से ताज़ा पानी पीवे ।

२—छोटी इलायची मुंह में रख चावा करे ।

३—छोटी इलायची के दाने, बड़ी इलायची के दाने कबाब चीनी एक २ तो० ले ३ तो० मिश्री मिला चूरन बनाले छः २ माशा ताज़े पानी से खाया करे ।

४—देसीअजवायन, मस्तगी, कालाज़ीरा छः २ माशा मिश्री २ तो० कूट पीस चूरन बना ऊपर की रीति से खावे ।



ववासीर में खाने के प्रयोग ।



१—त्रिफला समान भाग कूट छान कर मधु में छोटे बेर के समान गोली शहद से बनाना और ऽ। मीठा पड़े गुनगुने दूध से खाना।

२—रात्रि में ३ तो० त्रिफला ऽ≡ पानी में भिगोदे प्रातः छान कर १ तो० शहद मिला कर पीवे ।

३—ऽ। भर गुनगुने दूध में १ तो० गाय का घी और ४ तो० मिश्री मिला कर पीना ।

४—सूखी वीरवहूटी १ चावल से २ चावल तक पान में रख कर खाना ।

५—वेतरासोंठ, छोटी पीपल, कालीमिर्च, पीपरामूल, हींग का फूला, चीता की छाल, कुडा की छाल, सोंचर-निमक, काला ज़ीरा, बेलगिरी, सांभर निमक, अजवायन, हाऊवेर, वायविड़ंग, सेंधा निमक, दूधियावच, पकी इमली सवको वरावर २ ले कूट पीस ६ मा० मट्ठा या ताज़े जल के साथ सुवह शाम खावे ।

६—छोटी हरड़ का चूरन समान भाग गुड़ मिलाकर छः २ माशा खावे ।

७—त्रिफला और निसोथ का समान भाग चूरन एक साल के पुराने गुड़ में मिला चार २ माशे की गोली बना एक २ गोली सुबह शाम खावे।

८—इन्द्रजौ, मोचरस, रसौत, फिटकरी, निबोली सब बराबर २ लेकर मूली के रस में झरबेरी के बेर के समान गोली बना एक २ गोली सायं प्रातः ताज़े जल से सेवन करे।

९—चीता, कुडा की छाल, इन्द्रजौ, बेलगिरी और बका-यन के फल को बराबर २ लेकर कूट पीस चूरन बना ले और मुवाफ़िक का सांभरनोन डालकर ३ माशा सुबह और ३ माशा शाम को फांक कर ऊपर से ताज़ा पानी पीना।

१०—रसौत, सुहागा का फूला, नौसादर, छोटी हरड़ दो दो तोला, फिटकरी का फूला १ तोला, मूली के अर्क़ में एक २ माशे की गोली बनाना और एक २ गोली सुबह शाम ताज़े पानी से खानी।

११—२ रत्ती मकरध्वज शहद में चाटे ऊपर से त्रिफले का काढ़ा पीवे। अथवा २ रत्ती मकरध्वज नाग-केशर का चूरन १ मा० मक्खन और मिश्री मिला कर चाटे ऊपर से गाय का दूध, गूलर का रस या सफेद कुम्हड़े का रस पीवे आधी छटांक।

१२—त्रिफला २ तोला को आधपाव पानी में रात को भिगो दे सुबह मल छान कर २ तोला शहद मिला कर पीना।

१३–तीन तोला बबूल की पत्ती लेकर आधपाव पानी में घोट ३ तोला बूरा मिला सुबह पीना।

१४–वकायन की निवोली की गिरी २ तो०, छोटी हरड़ ४ तोला, नीम की निवोली की मींग २ तोला, रसौत २ तो०, धुली भांग १ तो०, कालीमिर्च १ तो० लेकर कूट पीस चूरन बनाले फिर उस चूरन में कुकरोंधा के रस, मूली के रस, हुलहुल और भंगरा के रस की तीन २ भावना दे झरवेरी वेर के समान गोली बना सुखाले एक २ गोली सुबह शाम ताज़े जल के साथ खावे।

१५—इन्द्रायन की जड़, हर्र की वकली, असलीहींग, रसोत, पठानी, लोध, वरावर २ लेकर कूट पीस छान जल से जंगली वेर के समान गोलियां वनाले एक २ गोली सुवह शाम गुनगुने जल से खावे पहिले दिन से ही लाभ मालूम होगा।

१६—गेरू, शुद्ध एलुआ वकायनफल की गिरी, निवोली की गिरी, शुद्धगूगल, रसोत, काली मिर्च वरावर लेकर गिलोय के पत्तों के रस में घोट कर झरवेरी के वेर के समान गोली वनाले ताज़े जल से एक २ गोली खावे।

१७—पीली हरड़ की वकली, नीम के वीज की गिरी, वकायन के वीज, सौंफ, मूली के वीज, रूमामस्तगी नरकचूर छः २ मा० गूगल १ तो० गुलाव के फूल

९ मा० कूट पीस कुकरौंधा के अर्क में जंगली वेर पानी एक २ मा० की गोली बनावे एक २ गोली ताज़े पानी से खाना ।

१८—नीम की निवोली, वकायन के वीज, रसौत एक २ तो०, रीठा का पोस्त ३ मा० कूट पीस मूली के अर्क में गोली वना एक २ मा० ताज़े पानी से सेवन करे।

१९—लहसुन, सज्जी, हींग, विनोले की गिरी छः २ माशे ले कूट पीस ७।। तो० गुड़ मिला नौ २ मा० की गोली वनावे एक २ गोली सुवह शाम खिलावे ताज़े पानी से ।

२०—कुकरौंधा का अर्क पावभर में आदपाव कालीमिर्च पीस कर मिला कर जंगली वेर के वरावर गोली वनाले दो २ गोली सुवह शाम ताज़े जल से खावे।

२१—कच्चे वेल की गिरी, तेलियाखैर, सौंफ बरावर २ ले कूट पीस छः २ मा० की गोली पानी में वनावे एक २ गोली सुवह दोपहर और शाम को ऽ= ताज़े जल से खावे।

२२—माजूफल का सत्व सेवन करने से खून वन्द हो जाता है।

२३—ववासीर में खून का दौरा होने पर अन्जवार की जड़ ४ मा० और ४ मा० विहीदाना रात को आद-पाव पानी में जव कूट कर भिगोदे सुवह मल छान कर ६ मा० मिश्री मिला कर ठंडा ही पीवे।

२४—वकायन के वीज, नीम की निवोली हुलहुल के वीज समान भाग ले पीस कर ६ मा० की फंकी लगा ऊपर से गाय का मट्ठा ऽ= काला निमक और ज़ीरा मुवाफ़िक़ का डाल पीवे।

२५—रोज़ सुवह सफेद तिल १ तो०, मिश्री १ तो० मक्खन १ तो० मिला कर खाने से वायु का अनुलोमन होता है। केवल सफेद तिल ४।५ तो० खाकर ऊपर से ठंडा पानी पी लेने से फ़ायदा होता है।

२६—एक २ मा० पीपल और हर्र का चूर्ण मिला कर खाने से अर्श दूर होता है।

२७—१-२ दिन गोमूत्र में हर्र भिगो कर वही हरड़ खाने से अर्श को लाभ होता है।

२८—विना छिलके के तिल १ तो० आधा तो० चीनी एक में पीस कर एक छटांक वकरी के दूध के साथ सेवन करने से तुरन्त रक्तश्राव वन्द होता है।

२९—नागरमोथा, दारुहल्दी, दालचीनी, खस और नीम इनका क्वाथ वना कर पीने से रुधिर वन्द होता है।

३०—तिल को पीस कर नैनी घी में मिलाकर अथवा नागकेसर का चूरन नैनी घी और मिश्री मिलाकर अथवा दही की मलाई दूर कर मथित दही के खाने से खून वन्द हो जाता है।

३१—असली रूमामस्तगी १ तो०, छोटी इलायची के दाने ६ मा०, कूट पीस ले एक २ मा० सुबह शाम दही की मलाई में खाना।

३२—देसी बकायन के बीज, रसोत, बराबर २ ले जल के साथ घोटकर चना के बराबर गोली बनाले एक २ गोली ताज़े पानी से सेवन करे।

३३—कमल का पत्ता पानी में पीस आधी छटांक पानी में मिला थोड़ी चीनी डाल पीना।

३४—शतावर का रस २ तो० बकरी के दूध के साथ पीना।

३५—कुरैय्या की छाल ६ मा० मट्ठे के साथ सेवन करना।

३६—बनतुलसी के बीज ६ मा० गाय के दही के साथ खाना।

३७—पहाड़ी कीकड़ की फली का चूरन ३ मा० फांक ऊपर से मूली का स्वरस आधी छटांक थोड़ी लाल शक्कर डाल पीना।

३८—रीठा के छिकल की भस्म २ तो०, कत्था सफेद १ तो०, नीम के खुश्क फूल ६ मा०, हर्र छोटी ६ मा० सब को कूट पीस तीन २ मा० फांक ऊपर से मट्ठा पीना।

३९—सीपी की भस्म, कहरवा, धनिया, रसौंत, हर्र छोटी घी में भुनी, गुलाब के फूल बराबर २ लेकर

अर्क गुलाव से चने वरावर गोली वना दोनों वक्त पांच २ माशा ठंडे पानी से खावे यह ववासीर के खून को वन्द करने में अक्सीर है।

४०—हर्र कावुली गाय के घी में भून गुठली निकाल उसके वरावर रसौत मिला उड़द के वरावर गोली वना शाम सवेरे ठंडे पानी से चार २ माशा खावे खूनी वादी दोनों जावे।

४१—रसौत १ तो०, शोरहक़ल्मी १ तो०, मूली के स्वरस में झरवेरी के वेर के समान गोली वना छाया में सुखा कर प्रातःकाल वा सायंकाल ठंडे पानी से खावे।

४२—अपने पेशाव में आवदस्त लेवे वहुत लाभ होगा।

४३—गूगल, एलुवा, हींग भुनी हुई, खुरासानी अजवायन, नीम की निवोली समभाग लेकर सत्यानासी के रस में चने से वड़ी गोली वना एक २ गोली दुग्ध या जल से देवे।

४४—खाकस्तर रीठा २ तो०, कत्था सफेद १ तो०, खुश्क नीम के फूल ६ मा०, मग़ज़ हर्र स्याह ६ माशा सवको एक दिल कर ४० पुड़िया वनावे सुवह शाम ठंडे से खावे।

४५—जदवार, खताई, रसोत जर्द चार २ तो० सव को कूट पीस १ मोटी मूली में चीर कर भर दे और मट्टी लगा कर भाड़ में वालू में दवाये जव लाल

होजाय निकाल ले ऐसे ३ पुटदे फिर चने की बराबर गोली वना गरम पानी से एक २ गोली सुबह शाम खावे।

४६—पहाड़ी कीकड़ की फली का चूरन एक २ माशा ले मूली के चंदों पर धर कर खावे ऊपर से १ तो० लाल शक्कर की फंकी लगाले।

४७—१ तो० वकायन की कोंपल, ३ कालीमिर्च, १ रत्ती खाने का चूना भांग की तरह घोटकर ऽ-भर पानी में छान पीलेना एक सप्ताह में आराम होगा।

४८—ववासीर से खून गिरता हो तो मकोय की पत्ती का अर्क २ तो०, शहद १ तो० मिलाकर पिलावे।

४९—दालचीनी का असली तेल अंगुली में लगाकर गुदा स्थान में जहां तक पहुंचे दिन में २—३ वार लगाना। तीन दिन में शर्तिया लाभ होगा।

५०—भांग १ तो०, हरसिंगार का कन्द १ तो०, पपरियाकत्था १ तो०, शीतलचीनी १ तो०, काली-मिर्च १ तो०, सबको चूर्ण कर रखलेना ६ मा० चूरन खाकर आधपाव जल पीना १ ही दिन में प्रातःकाल सेवन करने से सब प्रकार का अर्श जाता रहेगा, भोजन में केवल जलेबी खावे और कुछ नहीं।

५१—छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेशर, मिर्च, पीपल सोंठ, सब की बराबर मिश्री मिलाकर

तीन २ माशा खाने से ववासीर, मंदाग्नि, गुल्म, अरुचि, श्वास, कंठ और हृदय रोग दूर होता है।

५२—तिल, हरड़, गुड़ समान भाग ले कूट पीस २ तोले के लड्डू बना खाने से ववासीर, श्वाँस, खांसी, प्लीहा, पांडु और ज्वर दूर होता है।

अभयारिष्ट।

पीपल, कालीमिरच, वायविड़ंग, एलुआ, लोध, आठ २ तो० इन्द्रायण की जड़ २० तो०, कैथ की गिरी ४० तो०, हरड़ की बकली ३२ तो०, आंवला ६४ तो०, जल १६ सेर, गुड़ १० सेर। सबको मिला ४० दिन ज़मीन में गाड़ दे फिर निकाल सेवन करे। मात्रा ४ तोले तक, प्रातःकाल बलावल देखकर दे। प्लीहा, मन्दाग्नि, अर्श, संग्रहणी, हृद्रोग, पाण्डुरोग, शोफ, कुष्ट, ६ प्रकार के गुल्म, उदररोग कृमिरोग नष्ट होते हैं बल को बढ़ाता है।

फलारिष्ट।

इन्द्रायण की जड़ ऽ।, कैथ का गूदा ऽ। आंवला ऽ१ हरड़ ऽ१ पाठल ऽ= चीते की जड़ ऽ= सब को कूट २४ सेर जल में औटावे ६ सेर रह जाने पर उतार छान २॥ सेर गुड़ डाल कर चिकने बर्तन में भर १५ दिन ज़मीन में गाड़दे फिर निकाल छान बोतलों में भरले। ६ माशे से १ तो० तक बल के अनुसार ववासीर में सेवन करे इससे हृदयरोग, पांडुरोग, प्लीहा, कामला विषमज्वर मलविबन्ध,

मूत्रावरोध, मंदाग्नि, खांसी, गुल्म, उदावर्त रोगों को भी फ़ायदा होता है।

तक्रारिष्ट।

कचूर, छोटी पीपल, पीपलामूल, चीता, चव्य, अजवायन हाउवेर, सफेद ज़ीरा, धनिया, काला ज़ीरा, अजमोद दो २ तो० लेकर कूट छान सोलह सेर मट्ठा में मिला कर घी के कमोरे में मुंह बन्द कर १०-१२ दिन रखा रहने दे फिर भोजन के पश्चात् २ से ४ तो० तक पीवे इस से वातानुलोमन, अग्निसंदीपन, रोचक, गुदा की कोंचन, जलन, खुजली और कतरने की भी पीड़ा नष्ट होती है।

सूखी ववासीर में मट्ठे का सेवन।

चीते की छाल की बुकनी पीस कर घड़े में लेपकर उस में मट्ठा रक्खे और वही मट्ठा पिलावे। थोड़ी सोंठ, पीपल और कालानिमक सफेद ज़ीरा मिला कर भी मट्ठे का सेवन कर सकते हैं ४० दिन मट्ठे का सेवन करने से और फिर क्रम से छोड़ने से फिर ववासीर नहीं होती।

ववासीर का खून बन्द करना।

१—४ तो० अमलतास का गूदा लेकर पावभर पानी में औटावे जब तीन छटांक रह जावे तो छः माशे सेंधानिमक और २ तो० गाय का घी मिला कर पीवे। इस से दो तीन दिन में खून बन्द हो जाता है।

२—नीम की सूखी छाल कूट पीस कर २ आनाभर से ४ आनाभर तक ठंडे पानी से खिलावे।

३—कलमीशोरा, तजकल्मी, गेरू, निसोत, मिश्री बराबर लेकर कूट पीस चूरन बनाले एक २ मा० चूरन सुबह शाम फांक कर ऊपर से ताज़ा पानी पीने से खून का वेग रुक जाता है।

४—रीठा का छिकला जला कर (उस की राख) पपरियाकत्था दोनों को बराबर ले पीस ले फिर २ मा० सुबह, २ मा० शाम को मक्खन में मिला कर चाटे खून बन्द हो।

५—सूखे आंवले का चूरन ४ मा० मिश्री बराबर की मिला कर दो २ माशे सुबह दोपहर और शाम को फांक ऊपर से ताज़ा पानी पीवे।

६—साफ़ किशमिश को एक तो० लेकर १ छटांक पानी में भिगोदे जब वह फूल जावे तब मलकर १ तो० मिश्री मिला कर पीले।

७—सफेद दूब एक तो० ले १ छटांक पानी में पीस पीवे।

८—१ माजूफल को पीस ले और मूंग की दाल की खिचड़ी बनावे उस को थाली में परोस बीच में एक गड्ढा करे और उसमें १॥ तो० घी भरना और उस में ऊपर की दवा (माजूफल) डाल एक ही ग्रास में खालेना ऊपर से खिचड़ी खालेना ऐसा सात दिन करने से खूनी बवासीर हमेशा के लिये जाती रहती है यह प्रयोग एक साधू ने बताया है।

९—असली नागकेशर ६ मा० १ तो० गाय का मक्खन में मिलाकर सेवन करने से भी खून बन्द होजाता है।

१०—३ तो० सूखा आंवला और ६ माशा अपामार्ग की जड़ का चूरन ऽ। भर पानी में रात को भिंगो देना, सुबह मल छानकर १ छटांक मिश्री पीसकर मिला कर पीने से बवासीर में अद्भुत फ़ायदा होता है।

११—कबीला को शुद्ध कर पीस ले फिर २ माशा कबीला डेढ़ या २ छटांक दही में मिलाकर खाने से ४, ५ दिन में ही लाभ होता है।

१२—खैर की छाल और रीठा की बकली बराबर २ लेकर एक हांडी में बन्द कर जलावे फिर पीस कर दो २ रत्ती मलाई या मक्खन में खाना।

१३—लाल फिटकरी १ तो० और शोरहकलमी ३ तो० पीसकर एक साथ कड़ाही में आग पर गलावे, गलने पर सूरनखार १ तो० मिलाले तीन २ रत्ती दही में मिलाकर खावे ऊपर से मिश्री का शर्बत पिये।

मस्से काटने का देशी उपाय।
(अपरेशन)

१—प्रथम रोगी को जुल्लाब दे फिर आठ दिन तक कसीस का तेल लगवावे फिर संखिया को नीम या कड़वे तेल में पीसकर रोगी को औंधा लिटाकर १ डोरे में ऊपर का संखिया का तेल लगा मस्सों को बांध दे और मरीज़ को औंधा ही सुलावे और डोरे के चारों तरफ़ थोड़ा २ संखिया का तेल लगावे ऐसा करने से तीन दिन में मस्से मुरझा जावेंगे। इस में

थोड़ी घबराहट भी मरीज़ को होती है सो घबराना नहीं चाहिये मिश्री मिलाकर दूध पिलाना इस से मरीज़ को नींद भी आ जायगी—दूध का ही सेवन अधिकता से करे और कुछ ३ दिन तक न दे। यह अपरेशन वैद्य अपने हाथ से करे।

२—थूहर के दूध में हल्दी मिलाकर मस्सों पर लगाने से मस्से गिर जाते हैं।

३—भुना तूतिया, मुरदासंग, कपूर एक २ तो० नींबू के रस में खरल कर गोली बना रक्खे आवश्यकता पड़ने पर नींबू के रस में घिसकर मस्सों पर लगावे।

४—कपूर १ मा०, अफ़ीम २ मा०, माजू ८ मा०, पीसकर गौ के घी में लगावे।

५—लोटन सज्जी, खड़िया मट्टी बराबर २ ले मलाई अथवा धुले घी में मिला कर मस्सों पर अंगुली से भीतर बाहर खूब लगाना ११ दिन में बिना तकलीफ़ मस्से गिर जांयगे और बीमारी जड़ से दूर हो जायगी।

६—१ सेर का मारू बैंगन लेकर उसकी चार फांकें इस इस प्रकार करे कि नीचे डंठल के पास जुड़ी रहे उसके बीच में ६ माशा नीलाथोथा रख कच्चे धागे से लपेट दे और १ हांडी में बैंगन डूब जाय इतना पानी भर चावल पकावे और बीच में बैगन को रखदे जब चावल पक जावे तब उसमें से बैगन को

निकाल ले और चावलों को फेंकदे और बैंगन को एक मज़बूत कपड़े में रख कर उसका अर्क निचोड़े एक बतन में रख छोड़े इस अर्क में रुई का फाहा भिगोकर गुदा के भीतर रखने से बवासीर को आराम होता है।

७—करंज के फल का वकल, चीता, सेंधानिमक, सौंठ, इन्द्रजौं, इनका चूर्ण डालकर मट्ठा पीवे तो रुधिर के साथ बवासीर के अंकुर गिरजाते हैं।

८—हल्दी के चूर्ण को थूहर के दूध में मिलाकर लेप करे।

९—पीपल, सेंधानिमक, कूट, सिरस के बीज इनको थूहर अथवा आक के दूध में पीसकर लेप करने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

१०—हल्दी, कड़वीतोरई का चूर्ण सरसों के तेल में मिलाकर लेप करे यह लेप भी उत्तम है।

११—कुकरोंधे का रस चुपड़े और उसीकी लुगदी बांधे वा आक के पत्तों की लुगदी। गोभी की लुगदी, तमाखू की लुगदी बांधे तो बादी बवासीर जावे।

१२—हीरा कसीस, सेंधानिमक, पीपल, सोंठ, कूठ कलिहारी, पाखान भेद, कनेर (दन्ती जमाल गोटे की जड़) बायविड़ंग, चीता, हरिताल, मैनसिल, सत्यानाशीकटेरी, इनका कल्क बनाकर थूहर और आक के दूध और चौगुने गोमूत्र में तेल सिद्ध कर गुदा में लगावें।

कीड़े पड़े बवासीर पर धूनी ।

१—छोटी कटाई के फल की धूनी दे ।

२—वायविड़ंग की धूनी दे ।

३—गोदी एक प्रकार का बिरवा गेहूँ के खेतों में होता है इस के फल के बीज काले २ होते हैं उन को कड़ुवे तेल में कुछ भिगोकर धूनी दे ।

४—केंचुआ को सुखा कर उसकी धूनी ले अथवा पानी में पीस गुदा में लेप करे ।

५—देवदारु, भांग, घोड़े के नाखून बराबर ले कूट कर धूनी लेवे इससे मस्से सूख कर गिर जाते हैं ।

६—खाने का चूना, तमाकू खाने की और गुड़ तीन २ मा० एक में मिला टिकिया बना मस्सों पर धूनी दे ।

७—अडूसा, मदार, एरंड, बेल के पत्तों का काढ़ा बना उस का बफारा दे या उस से सेक करे या तडेरादे या किसी टप आदि में बैठाल दे इस से दर्द बन्द होगा ।

८—खूबकला, धनिया खुश्क, भाँग बराबर ले धूनी दे ।

मस्सों पर अन्य प्रयोग ।

यदि मस्सा भरा हुआ दर्द करता हो और खून नहीं आता हो तो—

१—खतमी और सोए को पानी में पकाकर सेक करे ।

२—प्याज की पुलटिस बांधे ।

३—गुग्गुल, इन्द्रायण, सांप की कंचुली की अलग २ या एक में जलाकर धूनी दे फिर सफेदा का मरहम लगावे।

४—सांप की हड्डी, भांग और कुचला तीनों को थोड़ा २ ले कूट ले और फिर आग पर डाल धूनी लेने से खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर नष्ट होती है।

५—कड़वी तोरई के चूरन को पानी में पीस कर मस्सों पर लेप करे।

६—सिंदूर, मुरदासङ्ग, माई, माजूफल, कपूर और अफीम छः २ माशे ले मोम ६ तो०, तिल का तेल ऽ।- विधि—तेल को गरम कर मोम को उस में डाल दे जब मोम पिघल जाय तब ऊपर की चीज़ें पीस कर डालदे और चलावे जब गाढ़ा मलहम सा हो जाय तब उतार कर चाहे उंगली से लगावे चाहे बत्ती पर लगा गुदा में रक्खे।

७—मस्सों पर नीम का तेल लगा कर धतूरे के सूखे पञ्चाङ्ग की धूनी देना, धुवां आंखों में न लगने पावे।

८—माजूफल का चूरन १ मा०, अफीम ४ रत्ती मक्खन या गाय के धुले घी में मिला कर लगावे।

९—कुकरौंधे की हरी पत्ती लेकर पानी में गाढ़ी २ पीस १ मा० की गोली बनावे और पाखाना जाने के बाद आबदस्त ले १ गोली गुदा के भीतर खसका दे

जितनी बार पाखाने जावे (हद २ या ३ बार) एक २ गोली खसका लिया करे ऐसा ३-४ दिन करने से मस्से समूल नष्ट हो जाते हैं।

१०-मिरचोनी घास जो नदी के किनारे होती है उस की डण्डी लाल और मिर्च के समान पत्ती होती है और मिर्च के समान चरपरी होती है उस की टिकिया सात रोज़ बांधने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

११-सेही (सेहिया एक जानवर होता है उस के शरीर पर कांटे होते हैं) के कांटों को कूट कर अग्नि पर डाल कर धुंआ लेने से मस्सों से पानी झरने लगता है और शनैः २ थोड़े दिन में मस्से सूख कर गिर पड़ते हैं। कभी २ मस्से फूल भी जाते हैं तो घबड़ाना नहीं चाहिये धुंआ बराबर लेते रहना ३-४ दिन में मस्से सूखने लगते हैं।

१२-छः माशे अन्डी का तेल खूब गरम करे और फिर अग्नि पर से उतार उस में १ तो० कपूर पीस कर डाल बर्तन का मुंह बन्द करदे थोड़ी देर बाद बर्तन का मुंह खोल डन्डे से घोट कर बोतल में भरदे और फुरहरी से २-३ बार प्रति दिन लगा लिया करे।

१३-रीठा की बकली को पत्थर पर पानी से गाढ़ा २ पीस कर मस्सों पर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

१४-भांग को पीस कर दूध में पका कर गुदा में बांधे।

१५—सिरस की छाल और कलहारी की जड़ को महीन पीस कांजी में खूब घोटे फिर नाभि के चारों तरफ चार अन्गुल जगह पर मोटा २ लेप करदे तो सात दिन में मस्से गिर जाते हैं।

१६—मूली के बीज ६ मा० निबोली ६ मा० मेंहदी के बीज, पपरिया कत्था, इन्द्रजो छः २ मा० कूट पीस छान कर १० तो० १०१ बार धुले हुए गाय के घी में मिला कर मस्सों पर लगावे।

१७—भांग और तालाब की काई समान भाग पीस कर प्रातः और सायंकाल मस्सों पर लेप करे।

१८ चिड़िया कपूर, रसौत, नीम कोड़ी की मींग बराबर २ ले महीन पीस मस्सों पर लेप करे और ८ दिन के बाद २ रत्ती नीलाथोथा २ रत्ती राल मिला कर पीस घी में मिला कर लगावे बिना तकलीफ मस्से सूख कर गिर जावेंगे।

कड़ी उमड़ी हुई और पीड़ावाली बवासीर में

१—चीता, जवाखार, कच्चे बेल के फल का गूदा एक २ तो०, १२ तो० तिल के तेल में पकावे और जौ, कुलथी या उड़द की रोटी बनावे फिर उस रोटी को पानी में उबाले फिर उबली रोटी में ऊपर का तेल मिला कर पोटली बना मस्सों को सेके।

२—गधा या घोड़े की लीद से सेक करे।

३—हाऊबेर की लुगदी बना थोड़ा तेल मिला सेक करे।

४—काले तिल को काजी में पीस सेक करे।

५—भांग की पोटली से सेक करे।

६—राल की धूनी देने से खुजली, जलन और पीड़ा शान्त होती है।

७—तिल और मालकंगनी को बारीक पानी में पीस गरम कर बांधने से भयंकर बवासीर की पीड़ा दूर होती है।

गरम प्रकृति वालों को

१—तीसी का तेल एक छटांक में एक बूंद (कारबोलिक एसिड) अथवा ३ बूंद बिरोजा व गुग्गुल का तेल मिला गुदा में शौच जाने से पूर्व वा आबदस्त लेने के बाद पिचकारी ले।

२—कुकरौंधा की जड़ वा पत्ते पीस टिकिया बना ज़रा गरम कर मस्सों पर रखले लंगोट बांध ले इस से दर्द जलन शीघ्र ही शान्त हो जाती है।

३—पापरी कत्था चार आना भर छोटी इलायची चार अदद, रसकपूर १ रत्ती मुरदाशंख १ मा० कूट पीस मक्खन या धुले हुए घी में मिला कर उंगली से लगाना।

४—पपरिया कत्था ६ मा० निबोली के बीज ६ मा० कपूर २ मा० कपड़ छन कर मक्खन में मिला उंगली से लगावे।

बवासीर में यदि पाखाना न होता हो

१—तो—सनाय ऽ॥ सौंफ ऽ॥ मुलहटी ऽ॥ शुद्ध आंवलासार गन्धक ऽ॥ मिश्री ८ छटांक मिला कर कूट पीस कर चूरन बनाले रात्रि को ६ मा० से १ तो० तक रात्रि को सोते समय फांक कर ऊपर से ऽ। भर गाय का दूध मीठा डाल गुनगुना पीना।

२—कासकरा अरोमेट (यह काले रङ्ग का गाढ़ा अर्क है जो अङ्गरेज़ी दवाखानों में मिलता है) १५ बूंद-मगनेशियासाल्ट (यह भी अङ्गरेज़ी दवाखानों में मिलता है) दो आनाभर आदपाव सौंफ के अर्क में पीने से दस्त साफ हो जाता है। बवासीर की पीड़ा शान्त हो भूख खूब लगती है।

बवासीर-क्षुधावृद्धि पर।

१ सेर अजवायन लेकर एक हांडी में आधी बिछावे बीच में रांगा, जस्ता और सीसा की छः२ मा० की डेली रखे ऊपर से दूसरी आधी अजवायन डाल दे ऊपर से कपर मिट्टी कर सुखाले फिर १० सेर कन्डों में फूंक ले। डेलियों को फेंकदे और अजवायन को पीस शीशी में भरले। २ मा० से ६ मा० तक शीतलजल या मट्ठा से सेवन करे इस से दोनों प्रकार की बवासीर नष्ट होती है खून बन्द होता है, दस्त साफ होता है, भूख खूब लगती है, शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

दर्द गुरदा



१—तुख्म ख़रबूजा दो तो० डेढ़ पाव पानी में औटावे चौथाई रह जाने पर उतार छान, २ तो० लाल बूरा मिला पिये।

२—ककड़ी की मींग, ख़रबूजे के बीज, गोखरू दो २ तो० ले पानी में बारीक पीस छान ले और उस में २ तो० लाल बूरा, २ तो० गाय का घी डाल गरम कर गुनगुना २ पीवे।

३—नये अंगूर के पत्ते ३ तो०, ४ तो० पानी में पीस गरम कर २ तो० लाल बूरा मिला कर पीवे।

४—शुद्ध शिंगरफ़ १ रत्ती, देसी अजवायन ६ मा०, पीस कर फांकले या शहद में मिला कर चाटले. ऊपर से गुनगुना दूध मीठा डाल कर पीवे।

५—देसी अजवायन, तुख्म गाजर, अजमोद, तुख्म मेथी, तितली के बीज चार २ माशा ले ऽ। भर पानी में औटावे एक छटांक रह जाने पर उतार छान गुनगुना पीवे।

६—कौंच के बीजों की गिरी २ अदद, कालीमिर्च ६ मा० पीस कर थोड़ी सफेदी मुर्ग़ के अंडे की मिलावे और दर्द की जगह पर लगा दे। इसी प्रकार कंजा के बीज की मींग भी लगा सकते हैं।

७—मेथी, गाजर के बीज दस २ माशा ईसबगोल १५ माशा कूट पीस पानी में गरम कर गुरदे पर लेप करे।

८—शरबत गुलकन्द १० तो०, कासनी के बीज ४ तो० ख्यारेन के बीज, कर्र के बीज सौंफ और सौंफ की जड़ दो २ तो० ले कूट करके १ सेर पानी में भिगोदे सुबह आग पर काढ़ा बनावे जब चौथाई जल रह जाय उतार मल कर छान आध सेर शक्कर डाल फिर आग पर चढ़ादे और चासनी मुलायम आने पर उतार बोतल में भरले ३ से ४ तो० तक गुनगुने पानी में मिलाकर सेवन करे।

९—कलौंजी २ तो० ऽ॥ पानी में पकावे जब आधी छटांक रह जाय तब उतार छान २ तो० गुलकंद मिलाकर गुनगुना चाटले।

१०—आंवलासार गंधक २ तो०, जवाखार १ तो०, मिश्री ४ तो०, १ मा० गुनगुने जल से देना।

११—गेहूँ की भुसी, अजवायन, सेंधानिमक की पोटली से सेंके।

१२—खरबूजे के छिक्कल २ तो०, १ पाव पानी में पकाकर ऽ॥ पानी रह जाने पर उतार छान २ तो० मिश्री डाल पिलाना।

गुरदे की कमज़ोरी में

१—आधसेर तुरंजवीन खुरासानी को लेकर २ सेर गाय के दूध में औटावे जब खोया होजावे ऽ= घी में भूने और आधसेर मिश्री डाल आधी २ छटांक के लड्डू बनाले एक २ लड्डू सुवह शाम खावे।

२—गेहूँ का सत १ तो०, बादाम की गिरी ८ अदद, मगज़तुख्म कद्दू १ तो०, खशखास १ तो०, किशमिश १ तो०, धनिया ६ मा०, सब को पीस ऽ- घी में भून ऽ≡ मिश्री मिलाले और ऊपर की रीति से खावे।

३—बादाम की गिरी ७ अदद, कद्दू के बीज की गिरी ५ मा०, पेठा के बीज की गिरी ३ मा० पीस १ तो० मिश्री मिला चाटे।

४—छोटी इलायची १ तो०, बालछड़, नागरमोथा, दालचीनी, लौंग दो २ तो०, सफेद ज़ीरा सुगन्ध वाला, तेजपान, गुलाब के फूल, हरड़, बहेड़ा आंवला, गोखरू, बादरंजोया, कमलगट्टा की गिरी, कुलथी, कर्र, उशबा, चोबचीनी, सौंफ एक २ छटांक, झरबेरी की छाल ८ तो०, बबूल की छाल २० तो०, गोंदनी की छाल २०, गाजर बीच की हड्डी निकाल ८० तो०, शहद १०० तो०, पुराना गुड़ २०० तो०, पानी १ मन में सब दवाइयां जब कूट करके दो दिन भिगोदे फिर खूब मल कर अर्क खींचे ३ से ५ तो० तक पीवे।

५—तज,दालचीनी,बालछड़,छोटी इलायची, लौंग,सौंफ, अजमोद चार २ मा० काला ज़ीरा २ मा० मस्तगी, पोदीना दो २ मा० कालीमिर्च २ मा० कूट पीस १० मा० शहद मिलाले ४ से ६ माशा तक खावे।

पथरी।

१—लोहे की अंगूठी हाथ में और पांव में लोहे का कड़ा पहने।

२—१ रत्ती से चार रत्ती तक अभ्रकभस्म शहद में मिला कर चाटे।

३—गोखरू छोटे, ख्यारैन के बीज, राई, खुरफा, खरबूज़ा के बीज दस २ मा० डेढ़पाव पानी में पकावे डेढ छटांक रह जाने पर उतार छान शरबत बिज़ूरी २ तो० मिला कर पीवे।

४—**शरबतबिज़ूरी** कासनी, खरबजा, कद्दू, कर, खतमी के बीज, मुलहटी २ तो०, बालछड़ बनफशा, गावजुवां पन्द्रह २ मा० मुनक्का ७ तो० २ सेर पानी में औटावे ऽ।। रह जावे तब उतार मलकर छान तीन पाव मिश्री मिला शर्बत बनाले।

५—तुख्मख्यारैन, गोखरू, राई, खुरफा, खरबूज़े के बीज नौ २ मा० का काढ़ा बना २ तो० शरबत बिज़ूरी डाल पीवे।

६—१५ मा० साफ देशी अजवायन को ले आध सेर गाय के दूध में पका ३ तो० मिश्री मिला खावे।

७—आलूबुखारा ९ अदद गावजुबां, मकोय के बीज, कसूस के बीज, गोखरू, गुलबनफ्शा, खिरफायज, तुखमखतमी तुखमखुब्बाजी, कासनी के बीज, सात सात मा० सौंफ ६ मा० गुलाब के फूल १५ मा० सनाय १५ मा० अजमोद ४ मा० तुरन्जबीन, ४ तो० अमलतास का गूदा ५ तो० । अठगुने पानी में काढ़ा बना १० मा० मीठे बादाम का तेल डाल पीवे ।

८—संगयहूद यह पत्थर होता है उसे बीस तो० ले टुकड़े कर मूली के तीन पाव रस में खरल करे जब सब रस सूखजाय छोटी २ टिकिया बना एक सरवे में रख कपड़ मिट्टी कर सुखा फूंकले । २ रत्ती से ४ रत्ती तक शरबत बिजूरी से ।

९—मजीठ २४ माशा, गोखरू १२ मा०, मगज़ तुख्म खरबूजा २० माशा, मिश्री ६ तो० मिला चूरन सा बनाले ४ से ६ माशा तक ठंडे जल से सेवन करे ।

१०—जवाखार ४ मा०, शोरहकल्मी ८ मा०, गाजर के बीज १६ मा० चूरन बनाले ४ से ६ माशा तक फांक ऊपर से मट्ठा पिये ।

११—मुलहटी की राख बनाले २ माशा से ६ माशा तक बराबर के शहद में मिला कर चाटे ऊपर से पाव भर गाय का दूध गुनगुना ४ तो० मिश्री और १ तो० घी डाल कर पीवे ।

१२—तीन तो० सौंफ, मुलहटी, कुलथी पन्द्रह २ माशा डेढ़पाव पानी में काढ़ा बनावे डेढ़ छटांक रह जाने पर उतार छान ६ माशा घी और ३ मा० लाहौरी निमक पीस कर मिला गुनगुना पीवे। इससे पथरी टूट कर निकल जाती है।

लेप

१३—मेंहदी के पत्ते, पोदीना के पत्ते, तुलसी के पत्ते, सोया के पत्ते, तीन २ तोले सौंफ के अर्क में पका गुनगुना पेड़ू पर लेप करे।

१४—सुहागा का फूला ४ रत्ती से १ माशा तक मक्खन में मिला कर चाटे।

१५—गोखरू का चूरन ६ माशा शहद और शक्कर में मिला कर चाटे। मुलहटी की राख ६ माशा काला निमक १॥ मा० फांक ऊपर से ५ तो० गाय के दूध में ७ तो० शराब उमदा (पोटवेन) ७ तो० मिलाकर तीन दिन पीने से पथरी दूर होती है।

कुलथ्यादि घृत

कुलथी के बीज १ छटांक, पेठा के बीज, गोखरू चार २ ३ तो० वायविड़ंग, जवाखार, सौंफ कालानिमक, मुलहटी मिश्री तीन २ तो० पेठे का रस ४० तो० बकरी का दूध १०० तो० घी डेढ़ सेर। मिश्री से ऊपर की दवाइयों को ६ सेर पानी में पकावे जब दो सेर रह जाय उतार मलकर

छान ले फिर सब और चीज़ें डाल कर पकावे जब सिर्फ घी ही रह जाय उतार छान रख छोड़े एक २ तो० सुबह दोपहर और शाम को बूरे में मिला कर खावे या दूध में डाल कर पीवे।

पेशाब बन्द होजाने में।

१—मूली के पत्तों का रस निकाले ९ तो० उसमें २ माशा शोरहक़ल्मी मिला कर पिलावे।

२—शोरहक़ल्मी, राई, बराबर २ ले कूट पीस पानी से खावे कपूर को बकरी के दूध में पीस इन्द्रिय में रक्खे।

३—केसर की १ कलम इन्द्रिय के सूराख में रखे।

४—पाव भर सौंफ के अर्क में ४ तो० कास्ट्रोल मिला कर पिलावे।

५—गोखरू, कासनी हंसराज, सौंफ, कबाबचीनी पांच २ माशा मग़ज़ तुख्म खरबूजा १ तो०, अमलतास का गूदा ७ मा० ऽ। भर पानी में औटावे १ छटांक रह जाने पर उतार मल कर छान ले और २ तो० शरबत बनफशा मिला कर पिलाना।

६—सीप को सौंफ के अर्क में पीस पेड़ू पर लेप करे।

७—शहतूत के पत्ते के रस में शोरह घोट कर पेड़ू पर लगावे।

८—पेठा के बीज की गिरी पानी में पीस पेड़ू पर लगावे।

९—गुलबनफ़शा १॥ तो० बाबूना, खुब्बाजी एक २ तो० कूट छान पानी में गरम करे और उसमें गुलरोग़न या बादाम का तेल लगा कर पेडू पर लेप करे।

१०—संगयहूद २ माशा गुनगुने पानी से खावे।

११—शोरह १ माशा मिश्री १५ मा० मिला कर मक्खन में मिला कर चाटे।

१२—कुसुम के फूल २ तो०, शोरहकल्मी १ तो० दोनों को पीस पानी में गरम कर पेडू पर लेप करे।

१३—दालचीनी नागरमोथा, बालछड़ पन्द्रह २ माशा तज १० माशा लौंग ६ मा०, जावित्री ४ माशा, सब को कूट कर के ४ सेर पानी में पकावे जब तीन सेर पानी रह जाय उतार छान टुटनीदार बर्तन से पेडू पर गुनगुनी धार डाले। और दो २ घूंट पीले।

१४—मगज़ तुख्म ख्यारैन, मगज़ तुख्म खरबूज़ा डेढ़ २ तो० तुख्म कासनी, तुख्म करफस तुख्मकसूस दस २ माशा सौंफ ७ माशा रब्बुल सूस (अजमोद) ७ माशा, रेवत चीनी ४ मा०, जरिश्क बीदाना १५ मा० मोंगरालाख २॥ तो०, कपूर १ मा० मस्तगी ४ माशा केसर १ मा० कूट छान कर चूरन बनाले ४ से ६ माशा तक शरबतबनफ़शा में मिला कर चाटे।

१५—भैंस के कान का मैल सौंफ के अर्क में घोल नाभि पर लगावे कागज़ी नीबू को काट उसके बीज

निकाल उसमें शोरह कल्मी ठूंस २ कर भर गरम करे जब खूब गरम होजाय तब उसके रस को नाभि और पेडू पर मले।

१६—कल्मीशोरा १ तो०, खीरा वा ककड़ी के बीज ४-४ मा०, छोटी इलायची के दाने २ मा०, दखिनी काली मिर्च ४ दाने, शीतलचीनी ४ मा० सब को पीस ऽ॥। पानी में मिला ऽ॥ मिश्री मिला कर पीवे।

१७—१ तो० मूली का रस १ तो० चीनी मिलाकर पीना।

१८—१ मा० जवाखार १ छटाँक चीनी के शरबत में मिला कर पीना वा फॉक कर ऊपर से शरबत पीना।

१९—२ तो० शतमूली के रस में आध पाव दूध और चीनी मिला कर पीना।

२०—गिलोय का रस २ तो० थोड़ा शहद मिलाकर पीना।

२१—दूध की लस्सी पीना।

पेशाब में खून आने को।

१—चाकसू का चूरन १ मा० फांक ऊपर से शरबत-चन्दन २ तो० १ छटांक पानी में डाल पीना।

२—बारहसिंगा का सींग जला कर (भस्मकर) उस के बराबर कतीरा सफेद मिला तीन २ मा० शरबत-चन्दन से सेवन करे।

शरबतचन्दन — सफेद चन्दन का बुरादा, लाल-चन्दन का बुरादा चार २ तो० अर्क गुलाब ४० तो० खट्टा अनारदाना ५ तो०

बुरादे को अर्क में एक दिन रात भिगोदे और १ सेर पानी में अनारदाना को भिगोदे दूसरे दिन सब को खूब मल एक में कर आग पर चढ़ादे जब आध सेर पानी रह जाय उतार मलकर छान तीन पाव मिश्री मिला फिर चूल्हे पर चढ़ादे नरम चासनी आने पर उतार बोतलों में भरदे। २ तो० से ५ तो० तक सेवन करे चाहे ऽ॥ पानी में चाहे ऽ। दूध में।

४—सफेद चन्दन, बबूल की फली, गुलाब के फूल, गेरू एक २ तो० ले अर्क गुलाब में पीस पेड़ू पर लेप करे। रेवतचीनी का चूरन ६ मा० फांक ऊपर से मिश्री का शरबत गाढ़ा २ पीवे।

बूंद २ पेशाब आने में या ज्यादह पेशाब होने में।

१—सिंघाडा, मिश्री, बराबर २ ले कूट पीस छः २ मा० की फंकी लगावे ताज़े पानी से।

२—धनिया, गेरू, गोंदबबूल, बीजबन्द लोयबान कोड़िया शाहतलूत सात २ माशा यानी बराबर २ ले कूट पीस चूरन बनाले ६ से ९ माशा तक फांक ऊपर से ठंडा पानी पीवे।

३—अलसी, हल्दी, लोयबानकोड़िया एक २ तो० ले कूट पीस ३ तो० सफेद बूरा मिला छः २ माशा फांके ठंडे पानी से।

४—काली हरड़, मस्तगी, नागर मोथा, वलूत एक तो० ले कूट छान ४ तो० वूरा मिला छः माशा फांकें ऊपर से ठंडा पानी पीवे । पान की जड़ वारीक पीस वरावर की शक्कर मिला दो २ माशा फांक ऊपर से ताज़ा पानी पीवे ।

५—काली मिर्च २ तो० सोंठ २ तो० लोयवान कोड़िया ५ तो० मीठा कूट नागरमोथा वलूत, पीपल छोटी पांच २ तो० शहद २० तो० मिश्री १० तो० । दवाइयों को कूट पीस मिश्री शहद मिला माजूनसी वनाले ४ से ६ माशा तक चाट ऊपर से ताज़ा पानी पीवे ।

६—नागकेसर, छोटी पीपल, ज़ीरा सफेद, लौंग, अनार-दाना एक २ तो० मिश्री ५ तो० सव को कूट पीस चूरन वनाले ६ से ८ माशा तक वरावर के शहद में मिला कर चाटा करे ।

७—नागरमोथा कूट पीस वरावर की मिश्री मिला छः२ माशा फांक ऊपर से ठंडा पानी पीवे ।

तोंस अर्थात ज्यादह प्यास में ।

१—गुरदे की हरारत से प्रायः यह रोग होता है वहुत पानी पीने पर भी प्यास नहीं वुझती और रोगी दिनवदिन कमज़ोर होता जाता है ।

२—सफेदचन्दन, लालचन्दन, पपरियाकत्था, नागरमोथा कमलगट्टा की गिरी, कशनीज़ खुश्क, दारुहल्दी

चार २ माशे ले कूट तीनपाव पानी में चढ़ादे १ पाव रह जाने पर उतार छान ३ तो० मिश्री मिलाकर पीवे।

३—मुलहटी ४ मा०, ज़रिश्क वीदाना ६ मा०, मुनक्का १० अदद, खट्टा अनारदाना २ तो०, अर्क गुलाव २० तो०, शहद ३ तो० सब को गुलाब के अर्क में पीस छान शहद को ऊपर से मिला पिलावे।

४—कमलगट्टा की गिरी १० मा० मिश्री १ तो० अंगूरी सिरका ३ तो० अर्क़ गुलाव १५ तो० कमलगट्टा की गिरी को १ छटांक पानी में वारीक पीस छान ले और उस में सब को मिला पीजावे।

५—हरी गिलोय, गुठली निकला छुहारा छः २ मा० ले पावभर पानी में औटावे १ छटांक रह जाने पर उतार मलकर छानकर पीवे।

६—आधसेर के खट्टे अनार लेकर कूट डाले और मय छुक्कल वग़ैरह के दो सेर वकरी के दूध में पीसे खूब वारीक फिर छान कर थोड़ी मिश्री मिला थोड़ा २ रोगी को पिलावे।

७—अनार सावित खट्टा लेकर खट्टा मट्ठा ऽ।। में पीसे मय छुक्कल वग़ैरह के जब खूब वारीक पिस जावे छान कर निचोड़ ले और थोड़ा २ पिलावे।

८—कपूर ४ मा०, सफेद चन्दन का बुरादा ८ मा०, सीमाक ८ मा०, अनार के फूल ८ माशे धनिया १ तो०, गुलाव के फूल १ तो०, वीजवन्द १ तो०

तबासीर २० मा०, तुखमकाहू २८ माशे, तुखम-खुरफा २८ मा० सब को कूट छान कर चूरन बनाले और ४ से ६ माशे तक बराबर के शहद में मिला कर चाटे।

९–लेप जौ का आटा २ तो०, आंवला ८ माशे सफेद चन्दन का बुरादा ६ माशे लाल चन्दन ६ मा०, फूलफफूल ६ मा०, गेरू ६ माशे ज़हरमोरा खताई ४ माशे सिरका में पीस नाभि पर लेप करे।

१०–फूलफफूल, तुखम खुरफा, मगज़कद्दू, पपरियाकत्था गेरू, सफेद चन्दन छः २ माशे ले केला के अर्क में पीस नाभि और गर्दन पर लेप करे।

११–गुठली निकला छुहारा १ तो०, छोटी पीपल तज, तेजपात, मुलहटी, छोटी इलायची के दाना तबासीर दो २ तो० मुनक्का ३ तो० मिश्री १५ तो० सब को कूट पीस शहद से चार २ माशे की गोलियां बनाले एक २ गोली मक्खन में मिला कर चाटे।

१२–सतगिलोय २ माशे मिश्री २ मा० मिला शहद में चाटे।



सूज़ाक

इन्द्रिय जुल्लाब ।



१—कवावचीनी, रेवतचीनी, मुलहटी, सफेदज़ीरा, शोरहकल्मी धेला २ भर मिश्री डेढ़ पैसा भर तीन मोहताज दूध की लस्सी से पीवे ।

खाने की औषधियां ।

१—आक की जड़ १ तो०, ५ माशे काली मिर्च ४ तो० दोनों को मिला कर खरल कर छोटी मटर की बरावर गुड़ में गोली बनावे एक २ गोली सवेरे शाम खावे ऊपर से ताजा जल पीवे ।

२—आक की लकड़ी जलाई हुई २ तो०, मिश्री २ तो० दोनों को मिला कर तीन २ माशे शाम सवेरे खावे ताज़े पानी से ८ दिन में गरमी दूर हो ।

३--चोवचीनी ५ तो०,सनाय ५ तो०,उशवा ५ तो० सवको कूट पीस कर १० पुड़िया वनावे प्रातःकाल १ पुड़िया कच्चे दूध के साथ रोज़ पीवे २० दिन के पीने से फिर कभी गर्मी नहीं उभरेगी। परहेज़ वेसन की फीकी रोटी घी से खावे और कुछ न खावे। मामूली दस्त भी होंगे।

४—कहरवा, माजूफल, वबूल का गोंद, इलायची के दाने, वंशलोचन, कत्था, मूंग की भस्म एक २ तो० लेकर कूट पीस ले ६ माशा चूरन २ माशा असली चन्दन के तेल के साथ मिलाकर चाटे ऊपर से दूध पीवे। भोजन गेहूँ, चना, जौं की रोटी, उड़द मूंग की दाल, हरे शाक खावे निमक सेंधा बहुत थोड़ा डाल कर खावे। मिर्च, तेल, खटाई, गुड़, स्त्री प्रसंग वर्जित है।

५—शुद्ध रसोत को लेकर बकरी के दूध में घोट चने बराबर गोली बनाना। चन्दन का बुरादा ६ मा० आधी छटांक जल में भिगोदे ६ घंटे बाद मलकर छानले १ गोली इसी चन्दन के जल से निगलले। खूनी और दर्दपीब के साथ नया पुराना सुज़ाक जावे। बादी के सूज़ाक को उपरोक्त गोली में छोटे गोखरू १ तो० शुद्धगूगल ३ मा० मिलाकर सेवन करे।

६—२ रत्ती शिलाजीत त्रिफला के जल से पीवे।

७—भटकटैय्या का पन्चांग लेकर कूटकर २ सेर रस निचोड़ कर उस में छटांक भर लाल फिटकरी डाल खूब घोटे जब घुटते २ गाढ़ा हो जावे तब जंगली बेर के बराबर गोली बनाकर छाया में सुखा कर एक २ गोली आम के अचार के साथ खावे इस से मुंह नहीं आवेगा।

८—कलमी शोरा, सफेद ज़ीरा, बड़ी इलायची के दाने एक २ तो० बड़ के अंकुर ५ तो० सब को पानी

से पीस १४ गोली बनावे ७ दिन खावे ऊपर से धारोष्ण दूध पीवे।

९—बड़ की जटा आठ आना भर जल में पीस आधी रत्ती नागभस्म शहद में चाट ऊपर से जटा का अर्क पी जाना।

१०—फिटकरी की भस्म एक रत्ती बताशे में खाना ऊपर से आठ आनाभर आंवले की हरी पत्ती चार पांच काली मिर्च मिला कर पीस कर पीवे—कड़क, जलन, मवाद का बहना, दूर होगा।

११—नीलाथोथा भस्म १ रत्ती मलाई में रख कर खिला देवे यानी भोजन उस दिन नहीं देना दूसरे दिन दूध भात खिलाना। औषधी के ४ घन्टे बाद ४ तो० घी गरम कर पिलावे।

१२—जामुन को हाथ से मल कर मट्टी के बर्तन में रख कर सुखाले जब चूर्णसा होजावे तब एक सेर चूरन पांच २ तो० सेंधा निमक और सफेद ज़ीरा पीस कर मिलाले ११ दिन में सब खिलादे।

१३—जवाखार ३ मा०, सनाय ४ मा०, पाव भर पानी में भिगो कर सुबह मल छान कर पीवे फिर ४० दिन २ तो० चोबचीनी २ तो० मिश्री पावभर पानी में रात को भिगोदे और सुबह पीवे।

१४—अजवायन, लौंग, गोला, प्रवालभस्म, १॥ तोला, रसकपूर १ तो० ऊपर की तीनों दवा भी एक २

तो० लेना सब को कूट पीस थोड़ा सा अदरक का रस और १ पान में खरल करना १२० घंटा खरल करे उड़द के बराबर गोली बना शीतल जल से प्रातःकाल खिलावे ११ दिन तक सिवाय दूध भात के अन्य कुछ न खाना। ११ से २५ वें दिन तक मूंग की दाल रोटी खाना। परहेज़ करने पर अवश्य आराम होगा।

१५—चोबचीनी ५ तो०, कृष्णाभ्रक भस्म तीन मा०, वंशलोचन १। तो०, इलायची सफेद के दाने १ तो० शीतलचीनी १ तो०, शुद्ध बहरोजा १ तो०, सबको पीस १ माशा दवा १ मा० चन्दन तैल में मिला चाटे ऊपर से बकरी के दूध पीने से सूज़ाक वा क़ुरह आराम होता है।

१६—ब्रह्मीबूटी ३ मा०, बादाम ५, खीरा, ककड़ी, खरबूजा, कद्दू के बीज एक २ तो०, काली मिर्च १० ठंडाई की तरह ४ रत्ती प्रवाल-भस्म खाकर ऊपर से पीवे प्रमेह, सूज़ाक, बवासीर अच्छी हो।

१७—रसकपूर २ माशे, छोटी इलायची के दाने ६ मा०, गेरू ६ मा० तिसाला गुड़ २ तो० मिला, बेर प्रमाण गोली आम के अचार के साथ खावे तेल के पुआ लाल हरे मिर्चा भी खावे।

सूज़ाक के जख्मों का मल्हम ।

१—जस्ता का फूला १ तो०, छोटी इलायची के बीज, काशगरी सफेदा, रस कपूर, शुद्ध कत्था छः २ मा० सबको कूट पीस २१ बार धुले घी में मिला कर लगाना ।

२—कौंच के बीज जले हुए १४, हर्रें छोटी २, माजूफल २, खैरपपड़ी ६ मा०, शीतलचीनी २ मा०, छोटी इलायची के दाने ३ माशे, रस कपूर १ मा० सबको कूट छान कर ऽ॰ घी (२१ बार पानी में धुले हुए) या नैंनी में मिला कर लगावे ।

३—त्रिफला को कूट कर एक हांडी में भर जलाले फिर इस राख को (यानी जले हुए त्रिफला को) बारीक पीस घावों पर चमेली का तेल लगाकर ऊपर से इस राख को बुरक दे सूज़ाक के घाव वा चकोटे सब ठीक हो जावेगें ।

नोट—सूज़ाक में यदि जुल्लाव की औषधियों (जिन का वर्णन पहिले हो चुका है) से पेट साफ़ कर फिर खाने की औषधियों को सेवन करे तो बहुत शीघ्र लाभ होता है ।



प्रमेह



१—ऽ। भर ज़ीरा को पीली गाय के ऽ॥ दूध में भिगो कर सुखा लेना इसे और कमरकस ऽ॓, सफेदमूसली ऽ॓, सौंफ की जड़ २ तो०, सालिव मिश्री ३ तो०, पान की जड़ ३ तो०, तवासीर २ तो०, तालमखाने ३ तो०, ईसवगोल की भूसी २ तो०, सफेद हरी इलायची २ तो०, मिश्री १० तो०, चांदी के वरक १ तो०, प्रवाल भस्म १ तो०, अकीक भस्म २ तो० सव को कूट पीस ले ३ मा० सुवह ३ माशा शाम को ताज़े पानी से लेना।

२—राल और शक्कर को वरावर २ ले पीस ३ मा० फांक ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध मीठा डाल कर पीवे।

३—तुख्मरीहां १ तो० ऽ॑ जल में भिगोदे और जव फूल जावे तव थोड़ा मीठा डाल पी जावे।

४—त्रिफला २८ तो०, गुड़ २४ तो०, कपूर ४ तो० सव को पीस गुड़ में मिला एक २ मा० की गोली वना ताज़े पानी से खाना।

५—माजूफल, अनार की छाल, आंवला, ईसवगोल की भूसी बराबर २ ले कूट पीस तीन २ मा० फांक ऊपर से ताज़ा पानी पीवे।

६—बंग १ रत्ती शुद्ध सिलाजीत १ मा० दोनों को मिला कर पानी से गोली बना दूध से सेवन करे।

७—असगन्ध १॥ तो०, विधारा १॥ तो०, जायफल १ तो०, छोटीइलायची ६ मा०, नागरमोथा ६ मा०, कोंच के बीज १ तो० छोटे गोखरू १ तो०, सितावर १॥ तो०, हल्दी १ तो०, हरड़, बहेड़ा, आंवला, लज्जावन्ती के बीज तालमखाना, रूमामस्तगी बहमनसफेद, तोदरीसफेद एक २ तो०, ईसबगोल की भूसी १॥ तो०, खस वंशलोचन ६ मा०, मिश्री ६ तो० (यदि हो सके तो स्वर्णवङ्गभस्म १ मा०, रस सिन्दूरभस्म १ मा०, भी मिला ले) ४ मा० प्रातःकाल वा सायंकाल दूध के साथ अथवा सायकाल को ताज़े पानी से खाना।

८—वट, पीपल, गूलर का दूध एक २ छटाँक लेकर ५ सेर गाय का दूध मिला कर १ डेगची में मुंह बन्द कर उबाले २० मिनट भाप निकलने न पावे फिर खोया तय्यार कर २१ मात्रा बनावे प्रति दिन सुबह खावे। दूध सूरज निकलने से पहिले निकाले। वट में १ छेदकर उस में हल्दी की गाँठ लगादे दूसरे दिन धार से दूध निकलेगा।

९—मालकंगनी के बीज ५ घंटा तक पानी में पीसे जंगली बेर की बराबर गोली बना दूध के साथ

प्रातः सायं एक २ गोली खावे ।

१०-वन्शलोचन, सफेद इलायची के दाने एक २ तो० २५ चांदी के वरक़ मिला खरल करे सात पुड़िया बनावे । १ पुड़िया शाम को पावभर बकरी के दूध में डाल एक कूजे में रखे दूसरे बर्तन में पानी कूजे की गर्दन तक भरे सुबह इस दूध में २ तो० शरबत अनार डाल पीवे प्रमेह दूर हो ।

११-१ तो० ईसबगोल की भूसी को पावभर दूध में औटावे एक रत्ती वंग खाकर (शहद में चाट), ऊपर से ईसबगोल वाला दूध मीठा डालकर पीवे । प्रमेह दूर हो अत्यन्त बल प्राप्त होता है ।

१२-ज़हरमोराखताई, मूंगाभस्म, बबूलफली, मोचरस, शिलाजीत, वन्शलोचन, शकाकुल मिश्री, वङ्गभस्म एक २ तो० मूसली सफेद, काली मूसली, बहमन-काली, सफेद, शतावर, ईसबगोल, गोंद बबूल, सालिबमिश्री दो २ तो० मिश्री सब के बराबर खुराक ६ माशा ।

वीर्य बन्धू ।

१३-गोखरू, तालमखाना, शतावर, बीजबन्द, कौंच के बीज, क्षीरकाकोली, शिवलिङ्गी, ईसबगोल की भूसी बराबर २ मात्रा, तीन २ मा० सुबह शाम दूध से ।

१४-आंवले के स्वरस में हल्दी का चूरन और शहद मिला कर सेवन करना ।

१५—कवावचीनी दो आना भर सोरहक़ल्मी एक आना भर सनाय एक आना भर बराबर की मिश्री मिला दो २ मा० फांक ऊपर से दूध या ताज़ा पानी पीवे।

१६—कवावचीनी एक आना भर कपूर २ रत्ती अफीम आधी रत्ती एक में मिला ऊपर की रीति से सेवन करे।

१७—बबूल के फूल, सुपारी, सङ्गजराहत. पीली कौड़ी की भस्म, ज़ीरा सफेद, धनिया बराबर २ ले कूट पीस २ मा० हर रोज़ ऊपर की विधि से खावे।

१८—महुआ की छाल ६ मा०, कालीमिर्च ८, पाव भर जल में घोट पीस छान कर पीना।

सब प्रमेहों की अचूक दवा

१९—अंधाहुली जिस को औंधी जड़ी तथा कोंडेना कहते हैं (इसके फूल सफेद रंग के नीचे की ओर झुके होते हैं रेल की सड़कों पर प्रायः होती है) इसकी पत्ती का चूर्ण ३ तो० रसौत ९ तोला को लेकर ऽ। भर पानी में पकावे गल जाने पर ऊपर का सुर्ख पानी नितार उस पानी को फिर आग पर चढ़ावे और जब पानी गाढ़ा हो जाय तब त्रिफला का ३ तो०, चूर्ण डाल उतार झरबेरी के बेर के समान गोली बना—

पित्त प्रमेह पर मिश्री के साथ—

वायु ,, ,, गोदुग्ध के साथ तथा—

कफ ,, ,, हल्दी के चूर्ण और शहद में मिला कर चाटे।

वीर्य्य को गाढ़ा करने वाली औषधियां।

१—तालाब की काई ठीकरे पर रख के आग पर जलावे उसकी राख में बराबर का बूरा मिला चार माशा प्रति दिन खाया करे।

२—बड़ का फल छाया में सुखा कूट छान कर गाय के दूध के संग खावे पतला वीर्य्य अत्यन्त गाढ़ा हो जावे।

३—धतूरे के बीज ६ माशे, कालीमिर्च ६ मा० कूट छान उड़द के बराबर गोली बना सौंफ के शीरे के साथ खावे।

४—तालमखाना, इमली के बीज, बबूल के बीज, सेमर की मूसली, सिरस के बीज, छिले कौंच के बीज, ऊटंगन के बीज, भांग के बीज समभाग ले भंगरे के रस में खरल कर ६ मा० दूध के संग खावे।

५—पुरानी कच्ची ईंट कूट छानकर १ भाग बूरा २ भाग मिला कर नित्य ३॥ मा० खाय यह वीर्य और उसके चेप के बहने को रोकता है।

स्वप्न-दोष

१—धतूरे के बीज १ तो० हर्र छोटी ३ तो० गुड़ ५ तो० कपूर १ तो० सब को मिला कर चने की बराबर गोली बना सुबह शाम एक २ गोली ताज़े पानी से खावे।

२—स्वर्णवङ्ग १ तो० प्रवालभस्म २ तो० मुरगी के अंडे की भस्म २ तो० अभ्रक १ तो० शुद्ध सिलाजीत ४ तो० शुद्ध अफीम ६ मा० इन सब औषधियों में बकरी के दूध की ३ भावना दे मूंग की बराबर गोली बनाना एक २ गोली सुबह शाम गरम मीठा पड़े दूध के साथ सेवन करना। स्वप्न-दोष बहु-मैथुन वीर्य्य विकार-नष्टकर मैथुन की निर्बलता दूर होती है।

३—कबाबचीनी का चूरन ३ मा० रात्रि को सोते समय दूध के साथ सेवन करने से स्वप्न-दोष दूर होता है।

४—असगन्ध,विधारा,जायफल,छोटीइलायची, नागरमोथा कौंच के बीज, गोखुरू, सितावर, त्रिफला, लज्जावती, खस-वंसलोचन एक २ तो० ले कूट पीस सब के बराबर मिश्री मिला ले ६ मा० प्रातः ६ मा० सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करे।

५—असगन्ध, काली मूसली. तालमखाना एक २ तो० ले कूट पीस एक २ मा० सुबह शाम दूध या जल से खावे।

६—अलसी ४ तो० खीरा के बीज ४ तो० गोखरू ३ तो० विहीदाना ३ तो० धनिया आंवला सूखा दो २ तो० छोटी इलायची १ तो० सब को कूट पीस साबित ईसबगोल २ तो० और २० तो० मिश्री पीस कर मिलाना छः २ मा० सुबह शाम फांक कर ऊपर से ताज़ा पानी पीले।

७—ऊंट के वालों की रस्सी जन्घा में वान्ध कर सोने से स्वप्न-दोष नहीं होता।

८—फिटकरी कमर में वांधने से भी स्वप्नदोष नहीं होता।

नपुंसक की चिकित्सा।

१—गूगल सफेद ऽ॥ छुहारे २१। छुहारे को ऽ॥ दूध में औटावे फिर गुठली निकाल गूगल उस में भरदे और डोरे से उन के मुंह वांध एक गेहूँ के आटे की वड़ी सी रोटी वना उसमें सव छुहारे वन्दकर २॥ सेर वकरी की मेंगनी में १० दिन तक दवादे फिर निकाल रोटी को अलग कर गूगल सहित छुहारों को अलग कर रखे और एक २ मा० खावे सुवह शाम और ऊपर से दूध गाय का गुनगुना मीठा पड़ा ऽ॥ पीवे वहुत वल आवे। नपुंसकता दूर होवे।

नामर्दी पर।

२—जमालगोटा, सींघिया, संखिया, लौंग, धतूरा के वीज सफेद कनेर की जड़, मदार की जड़, समभाग घी पावभर कूट छान घृत वनावे १ वूंद से ३ वूंद तक खावे या लगावे।

३—लौंग, जावित्री, जायफल, वड़ी इलायची के वीज, संखिया समभाग पीस कपड़ा लपेट तेल निकाल मालिश करे।

पुष्टिकारक प्रयोग ।

१—गोंद ढाक का, तालमखाने, बीजबन्द, समुद्रसोख, मूसली सफेद, बड़ा गोखरू, तज बराबर २ ले पीस छान बराबर की खांड मिलाकर ६ मा० प्रातः खावे।

२—कबाब चीनी, लौंग, अकरकरहा, सोंठ, ऊदखालिस, इस्पन्द जलाने का बराबर २ गुड़ दूना ले गोली बना खावे ।

३—सिरस के बीज जो घुने न हों २ माशा २१ दिन खावे बल तथा नेत्रों की ज्योति बढ़े ।

४—धनिया पीस बराबर की खांड मिलाकर और घी मिला ३ तो० ७ दिन खावे ।

५—खस के दाने, भुने चने, गोला खांड ३ तो० के लड्डू बना कर खावे ।

६—जावित्री, जायफल, तेलिया, इलायची गुजराती अफीम शहद जाड़ों में २१ दिन खावे ।

७—कुमारीकन्द (ग्वार के पट्टे का गूदा) घृत-गेहूँ की मैदा खांड बराबर २ हलवा बना खावे तो नामर्द भी मर्द हो ।

८—दालचीनी, काले तिल बराबर ले शहदमें मिला ७ मा० की गोली बना १ गोली रात को सोते समय खावें।

९—कौंच की जड़ मैथुन के समय मुंह में डाल चूसता रहे स्तम्भन होगा ।

१०–बबूल के चूर्ण में शहद मिलाय ३ दिन खाने से हाड़ बज्र के समान हों।

माजून पेठा।

११–पेठा १ सेर छोटी पीपल, सोंठ, काली मिर्च, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, आंवला, छोटी इलायची, तज-पत्रज एक २ तो० सिंघाड़ा, कसेरू, पीपलामूल, चीता, चिरोंजी, सफेद मूसली, लौंग, गोंद छः २ मा० मिश्री १॥ सेर, घी एक पाव।

बाजीकरन योग।

१२–कत्था १ तो०, सफेद संखिया भस्म १ तो० लेकर खरल कर १६० नींबू का रस खपादे फिर मूंग बराबर गोली बनावे गरम प्रकृति वाले को १, शीत वाले को २ सुबह शाम शीतल ताज़ा पानी से निगलवादे।

पुष्टिकारक जलेबियां।

१३–कौंच के बीज छिलका उतार मींग पीस लेवे उसको बराबर के खमीर में मिला जलेबी बना कर खावे।

बल के लिये हाजिक उल्-मुल्क का नुस्खा

१४–सफेद संखिया, हड़ताल, सिंगरफ, तीनों को हमवज़न नींबू के अर्क में खरल कर मोठ बराबर गोली बना कर १ गोली भोजन के बाद खावे।

१५—शुद्ध कुचला ५ तो०, मुनक्का ५ तो०, बादाम की गिरी ५ तो० चने प्रमाण गोली बनावे सोते समय खावे बल बढ़े पाखाना साफ हो कास-श्वांस भी दूर हो।

१६—कीकड़ का गोंद १ तो०, फली कीकर की १ तो०, कीकड़ की छाल, ढाक का गोंद, मूसली सफेद, मूसली काली, सेंभर का मूसला, तालमखाना, मीठा, इन्द्रजौ, बहमनसुर्ख कूट पीस बराबर की शक्कर मिला १ तो० फांक ताज़ा दूध पीवे।

बल के लिये रसायन

१७—२ तो० शहद १ तो० घी २ तो० जल तीनों को मिला कर शाम के ५ बजे हर एक मनुष्य को सेवन करना योग्य है यह बल-दाता रसायन है।

१८—कपड़छान मैदा ४ तो० कपड़ छान मुलहटी का चूर्ण ४ तो० और ८ तो० शहद मिला कर रखना १ तो० प्रति दिन सेवन करना यह शीत के लिये अति लाभदायक है।

१९—छोटे या बड़े गोखरू ५ तो० सिलाजीत ५ तो० मिला पीस छः २ मा० कच्चे दूध के साथ खावे।

२०—शिंगरफभस्म ३ मा० वंग ३ मा०, लौंग, जायफल, जावित्री, केसर एक २ तो० लेकर पीस कर २ रत्ती की गोली बना शहद या दूध से खावे।

२१–शिंगरफ, संखियाभस्म, अफीम, केसर एक २ मा०, ५ तोले वरगद के दूध में खरल करे फिर प्याज के रस में खरल करे फिर वटी वना कर आटे का मोटा संपुट दे तेज अग्नि की आंच दे मोंठ के वरावर गोली वना दूध से खावे। शीघ्र पतन दूर हो वल वढ़े।

२२–वादामगिरी १ तो०, कर्द की मींग ८ मा०, विनौला की मींग ८ मा०, सफेद खशखाश ४ मा०, वहमन सफेद, तोदरी सफेद, सालिव मिश्री छः २ मा०. सौंठ २ मासे, गुलाव का अर्क १४ तो०, गोदुग्ध १४ तो० या दस २ तो०, सफेद मिश्री ४ तो०, गिरियों और खशखाश को गुलाव के अर्क़ और दूध में पीस ले फिर कढ़ाई में डाल २ तो० घी डाल कर हरीरा सा वना सेवन करे।

२३–कद्दू, तरबूज, पेठा, घिया, खरवूज़ा, खीरा, ककड़ी के वीजों की गिरी, काहू के वीज दस २ तो०, कीकड़ का गोंद ऽ।।, मखाना फ़ूल २० तो०, मखाना गोंद को घी में तल लेवे मींग को पीस २ सेर मिश्री की चाशनी में लड्डू वनाले ५ तो० सफेद इलायची डालले। दो २ तोला के लड्डू वनाले। प्रत्येक ऋतु में खा सकते हैं। शीत ऋतु में मेवा भी डाल सकते हैं

शरीर और मस्तिष्क पौष्टिक वाजीकरण योग।

२४–गाय का दूध ३ सेर, मक्खन १ पाव, वादामगिरी ५ तो०, खरवूज़ा की गिरी ५ तो०, खीरा कद्दू की

गिरी पांच २ तो०, मिश्री १॥ सेर, वंशलोचन १० तो०, सफेद, लाल इलायची एक २ तो०, गिरियों को पीस दूध में औटा खोया कर मक्खन डाल भून ले फिर चाशनी में लड्डू वना लेवे।

२५–मगज़ वादाम, पिस्ता, चारों मगज़, चोवचीनी, दारचीनी, चिरोंजी, ब्रह्मी, वच, कालीमिर्च हमवज़न कूट पीस ३ मा० रोज़ खावे ऊपर से दूध पीवे।

२६–मालकंगनी को घी में भून वरावर पान की जड़ और दोनों के वरावर खांड मिला ३ मा० दूध के साथ खावे।

२७–मूसली १ भाग, विष्णुकान्ता २ भाग, गोखरू ३ भाग कूट पीस वरावर की मिश्री मिला मीठा पड़े दूध के साथ सेवन करने से २१ दिन में सौ वर्ष का वूढ़ा भी खूव रमण करे।

दिल को बल देने वाली मन को प्रसन्न कर मस्तक के बल हौलदिली गर्मी के ज्वर और मस्तक पीड़ा पर :—

अनोश दारुयल्लूलवी।

मोती २ मा०, संगयशव ४ मा०, केवड़े के अर्क़ में तीन दिन तक घोट के सुखाले सुरमा सा वना कर अगर, वंशलोचन, वालछड़, गुलवनफ़शा, कच्चा रेशम छः २ माशे आध सेर आंवले की चाशनी में (जो १ सेर

सफेद बूरा आध सेर गुलाव जल तथा अर्क़ गावज़ुवां में वनी है) मिला कर वनाले।

उपरोक्त दोषों तथा नज़ले पर

अनोशदारु मुरक्किव।

आधसेर आंवले की चाशनी में चन्दन चूरा, तालीस पत्र, गुलाव के फूल सेवती के फूल, जरिश्क, नींबू का छिलका, गिलोयसत एक २ तो०, छोटी इलायची के दाने छः २ मा०, ववूल का गोंद, कतीरा, पिस्ता के छिलके नौ २ माशे, केसर ३ मा०, चूरन वना मिलाले खूराक एक से दो तोला तक।

दिल और दिमाग को ताक़त देने वाली

१—गावज़ुवां के पत्ते और फूल, कशनीज़, आवरेशम, वहमन सफेद, तुखमवालिन्गा, सन्दलसफेद, तुखम फरनजमुश्क वहमनसुर्ख तोदरीसुर्ख, वादरनजोया, उस्तखद्दूस, ऊदसलीव, निरविस्सी, वनफशा एक २ तो० पानी २ सेर में औटा कर आध सेर पानी के रह जाने पर मलकर छानले और १ सेर दूध डाल आधा जलजाने पर १ सेर मिश्री डाल लड्डू वनाले सोने का कुश्ता २ चावल मोती की भस्म १ चावल या भस्म लोहा से खावे १ तो०।

स्तम्भन ।

१—छछूंदर का अन्डकोश चमड़े में रखकर कमर में बांधे जब तक कमर में रहेगा वीर्य्य स्खलित न होगा उसे पेट की ओर लाने से स्खलित होगा ।

२—कंजा की पत्तियों का रस हथेली और तलवों में मले ।

स्तम्भनवटी ।

३—शिंगरफ, मोचरस, अफीम चार २ मा० सुहागा १ मा० काली मिर्च के बराबर गोली बना स्त्री संभोग से पहिले १ घन्टा खावे ।

४—मुर्दाशन्ख मुर्गा के पित्ते में पीस कर लिंग पर मल सन्भोग करने से कभी वीर्य्य स्खलित नहीं होता ।

५—स्त्री के सिर के वाल जला कर कबूतर की बींट बराबर २ चमेली के तेल में मिला कर मले ।

६—थूहर और गौ का दूध बराबर २ ले धूप में रख रात को तलवों से मल भोग करे ।

७—रविवार को घोड़े और खच्चर की पूंछ का एक बाल लेकर पीली कौड़ी में छेद करके बांधदे और इस कौड़ी को दहने भुजा पर बांध कर भोग करने से वीर्य्य स्खलित नहीं होता ।

कामोद्दीपक ।

१—गांजा अंडी के तेल में खरल कर कपड़े पर जमाकर लिंग पर बाँधे थोड़ा उपाड़ होगा परन्तु कामोदीपन अद्वितीय है ।

२—हुलहुल के बीज दो भाग उसकी छाल १ भाग महीन कूट छान मीठे तेल में चार पहर तक खरल कर लगावे।

३—लौंग, समुद्रफल की मींग एक २ नग मीठे तेल में पीस कर लगावे।

४—मीठे तेल में अरंडी की मींग मिला पीस कर लगावे। अंडी का तेल भी मलने से फ़ायदा होता है।

५—जंगली कबूतर की बींट चमेली के तेल में पीस कर लगावे।

६—असगंध, चमेली के तेल में पीस कर लगाने से कठोरता और दृढ़ता आती है।

७—चिमगादड़ का खून लिंग पर मले गोह की विष्टा मले, लम्बी मछली जङ्गली सुअर की चरबी बकरी के मूत्र में पीस कर मले। रोहू मछली की चरबी भी मल सकते हैं।

८—पारा १॥ तो०, शहद सवातीन तो० लोहे की कढ़ाई में लोहे के दस्ते से रगड़े जब खूब मिल जाय तब कपड़े पर जमा इन्द्रिय पर लपेट दे। ८—१० दिन लगावे।

९—नेत्रवाला बकरी के ताज़े दूध में पीसकर इन्द्रिय पर मलने से कामोद्दीपन होता है।

कठिन और स्थूल करना

१—ताज़ा दूध से मले फिर सूखे केंचुए मले।

२—कायफल भैंस के दूध में पीस कर लेप करे रात भर बांधे रखे प्रातः गरम जल से धो डाले ।

३—रीठे का छिक्कल, अकरकरहा, तेज़ शराब में खरल कर मले ।

४—कमल गट्टे का ज़ीरा, शुद्ध शहद बराबर का मिला कर मले ।

५—सात माशे इन्द्रजौ भैंस के ताज़ा दूध में भिगो कर चार पहर फिर पीस कर गुनगुना लेप करे ।

६—उटंगन के बीज शहद में मिला कर मले ।

७—चमेली के तेल में राई पीस कर लगावे ।

८—जङ्गली प्याज का रस दस भाग, अकरकरहा दो भाग मिला कर पीस कर मले ।

६—पारा ५ तो० गौका पित्ता १२ नग आध सेर भंगरे के रस में लोहे के दस्ते (जिस में पैसा लगा हो) से ६ दिन तक रगड़े जब गाढ़ा होजावे तब झरबेरी के बेर के समान गोलियां बनावे १ गोली थूक में पीस कर लगावे ।

१०—मेंढकों के सिर और पैरों को काट कर महीन पीस १ जायफल दो माशे केशर मिला गोलियां बना सिरा छोड़ मले ।

११—असगंध, बड़ी पीपल, कड़ुवा कूट पीस कर गौ के मक्खन में मिला १५ दिन तक प्रति दिन २ बार मले और गरम पानी से धोवे ।

१२—१ बड़ा मेंढक लेकर उसकी गुदा सींदे और साढ़े दस माशा पारा उस को पिलाय सुखावे सूख जाने पर उसके पेट से पारा निकाले। पारे की गोली बन्ध जायगी। उसको डाल दूध पीने से ······ चैतन्य रहती है।

१३—गौ का पित्ता शहद में मिला कर मले।

१४—जङ्गली कपोत की बीट वा चरबी सेंधा निमक शहद मिला कर लगाना।

१५—मारूबैंगन मट्टी में लपेट कर भूभल में दबावे फिर मट्टी दूर कर उस का जल निचोड़ छान ले उस में एक पीपल ३ दिन तक भिगोवे चौथे दिन निकाल सुखा महीन पीस शहद मिला लेप करे।

१६—कनेर की जड़ महीन पीस कटेरी के रस में खरल कर इन्द्रिय पर मले।

१७—पाव भर गाय के घी में १ जोंक डालदे जब उस का पेट फटे तब सेमर का गोंद ४ मा० डाल नीम के सोंटे से ४ पहर रगड़ लिंग पर लगावे। बड़ी जोंक न मिले तो ७ छोटी जोंक डाले।

१८—कनेर की जड़, धतूरे की जड़, भांग की जड़, आक की जड़ सब के समान भाग छिलका लेकर कूट छान कर धतूरे के पत्तों के रस में झाड़ी बेर के समान गोलियां बना ले एक गोली अपने मूत्र में पीस कर लिंग पर लगावे।

१९—सफेद सरसों, कड़ुवाकूट, बड़ी कटेरी, कायफल असगन्ध की जड़ सब बराबर कूट छान कर पानी में मिला लिंग पर मले ३-४ दिन लगाने से लिंग बढ़ जाता है यदि सफेद सरसों न मिले तो पीली डाले।

२०—केंचुआ १ तो० २ तो० घी में मिला कर २ पहर खरल करे फिर मलकर कनेर या बड़ के पत्ते बांधे।

२१—असपन्द अन्डी की मींग पीली सरसों पांच २ तो० चमेली के तेल में खरल कर मले और सेके।

२२—ताज़ा बीरबहूटी और उस के बराबर बर्र का छत्ता ले कर तिल के तेल में महीन पीस कर लेप करे।

२३—मूली के बीज तीन तो० मीठे तेल में औटा कर मलने से शिथिलता दूर होती है।

२४—समुद्रफल, दारुहल्दी, बिनोले की मींग, कूट मीठा सब को बराबर २ ले कूट छान भेड़ के ताज़े दूध में डाल दे जब दूध फट जाय तब पानी को नितार फेंक दे बाक़ी में सब दवाइयों को खूब रगड़े फिर इन्द्रिय पर मालिश करे।

इन्द्रिय की शिथिलता पर।

१—लहसन को अलसी के तेल में औटा कर छान ले और राई अकरकरहा नींबू के बीज मालकंगनी थोड़ी २ ले कूट छान उसी में तेल जला कर कई दिन तक मले।

२—भटकटैय्या की पत्ती ६ तो० ८ मा० इतने ही कड़वा तेल में डाले १ बिच्छू भी डाल दे जब जल जावे तेल को उतार १ रत्ती पान पर चुपड़ इन्द्रिय पर लगावे।

३—खोआ ६ अदद एक जानवर होता है जिस से. बुलबुल पकड़ते हैं उस को गौ के ६ तो० ८ मा० घी और केशर २ तो० बासन में रख जलाले।

४—ऊंटकटेरा जड़ पत्ते सहित बकरी के दूध में भिगो पाताल-यन्त्र से तेल निकाल लिंगपर मले।

५—चेट—जो आमों के पेड़ पर होते हैं १०० चमेली के तेल में डाल शीशी में भर चालीस दिन तक धूप में रखदे ४० दिन बाद इन्द्रिय पर मले।

६—चमेली की पत्ती का रस लेकर मीठे तेल में जलावे जब रस जल जावे तेल मात्र रह जावे।

७—चमेली की पत्ती का रस. धतूरों के पत्तों का रस प्रत्येक ३। तो० मीठा तेलिया कड़वाकूट १ तो० ८ मा० गैनसिलसुहागा १ तो० आठ मा० तिल का. तेल १२ तो० पत्तियां पीस टिकिया बना पानी भी तेल में मिलावे जब पानी जल जावे और औषधियां जल जावें तेल मात्र रह जाय उतार छान इस्तेमाल करे।

८—बड़ी जोंक ऽ॥ मीठे तेल में जलाकर छान कर मले।

९—मालकन्गनी, कुचला, पलास के वीज, जन्गली कवूतर की वींट सात २ तो० कौड़ीसफेद ७ मा० बकरी के दूध में भिगो १ दिन दूसरे दिन आतशी शीशी में तेल निकाल मले इस में अकरकरहा भी डाले तौ और अच्छा हो।

इन्द्रिय की शिथिलता पर पोटली वा सेक आदि।

१—हाथीदांत का चूरन, आमाहल्दी, पुराना गोला मालकंगनी अकरकरहा केचुआ सूखा, मैदालकड़ी, विनौले की मींग, चिलगोजा की मींग कूट, सफेद-चिरमिठी, वीरवहूटी, वोजीदान तीन २ मा०, जूंदविदस्तर (ऊदविलाव के पोते) ९ मा० कूटपीस मलमल के कपड़े में पोटली वांध २ तो० चमेली के तेल गुनगुने में वोर २ इन्द्रिय को सेके। सुवह लंगोट वांध न्हावे जिस से इन्द्रिय पानी से न भीगे इसी प्रकार अन्य औषधियों से भी सेक करे। केशर १ मा० वीरवहूटी १ मा० फूलदार लौंग अकरकरहा एक २ मा० वारीक पीस शराव में मिलाकर गुनगुना इन्द्रिय पर मले २० मिनट तक फिर पांन गरम वांध सो जावे।

२—सुवह और दोपहर को दूध की मलाई गुनगुनी खूब मले और रात को केचुआ शहद में घोटकर लेप करे।

३—असगन्ध, विदारीकन्द कौंच के वीज छः २ मा० ले १॥ तो० शेर की चरवी में मिलाकर इन्द्रिय पर मले।

४—मालकन्गनी का तेल लगावे।

५—उटङ्गन के वीज ६ मा० शहद और सुअर की चरवी में मिला कर मले।

६—विनोले की मींग वकरी की चरवी में मिला इन्द्रिय पर मले वांकां पन जावे मोटा हो।

७—सुहागा, कूट, मैनसिल वरावर २ ले कपड़ छान कर दो ड्राम चमेली के अरक में मिला तिली के तेल में पका कपड़ छान कर इन्द्रिय पर मलें। करीं भारी हो वांकांपन दूर हो।

८—समुद्रफल, दरुहलदी, मुलहटी शहत, गधे के पेशाव में घिस कर मले तो मोटा और वड़ा हो।

९—सोंठ, सितावर, मुसलीमुंडी, तज, भंगरा वा निर्गुण्डी शहद वा घी में वांधे पिण्डी न गिरे वूंद न झुके।

१०—आक की जड़ की छाल २ तो० कुचला १ तो० श्वेतकखीर की जड़ की छाल २ तो० विल्वपत्र के रस में खरल कर गोली वनाले यथावकाश पोस्त के डोडा के पानी में घिस कर लगाना।

हस्तक्रिया की पट्टी वा तैल

१—जमालगोटा के वीज ६ मा० लेकर खूव रगड़े फिर

४ तो० गाय का घी डाल खूब रगड़े जब एकदिल होजाय इन्द्रिय पर लेप कर गर्म पान बांध कर पट्टी से बांध दे जब गर्मी मालूम दे खोल डाले २-३-दिन में छाले पड़ जायेंगे भेड़ के दूध की मलाई बांधनी और दूध से जख्मों को धोना। जमीर, संदल लगाना आराम होगा।

२—आक का दूध आधपाव शुद्ध शहद ढाई पाव कढ़ाई में लोहे के दस्ते से इतना रगड़े कि चाशनी बन जावे फिर ४ मा० अफीम डाल कर रगड़े कि खूब मिल जावे। फिर सिर को छोड़ कर मले तीन दिन।

३—एक पतला कपड़ा थूहर के दूध में तीन बार भिगो कर सुखावे फिर ३ बार प्याज के रस में भिगो कर सुखावे फिर इस कपड़े को अलसी के तेल में २४ घंटे भिगो लिंग का ऊपरी भाग छोड़ मक्खन चुपड़ ऊपर से यह पट्टी ४ घड़ी पर्यन्त बांधे। ४ दिन तक यह पट्टी बांधे और रोज़ाना अलसी के तेल में भिगोया करे।

४—आमाहल्दी में कपड़े को रंग कर छाया में सुखा तीन बार धतूरे के रस में ३ बार आक के दूध में भिगो कर छाया में सुखा ले फिर भैंस के घृत में भिगो पट्टी पर शहद लगा १ रत्ती हीरा हींग उस पर बुरक ३ दिन बांधे।

तिला।

१—मूली के बीज, बिनौले दो २ तो०, अकरकरहा, कडुवाकूट, एक २ तो० ले शेर या रीछ की चरबी में घोट लगावे।

२—१ मारूबैंगन जो पककर पेड़ पर पीला हो गया हो उस में ६० पीपल गाड़ दे जब बैंगन सूख जाय तब आधसेर मीठे तेल में औटावे जब तेल में उफान आने लगे तब ७ तो० सूखे केचुए मिलावे जब केचुए जल जावें तब लहसन छील कर उस में डाले जब वह जल जावे तब उतार शीशी में रखले १ मा० लगा कर लिसोड़ा के पत्ते बांधे।

३—सफेद घुंघची, अकरकरहा, बीरबहूटी सवा तीन २ मा० संखिया १ मा० एक दिन शराब में खरलकर रात्रि को मले ऊपर से कच्चे धागे से पान बांधे १ सप्ताह तक।

४—सफेद कनेर की जड़ गधे के मूत्र में पीस मर्दन करे थोड़ा शिंगरफ भी डाल ले। ऊपर से अंड के पत्ते बांधे।

५—मीठातेलिया, आंबाहल्दी, मैदालकड़ी दस २ मा० अलग २ कूट छान तीन मात्रा बना ताज़ा पानी में खूब रगड़ सिरा छोड़ इन्द्रिय पर मल ऊपर से पान बांधे।

६—मीठातेलिया ३ तो०, मूली के बीज १० मा०, जमालगोटा के बीज १० मा० महीन पीस ऽ= तिल के तेल में खरल कर मले ।

७—१ तो० नौ मा० मीठातेल मंदी आग पर पकावे उस में १॥। मा० लाल हड़ताल पीस कर उस में मिलावे फिर सुहागा फिर कड़ुवाकूट ३॥ मा० हर एक को डाले चमेली के पत्तों का रस भी डाले जब सब जल जावे तेल ही रहे तब उतार छान लगावे ।

८—लोध, फिटकरी, अरंड की जड़ का छिलका, नख, असगन्ध, साढ़े तीन २ तो०, कूट छान पानी से टिकिया बना आधपाव तिल के तेल में जला कर छानले १ बूंद मलने से शिथिलता दूर होती है ।

९—बरों को मीठे तेल में जला कर लिंग पर मले इस से रगें बलवान होती हैं ।

१०—लाल सफेद घुंघची की दाल, हरताल एक २ तो० ४ मा० बकरी के दूध में खरल करे और चने के बराबर गोलियां बना कर तीन दिन तक आतशी शीशी में रख तेल निकाले और इन्द्रिय पर मल ऊपर से पान बांधे ।

आतों की वृद्धि पर ।

अमलतास का गूदा ४ तो०, मकोय ४ मा०, खतमी ३ मा०, आदपाव गरम पानी में भिगो कर कपड़े से छान कर ८ मा० बादाम रोगन मिला कर नित्य पिलाना ।

पोतों की सूजन पर वा बढ़ने पर

अदरक का अर्क या सोंठ १ तो० गेरू ६ मा० अफीम ३ मा० (यदि अर्क न हो तो) पानी में पीस गुनगुना लेप करे।

१—कायफल, मुलतानी मिट्टी बराबर पानी में जोश दे लेप करे।

२—छिलके समेत उड़दकी दाल पकीहुई लेप करे (मलकर)

३—कान के बीच की नस में छेद कर सोने की बाली पहने।

४—अंडी के तेल में दूध मिला कर पीना (ब्रह्मानन्द०)

५—आक की जड़ की छाल को कांजी में पीस लेप करें (ब्रह्मानन्द०)

६—आक के पत्ते मीठे तेल में जला कर लेप करे।

७—तमाखू के पत्ते को गरम कर बांधना।

८—त्रिफला के काढ़े में गौ-मूत्र मिला कर पीवे।

९—लालचन्दन, महुआ, पदमाख, खस, नीलोफर बराबर २ ले दूध में पीस लेप करे।

१०—रास्ना, मुलहटी, गिलोय, अरन्ड, खरैंटी, गोखरू इनका काढा कर अंड के तेल में मिलाय मलने से अंड वृद्धि दूर करे।

११—पाव भर गरम दूध अथवा गोमूत्र में आधी छटांक अंडी का तेल डाल कर पीवे तो १ महीने में अन्ड वृद्धि दूर हो। (बूटीप्रकाश)

१२—इन्द्रायण की जड़ का चूरन ४ मा० को अन्डी के तेल सान कर खावे ऊपर से गाय का गरम दूध पीवे तो तीन दिन में दारुण अन्ड–बृद्धि दूर हो ।

१३–इन्द्रायण की जड़ पीसे फिर अन्ड का तेल लगाकर घोटे। दो तीन दफ़ा के लगाने से आराम हो ।

१४–काला ज़ीरा, कुटकी, टेसू के फूल, वायविड़ंग वराबर ले बफारा देवे और उसी को बंधावे ।

१५—तमाखू वा तिली का तेल लगा सेक कर बांधना । १ तो० अन्डी का तेल सवेरे गो–दूध में पीना ।



फालेज



माउल-असल—इस्लाह् वलगम को मुफ़ीद है।

विधि-शह्द खालिस को एक हिस्सा ले २ हिस्सा पानी में डाल कर क़लईदार वर्तन में औटावे जब एक हिस्सा पानी रह जाय उसको ही प्यास के वक्त दे इसी को माउल-असल कहते हैं यदि शहद न मिले तो वूरा लाल भी इस्तैमाल कर सकते हैं।

१—सौंफ, कासनी, वालछड़, तुख्मसोया, अजमोद, अजवायन, वादयानरूमी, तीन २ माशा, गुलकंद २ तो०, आध पाव पानी में पकावे चहारम रहजाने पर उतार कर पिलावे।

२—दस्त कराने को—

साफ़ एलुवा १ तो०, सनाय १ तो०, जलापा ३ मा०, वालछड़ २ मा०, मुश्कवाला २ मा०, दालचीनी २ मा०, रूमामस्तगी २ मा०, केसर १ मा० कूटछान रखे, खूराक ४ से ६ मा०, माउल-असल से।

३—शुद्ध कुचला २ तो०, जायफल १ तो०, जावित्री १ तो०, अकरकरहा १ तो०, लौंग १ तो०, केसर ६ मा०, शुद्ध अफीम ६ मा० बारीक पीस शहद में

एक २ रत्ती की गोलियां वनावे खुराक एक से २ गो० तक।

४—५ दिन तक हर वक्त मुंह में जायफल रक्खे।

५—लौंग, जायफल, जावित्री, अकरकरहा, एक २ तो० तेजाव गंधक २ तो०। १ एक रत्ती की गोली वनावे सुवह दोपहर शाम को एक २ गोली खावे।

माजून।

७—शुद्धगन्धक १ तो०, बालछड़ ६ मा०, मीठा कूट ६ मा०, तज, मस्तगी, सोंठ, जावित्री छः २ माशे कालीमिर्च, अजमोद, वादयानरूमी, अजवायन, काला ज़ीरा, पोदीना नौ २ मा०, शहद ४० तो०, खुराक ६ माशा से १० माशा तक।

फालेज से जीभ की गिरानी होगई हो उस पर गरारा।

७—नरकचूर, राई, पीपल, सोंठ, कलोंजी तीन ३ मा० अगर ४ मा०, दुधिपावच ६ मा०, अकरकरहा, पोदीना खुश्क छः २ मा०, गुलवाबूना, उस्तखद्दूस छः २ मा०, लौंग १० अदद ऽ॥ पानी में औटा कर ऽ॥ जल जाने पर उतार कर ग़रारा करे।

८—पोटास आयोडाइड २ से ७ रत्ती तक चिरायते के हिम वा क्वाथ के साथ दिन में २ या ३ दफ़ा १ या दो महीने सेवन करे और विजली लगाने से भी फ़ायदा होता है।

९—आदपाव कायफल कूट छान तारों की चलनी में छान ले फिर ऽ। कड़ुवा तेल कड़ाही में डाल चूल्हे पर मन्दी २ आंच से पकावे और एक २ तो० कायफल के चूर्ण को डालता जाय सब चूर्ण को जलाले फिर कपड़ेसे छान ले। किट्ट से सेकें और तेल की मालिश करे।

१०—आदपाव कायफल को १ सेर पानी में डाल क्वाथ करे ऽ॥ रह जाने पर क्वाथ को छान ले फिर ऽ। भर घी मिला पकावे इसी घी को खावे एक से दो तोले तक दूध या दाल में डालकर।

लकवा पर रोग़न-तेल।

१—धतूरे के बीज ३ मा०, मालकंगनी ३ मा०, अकरकरहा ३ मा०, अफीम ३ मा०, तेल १५ तो०। तेल में सब दवाइयों को जला मालिश करे।

२—पारा १ तो०, धतूरे के बीज १ तो०, तेल २० तो०। तेल विधि से बना सेवन करे।

३—जायफल, बालछड़, चित्रक, तज, कालीमिर्च, पीपलामूल, पीपल, आंबाहल्दी, मैनफल सौंफ, कड़ुवाकूट, नरकचूर एक २ तो० गाय का घी ऽ॥ कड़ुवातेल ऽ॥ सब को मिला क्वाथ करे फिर तेल घी डाल पकावे घी तेल रह जाने पर सेवन करे।

४—उड़द का आटा ४ तो०, हींग ४ मा०, अकरकरहा १ तो०, अंडी का तेल २ तो०। हींग को पांच तो०

पानी में पीसे फिर आटा को उस में गूंधे और रोटी बना एक तरफ सेके फिर अन्डी का तेल लगा अकरकरहा का चूरन बुरक-कल्ला पर बांधे।

५—आक के पत्ते ५ तो०, धतूरा के पत्ते ५ तो०, छोटी कटैय्या ५ तो० अण्ड के पत्ते ५ तो० सम्हालू ५ तो०, अमर बेल ५ तो०, कायफल २ तो०, कडुवाकूट २ तो०, कडुवा सौरंजान २ तो०, बाबूना सूखा २ तो०, तेल मीठा ऽ॥ पानी ३ सेर में दवाई डाल कर पकावे जब एक सेर पानी रहे तब तेल डाल कर पकाओ जब तेल रह जावे उतार कर इस्तैमाल करे।

त्रिफलादिवटी।

६—त्रिफला (बराबर २) १६ तो०, शुद्धभिलावा ४तो०, बावची ५ तो० वायविडंग ४ तो०, फौलाद की भस्म १ तो० निसोथ, शुद्धगूगल, शुद्ध शिलाजीत एक २ तो०, पोहकरमूल, चीता छः२ मा०, कालीमिर्च, सोंठ, पीपलामूल, तज, इलायची, पत्रज केसर एक २ तो० कूट पीस छान कर और सब दवाइयों के बराबर मिश्री मिला छः २ मा० के लड्डू बनाले एक २ लड्डू सुबह और शाम को खावे। इस को खाकर फ़ौरन खाना खाया जावे तो फालेज को, बीच में खाने से पेट के रोग, और खाने के आखीर में खाने से कमर का आरजा दूर होता है। तथा जुज़ाम

भगन्दर, तिल्ली, वायगोला, जुवान, तालु. गले की बीमारी को दूर करता है।

७—सोंठ ८ तो०, गुड़ ३२ तो०, घी ३२ तो०, दूध गाय का १०८ तो०। सोंठ को घी में भूने फिर दूध में गुड़ को घोले और सोंठ डाल कर पकावे फिर घी डाल कतली बनाले। एक २ तो० खावे।

शतावरी तेल

८—हरीशतावरी लेके कूटकर रस २ सेर—तिल तेल ऽ१ गौ का दूध ४ सेर, सौंफ, देवदारु, वालछड़, छान्नछबीड़ा, बच व लालचन्दन, तगर, कूट, इलायची खरेंटी, (अंशमती) रासना, असगन्ध, वायविडंग, काली मिर्च, दालचीनी, पत्रज, एरंड की जड़ की छाल, संधानिमक, सोंठ एक २ तो० इन दवाइयों का कल्क बनावे। अदरख का अर्क मिला पकाकर तेल सिद्ध करे। इस तेल को कुबड़े, बौने. पांगले, जिन के पैर रह गये हो महावात, अर्द्धाङ्गवात, अंग-सकुच रोग में, संनिपात, वायुगोंठ, हृदयशूल सिरदर्द सिर का भारीपन, नेत्रशूल, कानशूल गले के रोग, नपुंसकता, चित्तभ्रम, इन्द्रियशिथिलता, कमबुद्धि, हाज़मा, जठराग्नि, बांझ स्त्रियों के लिये योनिरोग, गर्भग्रहण, प्रमेह, अंडवृद्धि, भ्रम-पीलिया, कमलवाय, मृगी, वातरक्त, फुंसी, कुष्ट, दाद, खुजली, बुखार, कामोत्पत्ति, बलवीर्य्य में सूंघने, पीने और मालिश करने से लाभ होता है।

बात तथा गठिया के दर्द पर।

१—तुख्म मेथी को सिरका में पीस गरम करे गाढ़ी हो जाने पर थोड़ा शहद मिला दर्द पर पुलटिस की तरह बांधे।

२—गूगल ५ तो०, एलुआ २ तो०, कड़वा तेल ७ तो० में खूब मिला कर गरम कर मालिश करे। पोस्त-खशखास, ईसबगोल, बराबर २ ले कूट पीस पानी में पकाकर गुलरोगन मिला लेप करे।

३—अफीम ६ मा०, मीठा तेलिया १ तो० शिंगरफरूमी १ तो०, कालीमिर्च १ तो०, अदरक के रस में ३ दिन खरलकर मोठ के दाना के बराबर गोली घृत के घूंट से खावे।

४—तेल की मालिश कर गरम जल का सेक करना। तेल लगाने पर हिलाना जुलाना सेंधानिमक डाल गरम जल से सेकना (खशखाश को पीस सेक करना पोटली बांध कर)।

५—क्लोरोफार्म, ब्लेडोना, बच्छनाग, अफीम के तेल की मालिश करना।

विषगर्भ तेल।

६—सफेद चिर्मठी ४ तो०, लौंग २ तो०, जायफल २ तो० (बच्छनाग) विष २ तो० धतूरे का रस ४ सेर तिल का तेल १ सेर कल्क कर पकावे।

दर्द गठिया व आतशक के दर्द पर ।

७—सेमल का मूसला का खार १ तो०, रसकपूर १ तो० साठी के रस में रगड़ना दो दिन बाद मोठ प्रमाण गोली बना मलाई में देना दूध दलिया खाने को ।

८—संखिया १ तो०, रसकपूर १ तो०, साठी के जल में ४ रोज़ निरंतर खरल करना बाद में मोठ प्रमाण गोली बना २ गोली मलाई के साथ खाना गठिया जावे ।

दर्द पर बेनज़ीर औषधि ।

९—पीली हरड, सोरंजान, एलुवा बराबर २ ले दो २ रत्ती की गोली बना शहद में मिला कर एक २ गोली खाना ।

१०–१ माशा लोयबान का सत २-४ घूंट गुनगुने पानी से खावे ।

११–शोरनजान मीठा, बूजीदां छः मा०, छिद्रदार सफेद निसोत, कर्र की मींग, सोंठ, इन्द्रायण की जड़ तीन २ माशा, मजीठ, अजमोद. अनीसून सात २ मा० १ तो० लाल बूरा मिला कर पीवे औटा कर ।

जांघ और पीठ की पीड़ा आदि सब दर्दों पर

१२–बूजीदां, चीता, सोंठ पांच २ मा०, शोरनजान, अजखर की जड़, अजमोद को जड़ का छिलका, सौंफ की जड़ का छिकला चार २ मा०, मुनक्का,

मेथी, दस २ मा० ले काढ़ा बना अन्डी का तेल ६ मा० मिला कर पीवे ।

१३-शोरनजान, सौंफ की जड़ का छिकला, अजमोद, अनीसून पांच २ मा०, गांवजुवां, बिल्लीलोटन चार चार माशा, गुलाव के फूल, बड़ी हरड़, छः माशा, सनाय सात माशा ले काढ़ा बना धूप का गुलकन्द १॥ तो० तुरन्जवीन १ तो० मिला कर प्रातः पीवे ।

कूले की हड्डी जांघ से ले तलुआ पर्यन्त के दर्द पर ।

१४-मस्तगी, अनीसून पांच २ मा०, सोंठ, अजखर तीन २ मा०, मजीठ, चीता, शोरनजान, बूज़ीदान, अजमोद, मेथी, सौंफ चार २ मा०, मुनक्का १५ दाने औटा कर १ तो० अन्डी का तेल डाल पीना ।

दशमूल तेल ।

१५-ऽ। दशमूल की औषधियां १६ गुने पानी में औटावे चौथाई रह जाने पर उतार मलकर छानले फिर केशर, जायफल, जावित्री, लौंग, रास्ना, मीठातेलिया हींग, कपूर, अफीम तीन २ मा०, पीस कर डाल ऽ॥ तिली का तेल भी डाल पचावे जब तेल ही रह जाय उतार छान ले और मालिश करे ।

१६-कुचला, सेजने की छाल, बड़हड़, धतूरे की छाल, बरना, इन्द्रायण की जड़, चिकनी सुपारी, सम्हालू के पत्ते, सेहन्ड के पत्ते, असगन्ध आद २ पाव लहसुन

८– तेल १ सेर। ऊपर की रीति से तेल बना कर लगावे।

१७–तारपीन का तेल २॥ तो०, कड़ुवा तेल १। तो०, वरांडी शराब १। तो०, अफीम १ मा०, केशर ४ रत्ती सब को एक में घोट गरम कर २ मालिश करे।

दशमूल की दवाइयां।

गोखरू—छोटे बड़े को कहते हैं।

कंटकारी—छोटी कटय्या।

बृहती—बड़ी कटय्या।

सारिवा—कवरा को कहते हैं बांस की सी पत्ती होती है।

श्योनाक—इसे अरलू कहते हैं।

पिठवन—पाटला।

गम्भारी—वीरम।

बेल—बेल।

गणियारी—अरनी।

खंभार—पाटला।

माजून का सिलूल-रिहा।

हाथ पैरों के दर्द, जोड़ों के दर्द, पेट दर्द, हैज़ा मूत्र कृच्छ्र पर।

१८—कालाज़ीरा २ तो०, मस्तगी १ तो०, लौंग १ तो०, गुलाब के फूल १ तो०, सौंफ, बच, देसी अजवायन, जवाखार, पोस्त, पिस्ता एक २ तो०, निसोथ

२ तो०, सनाय २ तो०, सोरंजान १ तो०, असगन्ध १ तो०, विधारा १ तो० बादाम की मींग १ तो० कूट पीस तिगुने शहद में मिलावे ४ मा० खाकर ऊपर से ऽ॥ दूध मीठा डाल कर पीना।

१९—तिली का तेल ५ सेर, अफीम ५ तो०, संखिया १ तो०, जावित्री २ तो०, जायफल २ तो०, लौंग २ तो० इनको लोहे की कढ़ाई में मन्द २ अग्नि से पाक करे जब एक सेर तेल शेष रह जाय तब उतार छान कर शीशी में भरले तेल की मालिश जो करे वह आध घंटे बाद अपने हाथों को साबुन से धो डाले।

२०—कड़वा तेल ऽ१, संखिया १ तो०, सींघिया ४ तो०, अलग २ कूट घियागुआर के गूदे में घोट टिकरी बनाले फिर तेल में डाल कर क्रमशः सब को जलाले सिर्फ तेल रह जावे तब गांठों पर लगावे।

गठिया और जोड़ के दर्द पर।

२१—बालू की पोटली बना सिर्का में डुबो २ कर गरम तवा पर सेक २ दर्द की जगह सेके।

२२—सोंठ, पीपल, पीपलामूल, वायविडंग, चीते की जड़, अजवायन, नागौरी असगन्ध, चोबचीनी, अन्ड की जड़ सब बराबर २ ले कूट पीस छः २ माशा सुबह शाम शहद में चाटे।

तेल ।

२३—कुकरौंधे का स्वरस या काढ़ा पाव भर, १ छटांक सरसों के तेल में पचाकर जोड़ों के दर्द पर लगावे ।

पसली का दर्द ।

१—सिन्दूर को शहद में मिला कर एक कपड़े में लेप कर पसली पर चिपका दे और आंच से दूर से सेके ।

रेचनकारी मुन्जिस

१—खीरा ककड़ी के बीज धेला भर, बनफ़शा के फूल वा गुलबनफशा ९ मा० नीलोफर ८ मा० काहू ६ मा०, आलूबुखारा १० गुलाब के फूल ६ मा० उन्नाव ७ दाने मौरेठी ६ मा० लसौड़ा १० दाने सब को कूट पीस रात को ऽ।। जल में भिगो सुबह औटाकर ऽ= रह जाने पर उतार छान ३ तो० गुलकन्द मिला पिलावे ५ दिन के बाद—निम्न लिखित दवा गुलाब पिलावे ।

२—(दवागुलाब) अमलतास ६ तो०, सनाय ३ तो० हर्रा की बकली धेले भर, हर्र छोटी धेला भर, मुनक्का १५ दाने, आलूबुखारा १०, उत्सखद्दूस ६ मा०, खत्मी ६ मा०, कासनी ६ मा०, चन्दन लाल ६ मा०, पित्तपापड़ा ६ मा०, चिरायता ६ मा० गोरखमुन्डी ६ मा० लसोड़ा १५ दाने सौंफ ४ मा० सौंफ की जड़ ४ मा०, उन्नाव ७ दाने, बनफ़शा ६ मा०, गांवज़ुवां ६ मा०, शीराखश्त २।। तो०

अंजीर विलायती ४ दाने, मकोय धेला भर तुरंजवीन २ तो०, रोगन वादाम ६ मा०, अर्क मकोय ऽ॥, गुलाबजल ऽ॥, डाल औटावे ऽ≡ रहजाने पर लाल बूरा ऽ भर डाल पीवे जब प्यास लगे अर्क मकोय पीवे शाम को विना घी की खिचड़ी, दूसरे दिन यह ठंडाई।

३—बीहदाना ४ तो०, रेशाखतमी ८ तो०, खीराककड़ी के बीज ६ तो०, मिश्री २॥ तो० ऽ॥ पानी में ठंडाई बना पीवे।

जुल्लाब की औषधियां

४—धनिया १ तो०, सौंफ १ तो०, शुद्ध गोटा की मींग घी में भून ३ मा० शहद में मिला चने बराबर गोली बनालो १० वर्ष तक १, २० वर्ष वाले को दो इस से ऊपर ३ वा ४ मिश्री के शरबत से देनी। प्यास लगने पर सौंफ का अर्क।

५—दो हर्र, ५ मुनक्का, सनाय की पत्ती ६ मा० गुलाब के फूल ६ मा० रात को पावभर गुलाब जल में भिगोदे रात को आदपाव रहे तब ठंडा कर छान उस में गुलकन्द २ तो० मिला पीजावे। इस से दो तीन दस्त होंगे चित्त प्रसन्न रहेगा पेट के गुटके वा सड़ा हुआ मल गिरकर भूख लगेगी बुखार दूर होगा।

६—आलू बुखारे ११ दाने रात को पावभर गुलाब-जल में पत्थर या कांच के बरतन में भिगोदे सुबह मल के एक तो० शरबत वर्द मिला पीवे ।

७—लौकी का सूखा गूदा, सेंधानिमक, हल्दी, निसोत, हर्र बराबर २ ले चूरन बना ४ मा० गरम जल से खावे जब दही भात खावे तब बन्द हों ।

८—कड़ा जुल्लाब कच्चे अथवा भुने चने को सेहुड़ के दूध में भिगो कर १ या दो निगल कर पानी पीना ४, ५ वमन वा १५, २० दस्त होंगे । दही भात खाने से बन्द होजावेंगे फिरंग गरमी और गठिया-वात ३ दिन में जड़ से नाश हो जावेगी ।

९—सड़ी सुपारी, हरड़ का बकला बराबर २ ले ऽ। पानी में औटाकर पिलाना ।

१०—नीबू के रस में जायफल पीस कर चाटने से दस्त साफ़ आता है पेट का अफारा और तिल्ली दूर होती है ।

११—उसारारेवन्द, हींग, एलुवा, बराबर २ ले चने से दूनी गोली बनाना जल से । १ या २ गोली रात को गरम दूध से निगल जाना ।

स्वाभाविक कब्ज़ पर

१—सनाय १ भाग, बादाम की मींग आधा भाग शहद या गुलकन्द में मिला कर खिलाना ।

२—सोंठ, सौंफ, सनाय, सेंधानिमक, हर्र की बकली बराबर २ ले कूट पीस १ तो० से २ तो० तक रात्रि को फांक ऊपर से दो तीन घूंट गरम जल या आद पाव गुनगुना दूध मीठा डाल कर पीवे।

३—असारारेवन्द १ तो० दारचीनी १ तो० एलुआ १ तो० रूमामस्तगी १ तो० पानी से गोली बना गरम दूध या गरम पानी से खाना।

४—रूमामस्तगी, सफेद सिंगरफ बराबर २ मिला कर ३ माशे की गोली शीतल जल से रात्रि को खाने से सवेरे साफ़ शौच होता है।

५—अमलतास की फली बीज निकाल गूदा पाव भर निकाले लाहौरी निमक पाव भर मिला कर १ हांडी में वन्द कर फूंक ले। ३ रत्ती दवा गरम दूध या गरम पानी से खावे, पाखाना साफ़ हो।

६—एलुआ १ तो० सोंठ १ तो० रेवतचीनी २ तो० सब को खरल कर १ मा० सुबह शाम शहद में मिला कर खावे।

७—एलुवा १ तो० कसीस १ तो० घृत कुमारी के रस में घोट तीन २ रत्ती की गोली बनावे रात को २ रत्ती खाकर गुनगुना मीठा पड़ा दूध पीने से प्रातः दस्त साफ़ हो जाता है।

शोथ (सूजन) पर

१—त्रिफला का क्वाथ पीना।

२—पीपली, पुरानी खल, सहिंजना की छाल, मिश्री, हरड़ इन को गोमूत्र में पीस अल्प गरम कर लेप करने से कफ का सोजा दूर होता है।

३—खुरासानी अजवायन नीबू या छिरका में पीस गरम कर लगावे।

४— त्रिफला के काढ़ के साथ गुग्गुल मिला खाने से (पीने से) शूल सहित शोथ अच्छा होता है।

५—गोमूत्र में त्रिफला का क्वाथ बना पीवे।

६—सफेद फूल की पुनर्नवा की जड़, देवदारु, सोंठ अथवा दन्ती, काली निसोत, त्रिकुटा, चित्रक, का काढ़ा बना कर पीने से शोथ अच्छा होता है।

७—बेलपत्र का स्वरस और काली मिर्च का चूर्ण त्रिदोष की सूजन को दूर करता है।

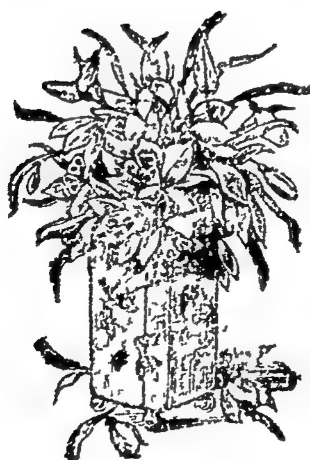
८—गोमूत्र के सेक से सूजन निवृत्त होती है।

९—पुनर्नवा की जड़ देवदारु, सोंठ, सहिंजनी की छाल सफेद सरसों समान भाग जल अथवा गोमूत्र में पीस कर गर्म कर सूजन पर लेप करे और लेप के ऊपर अरंड के पत्ते बांधे। ९ प्रकार की सूजन दूर होती है।

१०—हरड़, हल्दी, भारंगी की छाल, गिलोय, चिरायता दारुहल्दी की छाल, पुनर्नवा की जड़, देवदारु, सोंठ, समान भाग ले क्वाथ पीने से उदर हाथ पैर की सूजन नष्ट होती है।

सूजन चोट पर

आमाहल्दी, सड़ा गोला, सोंठ, सज्जी, राई, खुरासानी, अजवायन, गेरू, मैदा लकड़ी, तज, चिरोंजी, कमंगरी, मुसव्वर, मैदा आटा, अलसी का तेल। ऊपर की दवाइयों को कूट पीस अलसी का तेल डाल हलुआ सा बना चोट पर गुनगुना बांधे।



गण्ड-माला



१—कचनार की छाल के काढ़ा में सोंठ चूर्ण मिलाय पीवे या वरना की छाल के काढ़ा में शहद मिलाय पीवे ।

२—अमलतास की जड़ को चावलों के पानी में पीस लेप करे वा चावलों के धोवन में पीस नास ले।

३—त्रिकुटा १२ तो०, त्रिफला ६ तो०, कचनार की छाल २४ तो०, शुद्ध गूगल ४२ तो०, शहद २॥ सेर सब को कूट पीस शहद में किवाम बना ले एक २ तो० चाटने से गण्डमाला दूर होती है। ज़ख्मों पर फोड़ा फुंसी में लिखी पुलटिस वा मलहम लगाना। अपामार्ग बूंटी की माला सी बना गले में पहरने से लाभ होता है।

कांच निकल आने में ।

१—माजूफल और अनार के छिक्कल एक २ छटांक डाल १ सेर पानी में उबाले जब तीनपाव रह जाय उतार छान उस से आवदस्त ले।

२—बबूल की फली, सफेद सुर्मा, सफेदा काशगरी एक २ तो० ले पीस कर अलसी के तेल में मरहम सा बना गुदा में लगावे।

३—पुराने चमड़े को जला उस की राख काँच पर छिड़के मोम १ तो०, गुलरोग़न ३ तो०, मुर्दासंग ३ मा० गेहूँ का सत ३ मा०. अफीम २ मा०. कपूर १ मा० सब को पीस गुलरोग़न में मिला मरहम सा काँच में लगावे।

भगन्दर।

१—कूट, निसोत, तिल, जमालगोटा की जड़, पीपली, सेंधानोन, शहद, हल्दी, त्रिफला, तूतिया पानी में पीस लेप करे।

२—रसौत, हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, नीम के पत्ते, निसोत, मालकंगनी, जमालगोटा की जड़ का लेप करना।

३—खैर, त्रिफला का काढ़ा में भैंस का घृत और बाय-विड़ंग का चूर्ण मिलाय पीवे।

४—त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, बायबिडंग, गिलोय, चीता चाव, इलायची, पीपलामूल, हाऊबेर, देवदारु, करञ्जफल, पुहकरमूल, चव, हल्दी, दारुहल्दी, खारीनोन, कालानोन, सेंधानोन, बड़ीपीपल, सम-भाग सब से दुगना गुग्गुल मिलाय ४ मा० की गोली शहद में खाने से खांसी, श्वाँस, सोजा, बवासीर, भगन्दर, हृदयशूल, पसलीशूल, कुक्षिशूल, वस्तिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, अन्त्रवृद्धि, कृमि, पुराना बुखार, क्षयी उन्माद, कुष्ट, पेट का रोग, नाड़ीव्रण, दुष्टव्रण, प्रमेह, श्लीपद आदि नष्ट हो।

५—त्रिफला के काढ़े से धोना।

६—कुत्ते की हड्डी या कपाल की हड्डी पानी में घिस कर लगानी।

७—सेंहुड वृक्ष की जड़ की छाल, मदार की जड़ की छाल छः २ मा०, दारुहल्दी का चूर्ण ६ मा० सब को पीसे पानी डाल और वारीक २ वत्ती वना छिद्र में रखे।

बिगड़े हुए खून पर काढ़ा।

१—नागरमोथा, वकुची, चिरायता, वकायन की भीतरी छाल सफेद चन्दन तीन २ मा० गिलोय, छोटी वड़ी कटैली, त्रिफला चार २ मा० कुटकी, वायविड़ंग, हल्दी, वच, सोंठ, मीठाकूट, इन्द्रजौ, भंगरा, विजैसार दो २ मा० ले काढ़ा वना पीवे।

२—नीम के ताज़े फूल, चाकसू, शुद्ध रसोत दो २ तो० ले दो २ रत्ती की गोली वना प्रातः वा सायंकाल जल से खाने से दुष्ट रुधिर ठीक होता है।

अर्क मुसफ्फी खून।

१—उशवा, चोवचीनी, चिरायता, श्याहतरा, गिलोय, हर्र की वकली, गुलवनफ़शा, नीम की छाल नीम के पत्ते, शीशम की छाल वरावर २ छः गुने पानी में अर्क खींचे ५ तो० सुवह शाम। शहद मिला कर पीना।

खुजली

१—पारा, दोनों ज़ीरे, हल्दी, मिर्च काली, सिंदूर, गन्धक, मनसिल चूर्ण कर नौनी में मिला लगावे। थोड़ा कपूर भी डाले।

२—छोटी हरड़, काला निमक पीस छान ६ मा० गरम जल से रात्रि को सेवन करे।

३—पारा, १५ मा० तूतिया १२ मा० गन्धक ९ मा० सफेद रार ९ मा० मैनसिल ९ मा० सब को सुरमा सा कर ऽ॥ कड़ुवा तेल ऽ। मरीच्यादि तेल (शार्ङ्गधर का) डाल फूल की थाली में डाल फेटे फिर पानी डाल कर उठा मले और अर्क उशवा पिलावे।

अर्क उशवा

४—उशवा मगरबी ऽ॥ बुरादा चोबचीनी ऽ। बुरादा शीशम ऽ। गोरख मुंडी ऽ। नीलोफर ऽ गुलाब के फूल ऽ बनफ़शा ऽ गावजुबां ऽ नीम के फूल ऽ पित्तपापड़ा ऽ चिरायता ऽ। सन्दल ज़मीन ऽ सनाय ऽ पीली हर्र ऽ छोटी हर्र ऽ वर्गहिना ऽ गुलहिना ऽ आंवला ऽ १० गुने पानी में १० दिन भिगो कर अर्क खींचे।

५—पारा ३ मा० आंवलासार गन्धक ६ मा० चोक ३ मा० बकुची ६ मा० सब को कूट पीस १०१ बार धुले घी में मिला मालिश करे २ घंटे बाद नीम के पत्ते डाल उबाले हुए जल से स्नान करे।

६—आंबाहल्दी खुरासानी अजवायन नीलाथोथा, पारा गन्धक एक २ तो० लेकर २॥ छटाँक ४१ वार धुले घी में मिला कर लगावे फिर पीली मट्टी लगा कर न्हा लेवे।

७—अडूसे का पत्ता नरम, हल्दी, गोमूत्र में पीस लेप करे।

८—मूली के बीज दही में पीस मले।

९—सरसों का तेल मल स्नान करना।

१०—पारा, गन्धक, मेन्सिल, मुरदाशंख, काली मिर्च, सिन्दूर गुजराती स्याह ज़ीरा सफेद ज़ीरा हल्दी दारुहल्दी प्रत्येक आठ २ माशा लेकर पहिले पारा और गन्धक को कढ़ाई में डाल कर खूब घोटो जब दोनों एक दिल होजावें तब सब दवाइयों को कूट-कपड़ छान कर उसी कड़ाही में गाय के मक्खन के साथ मिला कर सब को घोटे जब एक दिल हो जांय तब खाज पर लगावे २ घंटे बाद स्नान कर डाले।

११—पालक और खसखास के बीजों को पीस बदन पर मले।

१२—सरफोंका, त्रिफला सम भागले रात को ऽ≡ पानी में भिगो कर सुबह मल छान २ तो० शहद मिला कर पीवे।

दाद पर।

१—आमलासार गन्धक और कपूर बराबर २ पीस तारपीन के या मट्टी के तेल में लगावे।

२—मुरदासंख, नीलाथोथा, गन्धक, मैनफल, सुहागा, शोराकल्मी बराबर २ ले पीस नींबू के अर्क में गोलियां बना पानी से लगावे।

३—दूब, बड़ी हरड़ सेंधानिमक, तुलसी के पत्ते मट्ठे में पीस कर लेप करे।

४—हल्दी, अकवन का पत्ता, गोमूत्र में पीस लेप करे।

५—अमलतास का पत्ता कांजी में पीस दाद पर लगावे।

६—राल का तेल गन्धक का चूर्ण एक २ छटांक मिला कर लगावे।

७—पपीते का दूध लगाने से भी दाद आराम होता है।

८—पारा, गन्धक, आंवलासार, सफेद राल, नीलाथोथा, नौसादर, सुहागा, मिश्री छः २ मा० ले ३ दिन नींबू के अर्क में घोटना फिर पानी में लगाना।

९—रूमामस्तगी, गन्धक, मिश्री, सुहागा, नौसादर, राल, अंडी के बीज घी में मिला कर लगावे।

१०—नीलाथोथा, सुहागा, गन्धक एक २ तो० कल्मीशोरा ६ मा० नींबू के अर्क या मक्खन में लगावे।

११—शोरा ४ रत्ती, गन्धक पीली १ भाग, नौसादर १ भाग, तूतिया आधा भाग, राल १ भाग, फिटकरी चौथाई भाग, सुहागा कच्चा २ भाग, मिश्री १ भाग नींबू के रस में खरल कर वटी बनाले पानी में घिस कर लगावे।

१२–आंवलासार गन्धक, फिटकरी का फूला, राल एक २ तो०, कपूर ३ मा०, हरताल १ मा०, सुहागे की खील १ तो०, बारीक पीस मिट्टी के तेल में लगाने से बारह बरस का दाद अच्छा होता है।

१३–नारियल का तेल ३ तो०, लहसुन का रस ३ तो० डालकर आग पर गरम करे जब रस जल जाय तब उतार एक तो० बिना बुझा हुआ चूना डाल खूब घोटे फिर दाद पर लगावे पुराने से पुराना दाद शीघ्र अच्छा होता है।

श्वेत कुष्ठ (सफेद दागों पर)।

१—भैंसे के सींग २ अदद उस में काले १ सांप के टुकड़े और बावची ५ तो० भरदे फिर कपरौटी कर मज़बूत फूंक ले मुख पर जो दवाई हो उसे सींगों के ठंडा होने पर निकाल ले तेल सा निकलेगा। कुष्ठ स्थान को कपड़े से रगड़ पंख से यह तेल तीन बार लगावे ओस की तरह पसीना निकलेगा जब पानी के स्थान पर खून निकले तब दवा बन्द कर नीचे का मरहम लगावे। नीम के पत्ते ३ तो० नीला-थोथा ६ मा० पीस कर कड़वे तेल में (१० तो०) तलकर राख करले इस राख को तेल सहित लगाने से श्वेत-कुष्ठ बिल्कुल अच्छा होजाता है।

२—घड़ियाल का रक्त ४१ दिन मले। सिर पर गोली लगने से खून निकलता है।

३—बकुची १६ तो० मैनसिल २ तो० चीता की जड़ की छाल ४ तो० तबकिया हड़ताल ४ तो० सफेद गुंजा ४ तो० गोमूत्र में पीसकर कोढ़ पर लगावे।

४—केवल बकुची को अदरक के रस में पीसकर लगाना।

५—पारा, नीलाथोथा तीन २ मा० आंवलासार गन्धक, कत्था, राल मुरदाशंख, बकुची छः २ मा० १ छटांक नैनी में लगावे।

६—गौ का मक्खन आधपाव असली हींग १ तो० लेकर दोनों को एक कढ़ाई में डाल पकावो जब हींग जल जाय तब निकाल कर हींग फेंक दो फिर १ तो० नीलाथोथा पीस कर डालदे और लोहे के मूसल से घोटो जब मलहम सा होजाय तब चीनी के बर्तन में रख छोड़े और दागों पर लगावे दिन में तीन चार बार—१० दिन में लाल, २० दिन में असली रंग हो जायगा।

७—केले के स्तम्भ में १ तो० हल्दी गाड़दे तीन दिन के बाद निकाल पीस ले और उस में पीली संखिया २ तो० सफेद संखिया १॥ तो० सफेद चन्दन, लाल चन्दन, सफेद फिटकरी, सलगम के बीज एक २ तो० सुहागा २ तो० मूली के बीज २॥ तो० सब को पीस दुगने दही में मिला एक दिन घोट सुखाले फिर थोड़ी २ दवा सिरके में पीस लगावे।

८—सींघिया, भिलावा, चीता की जड़, लाल घुंघुची सीधा निमक बराबर २ ले पीस नींबू के रस में पीस कर लगावे।

९—बकुची को गोमूत्र में पीस लगावे।

१०—नींबू के अर्क में चीता और सफेद कनेर की जड़ बराबर २ ले घिसे और सफेद दाग पर लेप करे बहुत जल्दी जावे।

११—बिसखपड़े की जड़ पीस कर लेप करे। कुष्ठ को आराम हो। नीम की छाल और आंवले का चूर्ण तीन २ माशा प्रतिदिन खाने से कोढ़ नष्ट होता है।

१२—मुक्तासीप १ तो० कूट कर ५ तो० कागज़ी नींबू का रस डाले जब खुश्क होजावे तब फिर डाले और फिर खुश्क करे जब बिल्कुल गल जावे तब हरताल ९ मा० सफेद राई ९ मा० बादाम की मींग छिली हुई ३ मा०, मूली के बीज १५ मा०, पिस्ता ३ मा० सब को गोदुग्ध में चन्दन की माफिक घोट कर सफेद दागों पर लगावे ७ दिन तक।

१३—बकुची काले दण्डे की भगरइये के रस में घोट सफेद दागों पर लगावे। भंगरा न मिले तो अदरक के रस में लगावे।

१४—६ मा० चोबचीनी का चूर्ण बकरी के दो छटांक दूध में चौगुना पानी डाल कर एक उबाल आने

पर ठंडा कर फांकना २ माह लगातार । गुड़, तेल, दही, खटाई, लाल मिर्च से परहेज़ ।

१५–काले साँप की भस्म, भिलावे का तेल एक २ भाग नौसादर आधा भाग तुरंत की ब्याई भेड़ (जबतक बच्चे ने न पिया हो) के दूध में तांबे के बर्तन में एक दिन रात घोटे फिर सफेद दाग़ पर लगावे ।

१६–बिच्छूकांटा २ तो०, धाय की जड़ २ तो०, बावची २ तो०, चीनिया कपूर, बादाम का छिक्कल दो २ तो० ले पीस गङ्गा जल में गोली बनावे और गङ्गा जल में ही लगावे ।

१७–इन्द्रजौ बावची बराबर २ इन का चौथाई हड़ताल लेकर गाय के मूत्र में पीस लेप करे कोढ़ दाग़ दूर हो, रङ्ग शरीर के रङ्ग के समान हो ।

१८–बावची का चूर्ण ३ वार में १ दिन में रोज़ाना शहद के साथ या घी के साथ या गरम पानी के साथ या दूध के साथ १५ दिन खावे । और सिर्फ दूध भात खावे १५ दिन तक अन्न न खावे ।

१९–बकुची को बासी पानी में बांट कर दागों पर लेप कर दो छाला उठ आवेगा और पुराने आंवला और खैरसार तीन २ मा० ले पावभर पानी में काढ़ा बनावे एक छटाँक रह जाने पर उतार छान १॥ मा० बकुची का चूरन डाल कर २० दिन लगातार पीवे ।

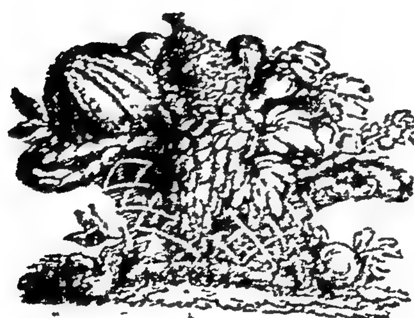
२०–पलास पापड़ा ३ तो०, सफेद कत्था १ तो०, नीला थोथा ३ मा०, नींबू के रस में घोट लगावे ।

२१–कडुवाकूट, चीता, हड़ताल, काली मिर्च, जनगार बराबर २ ले तांबे के बर्तन में गाय के पेशाब में घोट कर लगावे ।

२२–रसकपूर १ तो०, सफेद चन्दन ५ तो० मिला खूब बारीक लेप करे ।

२३–नौसादर को लहसुन के अर्क में लगावे ।

२४–अंजीर की जड़, सोंठ, समभाग लेकर गोमूत्र या गुलाब जल में पीस लेप करना ।



सीप में



केले के पत्ते की राख १ तो०, नौसादर, सुहागा छः २ मा० नींबू के अर्क में घोट मले सात दिन तक।

बन्दरफ।

१—पीली गन्धक और जवाखार दोनों को बराबर ले पीस बन्दरफ के ऊपर रोज़ लगावे।

२—११ दाना काली मिर्च नित्य लगातार १ मास तक ताज़े जल से पीस प्रातः पीने से बन्दरफ दूर हो जाती है।

जुएं में

१—चने के आटे को एक घड़ी सिरका में भिगो दे फिर उस में थोड़ा शहद मिला कर सिर मले।

२— नीम के साबुन से सिर धोवे।

३—काला भंगरा, आंवला, हर्रा, सफेद फिटकरी बराबर २ ले सिरके में पीस कर सिर पर मले।

४—सांभर निमक को बारीक पीस गुलरोग़न में मिला सिर पर लगावे।

५—सीताफल के बीज १ तो० कालीमिर्च १ मा० मिला कर पानी में पीस सिर मले।

६—पारा को लगे पान में पीस सिर पर मले।

सिर की फ्यास में

१—जौ की भूसी को गरम पानी में उबाल उस से सिर धोवे।

२—अरहर की दाल कच्ची ले पानी में पीसे पिट्टी की तरह फिर उस से सिर मले।

३—ऽ गोले के तेल में ६ मा० कपूर मिला सिर पर लगावे

४—गरम पानी में नीबू का रस निचोड़ उस से सिर मले।

गंज पर

१—तिल का तेल मल कर ऊपर से कबीला ४–५ मा० बुरक़ दे।

२—हाथीदान्त का बुरादा जला कर बुरके या बकरी के दूध में घोल कर लगावे।

३—कलौंजी को जला कर सिरके में लगावे।

४—समुद्रझाक को जला कर सिरके में लगावे।

५—नकछिकनी बूंटी को जला कर मुर्गी के अंडे के तेल में मिला कर लगावे।

सफेद बालों को काला करने और बढ़ाने को

१—फिटकरी सफेद, काली मिट्टी, शोरहकल्मी नीला-थोथा, माजूफल, आंवला का सत बीस २ तो० ले पाताल-यंत्र से तेल निकाल बालों पर लगावे।

२—मीठा तेल १ सेर गेंदे की पखुरियां ऽ। भर काट कर उस में डाल पकावे। फिर ज़मीन में १५ दिन गाड़ दे १ मास के पश्चात् निकाल कर मले।

३—ताज़ा झाऊ को खूब कूटकर बराबर का तिल्ली का तेल मिला दोनों के बराबर पानी डाल पकावे तेल भी जब कुछ जल जाय तब उतार छान बालों पर लगावे कभी सफेद बाल न निकलेंगे।

४—सर्व के पत्ते १ भाग, आंवला २ भाग पानी में औटावे जब तेल रह जाय सब को घोट कर बालों पर लगावे।

५—कैरीआम २५ तो० माजू ५ तो० बुरादा लोहा ५ तो० अनार खट्टे २० तो० तेल तिल का ६० तो० ऊपर की ५ चीज़ों को कूट छान कूजे में भर ऊपर से तेल डाल मुंह बन्द कर घोड़े की लीद में ४० दिन दाब दे फिर निकाल कर लगावे।

सुगन्धित एवं शीतल तेल विधि

१—मेंहदी, कपूर कचरी, सुगन्धवाला, चन्दन, दारचीनी, इलायची, बालछड़, आध २ सेर १० सेर पानी में पकावे ७॥ सेर रहने पर एक सेर तेल डाल केवल तेल रहने पर उतार इस्तैमाल करे।

बालों को लम्बा और कोमल करने का तेल

२—इन्द्रायण के बीज ५ सेर (पांच सेर) २-२ माह की ब्याई भैंस के दूध में भिगोदे जब दूध सूख जावे तो कोल्हू में पिरवा कर तेल निकलवाकर ३ मा० आधी छटांक चमेली के तेल में मिला कर लगावे। दूध में कम से कम ३ बार भिगोवे।

गरमियों के सिर दर्द पर

३—लम्बा कद्दू (घिया) लेकर उसमें ४ तो० कपूर डाल कर (१ छेद कर रख ले और मुंह बन्द करदें) फिर आग (भाड़) में भुलभुला कर उस का रस निकाललें उस रस में तेल डाल कर पका लें फिर तेल मात्र रह जाने पर सिर पर लगावे।

४—बड़ी इलायची, तगर, बालछड़, छारछबीला, लोयवान एक २ तो० जावित्री, जायफल, हाऊबेर, कपूर कचरी, सुगन्ध बाला, पानड़ी, छः २ माशा, केशर ३ मा० कपूर देशी ३ मा० रतनजोत ६ मा० तेल १ सेर में ऊपर की दवाइयां जौ कूट कर डाल काक बन्द शीशे को धूप में रख दे १ माह बाद इस्तैमाल करे।

अंगूरी सिरका बनाना

१—लाल दाख कन्धारी १० सेर। लाल फिटकरी १० तो० पाषाण निमक १० तो०। दाख को सज कर

एक मन पानी में एक मटके में भिगो दे मुंह मज़-
बूती से वन्द करदे ताकि हवा न जावे ११ दिन
पीछे खोल फिटकरी और निमक डाल फिर २२
दिन वन्द रखे फिर वरते।

ब्राह्मी घृत

केशर ६ मा० अगर १ तो० सफेद चन्दन का बुरादा
ऽ= छोटी इलायची ६ तो०, नागकेशर ६ तो० ब्राह्मी ऽ॥
काली मिर्च ६ तो० गोघृत १॥ सेर हल्दी ऽ- केशर के
विना सब दवा कूट कर छान ले ७ सेर पानी में पकावे
एक सेर रह जाने पर घी डालदे जब सब पानी जल
जावे उतार छान २ से ६ मा० तक दूध में डाल कर
पीवे।

कनक-शिरोमणि-सुरा का योग

जावित्री, कालीमूसली, अकरकरहा, कौंच के बीज,
तालमखाना, पंजेकी सालिवमिश्री, गोखुरू, असगन्ध, सेमर
की मूसली, भांग के बीज, लौंग, जायफल, उटंगन, खरेटी
के बीज समुद्रसोख, मुनक्का, मुलहटी, छोटी तोदरी बड़ी
तोदरी, शतावर, हरड़, बहेड़ा, आंवला, छोटी इलायची,
अजवायन चार २ पल, सोने के वर्क आधा पल, कस्तूरी ३
मा० गाय का दूध ४ द्रोण। विधि—सब औषधियों को कूट
कर रख छोड़ो फिर ४ पल गुलाब के अर्क में सोने के वर्कों
को संगमरमर के खरल में घोंटे खूब घुट जाने पर सब में
मिला कर एक पात्र में हल करके कई दिन भिगोय रखे

जब उफानसा निकले तब अर्क खींचले तीन दिन बाद इस्तैमाल करे, मात्रा पाव पल।

अव्यर्थ महौषधि सुधासागर।

शतावर का रस १ बोतल, सौंफ का अर्क १ बोतल गिलोय का सत १ तो०, सफेद मिर्च ६ मा०, अजवायन का सत ६ मा० ६ रत्ती पेपरमेंट ६ मा० ६ रत्ती शुद्ध-अफीम १॥ तो० नींबू का रस ऽ॥, कूजे की मिश्री १ सेर।

विधिः—शतावर और सौंफ के अर्क को मिश्री डाल पकावे पकते समय सफेद मिर्च पीस कर डालदे शर्बत की चासनी ठीक आने पर नीचे उतार ले और अफीम को शर्वत में बहुत अच्छी तरह मिलावे फिर औरों को भी मिला बोतल में भरदे। दवा देते समय बोतल को हिलादे। १ वर्ष के बालक को ५ बूंद, २ वर्ष से १४ वर्ष तक १० बूंद इस से अधिक आयु वाले को २५ से ३० बूंद तक शीतल जल में दे। अतिसार संग्रहणी, शूल, सिरदर्द वमन, कास, श्वास, मंदाग्नि. अम्लपित्त बालकों के हरे पीले दस्त पर रामबाण का काम देता है।

स्वादिष्ट अर्क करामाती।

सफेद ज़ीरा ऽ≡ बड़ी इलायची ऽ≡ लौंग ६ तो०, काली मिर्च ऽ≡ हीरा हींग ६ मा०, लाहौरी निमक ऽ। काला निमक ८ तो०, हर्रछोटी ५ तो०, पोदीनाहरा ऽ१॥ जल १० सेर रात्रि को पानी में भिगोदे प्रातः भवके से अर्क खींचले ६-७ बोतल अर्क खींचे हर एक बोतल में

३ मा० टाटरी पीस कर डाल दे और डाट लगा कर रखदे उदर रोगों पर चमत्कारी है। मात्रा २॥ तो० से ५ तो० तक।

शक्कर मिला चूने का पानी बनाने की विधि

साफ़ कलई चूना आधी छटांक देशी शक्कर १ छटाँक दोनों को साफ कूंडी में खरल कर पानी १० छटांक डाल कर खरल कर नीली बोतल में भरकर काग लगादे ३ घंटे के बाद फिर हिला दे फिर ५ घंटे के बाद साफ जल दूसरी बोतल में निथार कर रख छोड़ । मात्रा १५ बूंद से ३ मा० तक। गुण—बच्चों का पुराना अतिसार वमन, उदरपीड़ा, मेदा, घाव, छाती की जलन, संधिपीड़ा आदि रोग नष्ट होते हैं। गर्भवती के गर्भ समय का वमन भी दूर होता है।

ब्राह्मी तेल।

ब्राह्मी का स्वरस २ सेर १ सेर तिली के तेल में डाल पकावे जब सिर्फ तेल रह जावे तब कांच के बर्तन में रख छारछबीला, नागरमोथा, कपूरकचरी, पानड़ी, ताज़े गुलाब के फूल, छोटी इलायची, धनिया, खस, कंकोल मिर्च, दारचीनी, बालछड़, सुगन्धबाला एक २ तो० लेकर कूट पीस नीले रंग की बोतल में तेल सहित रख रोग़न बादाम ५ तो०, सफेद चन्दन का बुरादा ५ तो०, रत्नजोत ६ मा० डाल मुंह बन्द कर १५ दिन धूप और चांदनी में रखे। दिमाग़ की कमज़ोरी और प्रत्येक सिरदर्द को लाभदायक है।

शास्त्रोक्त विड निमक।

गन्धप्रसारणी लता (जो बंगाल और विहार में होती है) का स्वरस ऽ। को आग पर रख सेंधानिमक आधसेर का चूर्ण उस में डाल गरम करे जब गल जाय और रस सूख जाय उतार कर काम में लावे।

बाज़ारू।

काला सज्जी खार का ढेला १ भाग सेंधा निमक २ भाग लेकर पीस कर चौगुने पानी में भिगोकर औटावे जब गाढ़ा हो जावे उतार छान काम में लावे।

कटे हुए घाव का इलाज।

गन्धक का चूर्ण घाव में भरकर बांधदे। सफेद फिटकरी बारीक पीस घाव में भरकर बांधदे।

ज़हरबाद का इलाज।

नीम की सूखी छाल पत्थर पर पानी में घिस कर चन्दन की तरह गाढ़ा होने पर धतूरे के नरम पत्ते पर लेप कर घाव पर रखने से तीन दिन में घाव आराम होता है।

बद, गिल्टी, फोड़ा-फुंसी।

१—घियागुवार के पट्ठे को चीर उस में रसौत और हल्दी का चूर्ण मिला गरम कर लेप करने से बद बैठ जाती है।

२—बरगद के पत्तों पर घी लगा सेंककर बांधने से कनवर अच्छा होता है।

३—दही का पानी निकाल लगाना।

४—सुपारी जली, रेवतचीनी, हर्र, मुर्दासङ्ख, तूतिया-कत्था लगावे।

५—वैसलीन १ औंस एडोफ़ार्म ४ ड्राम मिलाकर ज़ख्मों पर लगाना।

लाल मरहम।

६—फूलासुहागा १० तो०, फिटरी १० तो०, कबीला १० तो०, मीठा तेल २० तो०। सब ज़ख्मों को भरता है विशेष कर फैलने वालों को।

हरा मलहम।

७—बिरोजा कच्चा ऽ। जंगाल २ मा०, नीलाथोथा ६ मा०

तथा—

८—नीला थोथा ४ तो०, जंगाल ४ तो०, तबकिया हड़ताल २ तो०, बिरोजा कच्चा १६ तो०, चौकिया सुहागा का फूला ४ तो०, फिटकरी १ तो०, आमा-हल्दी ४ तो०, तेल या घी २० तो०।

छतारि मलहम।

१—कपूर २ तो०, सिन्दूर २ तो०, कत्था ४ तो०, मुर्दासङ्ख १ तो०, सेलखड़ी ऽ- घी ऽ। घी को धोकर सब दवा मिला ले और लगावे।

२—मीठा तेल ऽ।, मोम ४ तो०, सिन्दूर ६ तो०, रार ४ तो०, तूतिया ६ मा०, नीम का स्वरस ऽ। विधि-तेल को कड़ाही डाल कर नीम का अर्क डाल कर पकावे जब आधा अर्क रह जाय तब मोम डालदे और जब मोम पिघल जाय तब सब दवाइयों को कूट पीस कर डालदे और जब अर्क जल जावे तब उतार कर रखले। फाया पर लगा कर लगावे।

घाव धोने का अर्क।

नीम की छाल ४ तो०, बबूल की छाल ४ तो०, पीपल छाल ४ तो०, गूलर छाल ४ तो०, रतनजोत २ तो०, रसोत ४ तो०, बढ़िया देशी शराब ५ सेर दवाइयों को कूट कर किसी कांच के बर्तन में डाल ऊपर से शराब छोड़ दो बर्तन का मुंह बन्द कर धूप में धर दो १ हफ्ता रखना, प्रति दिन १ या २ बार हिला देना १ हफ्ता बाद छान कर बोतलों में भर देना घाव को साफ़ कर रुई के फाये से लगाना घाव का खून गिरना, जलन वा राद बन्द होती है।

नासूर पर।

१—सिन्दूर भरे शहद में मिला कर।

२—रेलगाड़ी के पहिये के पास जो तेल चिपटा रहता है उस की बत्ती बना कर चढ़ावे।

३—बारूद २ तो० को ५ तो० तिल के तेल में खूब खरल कर पिचकारी से नासूर में भरे।

आग से जल जाने में ।

१—पुराना चूना दही के पानी में पीस कर लेप करे ।

२—जौ जला कर अलसी के तेल में मलहम बना कर लेप करने से शीघ्र अच्छा होता है ।

३—मछली का तेल तुरन्त लगाने से अच्छा होता है ।

४—गुड़ का चोटा, मक्खन अथवा तिलों को दूध में पीस कर लेप करने से जला हुआ अच्छा होता है ।

५—आलू पीस कर लगावे ।

६—घियागुवार के पत्ते का रस लगावे ।

७—चूने का पानी नारियल का तेल मिला कर लगावे ।

८—पीपल की सूखी छाल का चूर्ण और गूगल का चूर्ण मिला कर लेप करने से घाव भी अच्छा होता है ।

९—शोरे के पानी में रुई भिगो कर घाव पर रखे ।

१०—दूध में तिल पीस कर उस में मक्खन मिला कर लगावे ।

विष-चिकित्सा ।

१—यदि कोई विष चमड़े पर लग गया हो तौ घी अथवा घी और काली मिर्च की मालिश करे । यदि पेट के भीतर गया हो तौ नीम के पत्ते खिलावे और घी पिलावे ।

अफीम का विष ।

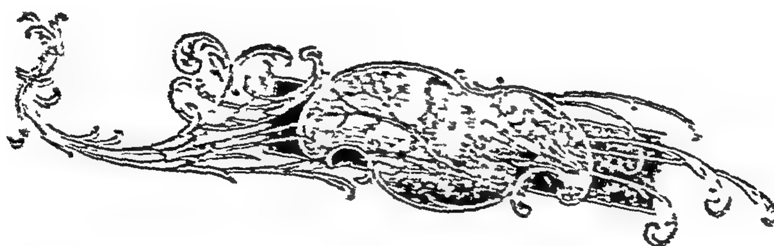
१—नाड़ीघास की जड़ वा ठंडे पानी में पीस २ पिलावे नशा दूर होगा जितनी अफीम खाई हो उस से दूनी हींग खिला दे ।

२—चौलाई के पत्ते पीस कर पावभर रस अफीम खाये हुये को पिलादे ।

३—चौलाई के पत्ते पीस कर तालू पर लगावे ।

बिलावे के विष की शान्ति को ।

काले तिल १ छटांक, नारियल की गिरी १ छटाँक बकरी के दूध में महीन पीस थोड़ी नैनी घी या मक्खन मिला शरीर पर लेप करे, नारियल बादाम खाना ।



सांप के काटे की चिकित्सा



१—सांप के काटते ही तुरन्त घाव (या दांत लगे स्थान) पर ४ अंगुल ऊपर कसकर बन्ध बांधे इस से विष ऊपर नहीं चढ़ेगा।

परीक्षा १ लाल मिरच काटे हुए रोगी को चबाना यदि चरपरी न लगे तो समझना सांप ने काटा है, इसी तरह नीम की पत्ती चबाना यदि कड़वी न लगे तो समझना कि सांप ने काटा है।

चिकित्सा यदि दांत का निशान मालूम पड़े तो नश्तर या चाकू से थोड़ा चीर खून निकाल देना खून के साथ विष निकल जायगा।

२—कोयले से विष के स्थान को जला देना।

३—१ तो० सुहागा १ छटाँक पानी में घोल पिला देना।

४—पावभर घी गरम २ पिलाना।

५—चौलाई की छोटी २ जड़ों को १ छटांक चावल ले पावभर पानी में भिगो दे फिर इस पानी को मल कर छान इस में २ तो० जड़ को पीस विना छाने पिलावे।

६—कपास की पत्तियों का रस १ से २ तो० तक पिलावे।

७—केले की जड़ का रस ऽ॥ काली मिर्च ६ मा० मिला कर पिलावे।

८—जावित्री थूक में घिस आंखों में अंजन करे।

९—रीठे का फेन का अंजन करे और काटी जगह पर लगावे।

१०—मैनफल १ तो० पानी में पीस पिलावे।

११—नीलाथोथा की बुकनी नाक में फूंकने से होश आ जाता है।

१२—३ मा० नौसादर पानी में घोल पिलावे।

१३—चूना और नौसादर छः २ मा० पीस कर थोड़ी २ देर में सुंघावे अथवा नाक में फूंके ५ मिनट में होश में आ जाता है।

१४—४ तो० गाय के गोबर में ऽ॥ गोमूत्र मिला कर मल कर छान कर पिलावे।

१५—एक छटांक पीने की तमाखू पानी में घोलकर पिलावे इस से कय (कै) होकर विष निकल जायगा।

१६—काटते ही आध सेर तीन पाव घी पिला देने से विष नहीं चढ़ता।

१७—२ मा० हुक्के की किट्ट खिलावे ऊपर से कालीमिर्च मिला घी पिलावे जितना पिया जाय काली मिर्च इतनी मिलावे कि खूब चरपराहट हो जाय।

१८—जल बिल्कुल न दे किन्तु ३ दिन तक दूध में घी और मीठा डाल कर ही पिलाता रहे।

१९—बेहोशी में रीठे को पानी में पीस तालू पर थोपे।

२०—घाव पर बिन बुझा चूना पीस कर बुरके यदि घाव न हो चाकू या नस्तर से करले फिर घाव अच्छा होने के लिये सफेद राल १ तो०, काशगिरी सफेदा ६ मा०, कपूर ६ मा० सब को पीस मक्खन में या नोंनी में मिला कर लगावे।

२१—लाल फिटकरी का चूर्ण ३ मा० १ छटांक घी में मिला कर पिलावे।

२२—१ छछून्दर को ले शराव संपुट में फूंक शीशी में रख छोड़े ३ रत्ती भस्म मट्ठे में घोल पिलावे यदि दांती मिच गई हो तो फुंकनी से भस्म नाक में फूंके।

बिच्छू काटे की दवा।

१—जमालगोटा, हड़ताल को पानी में पीस लगावे।

२—पीला संखिया, नौसादर, जमालगोटा बराबर २ ले नींबू के रस में लगावे और आग से सेके।

३—केवल नौसादर को पानी में घिस कर लगावे।

४—चिरचिरा की जड़ नींबू के अर्क में पीस लगावे।

५—चूना और खटाई बारीक पीस कर लगावे।

६—डंक पर ६ मा० नौसादर रक्खो ऊपर से मोटा कपड़ा लपेट ठंडे पानी की धार पांच मिनट तक डाले।

७—निर्मली के बीज पानी के साथ पत्थर पर घिस कर डंक पर लेप करदे आध घंटे में विष उतर जायगा।

८—लाल कुम्हड़े की जड़, नौसादर, हड़ताल इस में से जो मिले किसी एक को पानी में घिस कर लगावे।

९—शहद, घी, चूना बराबर २ ले पीस कर मिला डंक पर लगावे।

१०—इमली का चिया पानी में घिस कर डंक पर लगावे।

११—दोनों मरुआ या तुलसी छः २ मा० ले पानी में पीस लगावें।

१२—मूली के पत्ते का रस लगावे।

पथ्य

वैद्य की आज्ञानुसार रोगी को जो नियमित आहार दिया जाता है उसी का नाम पथ्य है। क्योंकि स्वास्थ्य रक्षा के लिये उपयुक्त आहार का प्रयोजन है ही। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति इस बात को स्वयं ही भली भांति जान सकता है कि उसे कौनसा आहार हितकर है। कौनसा हितकर नहीं है परन्तु फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो या तो बिना जाने या जान बूझ कर कुछ ऐसा आहार कर बैठते हैं जो रोग को अच्छा होने में सहायता देने के बदले उस को और बढ़ा देता है। इस लिये कोई रोग हो जाने पर वैद्य का कर्त्तव्य है कि वह रोगी के खान-पान की ओर विशेष ध्यान रख कर व्यवस्था करे।

आहार की प्रयोजनीयता सब कोई भली भांति जानते हैं इस लिये लिखने की आवश्यकता नहीं है। हम चाहे जो कार्य करें। यहां तक की देह के थोड़े से सचालन से भी शरीर के पोषक तन्तुओं का क्षय होता है उस कमी की पूर्ति अत्यन्त ही आवश्यक है। तथा शरीर में ठंडी हवा लगने से शरीर की गर्मी कम हो जाती है परन्तु देह उस सर्दी का हटाने का प्रयत्न करता है उपयुक्त आहार के द्वारा ही शरीर का क्षय और गर्मी का कम होना रोका जा सकता है अर्थात् आहार के द्वारा ही शरीर का क्षय और गर्मी की कमी रोकी जा सकती है। इन ऊपर लिखे दोनों उद्देश्यों को पूरा करने के लिये कौन कौनसा आहार शरीर में क्या २ क्रिया करता है यही निर्णय करके बता देना चिकित्सक का कर्तव्य है।

संसार में मनुष्य के आहार में आने वाली सभी वस्तुओं की विवेचना करके उन के गुण दोषों को बता देना तो इस छोटे से लेख में असंभव है तथा जो लोग मांसाहारी हैं उन के पथ्य की व्यवस्था हम करना नहीं चाहते हम यहां केवल निरामिष भोजियों ही के पथ्य के प्रकरण में संक्षेप से लिखेंगे इस से मांस-भोजी भी लाभ उठा सकते हैं।

स्वस्थ मनुष्य जिस प्रकार आहार कर लेता है और उस का परिपाक ठीक हो जाता है रोगी मनुष्य के सम्बंध में वैसा नियम नहीं है—वैद्य को बड़ी ही विवेचना के साथ रोगी के पथ्य की व्यवस्था करनी पड़ती है।

आहार का परिपाक चबाने से ही होता है अर्थात् खाया हुआ पदार्थ जितना धीरे २ चबाया जायगा और उस के साथ लार मिलेगी उतना ही वह शीघ्र परिपाक होगा जिन को मिनटों में भोजन करने का अभ्यास है उन्हें कुछ दिन के उपरान्त अजीर्ण, कोष्ठ-बद्धता और अर्श एक दिन हुए विना नहीं रहेगी।

पथ्य कैसे तैयार करना होगा इस विषय में चिकित्सा करने वाले को चाहिये कि पथ्य-रंधन करने वाले को भली भांति समझादे और अच्छा तो यह हो कि एक वार अपने सामने तैयार करादे क्योंकि पथ्य के अच्छे तैयार होने ही पर रोगी की रुचि अरुचि निर्भर करती है। अच्छे पथ्य से रोगी की रुचि ठीक रहती है और परिपाक शक्ति बढ़ती है।

नीचे कुछ पथ्यों की प्रणाली लिखते हैं।

१—बार्ली वाटर-(जौ का पानी) एक छटांक पर्ल बार्ली एक साफ़ वर्तन में आधा सेर पानी को डाल कर पांच मिनट औटा कर इस पानी को फेंक दो फिर ठंडे पानी से बार्ली को अच्छी तरह धोलो फिर एक सेर ठंडे पानी में इस बार्ली को और आधी छटांक (या रोगी को जैसा मीठा पसन्द हो) साफ़ चीनी या मिश्री का चूर्ण मिला कर कम से कम दो घन्टे तक पकाना चाहिये फिर बारीक कपड़े से छान कर उस में आधा काग़ज़ी नींबू का रस निचोड़ देना

चाहिये ठन्डा होने पर फिर कपड़े में छान कर साफ़ वर्तन में रख कर रोगी को पिलाना चाहिये।

२—**पानी का साबूदाना**—एक छटांक साबूदाने को एक सेर ठन्डे पानी में भिगो कर रखदो फिर पानी समेत इस साबूदाने को आग पर रख कर धीरे २ पकाओ और चम्मच से धीरे २ चलाते रहो फिर साफ़ चीनी या मिश्री का चूर्ण मिलाना चाहिये जब आधा रह जाय तब उतार लेना चाहिये ठन्डा होने पर छान कर नींबू का रस मिला कर रोगी को दो, रोगी को मीठा साबूदाना पसन्द न हो तो नमकीन बना दो।

३—**दूध साबूदाना**—एक छटांक साबूदाना ठन्डे पानी में अच्छी तरह धोकर आध सेर पानी में एक घन्टा तक भिगो रखो फिर आधा सेर दूध दो छटाँक मिश्री या चीनी डालकर एक उफान देकर उतार लो फिर ऊपर लिखी रीति से साबूदाना रांध कर दूध डाल दो और गर्म करो जब आधा रह जाय उतार लो थोड़ा गर्म रहते ही रोगी को खाने को दो। रोगी की परिपाक-शक्ति क्षीण हो तो साबूदाना बहुत गाढ़ा नहीं करना चाहिये।

४—**दूध अरारोट**—एक तो० अरारोट लेकर १॥ छटाँक पानी में अच्छी तरह मिलाओ फिर गर्म दूध धीरे २ इस में मिलाते जाओ और हिलाते रहो फिर ३,४ मिनट अग्नि पर गर्म करके काम में लाओ।

५—**चांवलों का पानी**—आधी छटांक चांवल ४ किसमिस, १ एक सेर पानी, चांवलों को अच्छी तरह धोकर किसमिसों के टुकड़े २ करके फिर पानी के साथ १ घंटे तक पकाओ फिर कपड़े में छान कर ठंडा होने पर रोगी को पिलाओ ।

६—**चांवलों का मांड**—१ छटांक पुराने महीन चांवल आध सेर पानी दो अंगुल लम्बी दालचीनी और चीनी ज़रूरत के माफ़िक चॉवलों को अच्छी तरह धोकर पानी चीनी और दालचीनी के साथ आंच पर चढ़ाकर पकाओ धीरे २ चम्मच से चलाते भी रहो फिर बर्तन का मुंह ढक कर धीमी आंच पर एक १ घण्टा तक रखे रहने दो चाँवल कोमल मांड की तरह के होने पर दालचीनी को निकाल कर फेंकदो फिर सब को चम्मच से अच्छे प्रकार से मिलाकर काम में लावें ।

७—**दूध सूजी**—आध सेर दूध आँच पर चढ़ाकर १ उफान दो और धीरे २ करके आधी छटांक सूजी धीरे २ करके डालदो और धीरे २ चम्मच से चलाते रहो कुछ गाढ़ा होने पर चीनी या मिश्री मिलादो । दूध मिलाने से पहले सूजी को थोड़े घी में भून लेने से गंध और स्वाद दोनों सुन्दर होते हैं ।

८—**सूजी की रोटी**—सूजी को गूंद कर खूब खौलते हुए गर्म पानी में १ घण्टे तक भीगने दो बाद को

निकाल कर फुलका रोटी बनालो। यह बहुत शीघ्र पच जाती है।

नये ज्वर में पथ्यापथ्य

नवीन बुखार में जब तक दोष का परिपाक न हो तब तक उपवास (भूखा) रखना। बुखार पचने पर मिश्री, बतासा, अनार, कसेरू, मुनक्का, सिंघाड़ा, परमल, पानी का साबूदाना, अरारोट।

पानी गरम कर ठंडा होने पर देना।

कफ, वात कफज और सन्निपात में ठंडा पानी नहीं देना किन्तु गुनगुना।

ज्वर छोड़ जाने के २-३ दिन बाद, पुराने चाँवल का भात, मूंग मसूर की दाल, कटु-तिक्त-रस युक्त तरकारी का भोजन।

सन्निपात में भी ऐसाही पथ्य देना।

यदि रोगी बहुत दुर्बल हो तो एक उफान का दूध, मूंग, मसूर, या लघु पाक पदार्थ और थोड़ी मृतसंजीविनी सुरा दूध में मिलाकर देना।

नवीनज्वर में—भात, सब प्रकार के गुरु पाक और कफवर्द्धक—द्रव्य भोजन, तेल—मर्दन, व्यायाम, परिश्रम, मैथुन, स्नान, दिवा-निद्रा अतिक्रोध, शीतल जलपान और हवा में फिरना आदि अनिष्टकारक हैं।

जीर्णज्वर और विषमज्वर में

अधिक बुखार रहने से, साबूदाना· अरारोट· देना। ज्वर अधिक न हो तो दिन को पुराने चाँवल का भात, मूंग, मसूर की दाल, परवल बैंगन, गूलर, मूली, एक उफान का दूध मीठा डाल कर देना। और गरम पानी ठंडा कर देना। कागज़ी नींबू का रस मिला कर देना। रात को साबूदाना या मूंग की दाल और रोटी का वक्कल देना योग्य है।

निषिद्ध कर्म—घृतपक्व आदि गुरु पाक द्रव्य भोजन, दिन को सोना, रात को जागना, अधिक परिश्रम, ठंडी हवा में फिरना, मैथुन और स्नान नहीं करना चाहिये पर जिस रोगी को वाताधिक्य या पित्ताधिक्य का ज्वर हो और स्नान न करने से तकलीफ़ मालूम हो तो गरम पानी ठंडा कर थोड़े पानी से स्नान कराना अथवा गरम पानी में अंगोछा भिगोकर बदन पोछना।

२—तिल्ली और जिगर में भी जीर्णज्वर की तरह पथ्य रखना। साधारण दूध न देकर २-४ पीपल डाल कर दूध औटा कर देना।

३—ज्वरातिसार।

बच्च रहने पर उपवास, फिर अनार का रस, धान के लावा का मण्ड, जौका मण्ड, सिंघाड़े की लपसी· अरारोट। दुर्बलावस्था में हलका भोजन। शक्ति के अनुसार पुराने

चाँवल का भात, मसूर की दाल. बैंगन, गूलर, केले की तरकारी, बकरी का दूध, अनार और कच्चा बेल भूनकर खाना, गरम पानी ठण्डा होने पर देना।

ज्वरातिसारे निषिद्ध कर्म

गुरुपाक, तीक्ष्ण वीर्य्य द्रव्य, गेहूँ, उड़द, जौ, चना, अरहर, मूंग, शाक, गुड़, मुनक्का आदि दस्तावर चीज़ें अधिक निमक. लाल मिर्च, अधिक पानी, धूप, तापना, तेल–मर्दन, स्नान, व्यायाम, रात्रि जागरण और मैथुन।

४–अतिसार (दस्त)

अपक्क में उपवास, दुर्वलावस्था में धान के लावा के सत्त् पानी से पतला कर देना या पानी का साबूदाना, अरारोट. सिंघाड़े के आटे की लपसी भात का मांड।

कटैया, वरियारा, गोखुरू, वेल की गूदी, सोंठ और धनिया के काढ़े के साथ यवागू देना।

गरम पानी ठण्डा कर पीने को देना, अधिक प्यास हो तो बार २ पानी न दे धनिया या खस को पानी में औटा कर देना।

पक्वातिसार में महीन चावल का भात, मसूर की दाल, परवल, वैंगन, गूलर, केला आदि की तरकारी।

चूने के पानी के साथ अथवा अतिसार नाशक औषधि के साथ औटा कर दूध देना।

अतिजीर्ण अतिसार में केवल दूध ही देना। रक्तातिसार में गौ दूध के बदले बकरी का दूध विशेष उपकारी है।

बेल का मुरब्बा-अनार, कसेरू, सिंघाड़ा, भी दे सकते हैं।

निषिद्ध—जो ज्वरातिसार में किया है वही। यदि रोगी बलवान् और ज्वर रहित हो तो गरम पानी ठंडा कर स्नान करा सकते हैं।

५—प्रवाहिका-(लगातार दस्त आना)

अतिसार की तरह पथ्य देना, ज्वर न रहने पर मट्ठा भी दे सकते हैं।

६—संग्रहणी

अतिसार की तरह पथ्य तथा दही, मट्ठा, यवागू विशेष कर देना।

७—अर्श (बवासीर) पर

पुराने चावल का भात, मूंग, चना, कुलथी, परवर, गूलर, मूली, कच्चा पपीता, केले का फूल, सैंजने की फली की तरकारी, दूध, घी, मक्खन, घृतपक्व पदार्थ, मिश्री, किशमिश, पक्का पपीता, नदी में स्नान, साफ़ हवा में टहलना।

निषिद्ध भुना सिका पदार्थ, गुरुपाकद्रव्य, दही पिट्ठी के पदार्थ, उड़द, सेम, लौकी, धूप या

अग्नि की गर्मी, पूर्वदिशा में वायु का सेवन, मलमूत्र का वेग धारण, मैथुन, घोड़ा आदि की सवारी, कड़े आसन पर बैठना।

८—अग्निमान्द्य और अजीर्ण

अजीर्ण की प्रथमावस्था में उपवास फिर अरारोट, जौ का मांड, सिंघाड़े की लपसी फिर बल की वृद्धि होने पर, दिन को पुराने चावल का भात, मसूर की दाल, परवल, बैंगन, कच्चे केले की तरकारी, मट्ठा, कागज़ी नींबू का आहार। रात को साबूदाना और बेल का मुरब्बा, अनार, मिश्री।

पानी भोजन के २,३ घन्टा बाद देना, सवेरे बिछौना से उठते ही थोड़ा ठन्डा पानी पीना इस को उषा पान कहते हैं।

निषिद्ध—घृतपक्क द्रव्य, मांस, पिट्ठी के पदार्थ, गुरु-पाक तीक्ष्ण वीर्य भुजा—सेंका—कड़ा, उड़द, गुड़, दूध दही, घी, खोवा, मलाई, मुनक्का आदि दस्तावर वस्तु अधिक निमक लाल मिर्च, मैथुन नहीं करना।

९—विसूचिका-हैज़ा।

पीड़ा की प्रबल अवस्था में उपवास, भूंख लगने पर सिंघाड़े की लप्सी, अरारोट या साबूदाना पानी में देना, नींबू का रस, भूंख लगने पर पुराने चावल का मांड फिर पुराने चावल का भात, मसूर की दाल का जूस देना।



अजीर्ण की तरह है।

१०-कृमि रोग

पुराने चावल का भात, परवर, करेला, बकरी का दूध, साबूदाना, अरारोट।

निषिद्ध — उड़द, दही, दिवा-निद्रा, मलमूत्र का वेग रोकना।

११-पांडुकामला

जीर्णज्वर और यकृत की तरह।

१२-रक्त-पित्त

पहिले उपवास, फिर घी, शहद और धान का लावा, पिण्डखजूर, किशमिश, फालसा इन का काढ़ा चीनी मिला कर देना। पञ्चमूल का काढ़ा पाचनशक्ति हो जाने पर दिन को पुराने चावल का भात, मूंग, मसूर चने की दाल का जूस, परवल, गूलर, पक्का सफेद कोहड़ा, करेला, बकरी का दूध, खजूर, अनार, सिंघाड़ा, किशमिश, आँवला, मिश्री। रात को गेहूँ या जौ के आटे की रोटी पूड़ी, सूजी। (गरम पानी ठन्डा कर पीना)

निषिद्ध — गुरुपाक तीक्ष्णवीर्य्य, दही तेल, लालमिर्च अधिक निमक, मेम, आलू, उड़द की दाल व्यायाम, धूप, ओस, ज़ोर से बोलना, मैथुन, सवारी पर चढ़ना। बुखार न हो तो गरम पानी शीतल कर स्नान करना।

१३—राजयक्ष्मा

रोगी का अग्नि बल क्षीण न हो तौ दिन को पुराने चावल का भात, मूग की दाल, परवल, बैंगन, गूलर, सेंजन का डंडा, पुराना सफेद कोहड़ा, तरकारी, घृत से बघार, सेंधानिमक डाल कर देना।

रात को जौ या गेहूँ के आटे की रोटी, मोहनभोग, थोड़ा गोदुग्ध कफ के प्रकोप में दिन को भात न दे। रोटी देना। अग्नि बलक्षीण हो तौ दिन को भात या रोटी रात को थोड़ा दूध, सागूदाना, अरारोट देना। बहुत जीर्णा-वस्था में जौ २ तो० कुलथी २ तो० पानी ६६ तो० में औंटा देना २४ तो० रहने पर ३ तो० घी हींग, पीपल का चूर्ण और सोंठ से छौंक कर थोड़ी देर पकाना फिर अनार का रस डाल पका कर देना। गरम पानी ठंडा कर पिलाना, शरीर कपड़े से ढका रखना।

निषिद्ध ओस में बैठना, आग तापना, रात को जागना, चिल्ला कर बोलना, घोड़ा की सवारी पर चढ़ना, मैथुन, मलमूत्र का वेग रोकना, कसरत, पैदल चलना श्रमजनक कार्य करना, धूम्रपान, दही, लालमिर्च, अधिक नोन, सेम, मूली आलू, उड़द, शाक अधिक, हींग, प्याज, लहसन नहीं खाना जिस काम से मन में काम वेग हो उस से अलग रहना।

१४—कास

रक्तपित्त और राजयक्ष्मा की तरह।

१५--हिचकी और सांस

जिस प्रकार के आहार विहार से वायु का अनुलोमन हो वह पथ्य देना। रक्तपित्त का आहार भी करा सकते हैं। वायु का उपद्रव अधिक हो तो पुरानी इमली भिगा या पानी पीने से उपकार होता है मिश्री के शर्वत में नीबू का रस मिला कर पीना, कफ के आधिक्य में शर्वत न पीना

निषिद्ध गुरुपाक तीक्ष्णवीर्य, दही, मिर्च, शोक, क्रोध आदि का त्याग।

१६--स्वरभेद

वातजस्वरभेद में घृत और पुराने गुड़ के साथ अन्न भोजन कर थोड़ा गरम पानी पीना।

पित्त-जस्वरभेद में दुग्धान्न भोजन और मेदोज तथा कफज-स्वरभेद में रूक्ष अन्न-पान उपकारी है, अन्य कास श्वास की तरह।

१७--अरुचि

लघुपाक भोजन देना. अच्छी नदी में स्नान, उपवन में घूमना, गीत सुनना. जिस से मन प्रसन्न रहे वही काम करना, भोजन वस्त्र, स्थान साफ़ होना चाहिये।

निषिद्ध जिस से मन में ग्लानि हो वह काम न करना।

१८--छर्दिवमन।

पहिले उपवास, वमन का वेग शान्त होने पर लघु-पाक, वायु अनुलोमक और रुचिकर आहार देना। भुंजे

मूंग के साथ धान के लावा का चूर्ण शहद और चीनी मिला कर देना। इस से वमन, भेद, ज्वर, दाह और प्यास शान्त होती है। शेष अरुचि के पथ्यापथ्य के समान।

१६-तृष्णा (प्यास)।

रुचिजनक, मधुररस विशिष्ट और शीतल द्रव्य तृष्णा रोग में सुपथ्य है उग्रवीर्य और शारीरक उद्वेग कारक तृष्णा रोग में त्याग देना।

२०-मूर्च्छा आदि।

पुष्टिकर और बलकारक आहार देना। दिन को पुराने चांवल का भात, मूंग, मसूर, चना और उड़द की दाल, गूलर, परवल सफेद कोहड़ा, वैंगन, केले के फूल की तरकारी मक्खन, मट्ठा, दही दाख, अनार, पक्का आम पक्का पपीता शरीफा, कच्चा नारियल। रात को पूड़ी रोटी, मोहन भोग, मिठाई खुरमा दूध घी, मैदा, सूजी और घी से बनाई हुई वस्तु खाने को देना, सवेरे धारोष्ण दूध और शर्बत देना, तिल तेल मर्दन, वहती नदी में न्हाना, साफ हवा और चन्द्र-किरन सेवन, संतोषजनक बातें, गीत सुनना और जिस से मन स्थिर रहे वही सब करना।

निषिद्ध गुरुपाक तीक्ष्णवीर्य, रुक्ष-अम्ल-द्रव्य भोजन, मेहनत का काम करना, चिन्ता भय शोक क्रोध, मानसिक, उद्वेग, मद्यपान, रात दिन वैठे रहना, धूप में वैठना और आग तापना, इच्छा के प्रतिकूल कार्य

करना, घोड़ा आदि की सवारी पर चढ़ना, मलमूत्र, तृष्णा निद्रा, क्षुधा आदि का वेग रोकना, रात का जागना, मैथुन और दातुन करना इस रोग में अनिष्ट है।

२१-उन्माद [शराब पीने से]

वातिकमदात्यय में स्निग्ध और उष्ण भात, खट्टा नमक युक्त-द्रव्य उपकारी है, ठंठा पानी पीना।

पैत्तिक में, चीनी मिला या मूंग का जूस, शीतल जल से स्नान और चन्दनादि शीतल द्रव्य अनुलेपन स्त्री का आलिङ्गन।

कफज में पहिले उपवास फिर कफशान्त कारक भोजन गरम पानी पीने को और स्नान न करना ही अच्छा है।

२२-दाह।

पित्तनाशक द्रव्य भोजन तिक्त वस्तु खाना अच्छा है मूर्च्छा रोग में वर्णित भोजन और ज्वर न रहने पर सब आहार देना ठंडे पानी से न्हाना, शीतल-जलपान चीनी का शर्वत, गन्ने का रस और दूध माखन खाना।

मूर्च्छा रोग में जो सब आहार-विहार मना है दाह रोग में भी वही सब त्याग करना।

२३-उन्माद [पागलपन मानसिक रोग]

जिस आहार-विहार से वायु शान्त हो, पेट साफ़ रहे और शरीर चिकना हो-वही रस आहार विहार उन्माद रोगी का पथ्य है। उन्माद रोगी को पानी और

अग्नि के पास या किसी ऊंचे स्थान पर रखना उचित नहीं, शेष मूर्च्छा-रोग की तरह।

२४—मृगी हिस्टीरिया

में मूर्च्छा और उन्माद की तरह—

२५—वात-व्याधि

वात-व्याधि मात्र में स्निग्ध और पुष्टिकर आहार करना मूर्च्छा रोग में जो पानाहार कह आये हैं वही सब द्रव्य भोजन कराना स्नान भी मूर्च्छा रोग की तरह कराना।

केवल *पक्षाघात* (लकवा) में कफ का संश्रव रहने से अथवा और कोई वात-व्याधि में कफ का उपद्रव या ज्वरादि हो तो गरम पानी से कभी २ स्नान करना मूर्च्छा रोग में जो निषिद्ध है वही वात-व्याधि में भी।

२६---वात रक्त

दिन को पुराने चावल का भात मूंग चने की दाल परवल, गूलर, करेला, सफेद कोहड़ा, रात को पूड़ी, रोटी, मीठा कम खाना, और दूध भी थोड़ा ही पीना, तरकारी घी में बना कर खाना।



नये चावल का भात, गुरुपाक द्रव्य, अम्लपाक द्रव्य, मद्य, मटर, गुड़ दही, अधिक दूध, तिल, उड़द, मूली, खट्टा लाल कुहड़ा (कद्दू) आलू, प्याज़, लहसन, लाल मिर्च, अधिक मीठा, मलमूत्र का वेग रोकना, आग के पास या धूप में बैठना, कसरत, मैथुन, क्रोधादि दिन में सोना उचित नहीं।

२७—उरुस्तम्भ (जाघों का जकड़ जाना)

दिन को पुराने चावल का भात, कुलथी, मूंग, चना, मसूर की दाल, परवल, गूलर, करेला, बेंगन, लहसन, अदरख, रात को पूड़ी रोटी ऊपर कही तरकारी, घी, मैदा सूजी थोड़ी चीनी मिलाई चीज़ें मोहन भोग, मिठाई आदि। जलपान में किशमिश, छुहारा, खजूर आदि कफ-नाशक और वायु-विरोधी फल खाने को देना (गरम पानी ठंडा कर पीने को देना) स्नान नहीं करना, विशेष आवश्यकता पर गरम पानी से स्नान कराना।

निषिद्ध गुरुपाक, कफजनक द्रव्य, गुड़, दही, उड़द, पिट्ठी के पदार्थ अधिक आहार और मलमूत्र का वेग रोकना, दिन में सोना, रात को जागना, ओस में फिरना उचित नहीं।

२८—आम-वात

उरुस्तम्भ के समान पथ्यापथ्य करना गरम पानी से भी स्नान नहीं करना, रुई और फलालैन से दर्द के स्थान को बांधना, ज्वर हो तो भात बन्द कर सूखी रोटी और साबूदाना आदि हल्की गिज़ा (भोजन) देना।

२९—शूल-रोग

पीड़ा की प्रबल अवस्था में अन्नाहार बन्द कर दिन को दूध, सागूदाना, रात को दूध और धान का लावा देना।

पित्तज-शूल में जी मचलाना, ज्वर, दाह, प्यास हो तो शहद मिला कर जौ की लपसी देना।

पीड़ा के शान्त होने पर दिन को पुराने चांवल का भात, परवल, बैंगन, गूलर, सफेद कुहड़ा, सैजन का डंडा करेला, केले का फूल, आंवला, कसेरू, दाख, पक्का पपीता, नारियल, बेल, गरम दूध, तरकारी में सेंधानिमक हींग। रात को जौ की लप्सी, दूध साबूदाना, जलपान में पेठे का मुरब्बा, गरी की बरफी, आंवले का मुरब्बा देना।

निषिद्ध गुरुपाक द्रव्य, अधिक भोजन, दही मछली और शीतल द्रव्य, अम्लद्रव्य, लाल मिर्च शराब, धूप में फिरना, परिश्रम, मैथुन, शोक, क्रोध, मल-मूत्र का वेग रोकना और रात्रि जागरण उचित नहीं।

२०—उदावर्त (मलों के रोकने से पीड़ा पर)

वायु-शान्ति कारक अन्न-पानादि आहार। पुराने चावल का गरम भात घी मिला कर खाना। मिश्री का शरबत, कच्चे नारियल का पानी, पक्का पपीता, शरीफ़ा, अनार बीदाना रात को भी यही आहार देना। भूख अच्छी तरह न हो तो दूध साबूदाना, जौ की लप्सी।

निषिद्ध देर में हज्म होने वाला पदार्थ उष्णवीर्य रुक्ष-द्रव्य, रात्रि-जागरण, परिश्रम, कसरत, पैदल चलना, क्रोध, शोक आदि मनोविघात कार्य अनिष्ट हैं।

२१—गुल्म

वायु शान्तिकारक द्रव्यों का खाना, पित्तज और कफज गुल्म में जो सब द्रव्य पित्त और कफ का अनिष्ट-

कारक नहीं है तथा वायु शान्तिकारक है ऐसा आहार देना, दिन को पुराने चावल का भात, घी आदि रात्रि को रोटी मोहन भोग, दूध, कच्चे नारियल का पानी, मिश्री का शरबत, पक्का पपीता, पक्का आम, शरीफ़ा। पेट साफ़ रखना इस रोग में विशेष उपकारी है।

निषिद्ध अधिक परिश्रम पथपर्यटन, रात्रि-जागरण धूप में फिरना मैथुन और वायु कुपित करने वाले आहार का सेवन न करे।

३२—हृद्रोग

स्निग्ध पुष्टिकर और लघु आहार, हृद्रोग में देना यदि ज्वर न हो तो वातव्याधि की तरह पथ्यापथ्य करना छाती के दर्द में रक्त पित्त और कासरोगोक्त पथ्य देना।

निषिद्ध रूक्ष वायुवर्द्धक द्रव्य भोजन, उपवास, परिश्रम, रात्रि जागरण, अग्नि और धूप में बैठना और मैथुन न करना उचित है।

मूत्रकृच्छ्र मूत्राघाते

(पेशाब रुक कर आने में)

स्निग्ध और पुष्टिकर आहार, दिन को पुराने चावल का भात, बैंगन, परवल गूलर, केले का फूल, कागज़ी नींबू, रात को पूड़ी, रोटी, मोहन भोग, दूध और थोड़ा मीठा। जलपान में मक्खन, मिश्री, तरबूज़ और पक्का मीठा फल, दूध की लस्सी, मिश्री का शरबत।

निषिद्ध रुक्ष, गुरु और अम्लद्रव्य, दही, गुड़, उड़द की दाल, लाल मिर्च, मैथुन, घोड़े की सवारी, कसरत, मलमूत्र का वेग रोकना, शराब पीना, चिन्ता, रात्रि जागरण ठीक नहीं।

३४—पथरी

मूत्र–कृच्छ्र रोग में जो पथ्य कहा है अश्मरी में भी वही पालन करना।

३५—प्रमेह

दिन को पुराने चावल का भात, मूंग, मसूर, चने की दाल, परवल, गूलर, बैंगन, सेजन का डंडा, केले का फूल, केला, कागज़ी नींबू, रात को रोटी, पूड़ी ऊपर की तरकारी, थोड़ा मीठा पड़ा दूध। जलपान में ऊख-सिंघाड़ा, किशमिश बादाम, खजूर, अनार, भीगे चने थोड़े मीठे का मोहनभोग।

निषिद्ध अधिक दूध, मट्ठा, लालमिर्च, उड़द की दाल दही, गुड़, लौकी, मद्यपान, मैथुन दिन को सोना, रात को जागना धूप में फिरना, वेग धारण करना ठीक नहीं।

३६—गनोरिया-सूज़ाक

में भी प्रमेह का पथ्यापथ्य ही करना।

३७—सोम-रोग

पीड़ा की प्रबल अवस्था में दिन को भात न खाकर जौ के आटे की रोटी खाना बाक़ी प्रमेह की तरह।

३८—ध्वजभंग शुक्रतारल्य

पुष्टिकारक आहार पुराने चावल का भात मूंग मसूर चने की दाल, आलू, परवल, गूलर, बैंगन, गोभी शलगम, गाजर घी में पकाई तरकारी रात को पूड़ी, रोटी दूध और मीठा।

जलपान में घी, चीनी, सूजी, बेसन की वस्तु, खाजा, खुरमा और मोहन-भोग तथा बीदाना, बादाम, किशमिश, खजूर, अंगूर, आम, कटहल, पपीता।

निषिद्ध अधिक निमक, लाल मिर्च, खटाई, आग, धूप लगना, रात्रि-जागरण, शराब, मैथुन अधिक परिश्रम अनिष्ट है।

३९-मेदरोग

दिन को सवां चाँवल का भात अभाव में महीन चांवल का भात, गूलर, केला, बैंगन, परवल, पुराने सफेद कोहड़ा की तरकारी, कागज़ी, जौ के आटे की रोटी मीठे में मिश्री, स्नान न करना, परिश्रम, चिन्ता, रात्रिजागरण, व्यायाम और मैथुन उपकारी है।

निषिद्ध- कफवर्द्धक और स्निग्धद्रव्य. दूध, दही, मक्खन, केला, पुष्टिकर द्रव्य अच्छे विस्तर पर लेटना उचित नहीं।

४०-उदररोग।

लघुपाक, अग्निवृद्धि कारक आहार करना उचित है पीड़ा की प्रबल अवस्था में केवल मान मण्ड अभाव में

दूध साबूदाना पीड़ा शान्त होने पर दिन को पुराने चांवल का भात, मूंग की दाल का जूस, परवल, वैंगन, गूलर, सेंजन का डंडा, मूली, अदरख।

रात को दूध सागूदाना अधिक भूख हो तो २,१ पतली रोटी और गरम पानी (गुनगुना) पीना उचित है।

निषिद्ध- पिट्ठी आदि के गुरुपाकद्रव्य, तिल, दिन में सोना, परिश्रम ठीक नहीं।

४१-शोथ

में उदर रोग के समान—

४२-कोषवृद्धि।

दिन को पुराने महीन चांवल का भात, मूंग, मसूर, चना, अरहर की दाल, परवल, वैंगन, आलू, गाजर, गूलर, करेला, सेंजन का डंडा, अदरख, लहसन आदि की तरकारी। रात को रोटी, पूड़ी और थोड़ा दूध गरम पानी ठंडा कर पीना, सर्वदा लंगोट बांधना।

निषिद्ध- नये चांवल का भात, गुरुपाकद्रव्य, दही, उड़द, पक्का केला, अधिकमीठा, शीतल जलपान, भ्रमण दिन में सोना, मलमूत्र का वेग धारण करना, स्नान, अजीर्ण रहने पर भोजन, तेल लगाना अनिष्ट है।

४२-गलगण्डमाला और श्लीपद में

भी कोषवृद्धि के समान पथ्यापथ्य करना।

४३-फोड़ा वा घाव में।

दिन को पुराने चाँवल का भात, मूंग, मसूर, परवल, बैंगन, गूलर, केला, सेंजना का डंडा। रात को रोटी, गरम पानी ठंडा कर पीना।

निषिद्ध कफजनक और गुरुपाकद्रव्य, दूध, दही, पिट्ठी, दिन को सोना, रात को जागना, स्नान, मैथुन, घूमना और व्यायाम।

४४-भगन्दर

में विद्रधि की तरह पथ्यापथ्य करना।

४५-उपदंश।

दिन को अरहर की दाल बाक़ी विद्रधि के समान और रात को रोटी, हलका भोजन।

निषिद्ध मीठा, शीतलद्रव्य, दूध, मैथुन व्यायाम और स्नान।

४६-कोढ़।

वातरक्त रोग में कहे पथ्यापथ्य करना कुष्ठरोगी से दूर रहना सोना और उस के कपड़े पहरना तथा उस की श्वांस तक लेना उचित नहीं।

४७-शीतपित्त।

तिक्तरसयुक्त द्रव्य भोजन कच्ची हलदी और नीम के पत्ते का भोजन करना शेष वातरक्त की तरह गरम पानी से स्नान वा गरम कपड़े पहरना।

४८-अम्लपित्त

वातज अम्लपित्त में चीनी और शहद के साथ धान का लावा यव और गोधूम का माँड आदि लघुपथ्य इस में देना।

निषिद्ध गुरुपाकद्रव्य अधिक निमक, मीठा, तीक्ष्ण वीर्य दिवानिद्रा, रात्रिजागरण, मैथुन और मद्यपान।

४९-विसर्प और विस्फोट [चकत्ते]।

वातरक्त और कुष्ठरोग में लिखित पथ्यापथ्य करना।

५०-रोमान्ती और मसूररिका

रोग की प्रथमावस्था में भूख के अनुसार दूध साबूदाना। क्षुधा वृद्धि पर, परवल, बैंगन, कच्चा केला, गूलर, बीदाना, किशमिश, नारंगी, बदन पर मोटा कपड़ा रखना, रहने का घर साफ़ और बिछौना साफ़ रखना।

निषिद्ध उष्णवीर्य और गुरुपाकद्रव्य, तेल मर्दन और वायु सेवन करना और रोगी से दूर रहना।

५१-क्षुद्र-रोग।

रोग विशेष का दोषदुष्य विचार कर वही २ दोष के उपशम कारक पथ्य सेवन और उसी दोषवर्द्धक पथ्यापथ्य समूहों का त्याग करना।

५२-मुख-रोग।

रोगविशेष में दोष का आधिक्य विचार कर वही

दोष-नाशक पथ्य देना साधारणतः कफनाशकद्रव्य मुख रोग में उपकारक है।

५३-कर्ण-रोग।

कर्णरोग समूहों के दोष का आधिक्य विचार कर पथ्यापथ्य स्थिर करना वधिरता आदि वायु प्रधान कर्ण रोग में वातव्याधि की तरह और कर्णपाक कर्णश्राव आदि श्लेष्म-प्रधान रोग में आमवातादि पीड़ा की तरह पथ्यापथ्य करना।

५४—नासा-रोग

पीनस प्रतिश्याय आदि कफ प्रधान रोगों में कफ शान्तिकारक थोड़ा भी कफ का उपद्रव हो तो भात न देकर रोटी या रूखा और हलका पथ्य देना। पित्त प्रधान में पित्त नाशक नासाज्वर में अधिक रुक्षक्रिया उचित नहीं।

५५—नेत्र-रोग

अभिष्यन्द आदि रोग में लघु रुक्ष और कफ नाशक द्रव्य भोजन करना। ज्वरादि हो तो लंघन कराना उड़द, दही, गुरुपाकद्रव्य भोजन, स्नान, दिवानिद्रा, तेज़ रोशनी में देखना, अध्ययन, स्त्रीसंगम और धूप में फिरना अनिष्ट है।

दृष्टि दौर्बल्य और रतौंधी में पुष्टिकर स्निग्ध और वायुनाशक द्रव्य भोजन करना।

५६—शिरोरोग

कफज क्रमिज और त्रिदोषज शिरो रोग के सिवाय अन्यान्य शिरो रोग में वायु प्रधान रहता है अतः वात

व्याधि कथित पथ्यापथ्य देना। कफ प्रधान में रुक्ष और मधुर आहार देना तथा स्नान, दिवानिद्रा, गुरुपाक द्रव्य भोजन और कफ वर्द्धक आहार-विहार परित्याग करना।

क्रमिज शिरो-रोग में क्रमि-रोग की तरह पथ्यापथ्य करना।

५७—स्त्री-रोगे

प्रदर आदि रोग में दिन को पुराने चावल का भात, मूंग, मसूर और चने की दाल केले का फूल कच्चा केला करेला, गूलर, परवल, पुराना कुहड़ा, आदि की तरकारी रात को रोटी आदि का भोजन ३,४ दिन में गरम पानी से स्नान।

निषिद्ध-कर्म गुरुपाक कफ जनक, द्रव्य, मिठाई लालमिर्च, अधिक लवण, दूध, अग्नि संताप धूप में फिरना, ओस में बैठना, दिन को सोना, रात को जागना अधिक परिश्रम, पथपर्यटन, मद्यपान, ऊंचे स्थान पर चढ़ना, उतरना, मैथुन, मलमूत्र का वेग धारण, संगीत, ज़ोर से बोलना। रजोरोध होने से स्निग्ध क्रिया आवश्यक है। उड़द, तिल दही, कांजी इस अवस्था में उपकारी है।

५८—गर्भिणी

हल्का पुष्टिकारक रुचिकर द्रव्य भोजन करना अधिक परिश्रम या एकदम परिश्रम त्याग करना नहीं चाहिये। जिस काम से श्वांस देर तक बन्द रखना पड़े या अधिक वेग से चले या पेड़ू दबे ऐसा काम नहीं करना पैदल या तेज़ सवारी में अधिक दूर तक नहीं जाना।

सर्वदा प्रसन्न रहना—भय, शोक, चिंता, रात्रि जागरण नहीं करना। उपवास, बोझ उठाना, कठिन शय्या पर सोना, ऊंचे स्थान पर चढ़ना योग्य नहीं।

गर्भावस्था में जो रोग उत्पन्न हो पथ्यापथ्य उसी रोग का करना, गर्भिणी सूख जाने से घी आदि पुष्टकर भोजन देना।

वस्तु-परीक्षा

और

मिलावट जानने की विधियां

दूध में पानी जानने की रीति

थोड़े से दूध में दो तीन बूंद नाइट्रिक एसिड डालने से दूध और पानी अलग २ होजावेंगे।

दूसरी विधिः—

एक शीशी में असली दूध भरो दूसरे में पानी मिला दूध भरो दोनों को तौलो जिस में पानी मिला होगा वह हल्का होगा।

पानी में संखिया मिला है या नहीं, जानने की रीति।

पानी में नीलाथोथा मिला हुआ पानी डाल कर उसमें कार्बोनेट आफ़ पुटास डालना चाहिये। संखिया होगा तो नीले रङ्ग के साथ नीचे बैठ जायगा। जिस पानी में सन्देह हो उसमें चूने का अर्क डालने से नीचे चूनासा बैठे तो संखिया मिला है यह समझ लेना।

शहद की परीक्षा।

पानी के प्याले में शहद की बूंद डालो नीचे तक

बूंद जाकर ज्यों की त्यों रहे तो असली, पानी में पिघल जाय तो नक़ली समझो।

इत्र की परीक्षा

सफेद कागज़ पर इत्र की बूंद डाल कर आंच पर सेको। उड़ जाय तो सन्दली इत्र, न उड़े और दाग़ पड़ा रहे तो नक़ली समझो।

हींग की परीक्षा।

आग पर डालते ही गन्ध छूटे तो असली, देर में और कम गन्ध हो तो नक़ली समझना चाहिये।

चाय की परीक्षा।

ठण्डे पानी में चाय को डाल कर रक्खी रहने दो। थोड़ी देर बाद पानी में हलका रंग आवे तो असली, एक विचित्र तरह का रंग आवे तो नक़ली समझना चाहिये।

आटे में खड़िया या फिटकरी का मेल।

सल्फ्योरिक एसिड आटा में डालने से उफान न आवे तो असली, उफान आवे तो नक़ली समझो।

खांड में रेते का मेल।

कांच के प्याले में पानी डालकर उस में खाँड डाल कर हिलाओ—फिर रख दो। मिट्टी होगी तो नीचे बैठेगी न बैठे तो असली समझो।

तारपीन के तैल की परीक्षा।

कपड़े पर तारपीन के तेल की बूंद डालो। उड़ जाय और दाग़ बना रहे तो असली, न उड़े तो नक़ली।

असली चांदी की परीक्षा ।

असली चाँदी को हाईड्रोक्लोरिक एसिड में डालने से उफान सा आवे तो बनावटी, उफान न आवे तो असली।

रांग की परीक्षा ।

सफेद कपड़े पर रांग घिसो। यदि कपड़ पर काला दाग़ पड़े तो राँग सीसा मिला समझो। काला दाग़ न पड़े तो असली रांग।

तांबे की परीक्षा ।

तांबे पर नाईट्रिकएसिड की बूंद डालने से काला या सफेद दाग़ पड़े तो तांबे में लोहे का मेल समझो।

लोहे की परीक्षा ।

लोहे पर नाईट्रिक-एसिड डालने से सफेद दाग़ पड़ता है।

हिंगुल की परीक्षा ।

रेक्टीफाइड स्प्रिट में डालने से पिघल जाय और रङ्ग पकड़े तो बनावटी। यदि जैसा का तैसा रहे तो देशी।

यदि हिंगुल को आंच पर डालने से लहसन की सी वास आवे तो हिंगुल में संखिया का मेल समझना चाहिये।

असली केशर की परीक्षा ।

सलफ्यूरिक एसिड में डालते ही रङ्ग काला होकर लाल हो जाय तो असली और नीला रङ्ग हो तो नक़लीसमझो।

हाथीदांत की परीक्षा ।

फासफोरिक एसिड में हाथीदाँत को डाल कर फिर पानी में डुबाओ। जैसा का तैसा रहे तो नक़ली। हालत बदले तो असली समझना चाहिये।

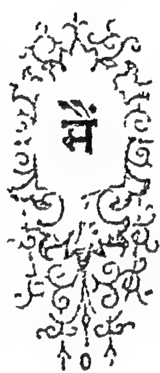


* ओ३म् *

लीजिये ॥ विज्ञापन ॥ लीजिये

हिन्दी भाषा की सर्वोपयोगी पुस्तकें जिन से दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति होती है।

प्रिय पाठकगणों तथा महिलाओ !



आप के सम्मुख अपने मुंह अपनी पुस्तकों की प्रशंसा न कर इतना ही कहना आवश्यक समझता हूं कि यदि आपको संसार के बाल-युवा और वृद्ध स्त्री पुरुषों के जीवनों को आदर्श-जीवन बनाना है, यदि उनके हृदय में गम्भीर २ विषयों का प्रवेश सरलता से करना है तो हमारी सम्पूर्ण पुस्तकों का पाठ एक वार तो अवश्य ही अपने समस्त परिवार को करा दीजिये। हमारी सम्पूर्ण पुस्तकों ने अपने रूप, लिखने के ढंग आदि गुणों की उत्तमता से 'भारत-वर्ष' में ही नहीं किन्तु ब्रह्मा, मारीशस, जावा, साउथ अफ्रीका आदि कितने ही प्रसिद्ध देशों में नाम पाया है। पबलिक की कदरदानी के कारण ही कई कई पुस्तकों के सत्रह २ तक एडीशन निकल चुके हैं कितने ही महाशयों ने उनकी काट छांट कर बीसियों पुस्तकें रच अपनी मनोकामना सिद्ध करनी चाही. पर आप जानते हैं कि असल असल ही है और नक़ली की वही दशा होती है जैसे-"हांडी काठ की चढ़े न दूजी वार" अतएव आप हमारी वात हमारे विज्ञापन की सत्यता जानने के लिये एक वार अवश्य मंगाइये, अपने इष्ट मित्रों को दिखलाइये और यदि हमारे लेखानुसार ही आप उन में गुण पावें तो अपने स्कूल और कन्या-पाठशालों में (जैसे कि कतिपय प्रान्तों में सज्जनों ने किया है) पारितोषिक देने एवं उनको पाठ-विधि में रखने का उद्योग कीजिये जिस से भारत

सन्तान विद्यारूपी भूषण से सुशोभित हो सुख का अनुभव करें और यदि हमारे लेखानुसार न हो तो उनकी हक़ीकत की समालोचना अख़बारों में छपवा कर पबलिक के धन को बचाइये ऐसा करने में ही पबलिक का धन बच सकता है और आप को उत्तम साहित्य मिल सकता है।

पुराणतत्त्वप्रकाश तीनों भाग

[नवीन शताब्दी संस्करण]

जो हाथों हाथ बिक रहा है, यदि आपने इसमें देरी की तो दूसरे एडीशन की बाट देखनी होगी।

पु० त० प्र० क्या है ?

यह ६०० पृष्ठ की पुस्तक सनातन धर्म के माननीय अठारह पुराणों की मीमांसा है जिसके पाठमात्र से पुराणों का रहस्य खुल जाता है उसके भीतरी तिलस्मातों का भयानक दृश्य स्पष्ट दृष्टि आने लगता है। इसके लिखने का ढंग इतना प्रिय और रोचक है कि यदि एक बार हाथ में ली तो विना समाप्त किये आप कभी न छोड़ेंगे। स्त्रियां और पुत्रियों के लिये यह बड़े काम की है क्योंकि स्त्रियां ही पुराणों के लेखों पर मोहित होकर तन, मन धन न्यौछावर कर पुरुषों को भी वैदिक सिद्धान्तों से गिरा देती हैं, अतएव युवतियों तथा बहिनों को अवश्य पाठ कराइये जिस से उनका हृदय ज्ञान से पूरित हो जावे। इसके अतिरिक्त इस में बड़ा मज़ा यह है कि आप इस अमूल्य पुस्तक को बग़ल में दबा सनातनी भाइयों एवं पण्डितों से धड़ाधड़ शंका-समाधान कर अपने चित्त को शांत कीजिये इसमें मालूमात का ख़ज़ाना बहुत है, इस लिये हमारे सनातन भाइयों के लिये भी यह बड़ी उपयोगी है क्योंकि जिन्होंने अठारह पुराणों के कभी दर्शन नहीं किये उनको इस से सनातन महिमा का यथार्थ ज्ञान होता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को पाठ कर

सत्यासत्य का विचार करना चाहिये कि क्या अठारह पुराण महर्षि व्यास के बनाये हुये हैं? किताब क्या है पुराणों का पूरा चित्र इसके अंदर है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव देवी महारानी की करतून, तामस पुराणों की रचना, ब्रह्मा, विष्णु, शिव का स्त्री होना, विष्णु के कान के मैल से मधुकैटभ का उत्पन्न होना, इंद्र चन्द्र सूर्य वशिष्ठ विश्वामित्र वृहस्पति तथा शुक्र की अपार लीला, त्रिदेव के अनोखे कर्तव्यों का फोटो, कलि महात्म्य और उसके दूर करने का सरल उपाय, गङ्गा महारानी की विचित्र उत्पत्ति, गङ्गा महारानी का स्वपाप मोचन करना, राजा वेन के मरने पर उसकी भुजाओं से निषाद और पृथु का उत्पन्न होना, वृक्षों से मरीषा का जन्म, रेवती के छोटे करने की अजीब तर्कीब, राजा निमि से पुत्र का उत्पन्न होना, वलदेव जी का मदिरा पान कर यमुना जी का खींचना, वल के शरीर से सोना चाँदी आदि का उत्पन्न होना, राजा सगर की रानी के साठ हज़ार पुत्रों का उत्पन्न होना, देवताओं से वृक्षों ब्रह्मा जी के कान से दिशाओं की उत्पत्ति, राजा का हिरणी के साथ वार्त्तालाप, मनु की पुत्री का पुत्र हो जाना, कचका टुकड़े कर राक्षसों का खाना, फिर उसे जीवित निकालना, हिरणी की पेट से शृङ्गी ऋषि का, राजा की कोख से पुत्र का जन्म जन्तु नाम पुत्र की चर्बी से हवन कर उससे रानी के पुत्र का होना इत्यादि बातो के उरान्त गणेश महाराज की अद्भुत उत्पत्ति और मृतक श्राद्ध आदि २ का बड़ी खूबी से वर्णन है। प्यारे पाठको! एकवार अवश्य इसका पाठ कर अक्षय सुख का अनुभव कीजिये, तिसपर तीनों भागों का मूल्य २) रु० डा० व्य० ॥=)

पुराणतत्वप्रकाश

के लिये लोगों की सम्मतियां।

श्री १०८ स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी और स्वर्गवासी श्री ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी सरस्वती—

इस पुस्तक के नाम से ही इस का रहस्य विज्ञ पाठकों को

ज्ञात हो सकता है महाशय ·····जी की लेखशैली कैसी उत्तम होता है. इसका परिज्ञान इनके बनाये नारायणी-शिक्षादि ग्रन्थों से पाठकों को अवश्य हो ही चुका है। पुराणों के पर- ताल की आवश्यकता थी इस शुभ-कार्य का आरम्भ भी उक्त महोदय द्वारा हो गया है। हम वाचकवृन्द से सानुनय साग्रह निवेदन करते हैं कि इस पुराणतत्व को मंगाकर इससे लाभ उठावें और ग्रन्थकर्ता महानुभाव के श्रम को सफल करें ताकि ग्रन्थकर्ता का उत्साह बढ़े और अन्य उत्तमोत्तम ग्रन्थ निर्माण द्वारा ग्रन्थकर्त्ता वाचकवृन्द की सेवा कर सके।

वा० फूलचन्द जी वेङ्कर वा मंत्री आ०स०नीमच-

आपका पु० त० प्र० नामक पुस्तक जैसा सुनते थे, वैसा ही पाया। इस बहुमूल्य पुस्तक में आपने पुराणों का खण्डन ही नहीं किया किन्तु उस में "वेदप्रतिपादक" प्रकरण देकर पुस्तक को परमोपयोगी बना दिया है। पुस्तक क्या है मानो १८ पुराण के स्वरूप देखने का दर्पण है। मू० २) अधिक नहीं है। मैं आपके इस परोपकारी कार्य की प्रशंसा करता हुआ अनेकशः धन्यवाद देता हूं।

सर्दारनी सदाकौर रसूलपुर बहरायच-

यह बहुत उत्तम तरीके में लिखी गई है। १८ पुराणों का निचोड़ इस में लिख दिया है। चूंकि लोगों को पौराणिक भाइयों से बहुत वास्ता पड़ता है, इस लिये सर्व साधारण वा आर्य भाइयों को एक एक पुस्तक अवश्य ही अपने पास रखनी चाहिये।

इसके अतिरिक्त वा० गूजरमल जी गुप्त, भारतीभवन फीरोज़ाबाद, श्री० दुलीचन्द विशनपुर गोरखपुर, श्री कन्हैया- लाल जी पटवारी राजलपुर मैनपुरी, आदि आदि अनेक महाशयों के प्रशंसायुक्त पत्र आ चुके हैं।

है। पुस्तक में स्वामी जी के साधारण चरित्र के अतिरिक्त उनके शास्त्रार्थ, उनके धर्मोपदेश और उनके ग्रन्थ-निर्माण आदि की भी बातें हैं। पुस्तक बड़े बड़े कोई ८०० पृष्ठों में समाप्त हुई है। टाइप अच्छा, कागज़ मोटा है। स्वामी जी, पं० लेखराम जी और पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी के हाफ़टोन चित्र भी पुस्तक में हैं। इस पर भी इतनी बड़ी पुस्तक का मूल्य सिर्फ १) है। महात्माजन चाहे जिस देश, जाति धर्म और सम्प्रदाय के हों उनका चरित्र पढ़ने से कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही होता है। जो ऐसा समझते हैं उन्हें स्वामी जी का चरित्र भी पढ़ना और अपने संग्रह में रखना चाहिये। आदि आदि।

श्री पं० भवानीदयाल जी

सम्पादक हिंदी—जेकोन्स—नेटाल साउथ अफ्रीका

वर्तमान भारत के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती के विस्तृत जीवन-वृत्तान्त का यह तृतीय संस्करण है इस में महर्षि के एक भव्ययोगासनारूढ़ चित्र के अतिरिक्त धर्मवीर पं० लेखरामजी और पण्डित गुरुदत्त के चित्र भी सुशोभित हैं। प्रवासी भारतीयों को महर्षि दयानन्द का परिचय देना मानो दिवस के मध्यान्ह काल में दीपक का प्रकाश करना है प्रत्येक धर्म और प्रत्येक सम्प्रदाय के भारतवासी उनके पुनीत नाम से परिचित हैं। महर्षि दयानंद उस समय संसार के रंग मंच पर आये जिस समय संसार के अधिकांश प्राणी प्रकृतिवाद से तबाह हो रहे थे। महर्षि दयानन्द ने परमात्मा प्रकृति और जीवात्मा का सच्चा ज्ञान प्रकाश कर मानव जाति का जो कल्याण किया वह भारतवर्ष के ही नहीं प्रत्युत संसार के इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में सदैव अङ्कित रहेगा। अहा! उस महान् पुरुष के आत्मिक बल पर तो ज़रा विचार कीजिये जबकि भारत के भिन्न २ सम्प्रदायों और पंथों के तीस करोड़ मनुष्य एक ओर खड़े होते हैं और उनके अंध-श्रद्धा और

अंध-विश्वास पर प्रहार करके वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता के प्रचार के अभिप्राय से दूसरी ओर खड़ा होता है एक लंगोटबन्द सन्यासी! अतएव ऋषि दयानन्द जी की जीवनी संसार के धार्मिक इतिहास में एक अपूर्व घटना और आर्य जाति की एक अमूल्य सम्पत्ति है। हमने महर्षि के अनेक जीवन पढ़े किन्तु तिलहर ज़िला शाहजहांपुर यू०पी० निवासी

श्री० मुंशी चिम्मनलाल जी कृत

सरस्वतीन्द्र जीवन अति उत्तम है इसमें श्री पण्डित लेखराम जी लिखित जीवन-चरित्र की प्रायः सभी बातें आगई हैं तथा अन्य कतिपय ज्ञातव्य घटनायें भी संकलित हैं। लेखक ने इसे अत्यन्त परिश्रम से लिखा है भाषा भी सरल और रोचक है। छपाई आदि भी अच्छी है और यह बृहद्ग्रन्थ इस योग्य है कि प्रत्येक गृहस्थ के गृह की शोभा बढ़ावे।

श्री पं० विष्णुलाल जी एम्० ए० सबजज—

मैने आप के छपाये **सरस्वतीन्द्र जीवन** को पढ़ा। पं० लेखराम जी स्वर्गवासी के संगृहीत चरित्रों को छोड़ शेष अब तक जितने छपे हैं उनसे इसमे अधिक हाल पाये। वास्तव मे आपने उर्दू के सारगर्भित लेखो की (जिन के आनन्द से बिना उर्दू जानने वाले वञ्चित रहते थे) भाषा कर के बड़ा उपकार किया है। मैं समझता हूं कि आप ने इस इतिहास के लिखने मे श्री स्वामी जी के कार्यकाल को यथाक्रम रक्खा है। पुस्तक की छपाई अति सुन्दर है और चित्र भी सर्वाङ्ग उत्तम हैं। मूल्य ४≠) अधिक नही है। मैं आप को इस कार्य्यपूर्त्ति का धन्यवाद देता हूं।

श्रीमान् ठाकुर गिरवरसिंह साहिब पूर्वोक्त अवैतनिक उपदेशक श्रीमती आ०प्र० सभा संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध-

मैंने मु० चिम्मनलाल जी वैश्य लिखित **सरस्वतीन्द्र जीवन** को देखा और ध्यान से पढ़ा और बहुधा स्थानों पर अन्य जीवनों

से मिलान किया तो जान पड़ा कि इस मे उपयोगी और लाभ-दायक अनेक घटनाओं का वर्णन किया गया है भाषा सरल प्रियचित्त को लुभाने वाली और स्त्रियों तथा पुत्रियो के समझने वाली है—

श्रीमान् पण्डित निरंजनदेव शर्म्मा उपमन्त्री

श्रीयती प्रतिनिधि सभा—

मैंने इस जीवन को विचार पूर्वक पढ़ा, बड़ा ही रोचक है। इस पर भी भाषा सरल, अनेकाल विषय इसमे ऐसे हैं जो अभी तक नागरी के जीवन-चरित्रों मे नहीं छपे। कम पढ़े मनुष्य और स्त्रियां भी भले प्रकार समझ सकती हैं। इसकी उत्तमता वास्तव में पढ़ने से ही प्रतीत होगी। सच तो यह है कि अनेक प्रकार से उत्तम और तीन मनोहर चित्रों सहित होने पर भी इस पुस्तक का मूल्य १≈) सजिल्द १॥) है। अतः मै आर्य्य पथ.लक तथा अन्यान्य श्रेष्ठ पुरुषों से सिफ़ारिश करता हूं कि एक २ जिल्द मँगा कर आप देख अपनी पुत्रियों, स्त्रियो, पुत्रों को अवश्य दिखलावें आदि २।

नवीन नये ढंग के देखने योग्य जीवन।

महाराजा दशरथ आप प्रजा का पालन पोषण, गुरु अतिथि-सेवा, दान यज्ञादि किस रीति से करते थे तथा आपने श्रीराम और रानिओं को समय २ जो सारगर्भित उपदेश किये हैं उन सब उपयोगी शिक्षाओं से यह पुस्तक परिपूर्ण है। मूल्य केवल ✓)॥

आज्ञापालक श्रीराम प्रात:काल मे राज्याधिकारी होने वाले थे पर उसी समय विपरीत समाचार को सुनकर आपके चित्त की दशा क्या हुई? धैर्य धारण कर विमाता को किन प्राही वचनों से समझाया जननी मैथिली कुमार लक्ष्मण को किस योग्यता से धैर्य्य बंधाया. जनता को उपदेश देते हुए शान्ति और स्वस्ति-

वाचन द्वारा वनयात्रा की आज्ञा देना आदि २ अनेक शिक्षाप्रद घटनाओं का वर्णन किया गया है। मूल्य ≈)

भ्रातृस्नेही लक्ष्मण

राजकुमार के हृदय में भ्राताओं के प्रति कितना असीम प्रेम और निश्चल भक्ति थी कठिन वनयात्रा में भाई का संग देना, उन के दुःख को दुःख और सुख को सुख समझना वीर कुमार लक्ष्मण ही का काम था। आपके जीवन के प्रत्येक काम से भ्रातृ-भक्ति झलकती है, उन्ही घटनाओं से यह पुस्तक चित्रित है। मूल्य ‐)

तपस्वी भरत

श्री राम के वन-गमन पर आप का विलाप करना निज जननी, को धिक्कारना, माता कौशिल्या को स्वार्थ–त्याग का विश्वास दिलाना, राज-सभा की धर्म-विरुद्ध आज्ञा का पालन न करना किन्तु धर्मानुसार ही अपने जीवन को धार्मिक एवं आदर्श जीवन बना स्वार्थ त्यागी बने। मूल्य ‐)॥

धर्मराज युधिष्ठिर

धर्मराजों का जीवन जिस प्रकार शिक्षा का भंडार होता है वह सब जानते ही हैं, आप ने स्वधर्म-रक्षा तथा सत्य द्वारा किस प्रकार शत्रु-सेना से विजय प्राप्त की, सचमुच आप की जीवन-घटनाओं से सत्यतापूर्ण धर्मयुक्त कितनी ही शिक्षायें मिल सकती हैं। मूल्य ≡)

नीतिज्ञ विदुर

आप किस उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ थे। महाराज धृतराष्ट्र को युद्ध से पूर्व वा पश्चात् कैसा हृदयग्राही अमृत रसयुक्त शान्तिदायक उपदेश दिया, वह पढ़ने पर ही मालूम होगा। मूल्य ≡)

महाराजा धृतराष्ट्र

मोह में फंस कर सुधर्मयुक्त कार्य करने और अपने पूज्यो के हितकारी वचनों का अनादर करने से क्या फल होता है, वह इसके पाठ से भली भांति ज्ञात हो सकता है। मूल्य ≡)

महाराजा दुर्योधन आप का जीवन पढ़ने ही योग्य है, वास्तव मे यदि इस जीवन को आद्योपान्त पढ़लिया तो आप का हृदय अवश्य इस बात को स्वीकार कर लेगा कि धर्म-युक्त व्यवहार करने से ही हम सुखी हो सकते हैं। हमें शान्ति का राज मिल सकता है। मूल्य ≡)॥

वीरेश्वर अर्जुन अर्जुन की वीरता प्रसिद्ध हैं भाइयों के लिये उन्हों ने किन कष्टों का सामना किया, युद्ध-भूमि में क्या २ घटनायें हुईं सो सब आप को मालूम होवगी। मूल्य ≡)

द्रोणाचार्य आहा! गुरु जी की शिक्षा कुशलता और शिक्षा देने की विधि तथा रण चातुर्यता कौन नहीं जानता देखिये मंगाकर पढ़िये। मूल्य ≠)

भरतोपदेश श्रीराम ने चित्रकूट पर भाई भरत को उपदेश दिया है उस शिक्षा-प्रद उपदेश का वर्णन इस में किया गया है। मूल्य ~)॥

हमारे छोटे२ जीवनों की बावत देखिये लोग क्या कहते हैं

बाबू नन्दलालसिंह जी बी. एस. सी एल. एल. बी.

उपमन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा, यू० पी०—

दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत ये चारों जीवन-चरित्र रूप से श्रीयुत ······ गुप्त जी ने प्रकाशित किये हैं। आर्य्य भाषा की सेवा जिस प्रकार मुंशी जी कर रहे हैं उसे प्रत्येक भाषा-भाषी जानता है।

लाला जी के पुस्तक का उद्देश्य मुख्यतया बालक और बालिका एव स्त्रियों का हित होना है, ये भी इसी विचार से लिखी गई हैं। इङ्गलिश मे इस प्रकार की पुस्तकें निकालने का क्रम प्रचलित ही था परन्तु अब आर्य्य-भाषा में भी वही बात देख कर प्रसन्नता होती है। वास्तव मे आदर्श पुरुषो के चरित्र का पाठकों के हृदयों पर बहुत प्रभाव है। विदुर, धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर, दुर्योधन ये चारों महाभारत के पात्रो के सम्बन्ध मे

लिखी गई हैं। महाभारत विस्तृत ग्रन्थ को सम्पूर्णतया देखे विना किसी भी व्यक्ति का पूरा हाल ज्ञात नहीं हो सकता, परन्तु उक्त ग्रन्थ को सम्पूर्ण देखना सहज काम नहीं, लेकिन यह कठिनता इन से दूर हो गई। चरित्र लेखक ने जहां अपने "नायकों" की प्रशंसा की है वहां तत्सम्बन्धी प्रत्येक घटना को ठीक एवं स्पष्ट भी बहुत कुछ करने का ध्यान रक्खा हैं जो लेखक के लिये आवश्यक है। छपाई खांसी, मूल्य स्वल्प हैं।

श्रीयुत सम्पादक आर्य्य-मित्र, आगरा—

तिलहर के महाशय...........जी वैश्य ने महात्मा विदुर, युधिष्ठिर, तपस्वी भरत जी के जीवन-चरित्र लिखकर प्रकाशित किये है। इस प्रकार के ऐतिहासिक चरित्रो से आर्य्य-साहित्य को बहुत लाभ पहुंच सकता हैं। इनकी भाषा सरल और रोचक हैं, तिस पर मूल्य भी अति स्वल्प हैं। वास्तव मे आपका यह प्रयत्न अत्यन्त प्रशंसनीय है।

श्रीयुत सम्पादक भास्कर मेरठ भाद्रपद ३—

तिलहर निवासी महाशय .....ने इन जीवनों को लिख कर प्रकाशित किया हैं। इस तरह के ऐतिहासिक चरित्रो से आर्य्य भाषा के साहित्य को बहुत कुछ लाभ पहुंचने की सम्भावना है। आपका यह प्रयत्न श्लाघनीय है।

श्रीमान् सम्पादक भारतोदय, ज्वालापुर।

तिलहर के मुन्शी ....जी को प्रायः आर्य्य-समाज में सब हो जानते हैं। आपने अनेक उपयोगी समायिक पुस्तकों को प्रकाशित कर अच्छा 'मान' पाया है। आप की नारायणी शिक्षा आदि प्रसिद्ध पुस्तकें हो है। अब आपने छोटे २ जीवन-चरित्रों के प्रकाशित करने का क्रम बांधा है। इन छोटी और स्वल्प मूल्य वाली पुस्तकों से सर्व साधारण को अच्छा लाभ पहुंच सकता है अतः यह प्रत्येक हिन्दू और आर्य घरो मे अवश्य होना चाहिये। लेकिन आपको विज्ञापन की सच्चाई ही तब मालूम होगी जब आप स्वयं इनकी प्रतियां मगाकर देखेंगे।

दुग्ध में घृत, मीठे में शहद, जीवों में मनुष्य, पुष्टियों में ब्रह्मचर्य, प्रकाश में सूर्य श्रेष्ठ हैं वैसे ही आपकी पुस्तक नारायणीशिक्षा सम्पूर्ण स्त्रियों के लिये उपयोगी है। मै आशा करता हूं कि विचारशील पुरुष अवश्य इस अमूल्य पुस्तक से लाभ उठा कुटुम्बियों-सहित आनन्द भोगने की चेष्टा करेंगे।

इसी प्रकार और भी प्रशंसा-पत्र आये हैं पर स्थानाभाव से प्रकाशित नहीं कर सकते।

देखिये भारतीय जन क्या कहते हैं—

श्रीमान् पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी, सम्पादक सरस्वती, प्रयाग।

सरस्वती भाग १० संख्या ७ में प्रकाशित करते हैं कि 'नारायणीशिक्षा" सम्पादक वावू चिम्मनलाल वैश्य पृष्ठ संख्या ६१२। साँचा बड़ा, कागज़ अच्छा, छपाई वंबई के टाइप की। इस इतनी सस्ती परन्तु उपयोगी पुस्तक का दूसरा नाम गृहस्थाश्रम शिक्षा है। पुस्तक कोई ३० भागों में विभक्त है। गृहस्थाश्रम से सम्बन्ध रखने वाली शिशुपालन, शरीर-रक्षा, ब्रह्मचर्य, विवाह, पति-पत्नी धर्म, नित्यकर्मादि कितनी ही वातों का इसमें और विचार है। श्रुति, स्मृति, उपनिषद्, पुराणादि से जगह जगह पर विषयोपयोगी प्रमाण उद्धृत किये गये हैं। पुस्तक में सैकड़ों बातें ऐसी हैं जिनका जानना गृहस्थ के लिये वहुत ज़रूरी है। इस पुस्तक को लोगों ने इतना पसन्द किया है कि आज तक इसके ६ संस्करण हो चुके हैं।

श्रीमान् प० विष्णुलालजी साहब शर्मा सबजज—

MY DEAR MUNSHI CHIMMAN LALL JI,

The Narayani Shiksha is a library in itself, being a work of Cyclopedia information No subject theoretical or Practical, which is useful to a house holder has been left untouched. The style is simple, yet impressive I am not aware of a better book for females in Hindi, and am of opinion that no Hindu family should be with out a copy of your book.

श्रीमान् बाबू रामनारायण साहब तिवारी—

Dear Sir,

I have read the Narayan Shiksha or Grihasta-Ashram compiled by you. I do not know of any other book in Hindi which gives in such a short compass everything that a Grihastha, or a householder, should know besides, I find your book a valuable additerumn to the literature for Hindu women. It is a pleasure to see that the book is so cheap a lesson that other authors on popular subjects might well learn from you: I think a book on vedic principles should be as cheap as possible and no one I am sure will grumble to spend one rupee and four annas more forten large and useful marters contained in your book.

स्वर्गीय श्री ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी सरस्वती—

मैंने आपकी बनाई हुई पुस्तकों को अच्छे प्रकार से देखा। ये सब किताबें पबलिक की शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करने वाली हैं। विशेष खूबी यह है कि प्रत्येक विषय के साबित करने के लिये वेद, स्मृति, पुराण इत्यादि के प्रमाण अच्छे प्रकार से दिये हैं, जिसके कारण इन पुस्तकों के पढ़ने वाले पूर्ण लाभ उठाते हैं। दौरे में मुझ से आपकी पुस्तकों की अनेकान पुरुषों ने प्रशंसा की. वास्तव में वह प्रशंसा ठीक है, क्योंकि आपने इनके लिखने में बड़ा परिश्रम किया है। इस लिये मेरा चित्त आपसे बहुत प्रसन्न है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि आप अपने जीवन भर इस उपयोगी कार्य्य को सदा करते रहें जिससे देश में वैदिक ख्यालात की उन्नति होकर सब प्रकार आनन्द हो।

बा० नंदलालसिंह जी बी.ए., बी.एस-सी., एल एल. बी.
उपमंत्री आर्य्यप्रतिनिधि सभा यु० पी०—

तिलहर के ··जी ने यह पुस्तक लिख कर स्त्री-जाति का बड़ा उपकार किया है। हम मुं० जी को इस सफलता के

लिये वधाई देते हैं। इसमें प्रायः उन सव वातों का समावेश है जो वालिका, युवति और वृद्धा तीनों के लिये विशेष उपयोगी हैं। यदि इस शिक्षा को स्त्री-उपयोगी वातों का विश्वकोप (Cyclopedia) कहें तो उचित है। प्रत्येक को अवश्य रखनी चाहिये।

सम्पादक, इन्दु मासिक पत्र, बनारस—

इसमें गृहस्थाश्रम के प्रायः सभी ज्ञातव्य विषयों पर विशद रूप से निवन्ध लिखे गये हैं, हम निःसंकोच कहते हैं कि यह निबंध विद्वत्ता के साथ लिखे गये हैं।

श्रीमहाराजा महेन्द्रपाल सिंह जू देववहादुर छुरी विलासपुर

वेशक आपने इस पुस्तक से सम्पूर्ण गृहस्थियो का वड़ा उपकार किया है।

स्वर्गीय श्री० पं० तुलसीराम वेदभाष्यकार, मेरठ—

मुं०...... .. जी कृत यह ग्रन्थ प्रसिद्ध है, स्त्री वर्ग के उपयोग में इससे उपकारक पुस्तक कोई ही होंगे। ऐसी उपयोगी पुस्तक होने पर मूल्य २) मात्र है। एक एक प्रति प्रत्येक गृहस्थ को देखने योग्य है।

वावू गोरूतामिल जी हेडमास्टर, आर्य्य स्कूल, होशियारपुर—

मेरी स्त्री ने आरम्भ से लेकर आख़ीर तक भली भाँति पढ़ा और मैं ने भी कहीं कहीं देखा, सचमुच स्त्री और पुरुषों के लिये वड़ी लाभदायक है, मैं ने और मेरी धर्मपत्नी ने स्त्री-शिक्षा की अनेक पुस्तकों को पढ़ा है परन्तु ऐसी उत्तम और लाभदायक किसी पुस्तक को नहीं पाया। आपने यथार्थ में आर्य्य-जाति पर महान् उपकार किया है जो ऐसी उत्तम और धार्मिक आकर्षण और चित्त पर प्रभाव डालनेवाली पुस्तक निर्माण की, तिस पर लुत्फ़ यह है कि मूल्य भी वड़ा ही स्वल्प यानी ८०० पृष्ठ की पुस्तक २) को देते हैं यह और सुगन्ध है। कृपा पर अपनी लेखनी को इस कार्य्य में लगा यश के पात्र वनिये।

श्रीयुत गोविंदजी मिश्र ६५ । ३ बड़ाबाज़ार कलकत्ता—

आपकी पुस्तक को पढ़ कर मेरी आत्मा को जितना आनन्द मिला है, वह किसी प्रकार से लिख कर नहीं बता सकता। वास्तव में आपने सागर को गागर में भरने का साहस किया है। गृहस्थाश्रम के आवश्यकीय प्रायः समस्त विषयों का संग्रह किसी पुस्तक में सिवाय नारायणीशिक्षा के नहीं देखा। इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अपना प्रयोजन पूर्णरूप से गठन कर सकता है। ऐसी ऐसी पुस्तकों की रचना प्राय उत्तम कक्षा की धार्मिक आत्माओं के द्वारा ही हुआ करती है।

श्री प्रतापनारायणसिंह जी, गाज़ीपुर—

यह एक अति उत्तम पुस्तक है और प्रत्येक घरों में रहने लायक है। मेरा ऐसा विचार है कि हमारे भारतवासी स्त्री-पुरुषों के लिये जो कि इसको एक बार भी पढ़ लेंगे तो अति लाभदायक और उपयोगी होगी। मैं आपके इस परिश्रम और आपके उस अमूल्य समय के व्यतीत करने के लिये जो आपने हम भारतवासियों के लाभार्थ उठाया है, शुद्धचित्त से प्रशंसा करता हूँ।

इसके अतिरिक्त श्रीमान् राजा फ़तेहसिंह साहब बहादुर पुवायाँ: श्री पण्डित शीतलप्रसादजी डिप्टीकलेक्टर, म० राम चरण जी साहिब हास्पिटल असिस्टेन्ट सर्जन, सरधना, बाबू कृपालसिंहजी डिप्टी इन्सपेक्टर इन्दौर, बाबू बलदेवप्रसाद वकील व प्रधान कायस्थ कान्फ्रेन्स, बाबू मथुराप्रसाद साहिब सब इंजिनियर सीतापुर, बाबू जगदीश नारायणजी गहलोत हाउस जोधपुर, श्रीझाराबरदारवीर शर्म्मा जोधपुर, पं० देव दत्तजी शर्म्मा आमघाट गाज़ीपुर, श्रीरामदयालुजी शाहपुरा, श्री० विद्याधरजी गुप्त राजा का रामपुर, श्रीराजेन्द्रनाथजी स्कूल फ़ीरोज़ाबाद, बाबू शालिग्रामजी सुपरवाईज़र दफ़्तर मद्दु मशुमारी मिर्ज़ापुर, श्रीयुत गंगाप्रसाद जगन्नाथजी हल-द्वानी, श्रीयुत शम्भुनारायण जी शर्म्मा झरिया मानभूमि,

किस सरल रीति से कटुभाषिणी यशोदा और उसके पुत्र बहुओं को समझाया है, कैसी २ उत्तम कहानियां सुनाई हैं जिनके सुनते ही सासु बहुओं का वैमनस्य दूर हो प्रेम का अंकुर उनके हृदयों से जम गया जिसके कारण सम्पूर्ण गृह स्वर्ग के सदृश प्रतीत होने लगा। तदुपरान्त सुयोग्य प्रियंवदा ने गृहस्थाश्रम की आवश्यकीय बातों को बता कर देश देशान्तरों के वृत्तान्त सुना एक विवाह पर नगर की मूर्ख स्त्रियों के आक्षेपों का उत्तम रीति से समाधान कर कुरीतियों का संशोधन किया है। प्रिय सज्जन पुरुषो! यह पुस्तक क्या है मानो पुत्र पुत्रियों का पथ-दर्शक है। यदि आप अपनी स्त्रियों के हृदयस्थल में ऐक्यता आदि सद्गुणों का बीज बोना चाहते हैं तो अवश्य एक बार वी० पी० मंगा स्वयं पढ़ एक २ प्रति प्रत्येक गृहों में पहुंचा दीजिये। २०० पृष्ठ होने पर भी आप सब के सुभीते के लिये मूल्य ॥=) मात्र है।

पढ़िये! लोग क्या कहते हैं?

श्री पं० गणेशप्रसाद जी, सम्पादक भारत-सुदशाप्रवर्त्तक फ़र्रुखाबाद यू० पी०,—

यह पुस्तक नाविल के ढंग पर २३० पृष्ठ की है। इसके लेख कुरीतियों के नष्ट करने वाले हैं। पुस्तक बहुत उपयोगी और लाभदायक है। छपाई कागज़ उत्तम होने पर भी मूल्य ॥=) मात्र है।

श्रीयुत सम्पादक भास्कर मेरठ—

प्रेमधारा स्त्री-शिक्षा की अत्युत्तम पुस्तक है जिस को······ ने प्रकाशित किया है। संवादरूप से बहुत उत्तम२ शिक्षायें दी गई हैं। प्रत्येक नर नारी को अवश्य देखना चाहिये।

श्रीयुत सम्पादक नागरी प्रचारक, लखनऊ—

प्रेमधारा स्त्री जाति के उपकारार्थ कायमगंज निवासी बाबू ·· ···ने प्रकाशित की है या नर नारियों के लाभार्थ अनेकानं उपदेश ग्रन्थ के रोचक तथा प्रसङ्ग में दिये गये हैं। अवश्य ही इसको पढ़ कर बालिका और महिलाओं का विशेष उपकार होगा। धर्म-मार्ग सिखाने के निमित्त इस प्रकार के ग्रन्थों का प्रचार

करना सरल उपाय है। ईश्वर प्रार्थना के सप्त-श्लोक बहुत ही ललित दिये गये हैं। हम ग्रन्थकर्त्ता की, उनके उत्तम और समाज सुधार के लिये यत्न करने के निमित्त वारम्बार प्रशंसा करते हैं।

श्रीमती हरदेवी जी धर्मपत्नी बा० रोशनलाल जी—वैरिस्टर ऐटला लाहौर—तथा सम्पादिका भारत भगिनी

मैंने इस पुस्तक को आद्योपांत पढ़ा, स्त्री और कन्याओं को बड़े धार्मिक उपदेश मिलेंगे। यह पुस्तक बहुत ही प्रशंसा के योग्य है और विशेषकर आर्य-कन्याओं के लिये तो पथ दर्शक तथा अमूल्य-रत्न है।

बा० भूरालाल स्वामी असिस्टेन्ट स्टेशनमास्टर—निम्बाहेड़ा

मैंने आपकी बनाई प्रेमधारा को पढ़ा, पढ़कर बड़ा चित्त प्रसन्न हुआ। ईश्वर ने आपको इसी योग्य बनाया है कि आप अपनी अमृतरूपी लेखनी से मनुष्यों की अज्ञानरूपी निद्रा को छिन्न कर रहे हैं। आप के उक्त निबन्ध को पढ़ कर मुझ सा अज्ञानी इस के महत्व जानने व वर्णन करने में असमर्थ है। तो भी इतना ही कहूंगा कि यह मूर्ख नर नारियों की फूट वा लड़ाइयों के दूर करने का एक मात्र औषधि है। प्रत्येक गृह मे रहने योग्य है।

पुत्री प्रियंवदा-रचित सर्वोपयोगी पुस्तकें।

कलियुगी परिवार का एक दृश्य।

वर्त्तमान समय में गृहस्थाश्रम के अन्दर रंग बिरंगे चमत्कारिक दृश्य देखने मे आते है, उनका खाका इस पुस्तक मे विचित्रता से खींचा गया है, जिसके पढ़ते २ ही गृहस्थाश्रम की वास्तविक दशा का चित्र आपके हृदय पटल पर अंकित हो जावेगा। आपको मालूम होगा कि धन, धान्य, पुत्र, पौत्र होते हुए भी इस समय गृहस्थाश्रम में कितना सुख मिल रहा है। इस का ढंग उपन्यासी है। भाषा की उत्तमता, भाव की गम्भीरता और सरलता देखने से ही विदित हो सकती है। मूल्य केवल ॥)

२—धर्मात्मा चाची अभागा भतीजा।

यह पुस्तक भी उपन्यास के ढंग पर लिखी गई है। इसकी नायका ने अपने कुटुम्बियों को नाना उपयोगी और आवश्यक विषयों की शिक्षायें दी हैं जिस से यह भली भांति प्रकट हो जाता है कि ससार-यात्रा करने वाले गृहस्थों को गृहस्थाश्रम में सुख के सच्चे उपाय क्या २ हैं ? विशेष उपयोगिता देखने पर ही मालूम होगी। मूल्य ।-)

३—आनन्दमयी रात्रि का एक स्वप्न

इस में स्वर्गीय विदुषी महिलाओं की सभा के अधिवेशन में कितनी स्पीचों द्वारा यह भले प्रकार विचार किया गया है कि स्त्री जाति की अवनति का क्या कारण है ? अब उन्नति कैसे हो सकती है और गृहस्थाश्रम स्वर्गमय कैसे बन सकता है, इत्यादि कई विषयों का आन्दोलन किया गया है। मू० ≈)

श्री पण्डित भवानीदयाल जी जैकोबस।

(साउथ अफ्रीका)

उपर्युक्त तीनों पुस्तकों की रचयिता श्री चिम्मनलाल जी की सुयोग्या एवं विदुषी पुत्री प्रियम्वदा है। तीनों पुस्तकें कल्पित उपाख्यान स्वरुप हैं। इन पुस्तकों मे विशेष रूप से स्त्रियों की वर्त्तमान दशा पर प्रकाश डाल कर उसके सुधार के उपाय बतलाये गये हैं उन्हें आरम्भ करने पर आद्योपान्त पढ़े बिना जी नहीं मानता। विशेष प्रवासी बहिनों के लिये ये पुस्तकें बहुत उपयोगी हैं और कथा के रूप मे होने के कारण जो बहनें थोड़ा भी पढ़ना जानती हैं वे भी इनके पाठ से लाभ उठा सकती हैं। और सहज ही में बहुत सी आवश्यक बातें जान सकती हैं। इन का हम इस लिये भी हार्दिक स्वागत करते हैं कि यह एक आर्य देवी की कीर्त्ति है। भाषा सरल है, शैली श्रेष्ठ है, कथायें रोचक हैं और मूल्य भी अधिक नहीं है।

गीताष्टक

इसमें

श्रीमद्भगवद्गीता को छोड़ कर उन नवीन आठ गीताओं का संग्रह मूल श्लोक और अनुवाद सहित है जिन गीताओं के आपने कभी दर्शन नहीं किये न उनके नाम सुने । अतएव यह एक नवीन ढंग की नई पुस्तक है—

इस लिये

प्रत्येक गृहस्थी को इस पुस्तक का नित्यप्रति पाठ करना योग्य है ।

क्योंकि

इन गीताओं में ज्ञान मार्ग-कर्म मार्ग-भक्ति मार्ग-ध्यान मार्ग

और

ब्रह्मचर्य तप-जप-शम-दान और वैराग्य आदि संसारोद्धारक,

अनेक साधनों का महर्षि

शम्पाक-हारीत-पिंगल वोध्य-मंकि-हंस उतथ्य

और वामदेव

जी के अमृतमय उपदेशों द्वारा वर्णन किया गया है ।

इसकी

भाषा रोचक और इतनी सरल है कि बालक और स्त्रियां भी भले प्रकार समझ सकती हैं पस—

यदि आप

अपने हृदय को उच्च विचारों और ज्ञान से परिपूर्ण करना चाहते हैं और भावी सन्तानों को धर्मवीर-रणवीर-न्यायवीर कर्मवीर-सत्यवीर और दानवीर बनाने की अभिलाषा है तो इस पुस्तक का पाठ अवश्य कीजिये । कागज़ मोटा सफेद लगाया गया है मूल्य केवल ॥) डा० व्य० ।) जल्दी न ख़रीदने से द्वितीय एडीशन की बाट देखनी पड़ेगी ।

हम शीघ्र क्यों मरते हैं ?—वर्त्तमान समय में मौत का औसत ३३ वर्ष पर आ गया है जिसके कारण भारत में रात दिन रुदन मचा रहता है। अनेकान पुरुष इसके लिये ज्योतिषियों से जप कराते और गंडे तावीज़ बांधते हैं परन्तु फिर भी अल्पायु में मरते चले जाते हैं। इस दुःख से बचने के लिये मैंने चरक सुश्रुत और वेद के अनुसार सच्चे नुस्खे और पथ्यापथ्य लिखा है। देखिये, अमल कीजिये, ताकि भारत से ये दुख चले जावें। मूल्य ≈)॥

सत्यनारायण की प्राचीन कथा—मित्रों सहित सुनिये। देखिये, कैसी अच्छी और उपयोगी कथा है। आठवीं बार छपी है। मूल्य ≈)॥

यथार्थ शान्ति निरूपण—यह पुस्तक स्त्री, पुरुषों, पुत्र पुत्रियों और प्रत्येक मतमतान्तर के लोगों को शान्ति देनेवाला है। इसके पाठ और विचार से आत्मा में इस प्रकार की शान्ति आती है जो सब सुखों का दाता है। यथार्थ में इसके आशय बड़े गम्भीर हैं। मूल्य ≡)

शान्तिशतक—इसमें प्राचीन कवि शल्हण मिश्र कवि कृत श्लोक हैं, नीचे भाषा में अनुवाद है। इसके श्लोक पुत्र पुत्रियों को कण्ठ कराने योग्य हैं, क्योंकि सभा समाजों में बोलने से बड़े ही मनोहर प्रतीत होते हैं। एक एक श्लोक का आशय प्रत्येक मनुष्य को धार्मिक बनाने के लिये उत्तेजित करता है। मूल्य ≈)

संध्यादर्पण—इसमें वेदादि सत्य शास्त्रों से द्विकाल संध्या का प्रतिपादन पूर्ण रीति से किया गया है और प्रमाणों से यह बतलाया गया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों वर्णों की एक ही गायत्री है। मूल्य ≈) छोटी संध्या)। हवन विधि)।

द्वैतप्रकाश ≈), संसार फल)॥, प्रेमपुष्पावली ≈)॥, भजन सारसंग्रह ≈)॥, स्त्रीज्ञान गजरा १ भाग)॥, द्वितीय ≈)॥, सत्यार्थ प्रकाश ॥≈), संस्कार विधि ।≈), संस्कार चन्द्रिका २॥≈),

मनुस्मृति १॥), भास्करप्रकाश २॥), पंचमहायज्ञ पीयूष ।=), वीरविदुषी स्त्रियों के जीवन ॥=), लक्ष्मीदेवियां ॥), दृष्टान्तसागर १।) उपनिषद्प्रकाश २॥), गृहिणीसुधार ॥), राष्ट्रीयआन्दोलन १॥), अमरीका की स्वाधीनता ॥), धर्मधुरीण प्रताप ॥), गल्पांजलि ॥), पथप्रदीप १), दयानन्द चित्रावली २५ उत्तम स्वामी दयानन्द जी के चित्रों सहित १।), संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध १), उत्तरार्द्ध १।)

सरल भाषा में
पुत्र पुत्रियां युवक युवतियों को वैद्यक का
पूरा २ ज्ञान कराने वाली
उत्तमोत्तम पुस्तकें।

शरीर विज्ञान

इस में

शरीर किन २ पदार्थों से बना-पचमहाभूत किन को कहते हैं। वायु और उसके भेद--स्वांस-तेज-जल-पसीना-शरीर की गलियां-शरीर के भाग। मस्तक आंख-नाक-कान-मुंह-दान्त मसूड़े-तालु गाल-कनपटी-होठ-ठोडी-गर्दन-धड़, हंसली, ठठरी, हड्डी, चरबी, मांस, रुधिर, खाल, बाल आदि की बनावट शिरा, धमनी, स्नायु, पेशी, कन्डरा, फुपफुस, हृदय, फेफड़ा, अन्तडिया सिवनी, मर्मस्थान, तिल्ली और जिगर क्या है ? भोजन कैसे कहा पचता है ? भूख प्यास कैसे लगती है इस प्रकार की लगभग सौ बातों का वर्णन सरल भाषा मे किया गया है। साथ ही उन नियमों को भी बतलाया गया है जिन पर चलने से शरीर आरोग्य रहसकता है बिना शरीर की बनावट के ज्ञान के उसको निरोग रखना कठिन है। पूर्ण सुख शरीर को स्वास्थ्य रखने से ही मिलते हैं इसलिये यदि आप कुटुम्ब सहित सुखी रहना चाहते हैं तो इस अनुपम पुस्तक का पाठ कर उसके ज्ञान एवं तत्वों से

